मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

आशीष अनचिन्हार

सूचना---

1) पाठक अइ पोथीकेँ पढ़बासँ पहिने गजल संबंधित प्रश्नक एकटा लिस्ट बना लेथि जइमे ओहन प्रश्न सभ राखथि जे ओ गजलक बारेमे बूझए चाहै छथि तकर बाद ओ अइ पोथीकेँ पढ़नाइ शुरू करथि। हमर विश्वास अछि जे एना केलासँ हुनका आनंद सेहो भेटतनि आ गजलकेँ बुझबाक लेल एकटा सरल मुदा ठोस प्रक्रिया सेहो।

2) जे गजल कहब-लीखब सीखए चाहै छथि से तीन टा काज पहिल करथि--

1) पहिने बहुत रास शब्द सभहँक मात्राक्रम निकालि अभ्यास करू, 2) तकर बाद दू शब्दकेँ आमने-समने राखि अभ्यास करू जे ई काफिया बनि सकैए वा नै आ, 3) तकर बाद एहन-एहन शेर सभ लीखू जाहिमे बहर-काफिया सही रहै मुदा भाव केखनो आबै आ केखनो नहियो आबै (देखू सौती मोशायरा)। तकर बाद अहाँकेँ बहर बला गजल लिखबामे सुविधा रहत

2) ई पोथी किनका लेल नै अछि----

A) जे लोक बिना पढ़ने घोंघाउज करै छथि।

B) जिनका तर्क-वितर्कसँ परहेज छनि कारण अइ पोथीमे हरेक तथ्य लेल तर्क-वितर्क भेटत।

C) जे लोक कोनो तथ्यकेँ जाति-धर्म-उम्र-संबंध-पद आदि देखि कऽ मानै छथि। मने फल्लाँक उम्र एतेक बेसी छनि हुनक बात सही हेबे करतनि। फल्लाँ हमर संबंधी छथि हुनक बात केना काटल जाए। फल्लाँ अमुक जाति-धर्मक लोक छथि हुनक बात झूठ भैए ने सकैए। फल्लाँ अइ पोस्टपर छथि हुनक कमाइ एतेक छनि हुनक बात मानले जाए। एहन-एहन मानसिकता बला लेल ई पोथी उपयुक्त नै।

D) जे लोक कहियो भूतकालमे दू पन्नाक आलेख लीखि मानै छथि जे गजलपर आब काज नै हेबाक चाही। जे विद्वान तँ छथि कोनो आन विषयकेँ मुदा ओइ विषयक बलपर आन विषयक विद्वान बनबाक प्रयास करै छथि (मोन राखू ...ओइ विषयक बलपर...। जँ कियो एकै संगे आन-आन विषयमे प्रवीण छथि तँ स्वागतयोग्य गप्प) साधारण पाठक लेल ई सूचना नै अछि। ई सूचना अइ दुआरे जे एहन-एहन मानसिकता बलाक समय आ पाइ दूनू बचतनि। हुनके लाभ लेल ई सूचना हम दऽ रहल छी सेहो दोसरे पन्नापर जइसँ सूचना जल्दी भेटनि आ हुनका निर्णय लेबएमे सुविधा होइन। साधारण पाठक हमरा माफ करथि मुदा ई सूचना देब जरूरी छल।

समर्पण

सिरजनहारकैँ

विषय सूची

अइ पचीस खंडक अलावा परिशिष्ट अछि जइमे अनचिन्हार आखर द्वारा देल जा रहल विभिन्न सम्मानक सर्टिफिकेटक छायाचित्र ओ विवरण अछि। संगे-संग मैथिली गजलकार द्वारा लिखल अंग्रेजी गजलक विवरण सेहो अछि।

अनचिन्हारक बात

कोनो पोथी लेल प्रकाशक दोसर माए-बाप दूनू होइत छै तँए ऐ पोथीक पहिल पाँति प्रकाशक केर सम्मानमे। आब ऐ पोथीकेँ पढ़बासँ पहिने हमर किछु व्यक्तिगत तथ्य पढ़ी से आग्रह (ई नितांत व्यक्तिगत अछि। बहुत लोक हमरा कहलाह जे पोथीमे ई व्यक्तिगत तथ्य देलासँ पोथी "हल्लुक" भऽ जाएत। मुदा विश्वास मानू जे जँ हम ई तथ्य सभ एहिठाम नै दितहुँ तँ ई सभ हमर मोनेमे रहि जाइत आ पाठक सभ मैथिलीक बहुत रास भितरिया बातसँ अनभिज्ञ रहि जइतथि। वस्तुतः ई कही जे एहिठाम ई व्यक्तिगत तथ्य देलासँ हमर मोन हल्लुक भऽ गेल आ हम अपनामे नव परिवर्तन पाबि रहल छी। उम्मेद अछि जे पाठक एहि सभ तथ्यकेँ पढ़ताह जाहिसँ हमरा बारेमे वा मैथिली गजलक बारेमे भितरिया बात सभ बुझताह) —

1) ई पोथी मैथिली गजलक व्याकरण थिक। मैथिली गजलक इतिहास थिक। चूँकि गजलक व्याकरण अरबी-फारसी-उर्दूसँ संचालित अछि भारतमे मुदा हम एहन बहुत रास नियम हटा देलहुँ जे की मैथिली भाषाक व्याकरण आ ओकर प्रकृतिसँ अलग छलै। जैठाम नियम हटाएल गेल छै तैठाम अरबी-फारसी-उर्दूक मूल नियम सेहो देल गेल छै आ कोन कारणसँ ओइ नियमकेँ हटाएल गेल छै सेहो कहल गेल छै। सामान्य पाठकसँ अध्येताक धरिक लेल ई तरीका उपयोगी हएत से हमरा विश्वास अछि। हमरा गजल तँ चाही मुदा मैथिलीमे चाही तँए हम प्रयास केलहुँ जे मैथिली गजल लेल अलगसँ पोथी हेबाक चाही आ ताही लेल एकर नाम भेल “मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास” । व्याकरण बहुत पहिनेसँ लिखल गेल छलै। अरबी-फारसी-उर्दूक सहित गजलक सेहो आ मैथिली भाषाक सेहो तँइ ऐ पोथी लेल हमरासँ बेसी मेहनति हमर पूर्वज केने छथि जे कोनो ने कोनो रूपें तथ्यकेँ उजागर कऽ गेलाह। व्याकरण केखनो मौलिक नै होइ छै मुदा ओकर प्रस्तुतिकरण ओ संकल्पना ओकरा मौलिक बना दै छै। प्रस्तुत पोथीक प्रस्तुतिकरण ओ संकल्पना केहन अछि से पाठके कहि सकै छथि। ऐ पोथीक सभ तथ्य आन-आन व्याकर्णाचार्य सभहँक छनि। हमर काज एतबे जे सभ अनुकूल तथ्यकेँ हम एक ठाम दऽ देलहुँ। हँ, कोनो तथ्यक समर्थन वा विरोधमे देल गेल तर्क हमर अपन मौलिक अछि। इतिहास लेखनक भाग मौलिक अछि। मैथिली आलोचना ओ साहित्यिक इतिहासक बहुत रास पोथीमे देखल जाइए जे आलोचक-इतिहासकार जै लेखककेँ पसंद नै करै छथि वा जिनकासँ हिनका मतांतर छनि तिनकर नामे नै लै छथि आ हुनकर काजक सम्यक मूल्यांकन नै करै छथि। प्रस्तुत पोथीक इतिहास खंडमे हम एहन दुर्भावनासँ बचलहुँ अछि। जिनकर काज हमरा पसंद नै पड़ल अछि तिनकर हम खुलि कऽ आलोचना केलहुँ मुदा हुनकर काजक उल्लेख जरूर अछि। हँ, एतेक हम स्वीकार करै छी जे एकेडमिक नै हेबाक कारणे किछु गजलकार हमरा नजरिसँ छुटि गेल छथि जे कि हमर अज्ञानताक सूचक अछि। हमर आदति अछि जे हम एकै आदमीक गुण-दोष दूनू देखै छियै मतलब हम पूर्वाग्रहसँ मुक्त छी। हम ई नै मानै छी जे किनकोमे एकटा दोष छनि तँ हुनकामे पूरा दोषे हेतनि वा किनकोमे एकटा गुण छनि तँ हुनका पूरा गुनमंती मानल जाए। तँइ अही पोथीमे देखबै बहुत ठाम हम पं.गोविन्द झाजीक किछु तथ्यक आलोचना केने छी तँ बहुत रास तथ्यक सहारा सेहो लेने छी। आनो लेल एहने बुझू।

2) एहूसँ बेसी हरमादि करऽ बला काज छल मैथिली गजलक इतिहास। जै विधामे 100मेसँ 100 साहित्यकार ओहि विधाक मास्टर हो ताहूमे की तँ हाथमे क्रांतिक झंडा लेने, तै विधाक इतिहास लिखब चिकनी माटिक चुल्हामे मूड़ी घुसिआएब सन छल। मुदा हमरा ऐ गप्पक संतोष अछि जे हम मूड़ी घुसिएलहुँ, हमर मूँह झरकल मुदा ऐ क्रममे योगानंद हीरा, विजयनाथ झा, जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल, आदि सनक सदाबहार धधरासँ पाला पड़ल आ नकली आगिक चोला धारण करऽ बला गजलकार सभहँक आँखि चोन्हरा गेलन्हि। मैथिली गजलक आसनपर नकली गजलकार सभहँक जे एकाधिकार छल से टूटल आ मैथिली गजल आमक पल्लव रूप सेहो धेलक आ बाँसक कोपड़िक रूप सेहो। ऐठाम ई कहब उचित रहत जे इतिहास बड़ निर्मम होइ छै, आइ जँ हम गलत करबै तँ काल्हि हमरो नाम / काज इतिहासमे गलत रूपमे दर्ज हएत आ आ एहने कानून सभहँक लेल छै।

3) मैथिली गजलमे हमरा बनल-बनाएल बाट नै भेटल (बहुत लोक अइ बातकेँ नै स्वीकार करता से हमरा बूझल अछि। किछु कहता हम नियारने छलहुँ जे एना लीखब। किछु कहता जे गजलक व्याकरणमे होइते की छै हम फल्लाँ पत्रिकाक ओइ आलेखमे गजलपर एतेक रास लिखने रही। हम हुनक सभ बात शिरोधार्य करब) आ जेना-जेना हमरा गजलक ज्ञान भेटैत गेल हम सभहँक संग ओकरा सभ संग शेयर करैत केलहुँ आ अपना संग सभकेँ सिखेलहुँ। आ एनाहिते सिखैत-सिखाबैत हम अइ ठाम ठाढ़ छी। अही दुआरे हमरापर हमर किछु संगतुरिया गजलकारकेँ तामस छनि जे हम हुनका एकै बेरमे गजल गाछक फुनगीपर किएक नै चढ़ा देलियनि। मुदा हम उपर अपन सीमा देखा देने छी। अइ ठाम पहुँचि हम अपन ओहन सभ संगतुरिया सभसँ माफी माँगै छियनि जिनका हम एकै बेरमे गजलक सभ नियम नै दऽ सकलहुँ। हँ किछु गजलकार जरूर भेटला जे हमर सीमाकेँ बुझैत हरेक समय अपनामे बदलाव केला आ ओकर परिणाम सामने अछि। एहन-एहन गजलकारक हम ॠणी छी। अइ ठाम हम किनको नाम नै लेबऽ चाहैत छी कारण फेसबुकक माध्यमसँ ई सभकेँ बूझल छै जे के एकै बेरमे फुनगी चाहै छलाह। हम अपना आदति केर हिसाबसँ बहुत लोककेँ गजल लिखबाक लेल कहलिअन्हि बहुत लोक लिखबो केला आ बहुत लोककेँ मोनमे ई भेलनि जे जरूर अनचिन्हारक खाना-खुराकी गजलेसँ चलै छै आ जँ हम गजल नै लिखबै तँ अनचिन्हार भुखले मरि जेतै, हम एहनो लोकक प्रति ॠणी छी। किछु लोक एहि उम्मेदपर गजल लिखनाइ शुरू केलथि जे जा धरि हम गजल लिखब ता धरि अनचिन्हार हमर अनुचितो बात मानैत रहत आ जँ नै मानत तँ हम गजल लिखनाइ छोड़ि देबै। दोसर शब्दमे कही तँ “इमोशनल ब्लैकमेल” मुदा एहन तँ नै छै जे फल्लाँ बाबू गजल नै लिखता तँ गजलक विकास रुकि जेतै। गजल तँ विधा छै। आइ दू टा लोक लिखतै काल्हि पाँच टा तँ परसू पचास टा। भऽ सकैए जे पाँचम दिन एकैटा गजलकार होथि। तँइ हम एहन “ब्लैकमेलर” सभकेँ कात करैत अपन काज करैत रहलहुँ। किछु ब्लैकमेलर तँ एहनो छथि जिनका गजलक नियममे अनुचित ढ़िलाइ चाहै छलाह आ नै भेलापर गजल छोड़ि देबाक धमकी दै छलाह। अंतमे हम हुनक गजल छोड़ि देबाक निवेदन स्वीकार कऽ अपनाकेँ धन्य मानि लेलहुँ। गजल ब्लैकमेलर सभसँ पहिनेहो छलै आ ओकरा बादो रहतै।

4) मैथिली भाषा ओ साहित्य केर विश्वविद्यालीय शोधसँ तुलना कऽ हम अपन ऐ प्रस्तुत शोधक महत्व घटबऽ नै चाहै छी। आइकैँ तारीखमे जँ हम विश्वविद्यालयक शोध निर्देशकक हाथमे प्रचुर टका दऽ दी तँ बैसले-बैसल शोध भेटि जाएत। मैथिली साहित्य केर अधिकांश शोध एहने अछि मने 100 मेसँ 97-98 टा (ओना ई प्रकिया एक तरहें झाँपल रहैत छै तँइ अइ आरोप लेल सबूतक कमी रहिते छै) । एहन स्थितिमे हमरा ई संतोष अछि जे मैथिलिए नै हम कोनो भाषा केर एकेडमिक नै छी। ने तँ विद्यार्थी तौरपर आ ने शोधार्थी तौरपर (जँ रहितहुँ तँ ई पोथी नै होइत से हमर विश्वास अछि)।

5) किछु तथ्य दोहराएल सन लागत। मुदा हमरा जनैत ई ऐ दुआरे भए रहल छै कारण व्याकरण ओ इतिहास लेल तथ्य मात्र एकै होइत छै तथापि ऐसँ बचबाक प्रयास कएल गेल छै।

6) जेना की आगू कहले गेल अछि जे ऐ पोथीमे भाषाक पूर्ण ओ अपूर्ण दूनू रूप प्रयोग भेल अछि। ऐ, अइ, एहि तीनू रूप भेटत आ आन शब्द लेल तेहने सन बूझू। गम्भीर पाठक सभकैँ मानक वर्तनी गड़बड़ बुझेतनि। मुदा हमरा जनैत गजल लेल अपूर्ण भाषा सभसँ बेसी उपयुक्त। आ ई पाठक, शाइरपर छोड़ल जाइए जे ओ अपनेसँ परीक्षण करथि जे कोन रूपक भाषासँ गजलमे तेजी आबि रहल छै। संगे ईहो कहब बेजाए नै जे संयुक्त शब्द लेल पंचमाक्षर बला नियम सही अछि तथापि अभ्यास जनित दोषक कारणे ऐ पोथीमे आरंभ ओ आरम्भ दूनू वर्तनी भेटत मने अनुस्वारयुक्त सेहो आ पंचमाक्षर युक्त सेहो। । जँ-जँ अभ्यास बढ़ैत जाएत हमर आन पोथीमे “आरम्भ” वर्तनी भेटत मने पंचमाक्षरयुक्त। “य” लेल “अ” केर ठीम-ठाम प्रयोग सेहो भेटत। ऐ पोथीमे देल गेल सभ उदाहरणक (गजल ओ उद्धरण) वर्तनी लेखक-शाइर विशेषक अछि। अन्तिम खंडक भाषामे किछु भिन्नता भेटत कारण अधिकांश तथ्य फेसबुक परहँक अछि आ भिन्न-भिन्न लोकक अछि जे की मैथिली प्रेमी छथि आ समय-कुसमय मैथिलीमे लिखै छथि। ओना जखन की मैथिलीक प्रोफेसर सभहँक वर्तनी गलत रहै छै तखन तँ हमरा लोकनि अदना आदमी छी। शुरूआती दौरमे हमरा लोकनि गलतीसँ एक अक्षरीय “ई” बदलामे “इ” लिखैत रही आ बहुत रास गजलमे “इ” आएल अछि। आब जँ वर्तनी सही करबै तँ मात्राक्रम गड़बड़ भऽ जेतै। आबक गजलमे एहन गड़बड़ी नै अछि। आब एकटा शब्द लिअ छठि। एकर उच्चारण बहुत प्रकारसँ होइत छै जेना “छठि, छइठ, छैठ, छैइठ “आदि-आदि बहुत संभव जे छऐठ उच्चारण सेहो हो। जँ ध्वनिशास्त्रक हिसाबसँ देखबै तँ ई सभ उच्चारण सही छै। कारण ध्वनिशास्त्रक स्पष्ट मान्यता छैक जे ध्वनि निर्धारण मात्र उच्चारणे कालमे संभव छै आ सभहँक उच्चारण अलग-अलग भऽ सकैए। आब प्रश्न छै जे जँ कोनो भाषा बाजऽ बलाक संख्या एक लाख छै तँ ओकर उच्चारण पद्धति एक लाख हेतै? उत्तर छै, हँ। मुदा आब ऐठाम ई प्रश्न उठलै जे तखन व्याकरणमे एक लाख नियम बनाएल जाए? ऐ प्रश्नक उत्तरमे ई निष्कर्ष निकलल जे भाषाक बहुसंख्यक ध्वनिकैँ आधार मानि व्याकरण बनाएल जाए। दोसर शब्दमे कही तँ ध्वनिशास्त्रक “सामान्यीकृत” शास्त्र व्याकरण भेल। तँए हमर स्पष्ट मान्यता

अछि जे भने किनको उच्चारण कोनो होइन मुदा लिखित रूप व्याकरणक हिसाबसँ हेबाक चाही। ऐ ठाम ईहो धेआन देब जे मैथिलीमे दलित शब्दावली ओ वर्तनीक अभाव अछि आ हमरा आशा अछि जे गजलकार सभ ऐ शब्दावलीक पूरा सदुपयोग करता। किछु लोक ई मानै छथि जे हमर दाइ-बाबा, फँल्ला-फँल्ली एना बाजै छला / छली तँ व्याकरणोमे एनाहिते हेतै मुदा एहन परिकल्पना कोनो विषयकेँ समाजिकसँ व्यक्तिगत बना दै छै। हमरा जनैत व्याकरणकेँ व्यक्तिगत नै हेबाक चाही। अइ पोथीक सभ अक्षर-संयोजन भिन्न-भिन्न कंप्यूटरपर भेल अछि। आ फोंटक विभिन्नताक कारणें कतहुँ-कतहुँ संयुक्ताक्षर मूल रूपमे भेटत (जेना शुरू आ बीच वर्णमे हलंत लगले रहि जाएब)। जखन बात वर्तनीक चलि रहल अछि तँ स्पष्ट करी जे हमर एहि पोथीक मुख्य उद्येश्य मात्रा निर्धारण अछि, उदाहरण लेल कियो "थिक" लिखलाह तँ एकर मात्राक्रम गजल परिपाटीक हिसाबें एकटा दीर्घ (2) हेतै मुदा जखन कियो "थीक" लिखताह तखन एकर मात्राक्रम दीर्घ-ह्रस्व (2-1) हेतै। आन शब्द लेल एहने सन बूझू। ओना जँ कियो एहि पोथीसँ वर्तनीक जानकारी सेहो लऽ लेथि तँ ई एहि पोथीक सौभाग्य हेतै।

7) गजलक किछु नियम भाषा सापेक्ष अछि। भाषा सापेक्ष मतलब जेना-जेना भाषाक नियम बदलतै तेना-तेना गजलक नियम सेहो बदलत खाली रदीफ आ वर्णवृत मने बहरकेँ छोड़ि कऽ। हँ, एक वर्णवृतक बदला आन दोसर वर्णवृत लऽ सकै छी। काफियाक नियम भाषाक उच्चारण बदलिते बदलि जाएत।

8) ऐ पोथीकेँ हम शब्द-तर्पण मानि लेने छी। पं. जीवन झा, कविवर सीताराम झा, आनंद झा न्यायाचार्य, मधुप जी सन गजल-पितर तृप्त भेल हेता से विश्वास अछि।

9) आजुक समयमे जखन की लोक अपन माए-बाप केर बात नै मानैए (हमरा सहित) तखन ई व्याकरणक नियम किएक मानत? तँए हम ई पोथी विवरणात्मक रुपमे लिखने छी मने इजोतक काज जकाँ, इजोत बाटपर पड़ै छै आ लोककेँ चारू दिसक बाट देखाइ पड़ै छै मुदा ओ इजोत बटोहीसँ केखनो नै कहै छै जे ऐ बाटपर वा ओइ बाटपर चल।। जँ व्याकरणयुक्त लिखब तँ बाह-बाह नै तँ चलंत। मानू वा नै मानू ई अहाँक काज अछि हमर काज छल नियम सिखेनाइ। ओनाहुतो जँ अनुशासन देशकेँ महान बना सकैए तँ काव्यकेँ किएक नै? मोटा-मोटी ई मानू जे गजलक ई नियम सभ मुख्यतः हम अपन गजलकेँ नीक बनेबाक लेल मैथिलीमे अनने छी। जँ कियो ऐ पोथीसँ गजलक व्याकरण सीखि कऽ नीक गजल लीखि सकथि तँ ई एहि पोथीक सौभाग्य मुदा ई पोथी हम अपने गजलक अनुशासन लेल लिखने छी। ऐ पोथीक लिखबाक तीनटा आर उद्देश्य छल। पहिल जे मैथिलीक पाठक पहिने किछु दिनक लेल भ्रमकार सभहँक भ्रममे फँसि गेल छलाह। ओ भ्रमकार सभ कहै छलखिन्ह जे गजलक कोनो नियम नै होइ छै। दोसर जे किछु लठैत गजलकार लाठी लऽ कऽ कहैत छलाह जे इएह गजल अछि। ई पोथी हुनकर लाठीकेँ तोड़त से आशा अछि। आ तेसर उद्देश्य जे पहिने आलोचक सभ गजलक आलोचनासँ डेराइत छलाह कारण हुनका लग गजलक कोनो अधार नै छल आशा अछि जे ऐ पोथीसँ हुनका गजल आलोचना लेल

अधार भेटतनि।

10) बहुत संभव जे हमर पोथीमे मुद्रण ओ तथ्यगत दोष रहि गेल हएत। पाठक सभसँ निवेदन जे एकरा देखार करथि । ईहो बहुत संभव जे हमरा नजरिसँ बहुत रास व्याकरणयुक्त गजलकार ओ हुनक गजल छुटि गेल हएत फेर पाठक सभसँ आग्रह जे एकरा देखार करथि। सभ प्रकारक आलोचनाकेँ स्वागत अछि मुदा आलोचक महोदय केर आलोचना तखने सशक्त हएत जखन की ओ मैथिली व्याकरणक संग उर्दू व्याकरणक जानकार होथि। देखल जाइए जे किछु आलोचक हिन्दीसँ संक्रमित तथ्य आनै छथि आ तै बलपर कहै छथि जे गजलक नियम एहन नै ओहन हेबाक चाही। मुदा ई कते हास्यास्पद छै से अहूँ सभ बुझि सकै छिऐ। तँए, तथ्यक मूल प्रारूप आनू आ तकर बाद बहस शुरू करू। हिंदी गजलक अपन समस्या छै जे कि मैथिली गजलक समस्या सेहो बना देल गेल अछि नकलची मैथिली गजलकार सभ द्वारा। जँ गौरसँ देखबै तँ हिंदी गजलक सभसँ बड़का समस्या छै उर्दू शब्दक हिंदी उच्चारणक हिसाबसँ प्रयोग। उदहारण लेल "शहर" शब्दक उच्चारण उर्दूमे "शह्र" होइत छै मने 21 जखन कि हिंदीमे एकर उच्चारण लिखित रूपमे होइत छै मने 12, एही आधारपर दुष्यंत कुमारजीक गजलक आलोचना कएल जाइत छै। हिंदी गजल एखनो "जियादा" आ "जाय्दा" आदिमे फँसल अछि। हिंदीमे देवेन्द्र आर्यजी द्वारा लिखल लेख "हिन्दी ग़ज़ल आलोचना की दिक्कतें" मे एहि समस्याकेँ नीक जकाँ कहल गेल छै। एकर अतिरिक्त हिंदीक आरो आलोचकक आलोचना-लेख सभ देखल जा सकैए। हिंदीमे जँ कोनो आलोचक गजलक शास्त्रीय रूपसँ निकलबाक ओकालति करै छै तकर 90 प्रतिशत मतलब उर्दू-फारसी शब्दक हिंदी उच्चारण बला समस्या होइत छै। नकलची मैथिली गजलकार सभ एकरा बहरक विरोध मानि लै छथि आ प्रलाप शुरू कऽ दै छथि। मैथिलीमे ई समस्या नै छै। मैथिलीमे तँ एकै शब्दक दू-तीन वर्तनी अछि आ सोझ नियम अछि जे जेहन वर्तनी हो तकर मात्राक्रम लिखलाहा हिसाबसँ गिनती हएत। उदाहरण लेल "केयो" आ "कियो" एकै शब्दक दू टा वर्तनी अछि मुदा "केयो" केर मात्राक्रम 22 अछि तँ "कियो" केर मात्राक्रम 12 तँइ एक अर्थमे ईहो कहल जा सकैए जे मैथिली गजलकार सभ नीक जकाँ ने हिंदी गजलसँ परिचित छथि आ ने मैथिलीक व्याकरणसँ तँइ एहि प्रकारक ओझरीमे अपनो फँसैत छथि आ मैथिली गजलकेँ सेहो फँसाबैत छथि। मैथिलक सभसँ बड़का अवगुण छै जे पोथी पढ़ि लेत वा रचना सुनि लेत आ कहत जे बहुत नीक अछि मुदा आर जँ सुधार भऽ जाए आ कने आर जँ मेहनति कऽ लेबै तँ बेसी नीक हएत। मुदा ओ लोक ई नै कहता जे कोन ठाम गलत अछि आ तकर सुधार कोना कएल जाए। हमर आग्रह जे ईहो कहल जाए जे ऐ पोथीमे कतऽ गलती छै आ ओकरा कोना दूर कएल जा सकैए। ऐ पोथीमे बहुत ठाम बहुत लोक, मत ओ विचारक आलोचना कएल गेल छै। मुदा आलोचनाक मतलब खारिज केनाइ नै होइ छै। आलोचनाक मतलब छै जे एकटा निश्चित विचार, रचना वा पोथी (जकर आलोचना भऽ रहल हो) तकर विकास भऽ रहल छै। ऐ दुनियाँक हरेक विषय विज्ञान छै। ई फराक गप्प जे आधुनिक शिक्षामे ओइ विज्ञानकेँ तीन खंडमे बाँटि देल गेलै विज्ञान, आर्टस आ कामर्स। मुदा मूल रूपसँ सभ विषय विज्ञान अछि। आ विज्ञान केकरो खारिज नै करै छै। कारण विज्ञानक नजरिमे हरेक वस्तु, विचार ओ रचनाक उपयोगिता छै।

विज्ञानक जन्म दर्शनसँ मानल जाइत अछि आ दर्शनक पहिल सिद्धांत छै जे हरेक वस्तुक दू पक्ष होइ छै। तँए हम फेर कहब जे आलोचनाक मतलब केकरो खारिज केनाइ नै छै आ हम ओहि दिनक बाटक जोहब जहिया हमर आलोचना हएत।

11) हम अपन जीवनमे सभसँ सिखैत रहलहुँ तँए सभ हमर गुरू छथि। मने हमरा लग साहित्यमे केओ स्थायी गुरू नै भेला। मुदा जँ ई प्रकिया आवश्यक छै तँ ई बूझू जे हमर ग्रामीण स्व. परमानंद लाल (जे की एकतारा हाइ स्कूलक हेडमास्टर छलाह आ हमर औपचारिक एकेडमिक गुरू सेहो), संतोष कुमार राय (बादक एकेडमिक गुरू) आ कलकत्तामे श्री रामलोचन ठाकुर जी हमर साहित्यिक गुरू छथि। ओना ई कहब जरूरी जे गजल लेल हमर एकमात्र गुरू पोथी सभ अछि। सभसँ पहिने कुँअर बैचेनजीक पोथी पढ़ि गजलक अ-आ सिखलहुँ तकर बादे आन-आन पोथी आ लोक सभसँ किछु-किछु गजलक चर्चा भेल।

12) हमर हरेक तरहँक गतिविधिकेँ इंटरनेट पसारलक अछि। आइ गजल जे अपन नव स्वरूपमे अछि तैमे इंटरनेट केर महत्वपूर्ण योगदान छै। जँ ई इंटरनेट नै रहितै तँ “अनचिन्हार “नै रहितै (गजल पहिनेहेसँ छलै आ बादोमे रहितै)। तँए इंटरनेट हमरा लेल दैवी रूपमे अछि। ऐ पोथीमे देल गेल अधिकांश बहस, चर्चा, परिचर्चा फेसबुकपर भेल अछि। ऐठाम ईहो कहब बेजाए नै जे बहुत लोक हमर गजल ओ ऐ किताबमे आएल विचार सभकेँ फेसबुक आ आन सोशल मीडियापर जत्र-कुत्र बिना हमर नाम देने रेफरेन्सक रूपमे प्रयोग केला।

13) वर्तमान समयमे गजलक दू युग निर्धारित भेल (देखू गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा लिखल गेल गजलशास्त्र भाग-14 http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2011/10/blogpo2t_6385.html पहिल “जीवन युग” मने 1905सँ लऽ कऽ 2007 धरि (आधुनिक मैथिलीक पहिल गजलकार पं. जीवन झा जीक नामपर) आ, दोसर “अनचिन्हार युग” मने 2008सँ लऽ कऽ वर्तमान समय धरि (अनचिन्हार आखर http://anchinharakharkolkata.blogspot.in केर नामपर)। ई गप्प हमरा लेल नोबलो पुरस्कारसँ बढ़ि कऽ अछि। बादमे ई आलेख (1सँ 14 धरि) हुनक गजल संग्रह “धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ” मे सेहो आएल।

14) हम अपन ब्लाग अनचिन्हार आखर http://anchinharakharkolkata.blogspot.in पर 25 खंडमे “गजलक संक्षिप्त परिचय “नामसँ लेख माला शुरू केने रही रहए (ई आलेख ब्लागपर 22 जुलाइ 2011सँ शुरू भेल आ 21 सितम्बर 2011कँ 25 खंडमे समाप्त भेल)। प्रस्तुत पोथी ओकरे संशोधित रूप अछि। आ तँए ईहो पोथी 25 खंडमे बाँटल गेल अछि। खण्ड 1सँ खण्ड 24 धरि गजलक व्याकरण अछि आ 25म खण्ड इतिहास। हमर पहिल प्रकाशित पोथी “अनचिन्हार आखर” 2011मे प्रकाशित भेल आ ताहूमे ई “गजलक संक्षिप्त

परिचय “नामसँ लेख छल मुदा आब ओहि पोथीक किछु नियम बेकाजक भऽ चुकल अछि आ ओकर सुधार ऐ पोथीमे कएल गेल अछि। संगे-संग किछु तथ्यात्मक गलती सेहो छल जकरा ऐ पोथीमे दूर कऽ देल गेल अछि। बात हमर पहिल पोथीक चलि रहल अछि तँ एकटा आर गलती हम स्वीकार करऽ चाहैत छी जे ओइ पोथिक गजल 67क दोसर शेर--

“लोक फेकैत रहल पाथरपर पाथर
तकरे बीछि बीछि एकटा घर बना लेलहुँ”

ई शेर डा.कुँअर बैचेन जीक शेरसँ पूर्णतः मेल खाइत अछि। मेल की अनुवाद कहनाइ सही हेतै। हमरा जनैत ई असावधानी वश भेल अछि। तथापि ई गलत छै आ हम एकरा स्वीकार करैत छी। डा. कुँअर बैचेन जीक मूल शेर एना अछि—

दुनिया ने मुझपे फेंके थे पत्थर जो बेहिसाब
मैंने उन्हीं को जोड़ के कुछ घर बना लिए

जै कारणसँ हो मुदा हम अपन गलती स्वीकार करै छी। एही पोथीसँ संबंधित एकटा आर गप्प जे एहि पोथीक कभर-लेखनमे गजेन्द्र ठाकुरजी एहि पोथीकेँ मैथिली गजलक पहिल बहर अधारित संग्रह कहने छथि। निश्चित तौरपर सुनएमे नीक लागै छै मुदा जेना-जेना गजल संबंधित काज होइत गेल तेना-तेना स्पष्ट होइत गेल जे मैथिलीमे बहर अधारित गजल संग्रह पहिनेसँ छल मुदा मैथिलीक किछु अतार्किक गजलकार—संपादक सभ ओकरा दबने छल। तँइ एकटा जिम्मेदार लेखक केर धर्म निमाहैत हम स्पष्ट करी जे “अनचिन्हार आखर” मैथिलीक पहिल बहर अधारित गजल संग्रह नै अछि। ओइसँ पहिने विजयनाथ झाजीक गजल संग्रह आबि चुकल छलनि 2008 मे। हमर पोथी सरल वार्णिक बहरमे कहल गजलक पहिल पोथी जरूर अछि।

15) आइसँ किछु दिन पहिने हमरा एकटा एहन लोक भेटला जे की गजलक नामे सुनि तामसमे आबि जाइ छथि। हुनका मतें मैथिलीमे गजलक नाम बदलबाक चाही कारण ई उर्दू शब्द थिक आ ऐसँ मैथिली भ्रष्ट भऽ जाएत। ओ छलाह तँ गजलक विरोधी मुदा हमरा अपना घर लऽ गेलथि। खूब सत्कार भेल। सत्कारक क्रममे ओ अपन कनियाँकेँ सोर पाड़लखिन्ह “खुश्बू, कने एम्हर आउ” । खएर हम पहिने सत्कार लेलहुँ मने भरिपेट नाश्ता केलहुँ आ गरम चाह पीलहुँ आ ताही क्रममे हुनकासँ पुछलिअन्हि जे श्रीमान अपने गजलक नाम किए बदलऽ चाहै छिऐ। ओ नाना तरहँक समस्या देखेला, मैथिलीक गरिमामयी बात सुनौला। अंतमे हम अपन चप्पल कसि कऽ बन्हलहुँ कहलिअन्हि जे सरकार अहाँ अपन कनियाँक नाम बदलि लिअ कारण “खुश्बू” सेहो उर्दू शब्द छै आ जखन अहाँक परिवारे भ्रष्ट अछि तखन मैथिलीक चिन्ता बेकार। तकर बाद की भेलै पता नै। हरेक दोसर भाषाक ओ ओकर शब्दक मैथिलीकरण हेबाक चाही मुदा “संघी” ओ “इस्लामिक” भावनाके हटा कऽ। तेनाहिते आर एक

गोटेकैँ ऐ दुआरे तामस छलनि जे मुसलमान कवि सभ अपन नामक आगू अपन गाम वा शहरकैँ जोड़ि दैत छै। हुनका मोताबिक ई बेकार। ओहि श्रीमानकैँ हम कहलिअन्हि जे सरकार तखन तँ अहाँक पूर्वजे बेकार छल हेता। ओ खिसिआ कऽ पुछला जे कोना, हम जबाब देलिअन्हि जे अहाँ अपन या अन्य कोनो मैथिल ब्राह्मणसँ मूल पूछि लिअ। ई गाम वा शहरक नाम मुसलमान कवि लेल मूले सन छै। कमसँ कम मुसलमान शाइर सभ एकैटा गाम या शहरक नाम जोड़ै छथि। मैथिल ब्राह्मणक मूलमे तँ दू-दू टा गामक नाम जुटल रहै छै।

16) किछु कथित प्रगतिशील साहित्यकार-चिंतक सभ भाव ओ कथ्य लेल अनेरे परेशान रहै छथि। भाव या कथ्य की थिक तकरा विस्तारपूर्वक पढ़बाक लेल 22म खंडक “गजलक भाव ओ कथ्य” बला प्रभाग देखू।

17) ऐ पोथीकैँ लऽ कऽ कोनो घमंड करऽ बला गप्प नै छै। मुदा जँ कनियौँ-मनी घमंडक गप्प छै तँ ई जरूर टूटत। आ हमर ई घमंड तखन टूटत जखन की भविष्यमे एहू पोथीसँ नीक पोथी गजलपर एतै। ओना हमर घमंड टुटनाइ ओतेक महत्व नै राखै छै जतेक महत्व ई राखै छै जे आर नीक पोथी एलासँ मैथिली गजल दू डेग आर आगू बढ़त।

18) 10 मार्च 2001 हमरा जीवन लेल बहुत महत्वपूर्ण अछि। कारण जे 10 मार्च 2001कैँ दिन कलकत्ताक एकटा पार्क (सेंट्रल पार्कमे) हमरा बुझाएल जे मैथिलीमे शेरो-शाइरीक बेसी जरुरति छै आ हम निश्चय सेहो केलहुँ आ ओही ठामसँ हमर ई शेरो-शाइरी निकलल। आइ हम धन्यवाद देबए चाहबन्हि ओहि अनाम युवक-युवतीकैँ जे 10 मार्च 2001कैँ अपन समस्त क्रियाकलाप मैथिलीमे केलाह मुदा प्रेमक स्वीकारोक्ति उर्दू शाइरीसँ। हम ओही ठामसँ अपन शेरो-शाइरी लेखनक जन्म मानैत छी। हमरा ओही दिनसँ गजलक भूत सवार भेल।

19) किछु गबैया सभ कविता गाबि कऽ कविते अथवा गीतकैँ गजल घोषित कऽ दै छथि। एकरो विस्तृत विवरण 22म खंडक “गजलक संगीत” बला प्रभागमे भेटत।

20) ऐ पोथीकैँ उचित सम्मान तखने भेटतै जखन की एक काल खंडमे कम 75-100 टा बहर युक्त गजलकार सक्रिय रहथि। आ हम मात्र कर्म करैत इच्छा कऽ सकै छी।

21) किछु लोक, किछु लेखक-साहित्यकारक ई विचार छनि जे ज्ञानकैँ रहस्यमय बना देलासँ। दस-बीस बर्खमे किछु ज्ञान बाँटि देलासँ ओहि लेखक-साहित्यकारक मान-सम्मान बढ़ैत छै आ पूरा-पूरी ज्ञान दऽ देलासँ बादमे कियो नै पूछै छै। हम व्यक्तिगत तौरपर मानै छी जे एहन मानसिकता छै लोकमे मुदा तकर चिन्ता छोड़ि हम गजलक पूरा-पूरी ज्ञान इंटरनेट आ ऐ पोथीमे देलहुँ। भऽ सकैए जे भविष्यमे हमरो कियो नै पूछए मुदा जेना

हवा-पानि सभ फ्री आ सर्वसुलभ रहितों अपन उपयोगिता बनेने रहै छै तेनाहिते हमरो विशवास अछि जे हमर ई गजलक ज्ञान फ्री आ सर्वसुलभ रहियो कऽ जनमानस लेल उपयोगी बनल रहत।

22) हम अपन प्रस्तुत ऐ पोथीकेँ तैयार करबासँ पहिने आ ओइ समयमे निम्नलिखित पोथी, पत्र-पत्रिका सभहँक अध्ययन केलहुँ जे की हमरा लेल संदर्भ ग्रंथक काज केलक। संगे-संग बहुतों लोक, इंटरनेटपर उपस्थित बेवसाइट आ स्थान सभसँ सहायता भेटल। पोथी, पत्र-पत्रिका, इंटरनेटपर उपस्थित बेवसाइट, स्थान आ व्यक्तिक नाम भाषाक हिसाबें बाँटि कऽ देल जा रहल अछि—

मैथिली

a) मिथिला भाषा विद्योतन (महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झा, संपादक एवं प्रकाशक-गोविन्द झा, द्वितीय संस्करण-1993)

b) मैथिली छन्द शास्त्र (पं.गोविन्द झा, प्रकाशक- मिथिला पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, द्वितीय संस्करण-1987)

c) मैथिलीक उद्भम ओ विकास (पं.गोविन्द झा, प्रकाशक- मैथिली अकादेमी, पटना, संस्करण-1987)

d) उच्चतर मैथिली व्याकरण (पं.गोविन्द झा, प्रकाशक- मैथिली अकादेमी, पटना,द्वितीय संस्करण- फरवरी 1992)

e) मैथिली परिचायिका (पं.गोविन्द झा, शेखर प्रकाशन, पटना-प्रथम संस्करण-2006)

f) मैथिली परिशीलन (पं.गोविन्द झा, प्रकाशक- मैथिली अकादेमी, पटना, प्रथम संस्करण-2007)

g) आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना (डा. बालगोविन्द झा व्यथित, ई पोथी हमरा लग खंडित रूपमे अछि)

h) कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक (श्री गजेन्द्र ठाकुर, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण)

i) श्री गजेन्द्र ठाकुर। कलकत्ताक बाद हमर साहित्यिक उत्थानमे दिल्लीक मुख्य भूमिका अछि आ हमरा लेल दिल्ली आ श्री गजेन्द्र ठाकुरमे अंतर नै अछि। दोसर शब्दमे कही तँ जतेक ई पोथी हमर अछि ततेक श्री ठाकुरोजीक छनि।

j) विदेह (www.videha.co.in)

k) गाम भटरा घाट (बिस्फी), कलकत्ता, दिल्ली आ गौहाटी।

l) कलकत्ताक ओ संस्था सभ जे हमरा सार्वजनिक पाठ करबाक अवसर देलक से मोन पड़ि रहल अछि। ओना "मिथिला विकास परिषद्" पहिल संस्था अछि जकर मंचपर पहिल बेर हम सार्वजनिक पाठ केने रही आ तइ लेल श्री कृष्णमोहन झा आ विनोद ठाकुर जे की हमर सहपाठी छलथि हुनक (दूनू दुलहा गामक) बेसी जोर छलनि। आ ऐ गोष्ठीक बादें हम बहुत लोकसँ परिचित भेलहुँ। कलकत्तासँ संचालित संपर्क नामक मासिक बैसार ओ ओइमे उपस्थित सभ गोटाक सेहो ॠणी छी हम ।

m) गूगल आ ओकर ब्लाग सेवा (www.blogger.com)

n) फेसबुक (www.facebook.com)
o) गजलक विरोधी ओ समर्थक लोकनि।
p) ऐकैँ अलावे सौंसे छीटल संस्कृत काव्य ओ धर्मग्रंथ सभ सेहो हमर संदर्भमे काज आएल।
q) मैथिलीक मौखिक लोकगीत जे की आइ-माइ-दाइ सभहँक कंठसँ सुनलहुँ।
r) "मैथिलीमे गजल" डा. रामदेव झा, रचना जून 1984मे प्रकाशित
s) मैथिली व्याकरण आओर रचना (युगेश्वर झा)
t) मैथिली संस्कार गीत--उमेश मंडल
u) उपरमे जतेक नाम देल गेल अछि ताहूसँ बेसी महत्वपूर्ण छथि हमर जन्मदाता, घर-परिवारक लोक, गामक लोक, खेत-पथार, हीत-मीत, पहिल किलाससँ लऽ कऽ एखन धरिक शिक्षक महोदय सभ। संगे-संग "बाली" केर चर्च सेहो आवश्यक। लखनपुर बाली। जन्मक बादसँ हुनको देखैत रहलिऐक आँगनमे। पाबनि-तिहार बला काज, मूड़न-उपनयन बला काज, साँझ-भोर पानि भरऽ बला काजक संग बहुत दिन धरि देखिते रहिलिऐ। तँए बाली केर चर्च छोड़ि किछु ने भेटत। उपरमे देल पोथीक अतिरिक्त आरो पोथी अछि जकर चर्च एही पोथीमे आगू चलि संदर्भक संग भेल अछि।

English

1) Meters and Formulas: The case of ancient Arabic poetry. By Bruno Paoli
2) The phonology of classic Arabic meter. By Chirs Golston & Tomas Riad.
3) Poetries in contact: Arabic, Persian & Urdu. By Ashwini Deo & Paulki Parsky
4) Meters of Classic Arabic poetry. By Pegs, Cords & Ghuls
चारू पोथी गूगलपर उपल्बध अछि।

हिन्दी-उर्दू

1) गजल का व्याकरण (डा. कुअँर बैचेन, प्रकाशक-अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-1996)
2) गजल लेखन कला (आर.पी.शर्मा महर्षि, मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2005)
3) गजल और गजल की तकनीक (आर.पी.शर्मा महर्षि, प्रकाशक- जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2009)
4) आसान अरूज (डा. मोहम्मद आजम, शिवना प्रकाशन, सीहोर, प्रथम संस्करण-2012)
5) नया ज्ञानोदय गजल विशेषांक जनवरी 2013
6) सुबीर संवाद सेवा (http://subeerin.blogspot.in)
7) ओपन बुक्स आनलाइन (http://www.openbooksonline.com)

8) श्री वीनस केसरी, श्री सौरभ पाण्डेय, तिलकराज कपूर
9) ग़ज़ल की बाबत (वीनस केसरी, प्रकाशक-अंजुमन प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण- Oct. 2015)
10) मात्रिक छंदो का विकास (डा. शिवनन्दन प्रसाद, प्रकाशक- बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्रथम संस्करण-1964)
11) अप्रभंश व्याकरण (आचार्य हेमचंद्र, अनुवादक शालिग्राम उपाध्याय, प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-1958)
12) प्राकृत भाषाओं का रूप दर्शन (आचार्य नरेन्द्र नाथ, प्रकाशक-रामा प्रकाशन, लखनऊ, संस्करण-1963)
13) लफ्ज ग्रुप https://lafzgroup.wordpress.com/
14) रेख्ता (https://rekhta.org)
बहुत रास फोटो गूगल इमेजसँ लेल गेल अछि।

23) गजल विधापर लगातार काज करबाक पुरस्कार स्वरूप हमरा किछु आन नाम सभ सेहो भेटल जे एना अछि--गजल गोहि, गजल कुत्था, गजल हगना, गजल पदना, गजल मुतना, गजल छेड़ना, गजली, गजल गिजना, गजाली बाबू, बहर बताह.. आदि। मैथिली साहित्यमे शाइदे एतेक नाम किनको नसीब भेल हेतनि। एकरा हम अपन सौभाग्य बूझै छी। हम ऐ ठाम पोथी, व्यक्ति, स्थान, नेट आदिक उल्लेख तँ केलहुँ मुदा हुनका सभकेँ हम धन्यवाद नहि देबन्हि। कारण लोक धन्यवाद दए कए अपन कर्जा उतारि लैत अछि। मुदा हमरा ई कर्जा उतरबाक इच्छा नहि अछि। हम जीवन भरि आभारी रहए चाहैत छी हुनका सभहँक प्रति। हम अपन पहिल पोथीमे बिना नाम देने धन्यवाद देने रहिअन्हि सभकेँ (हँ, रेफरेन्स बलाकेँ मेलसँ अनुमति लेने रहिअन्हि) तँ किछु लोक पूछि सकैए छथि पहिल पोथीमे नाम सार्वजनिक कऽ धन्यवाद किएक नै देलियै? आ एकर उत्तरमे हम मात्र एतबे कहि सकै छी जे ऐ पोथीमे जतेक मेहनति हम केलहुँ ततेक मेहनति हम आन कोनो किताबमे चाहियो कऽ नै कऽ सकै छी। तँइ एक्ट्ठे अइ पोथीमे सभहँक नाम देल गेल। एहि पोथीमे जतेक संदर्भ ग्रंथ देल गेल अछि तकरा पाठक पढ़थि कारण किछु पुरान गजलकार सभ इएह सोचि रहल छथि जे आशीष अनचिन्हार अपना मोनसँ ई नियम सभ बना रहल छै। अंतमे अति महत्वपूर्ण गप्प मैथिलीमे एकेडमिक साहित्यिक चोर आ नकलबाज सभ बहुत छथि। हमरा बूझल अछि जे ओ एकेडमिकिया सभ हमर पोथीक अंश सभ बिना अनुमति ओ बिना नाम देने अपन पोथीमे देता आ दऽ कऽ पुरस्कार,सम्मान ओ PHDक उपाधि लेता। ओना ऐ तरहँक चोरीक शुरूआत भऽ चुकल अछि। दीपनारायण विद्यार्थी अपन गजल संग्रहमे अनचिन्हार आखरक पूरा लेख उतारि गेला मुदा कोनो रेफरेन्स नै देल गेल। बादमे विदेह पत्रिका द्वारा ई मामिला उठेलापर ओ संपादक महोदयकेँ मेल दए अपन गलती मानलथि। एहन-एहन घृणित उदाहरण आर बेसी भेटत से हमरा विश्वास अछि। किछु लोक आपत्ति सेहो कऽ सकै छथि जे दीपनारायण गलती मानि लेलथि तँ फेर ई बात उखाड़बाक कोन जरूरति? मुदा कहि दी जे ई पोथी व्याकरणक संग-संग इतिहासक सेहो छै आ इतिहासमे नीक-बेजाए दूनू तथ्य

रहै छै। ऐ प्रकरणपर भेल सभ कार्यवाहीकेँ ऐ लिंकपर देखल जा सकैए -
http://www.videha.co.in/videhablog.html
हम प्रिंटमे ओतेक विश्वास नै राखै छी तँइ एहनो हएत जे हमरासँ पहिने कियो मैथिली गजलक व्याकरण लीखि प्रकाशित करबा लेथि तकरो स्वागत मुदा हुनकासँ आग्रह जे कमसँ कम ओ जाहिठामसँ तथ्य लेथि ओकरा क्रेडिट देबामे बैमानी नै करथि संगे-संग गजलक नियमकेँ मैथिली भाषाक अनुकूल राखथि। एहि पोथीक व्याकरण खंडमे बहर देखेबाक लेल जे गजल देल गेल अछि से पूर्णतः बहर बला गजल अछि मुदा संभव जे ओकर गजलकार किछु कारणसँ बिना बहरक गजल लिखने होथि अथवा लिखता। मुदा हमरा बहरसँ मतलब अछि गजलकारसँ नै। गजलकार लग बहुतो समस्या भऽ सकै छनि। किनको पुरस्कार चाही तँ किनको लिस्टमे नाम आ ताहि लेल बिना बहरक गजल सेहो लीखि सकै छथि आ हमरा ताहिसँ दिक्कत नै अछि। सभहक एकटा समय होइत अछि आ हेबाको चाही।

आशीष अनचिन्हार

खण्ड-1

आइ हमरा लोकनि बैसल छी अरबी-फारसी-उर्दूक लोकप्रिय शाइरी विधा गजलपर चर्चा करबाक लेल। मुदा गजलपर चर्चा करबासँ पहिने दू टा गप्प जानि लेब जरूरी पहिल ई जे मैथिलीमे “ग” आ “ज” आदिमे नुक्ता नै लागै छै तँइ मैथिलीमे “ग़ज़ल” शब्द गलत अछि आ “गजल” शब्द सही दोसर गप्प ई जे गजल लेल सही काफिया, एक समान बहर आ दमदार कहन मूल तत्व होइत छै आ एकर सभहँक वर्णन आगू कएल गेल अछि। आब अरबी-फारसी-उर्दूक किछु एहन प्रतीक आ शब्दावलीक चर्चा करब जे की मैथिलीमे भ्रमपूर्ण तरीकासँ पसरल अछि (अर्थक संदर्भमे) तकरा बाद गजलक। प्रतीक मने एहन इशारा जे की कोनो निश्चित वस्तुक बोध कराबैत हो। लक्षणा आ व्यंजनाक द्वारा काव्य वा शाइरीमे एकै प्रतीकक एकटासँ बेसी अर्थ भए जाइत छै आ पाठक वा श्रोता ओकरा अपन-अपन बुद्धिक हिसाबें ओकर अर्थ लगबैत छथि। तँ आउ देखी अरबी-फारसी-उर्दूक किछु शब्दावली---

1) मए (हिन्दीमे मय वा हाला) मने शराब। मैथिलीमे शराब बदला जँ ताड़ी शब्दक उपयोग करी तँ नीक। भाँग आदि परंपरागत निशासँ गजलमे जान ने आएत। कारण भाँग अपने पीसू आ पीबू। जखन की ताड़ी आन हाथसँ (अरबीमे साकी केर हाथसँ) । ओना जँ शाइर भाँगसँ गजलमे चमत्कार आनि सकथि तँ ई स्वागत योग्य गप्प हएत।

2) मीना एकरा मैथिल सभ नीक जकाँ चिन्है छथि। मीना बदने जकाँ होइत छै। बदना घर-आँगनक काज लेल होइत छै तँ मीना शराब वा बेसी मात्रामे पानि भरबाक लेल। मीना लेल सुराही शब्दक प्रयोग सेहो अछि अरबीमे। सुबू सेहो कहल जाइत छै मीनाकेँ। मैथिलीमे “कटिया “, “लबनी” वा “डाबा” शब्द नीक रहत। मीना वा मीने सन आकार-प्रकारक बरतनकेँ रंगसँ सजेबाक कलाकेँ “मीनाकारी” कहल जाइत छै।



ई भेल मीना

मैना पक्षीकैँ अरबी मे “मीना” सेहो कहल जाइत छै आ अरब केर एकटा भागक नाम सेहो “मीना” छै। डाबा, कटिया आ लबनी प्रायः एकै होइत अछि। ई घैलक छोट आकार भेल। आ घैले जकाँ एकर अंत चौड़ा आ मूँह छोट होइत छै। किछु आकार-प्रकारमे भेद भऽ जाइत छै से हम जरूर मानब। मुदा बहुत बेसी भेद नै छै।



ताड़ीसँ भरल लबनी आ गिलास



ताड़क गाछमे लगाएल लबनी



विभिन्न प्रकारक डाबा, कटिया लबनी आदि।

3) सागर मने पेआला। उत्थर बाटी सनक होइ छै ई। बादमे स्टैण्ड बला गिलास सभ सेहो एहि श्रेणीमे आबि गेल। फारसीमे एहि लेल “जाम” शब्द प्रचलित छै। उर्दूमे पैमाना सेहो कहल जाइत छै। पैमानाक शाब्दिक अर्थ छै “नपना” जाहिमे कोनो तरल पदार्थ नापि कऽ देल जाए। बहुत संभव जे मयखानामे शराब नापि कऽ देल जाइत रहल हो तँइ सागर कि जाम कि गिलासकेँ पैमाना सेहो कहल गेल हेतै। भारतमे तीनू शब्द प्रचलित छै। एखनुक समयक हिसाबसँ गिलास सेहो “सागर” कि “पेआला” भऽ सकैए। संस्कृतमे एकरा "चषक" कहल जाइत छै।



ई भेल सागर।

4) पैग—गिलास वा पेआलामे निश्चित मात्रामे देल गेल शराब वा ताड़ीकेँ “पैग” कहल जाइत छै। भारतमे

पटियाला पैग बहुत प्रसिद्ध अछि। मैथिलीमे शराब शब्दक संगे ताड़ी प्रयोग कएल जेबाक चाही। जँ ताड़िएक प्रयोग हो तँ अतिउत्तम। पैग लेल मैथिली शब्दक निर्माण जरूरी अछि। मैथिलीमे “चिखना” शब्द पहिनेहेसँ अछि। चिखना मने एहन नमकीन जे कि शराब वा ताड़ीक संगे नीक लगैत हो। पारंपरिक रूपसँ भूजल चना, माछ आदि चिखना भेल मुदा आइ-काल्हि बड़का होटल सभहँक कृपासँ “स्टार्टर” (starter) शब्द सेहो बेसी प्रचलित अछि। “स्टार्टर” मने शुरू करए बला। होटल सभमे खेनाइसँ पहिने सलाद, पियाज केर भितरका गुद्दा आदि देल जाइत छै। ई “स्टार्टर” चिखनाक आधुनिक रूप भेल।

5) साकी--अरब देशमे शराब परसए बला पुरुषकेँ “साकी “कहल जाइत छै। हिन्दी बला सभ साकी शब्दकेँ स्त्रीलिंग मानि ई बुझै छथि जे साकी स्त्री वा जुआन छौंड़ी होइ छै। चूँकि हिन्दीमे “ई “मात्रा लागल शब्द स्त्रीलिंग होइ छै तँ ओ सभ साकीकेँ सेहो स्त्रीलिंग मानै छथि, मुदा ई भ्रम अछि। साकी वास्तविक रूपमे पुरुष होइ छै। मैथिलीमे हमरा हिसाबें “पासी “शब्द सही रहत साकी लेल । मात्रासँ लऽ कऽ लय धरि मिलैत छै। पासी एकटा मैथिल जाति अछि जकर काज छै ताड़क गाछसँ ताड़ी उतारि बेचब। मुदा आजुक राजनीतिमे पासी शब्द खराप नै लागै ताहि लेल “पासी भाइ “कहि प्रयोग करी तँ बेसी नीक। जखन एक बेर नीक जकाँ मैथिली गजलमे पासी शब्दक प्रयोग आबि जाएत तँ फेर कोनो दिक्कत नै। ओनाहुतो अरबी-फारसी-उर्दूमे साकी केर बहुत इज्जत छै।

6) मएखाना --ओ जगह जै ठाम शराब भेटैत हो। एकरा मएकदा (मैकदा) सेहो कहल जाइत छै। हमरा हिसाबें मैथिलीमे “तड़िखाना “वा "पसिखाना" शब्द सर्वोत्तम रहत। संक्षेपमे एना बुझू---Wine (शराब), Tavern (मएखाना), Wine-flask (मीना), Wine-cup (सागर), Peg (पैग), आ Wine-provider (साकी)।

7) वफा--ऐ शब्दक अर्थ छै “केकरो प्रेमभाव” मे स्थिर भेनाइ। मने कोनो एक दोसर लेल स्थिर रूपसँ प्रेमभाव राखै। फेसबुकपर हम एकरा लेल सुझाव मँगने रही आ उत्तरमे बहुत रास शब्द जेना नेह-निष्ठा, निष्ठा, निष्ठावान, एकनिष्ठ आदि भेटल। शाइर उपयुक्त शब्दक चयन कऽ सकै छथि। सुझाव देनिहार सभगोटाकेँ धन्यवाद। एकटा गप्प मोन राखब बेसी उचित जे मैथिलीमे “वफादार” शब्द प्रचलित तँ अछि मुदा “वफा” नै। एहन परिस्थितिमे हम कोनो आर कोमल आर मधुर शब्दक प्रतीक्षामे छी।

8) बेवफा--जे एक दोसर लेल स्थिर रूपसँ प्रेमभाव नै राखि सकए तकरा बेवफा कहल जाइत छै। एकरा लेल मैथिली शब्द हरजाइ अछि। ओना हरजाइ शब्द सेहो फारसिए-उर्दूक थिक मुदा मैथिलीमे प्राचीन कालसँ प्रयोग होइत रहल अछि। अंग्रेजीमे एकरा Unfaithful कहल जाइत छै। एकर अतिरिक्त Untrustworthy शब्दक सेहो प्रयोग हरजाइ लेल कऽ सकैत छी। कविवर सीताराम झा स्त्री लक्षणमे एकरा चंचला स्त्री लेल लेने छथि। ई शब्द गजलमे पुरूष ओ स्त्री दूनू लेल अछि। मैथिल एकरा मात्र ओहन स्त्री लेल मानै छथि जे कि अपन बियाह पूर्व

प्रेमकैँ नै निबाहि सकल। ई अवधारणा गलत अछि। आधुनिक उर्दूक प्रारंभिक गजलकार “हरी चंद अख़्तर” जीक ई शेर देखू--

हमें भी आ पड़ा है दोस्तों से काम कुछ यानी
हमारे दोस्तों के बेवफ़ा होने का वक़्त आया

स्पष्ट अछि जे “बेवफा” कोनो प्रेम नै निमाहि सकलापर कहल जाइ छै (फेसबुकपर हम एकरा लेल सुझाव मँगने रही आ उत्तरमे बहुत रास शब्द जेना निष्ठाहीन, छलिया, कपटी आदि भेटल। शाइर उपयुक्त शब्दक चयन कऽ सकै छथि। सुझाव देनिहार सभ गोटाकैँ धन्यवाद। मुदा हमरा जनैत हरजाइ नीक रहत)।

9) बेवफाई--बेवफा के भाववाची बेवफाई भेल। एकर अर्थ होइ छै “अमुक हमरा संग प्रेमभाव स्थिर नै रखलक” । एकरा लेल मैथिली शब्द “हरजइपन”, “हरजाइपन”, “कपटपन” नीक रहत ओना आनो शब्द सभहँकैँ ऐ लेल आनल जाए।

10) एकतरफा प्रेम--एकर मैथिली “एकभगाह प्रेम” वा “एकदिसाह प्रेम” बेसी नीक।

11) हुस्न---हुस्न केर अर्थ छै सौन्दर्य आ सौन्दर्य किच्छो केर भऽ सकै छै। सजीवसँ निर्जीव वस्तु धरिक अपन-अपन सौन्दर्य होइ छै मुदा मैथिलीमे हुस्न की सौन्दर्य केर मतलब लड़की केर सुन्दरता मानल जाइत छै जे कि अनर्थकारी ओ भ्रामक अछि। एकर मैथिली रूप लेल “सुनरताइ” नीक विकल्प भऽ सकैए।

12) इश्क---प्रेमकैँ इश्क कहल जाइत छै आ इश्क केकरोसँ किछुसँ भऽ सकै छै। मैथिल सभ इश्क मने मात्र लड़का-लड़कीक प्रेम बूझै छथि जे कि भ्रामक आ गलत अछि। मैथिलीमे इश्क लेल “प्रेम”, “नेह” आदि शब्द अछि। इस्लाममे इश्क वा प्रेमक सात स्तर होइत छै आ अही सात स्तरसँ गुजरि कऽ कियो महान आशिक वा प्रेमी कहबैत छै। ई सातो स्तर एना अछि--
1. हब (Attraction) एकर मतलब भेल आकर्षण, केकरो देखि कऽ मोहित भऽ जाएब।
2. उन्स (Infatuation) एकर मतलब भेल जकरा देखि मोहित भेलहुँ तकरा प्रति आसक्त भऽ जाएब।
3. इश्क (Love) एकर मतलब जे जकरा प्रति अहाँ आसक्त छी तकरा प्रति एकनिष्ठ भऽ जाएब।
4. अकीदत (Reverence) एकर मतलब जे जकरा प्रति अहाँ एकनिष्ठ छी तकर इज्जत करब, ओकर मान-सम्मानक देखभाल करब।
5. इबादत (Worship) एकर मतलब जे जकरा प्रति अहाँ एकनिष्ठ छी जकर अहाँ इज्जत करै छी, ओकरा प्रति सदिखन श्रद्धा भाव राखब।

6. जुनून (Obsession) एकर मतलब जे जकरा प्रति अहाँ एकनिष्ठ छी जकर अहाँ इज्जत करै छी, जकरा प्रति अहाँ सदिखन श्रद्धा भाव राखै छी तकरा लेल कोनो तरहँक साध्य-असाध्य काज कऽ सकब।

7. मौत (Death) एकर मतलब जे जकरा प्रति अहाँ एकनिष्ठ छी जकर अहाँ इज्जत करै छी, जकरा प्रति अहाँ सदिखन श्रद्धा भाव राखै छी, जकरा लेल कोनो तरहँक साध्य-असाध्य काज कऽ सकै छी तकरा लेल मरियो जाएब। आध्यत्मिकतामे मौतकेँ “फना” कहल जाइत छै। फना मने विलीन भऽ, मीलि जाएब, नष्ट भऽ जाएब आदि छै।

जँ भारतीय संदर्भमे कहल जाए तँ एहू ठाम प्रेमक स्तर बाँटल गेल छै। महान वैष्णव भक्त एवं रसिक शिरोमणि श्री रूप गोस्वामी (1493-1564) अपन महान कृति “भक्तिरसामृतसिन्धु” मे प्रेमक स्तरक वर्णन केने छथि जे एना अछि (ई विकीपीडिया सूचना आधारित अछि) --------

1) स्नेह----हृद्य द्रवित भेनाइ स्नेहक लक्षण थिक। प्रेमक शुरूआतमे एकर रूप अस्थायी होइत छै।

2) मान---स्नेहक कारणे अपना भीतर उदासीनता अनुभव करब मान कहबै छै। स्नेहकेँ पुष्ट आ बढ़ेबाक लेल जखन रूसब सन क्रिया होइत छै तखन ओकरा मान कहल जाइत छै (मान केर ई दोसर व्याख्या छै मुदा हमरा जनैत पहिल ठीक अछि)

3) प्रणय---जखन प्रेमी-प्रेमिका एक दोसराक संग तादात्म्य अनुभव करैत छै तखन ओकरा प्रणय कहल जाइत छै।

4) राग---जखन प्रेमी-प्रमिका अपन प्रेमक लेल सांसारिक दुख ओ यातना बरदास्त करए लागै छथि आ ओहि यातनामे सेहो आनंद पाबै छथि तखन ओकरा राग कहल जाइत छै।

5) अनुराग---जखन प्रेमी अपन प्रिय केर हरेक काजसँ आनंदित हो, अपन प्रिय केर हरेक आचरणमे ओकरा मधुरता भेटैत हो तखन ओहि वृतिकेँ अनुराग कहल जाइत छै।

6) भाव---अपन हृद्यक बाँचल कठोरताकेँ समाप्त क' देनाइ भाव कहाइत छै। एकर दोसर नाम रति सेहो छैक।

7) महाभाव---जखन प्रेमी-प्रेमिका दूनू समपर्ण क' एक दोसरमे मीलि जाइत छै तखन महाभाव केर स्थिति होइत छै। एकर दोसर नाम प्रेमा सेहो छै। हमरा जनैत अर्धनारीश्वर महाभाव केर सभसँ नीक उदाहरण अछि।

रूप गोस्वामी जीक बाद आनो टीकाकार सभ आन-आन भेद सभ देने छथि मुदा सभहँक मूल रूपे गोस्वामी जीक पोथी अछि। एहिठाम रूप गोस्वामी जीक उदाहरण एहि लेल देलहुँ जे संत हेबासँ पहिने गोस्वामीजी बंगालक राजा हुसैन शाहक मंत्री छलाह आ फारसीक महान विद्वान सेहो। आश्चर्य नहि जे गोस्वामी जी इस्लामक छाया ग्रहण केने होथि प्रेमक स्तर निर्धारणमे।

13) आशिक---इश्क वा प्रेमक सातो स्तरकेँ जे पारक केलक सएह टा आध्यात्मिक रूपसँ आशिक कहबैत छै। सांसारिक रूपसँ छह स्तरकेँ पार करए बलाकेँ सेहो आशिक कहल जाइत छै। मने जे प्रेम करै छै तकरा आशिक

कहल जाइत छै आ जकरासँ प्रेम कएल जाइ छै तकरा माशूक कहल जाइत छै। आशिक आ माशूक दूनू उभयलिंगी शब्द छै। एकटा उदाहरण लिअ मानू जे अनचिन्हार साधनासँ प्रेम करै छै तँ अनचिन्हार “आशिक” भेलै आ “साधना” माशूक भेलै। तेनाहिते “साधना” अपने आशिक हेतै आ अनचिन्हार साधना लेल माशूक बनि जेतै (जँ एकतराफ प्रेम छै तखन एकै पक्षक बूझू मने अनचिन्हार साधनासँ प्रेम करै छै मुदा साधना नै तखन अनचिन्हार आशिक हेतै आ साधना माशूक मुदा साधना ने तँ आशिक हेतै ने अनचिन्हार माशूक)। उम्मेद अछि जे ई बुझबामे आएल हएत। एहि प्रसंगकेँ बुझबा लेल बेसीसँ बेसी निर्गुण आ सूफी संगीत सुनबाक चाही (साधना पराभौतिक अर्थमे अछि)। एहि ठाम मोन राखू जे माशूका शब्द भारतमे गढ़ल गेल छै।

14) हसीना--सुंदर स्त्रीकेँ “हसीना” कहल जाइत छै। फेसबुकपर माँगल सुझावमेसँ सभसँ नीक हमरा “सुंदरि”, “सुनरकी”, “सुरतिगर”, “ललमुनियाँ” आदि नीक लागल। सुझाव देनिहार सभ गोटाकेँ धन्यवाद।

15) दीवाना--ओना तँ दीवाना मने कोनो काजक प्रति जकरा उन्माद रहै तकरा कहल जाइ छै मने उन्मादी। कोनो काजक प्रति समर्पित लोक वा कोनो काजकेँ सीमासँ बाहरसँ जा कऽ करऽ बलाकेँ सेहो दीवाना कहल जाइत छै मुदा मैथिलीमे खाली लड़कीक प्रेममे पागल लेल दीवाना बूझल जाइ छै से गलत अछि। मैथिलीमे हमरा हिसाबें दीवाना लेल उन्मादी शब्द नीक रहत।

16) उर्दूमे “खुमार” आ “सुरूर” दुन्नू नशा लेल प्रयोग होइत छै मुदा “खुमार” प्रायः ओहन नशाकेँ कहल जाइत छै जे कि उतरैत हो (मने शराब पीलाक बाद किछु घंटाक बाद बला नशा) जखन कि “सुरूर” चढैत नशाकेँ कहल जाइत छै। एक अर्थमे खुमार नकारात्मक छै (किछु संदर्भमे “खुमार” चढ़ैत निशाकेँ सेहो कहल जाइत छै)। उर्दूक प्रसिद्ध शाइर खुमार बाराबंकवीकेँ बेर-बेर कहल जाइत छलनि जे अहाँक नाम अहाँक शाइरीक मुकाबले नकारात्मक अछि कारण अहाँक शेर सभमे सुरूर अछि मुदा अहाँ अपन नाम खुमार रखने छी।

17) रकीब शब्द केर अर्थ वर्तमान समयमे "दुश्मन" छै मुदा एकर मूल अर्थ छै "माशूककेँ चाहए बला कियो दोसर आदमी"। उपरमे अनचिन्हारक माशूक साधना छै आ मानि लिअ आशीष नामक कियो आन आदमी सेहो साधनासँ प्रेम कर लागए तखन अनचिन्हार लेल आशीष रकीब हेतै आ आशीष लेल अनचिन्हार।

18) काफिर केर अर्थ छै नुकाएल, अस्पष्ट, झुट्ठा आदि। बादमे कुरानमे एकर अर्थक विस्तार भेलै आ ओहिठाम काफिर केर अर्थ भेलै "जे खुदासँ नुकालए अछि", "जे अल्लाहमे विश्वास नै राखै छै" आदि। ओना उपरक अर्थक हिसाबें कोनो मुसलमान सेहो काफिर भऽ सकैए। मुदा व्यावहारिक अर्थमे ई गैर-मुसलमान लेल बेसी प्रचलित छै। काफिर केर बहुवचन "कुफ्र" छै। शाइरीमे काफिर केर अर्थ "प्रेमी वा प्रेमिका" सेहो होइत छै।

आब कने ऐ प्रतीक सभहँक अर्थपर आबी। केकरो लेल खाली पेआला मने “शराब नै छै “सेहो हेतै आ केओ पेआलाकैँ जीवन मानि दुखसँ भरल (वा असगर जिबैत जीबन) सेहो लगाएत। तेनाहिते मीना संसारक प्रतीक सेहो भए सकैत अछि। अधिकतर शाइरीमे मे साकी परमात्माक अर्थमे आएल छथि आ शराब सुखक अर्थमे (ऐठाम ई मोन राखब जरूरी जे लोक सभ वेदमे वर्णित पवित्र “सोमरस” कैँ शराब कहै, बूझै छथि तखन ओ लोक सभ गजलमे प्रयुक्त शराबकैँ “शराब” बूझथि तँ कोन गलती। ईहो जानि लेब जरूरी जे मैथिल सभ विद्यापतिक लिखल “कुच-पयोधर” आदि-आदिमे राधा कृष्णकैँ ताकि लै छथि मुदा गजलमे आएल हुस्न-इश्ककैँ सांसारिक मानि अपनाकैँ नीक आ आन भाषाक विधाकैँ खराप मानै छथि भऽ सकैए जे हिनका सभहँक मोनमे हिंदू-मुसलमान सन तुच्छ बात रहैत हेतनि)। चिखना साधनक प्रतीक हएत तँ शराब वा ताड़ी साध्यक। साकी शब्द जकाँ महबूब, सनम (मूलतः सनम केर मतलब देवी-देवताक प्रतिमा होइ छै मुदा आब प्रियतम आ प्रियतमा लेल सेहो प्रचलित अछि) आदि शब्द सभ सेहो उभयलिंगी अछि। भारतीयकरण हिसाबें महबूबा आदि शब्द बनल छै मुदा मैथिलीमे ई शब्द सभ बेसी प्रचलित नै अछि तथापि परम्परा दृष्टिएँ हम एकरा लिखलहुँ। ई तँ श्रोता वा पाठकक उपर छै जे ओ कोन अर्थ लगबै छै। शाइरक काज छै रचब आ मात्र रचब। उर्दूमे सय्याद आ बुलबुल केर प्रतीक बहुत प्रसिद्ध छै। बुलबुल एकटा चिड़ैया भेल तँ सय्याद मने बहेलिया। बहेलिया ओ जाति भेल जे कि चिड़ैयाकैँ बझा कऽ बेचैए वा ओकरा मारि कऽ ओकर माउस बेचैए। आधुनिक संदर्भमे सय्याद पूँजीपतिक प्रतीक अछि तँ बुलबुल मजदूरक। प्रसंगवश ईहो जानि लेब जरूरी जे “शम्मा” मने “दीपक” प्रेमिकाक प्रतीक छै तँ “परवाना” मने “फतिंगा” प्रेमीक। एकर अतिरिक्त अरबी-फारसी-उर्दूमे बहुत रास प्रतीक छै। मुदा ओ सभ मूल रूपसँ मैथिलीमे नै आएल अछि। जेना कि उपरे कहलहुँ महबूब उभयलिंगी शब्द छै आ तँइ केकरो लेल कियो महबूब भऽ सकै छै। महबूब केर अर्थ छै “प्रिय” मुदा वर्तमान समयमे महबूब केर अर्थ मात्र प्रेमिका-पत्नी लेल भऽ गेल छै। ओना हमरा हिसाबें माए लेल बेटा महबूब भऽ सकै छै तँ बाप लेल बेटी सेहो (छोट बच्चाकैँ लोक तँ कहिते छै)। कोनो किच्छो महबूब भऽ सकै छै तँइ मुनव्वर राणा “माए” पर शाइरी रचलथि। बात प्रतीकक चलि रहल अछि तँ ई स्पष्ट करब जरूरी जे उपरक सभ प्रतीक पुरान अछि आ वर्तमानक गजल वा शेरो-शाइरीमे ओतेक नै चलि रहल छै। वर्तमान गजल वा शेरो-शाइरीमे नव-नव प्रतीक आबि रहल छै। भविष्योमे ई प्रतीक सभ बदलैत रहतै कारण प्रतीक, बिंब आदिक प्रयोग देश-काल-परिस्थितिपर निर्भर करै छै।

गजलक परिभाषा

गजल मने प्रेमिकाक आँचर सेहो होइत छैक,गजल मने हिरणीक दर्द भरल आवाज सेहो होइत छैक, गजल मने प्रेमी-प्रेमीकाक गप्प सेहो होइत छैक। कहबाक तात्पर्य जे जतेक विद्वान ततेक परिभाषा। तथापि जँ गजलक सर्वमान्य परिभाषा चुनबाक हएत तँ हमरा हिसाबें अरबी भाषामे जे पहिल अर्थ धूनब (जेना रूइ धूनब) आ दोसर प्रेमालाप होइत छैक आ हमरा हिसाबें ई दूनू अर्थ ठीक छैक। जँ पहिल अर्थ धूनब लेबै तँ जहिना रूइ के धुनलासँ शुद्ध रूइ बहराइ छैक आ थोड़बे रूइ बेसी भए जाइत छैक तहिना आखर(word)के अनुभवसँ धूनि

थोड़बे आखरसँ भावनाक रंगबिरही महलके ठाढ़ करब गजल भेल। आ जँ दोसर अर्थ प्रेमालाप लेबै तँ कने सूक्ष्म रुपमे जाए पड़त। स्थूल रुपें देखलासँ गजल समान्य प्रेमी-प्रेमिकाक बचन लागत मुदा वस्तुतः गजलमे आत्मा प्रेमिका आ परमात्मा प्रेमीक रुपमे अबैत अछि (शृंगार केर दू पक्ष होइ छै सांसारिक ओ अध्यात्म)।
गजल मूलतः अरबी शब्द छैक तँए ई बुझबामे कोनो भाँगठ नहि जे गजल नामक काव्य सर्वप्रथम अरबी भाषा कहल गेल। एहिठाम ई कहब उचित जे शाइरी केखनो लिखल नहि वरन कहल जाइत छैक कारण ई व्याकरण सम्मत उच्चारणपर निर्भर छै (उच्चारण मने ई नै जे अपने मोने जेना बाजी तेहने नियम हेतै)। एहिठाम शाइरी मने गजल समेत सभ काव्य विधा भेल। गजलक जन्म आ विकासके जनबासँ पहिने अरब देशक ऐतिहासिकताके जानब बेसी जरुरी अछि। इस्लाम धर्मक जन्मसँ पहिनेके समयके जमानःएजाहिलियः कहल जाइत छैक, जकर मतलब अछि “अन्हार युग” । अन्हार युगमे जाहि तरहक काव्य रचल गेल ओ मूलतः अपन-अपन कबीलाके प्रशंशा आ विपक्षी कबीलाक खिद्धाशंसँ भरल अछि आ एहि काव्य शैलीके कसीदा कहल जाइत छैक। एहि युगमे मुतनब्बी नामक शाइर महत्वपूर्ण छथि।
कसीदामे जखन प्रेमक प्रवेश भेल तखनेसँ गजलक जन्म हेबाक संभावना अछि। आ एहि प्रयोगक श्रेय इमरउल कैस (539 इ.)के जाइत छन्हि। अरबी साहित्य विशेषज्ञ सभके मानब छन्हि जे इमरउल कैस अन्हार युगक पहिल शाइर छथि जे गजल कहब शुरु केलथि। संगहि-संग कैसे एहन पहिल शाइर छथि जे अपन प्रियतमकैँ खसल दयार (दयारक मतलब स्थान होइत छै, चाहे ओ स्थान घर होइ कि डीह कि प्रदेश कि देश कि आन कोनो इलाका) पर कानि कए गजल कहबाक परंपरा शुरु केलथि। कैसक अलावे अरबीमे अन्तर-ह्बिनशद्दाह-अल-अबसी (525-615 इ.) अपन गजल-उल-अजरी मने पवित्र प्रेमक गजल लेल प्रसिद्ध भेलाह। अरबीक शाइर अहदे-उमवीक (661-749 इ.) योगदान गजलमे सर्वाधिक अछि। तँए विद्वान लोकनि एहि युगके उमवी युग कहैत छथि। उमवी समयमे मक्का आ मदीना शाइर आ कलाकारक केन्द्र छल। जाहि कबीला (खानदान)मे पैगम्बर हजरत मोहम्मदक जन्म भेलन्हि ओही कबीलामे शाइर उमर-बिन-अबी -रबीय (643-711 इ.)क जन्म सेहो भेलन्हि। इ. 701 जन्मल जमील बुसीन विशुद्ध गजलगो शाइर छलाह। बुसीन वस्तुतः जमीलक प्रेमिकाक नाम छल जकरा जमील अपन तखल्लुस (उपनाम) के रुपमे प्रयोग करैत छलाह। आब एहि समय धरि गजलक विषय मात्र शारीरिक नहि रहि भावनात्मक भए गेलैक। प्रसिद्ध शाइर उमरु-बिन-कुलसूम अत़गलबी अपन गजलक शुरुआत प्रेमिकाक देहसँ नहि वरन जाम-ओ-मीनासँ करैत छथि।
इस्लामक जन्म पच्छाति अरबी शाइरीके विषय तँ बदलबे केलै संगहि-संग इस्लाम जखन इरान-इराक पहुँचल तँ गजल सेहो पहुँचि गेलै। आ एहि तरहें आब फारसीमे सेहो गजल कहनाइ शुरु भेल। फारसीमे गजलगोइ नवम शताब्दीक अंतसँ शुरु भेल। मुदा एहिठाम ई कहबामे कोनो संकोच नहि जे फारसीमे कहल गजल अरबी गजलसँ बेसी नीक, समृद्ध, उदार आ भावनासँ परिपूर्ण अछि। एकर कारण ई जे अरब के तुलनामे इरान सभ्यता-संस्कृतिके मामलेमे बेसी विकसित छल। फारसीमे संभवतः रुदकी समरकन्दी पहिल शाइर छथि जे गजल कहलथि। रुदकी गजलक अलावे कसीदा, रुबाइ, मनसवी आदि सेहो कहलथि।

फारसीक लगभग सभ महत्वपूर्ण शाइर गजल कहलथि जेना शे़ख सादी, रुमी, ख्वाजू किरमानी, हाफ़िज, शिराजी इत्यादि। फारसी गजलमे कमाल ख़जन्दी महत्वपूर्ण हस्ताक्षर छलाह। एहि सभहँक अलावे ओहि समयमे उ़र्फी, मजीरी, तालिब, कलीम आ सायब सभ सेहो गजलक विकास अपना-अपना तरीकासँ केलथि। एकटा आर गप्प फारसी गजलमे सायबके तमसील (मने दृष्टान्त)क बादशाह मानल जाइत अछि, मुदा ओ स्वयं एहि कलाके उस्ताद गनी काश्मीरीके बुझैत छलाह। आ हुनकासँ भेंट करबाक लेल भारत (फारसी इतिहासमे हिन्दोस्तान) सेहो आएल छलाह। फारसी गजलके संबंधमे दूटा गप्प आर । पहिल जे अमीर खुसरो "अमीर खुसरो देहलवी" क नामैँ भारतसँ बेसी इरानमे प्रसिद्ध छलाह। आ दोसर गप्प जे स़फवी युगमे इरान शासक सभँहक अकृपाक कारणे बहुत शाइर सभ भारत आबि बसि गेलाह। एहने क्रममे शाइर शैख अलीहर्फीइस्फाहानी जे बनारस आबि गेलाह। सन 1765 इ.मे हुनक मृत्यु भेलन्हि । आ एहने समयमे भारतक माटि पर गजल अपन गमक पसारि देलक। एहिठाम ई मोन राखब उचित जे भारतमे अमीर खुसरोके पहिल गजलगो सेहो मानल जाइत अछि। आ एहि गमकक किछु कण मीर, गालिब जेहन शाइरके जन्म देलक। आ तकरा बाद धीरे-धीरे उर्दू शाइरीक जन्म भेल। मोहम्मद कुली कुतुबशाह उर्दूक ओ पहिल शाइर छथि जनिकर दीवान (गजल संकलन) प्रकाशित भेलन्हि। कुतुबशाहक बाद जे शाइर भेलाह ओ छथि-ग़व्वासी, वज़ही, बह्री इत्यादि। आ उर्दूक संग-संग गजल मैथिलीक माटि पर सेहो पसरल जकर पहिल उदाहरण 1905 मे कविवर जीवन झाक नाटक सुन्दर-संयोगमे भेटैत अछि।

खण्ड-2

गजल कोना कहल जाइत छैक? आब एहि प्रश्न पर चली। सभसँ पहिने जे शाइरी सदिखन कहल जाइत छैक लिखल नहि (कारण अहाँ उपर पढ़ि चुकल छी)। आब अहाँ एकरा अरबी प्रकिया मानि मूँह नहि घोकचा लेब। हिन्दु धर्मक चारू वेद लिखल नहि कहल-सुनल गेल छैक। आ शाइरी सेहो वेदे जकाँ कहल जइत छैक। शाइरी विशुद्ध रुपसँ उच्चारण पर निर्भर अछि (मुदा लिखित रूपक रक्षा करैत आ किछु छूट लैत)। तँए गजल कहल जाइत छैक लिखल नहि (जाहि गजलमे कोनो प्रकारक नियम शैथिल्य वा छूट नै लेल जाइए तकरा अहाँ "गजल लिखल छी" कहि सकै छियै)। मुदा विस्तृत विवरण देबासँ पहिने गजलमे प्रयुक्त परिभाषिक शब्दावलीक संक्षिप्त परिचय प्राप्त करी--

1) लघु वा ह्रस्व लेल उर्दूमे लाम अक्षरक प्रयोग कएल जाइत छै। लाम देवनागरीक "ल" वर्णक बराबर भेल। ई पहिल छोट इकाइ भेल। देवनागरीक अ, इ, उ, ऋ, लृ आदि ह्रस्व स्वर भेल।

2) दीर्घ- एकरा उर्दूमे काफ कहल जाइत छै आ मैथिलीमे दीर्घ। काफ सेहो उर्दूक अक्षर थिक आ ई देवनागरीक "क" वर्णक बराबर छै।। देवनागरीक आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ. अं. अः आदि दीर्घ स्वर भेल। ई दोसर छोट इकाइ भेल (एहि ठाम ईहो कहब उचित जे हम नुक्ताक प्रयोग नै करै छी आ उर्दूमे जे दूटा काफ छै से एना लिखल जाइत छै.. काफ़, क़ाफ़। आब ई दीर्घ सूचक कोन काफ थिक से हमरो नै पता)। भ' सकैए जे लाम आ काफ दूनू

अक्षरक प्रयोग मात्र हल्लुक ओ भारी स्वरक जानकारी लेल देल गेल हो जेना कि संस्कृतमे 'ल' लघु आ 'ग' गुरु केर सूचक अछि। एकै शब्दमे जँ लघु केर बाद दोसरो लघु आबए तँ ओकरा दीर्घ मानि लेल जाइत छै (कोन-कोन अवस्थामे तकर विवरण आगू बह्रक प्रकरणमे भेटत)।

(एहिठाम 1 मने ह्रस्व आ 2 मने दीर्घ भेल।(केओ-केओ दीर्घ लेल + आ लघु लेल - केर प्रयोग करै छथि। संस्कृतमे I दीर्घ लेल आ U लघु लेल चिन्ह अछि।) लघु= ह्रस्व, दीर्घ =गुरु)।

3) जुज--लघु आ दीर्घकेँ आपसमे जोड़लासँ जुज बनैत छै ।

4) अज्जा- जुज केर बहुवचन अज्जा होइत छै।

5) रुक्न --कोनो मात्राक्रम केर शाब्दिक (मुदा अर्थहीन) नामकेँ रुक्न कहल जाइत छै, जेना दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ लेल “फाइलुन”, ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ लेल “मफाईलुन” इत्यादि। रुक्न अज्जाक बहुवचन भेल संस्कृतमे एकरा “यमाता”, “जगण”, “मगण” आदि सन बूझू।

6) अर्कान--रुक्न केर बहुवचन अर्कान भेल जेना-फाइलुन + मफाईलुन...इत्यादि।

7) बहर- अर्कानक संगठित आ निश्चित रुपकेँ बहर कहल जाइत छै। एकरा मीटर सेहो कहल जाइत छै। जेना कोनो पाँतिमे फऊलुन (122) केर समान प्रयोगसँ बहरे मुतकारिब बनैत छै।

8) शेर—एक-समान रदीफ आ भिन्न-भिन्न काफियासँ सजल दू पाँति जाहिमे कोनो विचार एहन विचार जे ओही दूनू पाँतिमे शुरू भए खत्म भए जाइत हो एवं कोनो बहरसँ युक्त हो शेर कहाबैत अछि। कतेको मैथिलीक विद्वान शेर मने चरण कहै छथि मुदा संस्कृत परंपरानुसार पाद वा चरण मने पाँति भेलै।

9) मिसरा मने पाँति भेल

10) मिसरा-ए-उला --शेरक पहिल पाँतिकेँ मिसरा-ए-उला कहल जाइत छै। ई पाँति कोनो तथ्यक स्थापना करैत छै।

11) मिसरा-ए-सानी शेरक दोसर पाँतिकेँ मिसरा-ए-सानी कहल जाइत छै। अइ पाँतिसँ पहिल पाँतिक देल गेल तथ्यक समर्थन कएल जाइत छै।

12) अशआर--शेरक बहुवचन अशआर भेल।

13) गजल--मतला युक्त किछु शेरक संग्रह गजल कहाबैत अछि। गजलमे अलग-अलग शेर होइत छै मुदा रदीफ आ काफियाक स्वर एवं बहर एकै हइत छै।

14) मतला- गजलक पहिल शेर जाहि महँक दूनू पाँतिमे रदीफ आ काफिया हो तकरा मतला कहल जाइत छै। बिना रदीफ बला गजलमे मतलाक दूनू पाँतिमे काफिया हेबाक चाही।

15) हुस्ने मतला- मतलाक बाद जँ दोसर मतला हो तकरा हुस्ने मतला कहल जाइत छै। बहुत लोक हुस्ने मतलाकेँ मतला-ए-सानी सेहो कहैत छथि।

16) जँ हुस्ने मतलाक बादो मतला आबए तँ ओकरा मतला-ए-सालिस कहल जाइत छै।

17) जँ मतला-ए-सालिसकेँ बाद मतला आबए तँ ओकरा मतला-ए-राबे कहल जाइत छै। ऐकेँ बाद जे मतला अबे छै तकर आर नाम सभ छै मुदा हमरा पता नै अछि।

18) रदीफ- मतलाक दुनू पाँतिमे अंतसँ उभयनिष्ठ शब्द वा शब्द समूहकेँ रदीफ कहल जाइ छै।

19) काफिया--मने स्वर साम्य युक्त तुकान्त चाहे ओ वर्णक स्वरसाम्य हो की मात्राक स्वरसाम्य। रदीफसँ पहिने जे स्वर साम्य युक्त तुकान्त होइत छैक तकरा काफिया कहल जाइत छैक। आ ई रदीफे जकाँ गजलक हरेक शेरक (मतला बला शेरकेँ छोड़ि) दोसर पाँतिमे रदीफसँ पहिने अनिवार्य रुपें अएबाक चाही। काफिया दू प्रकारक होइत छैक (क) वर्णक स्वरसाम्य आ (ख) मात्राक स्वरसाम्य। अइसँ बेसी वर्णन आगू काफियाक खंडमे भेटत।

20) गैर मुरद्फ गजल--जाहि गजलक मतलामे रदीफ नै हो तकरा गैर मुरद्फ गजल कहल जाइत छै। ऐ ठाम ई मोन राखू जे बिना रदीफक तँ गजल भए सकैए मुदा बिना कफिया गजल नै हएत।

21) मकता- गजलक अंतिम शेर जाहिमे शाइर अपन नाम-उपनामक प्रयोग केने होथि तकरा “मकता” कहल जाइत छै।

आब अहाँ सभ बूझि सकै छिऐ जे ह्रस्व आ दीर्घ केर संयोगसँ जुज बनैत छै, जुजसँ अज्जा, अज्जासँ रुक्न, रुक्नसँ अर्कान, अर्कानसँ बहर, कोनो एक रंगक बहरसँ बनल दूटा पाँतिकेँ शेर कहल जाइत छै आ एक समान बहरक किछु शेरक समूहकेँ गजल कहल जाइत छै।

22) एकटा कोनो गजलमे जे शेर सभसँ बेसी नीक आ प्रभावी होइत छै तकरा हासिल-ए-गजल (हासिले गजल) कहल जाइत छै।

23) तक्तीह- मात्राक गिनती करब तक्तीह भेल। ऐसँ ई पता लगाएल जाइत छै जे कोनो गजल बहरमे छै की नै।

24) वज्न --ओजन मने भार। कोनो शब्द वा पाँतिक मात्राक्रमकेँ वज्न कहल जाइत छै।

25) अज्जा-ए-रुक्न--कोनो पाँतिकेँ रुक्नक हिसाबसँ तोड़ला पर अज्जा-ए -रुक्न भेटैत छै। जेना—

असगर जनम लेलहुँ असगरे जी रहल

ऐ पाँतिकेँ रुक्नक हिसाबें तोड़बै तँ" मफऊलातु-मफऊलातु-मुस्तफइलुन "भेटत (असगर जनम= मफऊलातु, लेलहुँ असग= मफऊलातु आ रे जी रहल = मुस्तफइलुन । मने ऐ पाँतिमे तीनटा अज्जा-ए-रुक्न छै। (ई पाँति अमित मिश्रा जीक छन्हि)

26) कोनो शेरक दूनू पाँतिकेँ छह खण्डमे बाँटल जाइत छै--
a) सदर--पहिल पाँतिक पहिल खण्डकेँ सदर कहल जाइत छै। मने पहिल पाँतिक शुरूआत सदर भेल।

b) हश्व--सदर केर बाद बला खण्डकेँ हश्व कहल जाइत छै। हश्व मने विकास, वस्तुतः पाँतिमे निहित भावनाक विकास एही खण्डमे होइत छै।

c) अरूज--पहिल पाँतिक अन्तिम खण्डकेँ अरूज कहल जाइत छैक। अरुज मने उत्कर्ष, वस्तुतः भावनाक उत्कर्ष एही खण्डमे हइत छै।

d) इब्तदा--शेरक दोसर पाँतिक पहिल खण्डकेँ इब्तदा कहल जाइत छै। इब्तदा मने सेहो प्रारंभे होइत छै मुदा सदर आ इब्तदा दुन्नूमे ई अंतर छै जे सदर कोनो विचार भए सकैए मुदा सदरक समर्थनमे आएल प्रारंभकेँ इब्तदा

कहल जाइत छै।

e) हश्व--दोसर पाँतिक बिचलका भागकेँ पहिनेहे जकाँ हश्व कहल जाइत छै।

f) जरब--दोसर पाँतिक अन्तिम खण्डकेँ जरब कहल जाइत छै। जरब मने अन्त।

उदारहरण लेल अमित मिश्र जीक एकटा शेर देखू--

हमर मुस्की/सँ हुनका आ/गि लागल यौ (1222/1222/1222)
हुनक कनखी/सँ तऽरका आ/गि लागल यौ (1222/1222/1222)

हमर मुस्की--सदर
सँ हुनका आ --हश्व
गि लागल यौ--अरूज
हुनक कनखी--इब्तदा
सँ तरका आ--हश्व
गि लागल यौ--जरब

ई तँ छल तीन रुक्न बला शेर तँ मामिला फरिछा गेल मुदा कम-बेसी रुक्न बला लेल एना मोन राखू--

1) जँ शेरक हरेक पाँतिमे दूटा रुक्न छै तँ ओहिमे हश्व नै होइत छै खाली सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब होइत छै।
2) जँ शेरक हरेक पाँतिमे तीनटा रुक्न छै तँ पूरा शेरमे दूटा हश्व हेतै आ एक-एकटा सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब हेतै। उपरका उदाहरण तीनेटा बला रुक्न पर अछि।

3) जँ शेरक हरेक पाँतिमे चारिटा रुक्न छै तँ पूरा शेरमे चारिटा हश्व हेतै आ एक-एकटा सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब हेतै।

4) जँ शेरक हरेक पाँतिमे पाँचटा रुक्न छै तँ पूरा शेरमे छह टा हश्व हेतै आ एक-एकटा सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब हेतै।

5) जँ शेरक हरेक पाँतिमे छह टा रुक्न छै तँ पूरा शेरमे आठ टा हश्व हेतै आ एक-एकटा सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब हेतै।

एतेक देखलाक बाद ई बुझना जाइत अछि जे कोनो शेरक पहिल पाँतिक पहिल रुक्न “सदर “भेल आ अंतिम रुक्न “अरुज “भेल आ बचल बीच बला रुक्नकेँ “हश्व “कहल जाइत छै। तेनाहिते कोनो शेरक दोसर शेरक पहिल रुक्नकेँ “इब्तदा “कहल जाइत छै आ अंतिम रुक्नकेँ “जरब “आ बीचमे बचल रुक्नकेँ “हश्व “कहल जाइत छै। आब एनाहिते एक पाँतिमे जतेक रुक्न हो तकरा बाँटि सकै छी। मुदा शेरक ई बाँट बखरा मात्र वर्णवृत बलामे नै लागत। उदाहरण लेल मानू जे अहाँ 2222112121 बला मात्रा क्रम लेलहुँ। मुदा ई मात्रा क्रम किनको लेल 222-2112-121 भऽ सकैए आ ऐमे ओ तँ किनको लेल 22-2211-2121 सेहो भऽ सकैए । आब लोक घनचक्करमे पड़ता जे ऐमे कोन तरहँसँ छह भागमे बाँटी। तँए हमर ई स्पष्ट मानब अछि जे जा धरि मैथिलीक अपन निज मात्राक्रम नै हो ताधरि ई नियम मात्र अरबी बहरमे प्रचलित मात्राक्रम जेना122+122+122 वा 2122+2122+2122 आदि सभपर लागत। सरल वार्णिक बहरमे सेहो ई नियम नै लागत।

27) शाइरी- अशआर कहबाक प्रक्रियाकेँ शाइरी कहल जाइत छै।

28) शाइर--शाइरी करए बलाकेँ शाइर कहल जाइत छै। हिंदीमे शायर कहल जाइत छै मुदा मूल रूपसँ “शाइर” छै मोन पाड़ू फिल्म “कभी-कभी” केर गीत “मैं पल दो पल का शाइर हूँ” ।

29) मोशायरा--जतए शाइर सामूहिक रूपें श्रोताक सामने शाइरी कहैत हो ओकरा मोशायरा कहल जाइत छै। मोशाइरामे गजल वा किछु कहबासँ पहिने मंचपति केर आज्ञा लेल जाइत छै आ तकर बाद शाइर श्रोता वर्गकेँ कहै छथिन “समाद फरमाएँ” | ऐ “समाद फरमाएँ” केर मैथिलीकरण “सुनल जाए” रूपमे भऽ सकैए। श्रोता वर्गसँ इरशाद-इरशाद केर ध्वनि संग शाइर अपन रचनाक पाठ शुरु करै छथि। बेसी काल शाइर जखन पहिल पाँति पढ़ै छै तखन दोसर पाँति कहबाक लेल “इरशाद-इरशाद” कहल जाइत छै आ दोसर पाँति पूरा होइते बाह-बाह। इरशाद केर मैथिलीकरण “जरूर” भऽ सकैए (ओना जरूर सेहो अरबिए समूहक शब्द छै)। ऐठाम ई कहब बेसी जरूरी जे उर्दू सभहक मोशयारामे काफिया खत्म होइते बाह-बाही शुरू भऽ जाइत छै आ तै लेल किछु मैथिल श्रोताकेँ सिकाइत छनि जे पूरा नै सुनि पेलहुँ। मुदा धेआन देबाक बात ई छै जे काफियाक बाद तँ रदीफ होइ छै जे की पूरा गजलमे एकै रहैत छै तँए काफियाक बादे बाह-बाही ओ सभ शुरू कऽ दैत छै। मैथिलीमे एखन ऐ परंपराकेँ आबऽमे किछु दिन समय लगतै।

30) तहत आ तरन्नुम--मोशायरामे शाइर दू रूपें शाइरी पढ़ैत छथि। पहिल भेल वाचन क्रिया द्वारा जेना कविता सुनाएल जाइत छै आ दोसर भेल गायन द्वारा। वाचन प्रक्रियाकेँ “तहत “कहल जाइत छै आ गायन प्रक्रियाकेँ

“तरन्नुम कहल जाइत छै। ओना भारतमे सभसँ पहिने ऋृगवेद भेलै जकर पाठ कए जाइत छलै मने तहत जकाँ बादमे सामवेद बनलै मने गेबा योग्य मने तरन्नुम। ओना किछु अतिवादी “तहत” कँ नीक मानै छथि तँ किछु “तरन्नुम” कँ मुदा हमर स्पष्ट मानब अछि जे मानव सदिखन विविधता चाहै छथि। मानव अपन मनोस्थितिकँ हिसाबें केखनो तहत बलापर बाह-बाह करै छथि तँ केखनो तरन्नुम बलापर । कहबाक मतलब जे एकै मानव मनोस्थिति बदलैत देरी पाठ भिन्नता सेहो चाहै छै तँए तहत आ तरन्नुम केर झगड़ा हमरा हिसाबे बेकार। लक्ष्य मात्र रस, आनंद, परमानंद... मोशायरामे तहत आ तरन्नुम दूनूमे सुनाएल शेरकँ संचालक तहतमे कहि कऽ बात श्रोता-दर्शक धरि दोबारा पहुँचाबै छै। ओना ई सत्य जे किछु शाइर तरन्नुम केर नामपर चुटकुलाबाजीक प्रचलन कऽ रहल छथि जे की सर्वथा गलत अछि। तरन्नुम खराप नै तरन्नुम केर नामपर किछु कऽ लेब से खराप भेल। जखन शाइर मोशायरामे अपन शेर सभ प्रस्तुत करै छथि तखन दू तरहँक प्रतिक्रिया होइत छै श्रोता मध्य। पहिल तँ जँ श्रोताकँ शेर नै नीक लगलै तँ ओ चुपचाप सूनि लै छथि आ दोसर जे जँ श्रोताकँ शेर नीक लगलै तँ ओ “बाह-बाह-बाह-बाह” शब्द समूहसँ शाइरक मनोबल बढ़बै छथि। ओना ऐठाम ई कहब बेजाए नै जे उर्दू गजलक नीक-नीक मोशायरा सभमे तालीक प्रचलन अछि मुदा पारंपरिक तौरपर बाह-बाह छै। ऐठाम आर किछु गप्प जखन मोशायरामे नात वा मनकतब कहल जाइत छै तखन ताली आ बाह-बाह पूरा-पूरी निषिद्ध भऽ जाइत आ तकरा बदलामे सुभान-अल्लाह केर उच्चारण होइत छै। ऐठाम ईहो बूझबाक गप्प थिक जे मोशयरामे जखन नात पढ़ल जाइ छै तखन शाइरकँ जँ श्रोता दिससँ पाइ वा अन्य धन भेटै तँ ओ मान्य छै आ ओइमे कोनो आपत्ति नै मुदा गजल आ आन विधा कालमे कोनो शाइर एहन पाइ वा धन नै स्वीकारथि। जँ स्वीकारता तँ ई नियमक विरुद्ध मानल जाइत छै। जे शेर नीक लागए आ अहाँ ओकरा दोबारा सुनए चाहैत छी तँ ताहि लेल “फेरसँ कहू” एहन वाक्यक प्रयोग करू। उर्दूमे एकरा “मुकर्रर “कहल जाइत छै मुदा मैथिलीमे” फेरसँ कहू” एहन वाक्यक प्रयोग हेतै। “दोसर बेर कहियौ” वा “दोबारा कहियौ” एनाहुतो कहल जा सकैए।

31) इल्मे अरूज- मने अरबी छंद शास्त्र

32) अरूजी- मने अरबी छंद शास्त्रक ज्ञाता।

33) इस्लाह गुरु-शिष्य परंपराक अंतर्गत शाइरी सिखनाइ। केखनो काल कोनो गजलकँ अरूजीसँ ठीक कराएबकँ इस्लाह सेहो कहल जाइत छै। ओना मैथिलीमे साहित्यकार सभ अपन ज्ञानक पोटरी संदूकमे बान्हि कऽ धऽ दैत छथि जे कहीं हमर ज्ञान दोसर लग नै चलि जाए। कुंठा एतेक जे ओ अपन संतानोकँ ऐ ज्ञानसँ दूर राखै छथि। मैथिलीक उल्टा इस्लाह परंपरामे बाप द्वारा गर्वपूर्वक संतान सभकँ शाइरी सिखाएल जाइत छलै आ छै।

34) सौती मोशायरा- ई मोशायरा साधारण मोशायरासँ अलग अछि। पहिने बूझी जे ई सौती मोशयरा की

थिक। अरबी-फारसी-उर्दूमे शाइर सभकैँ बहरक ट्रेनिंग लेल ई सौती मोशायरा केर आयोजन कएल जाइत छै। ऐ मोशायरामे जे गजल देल जाइत छै ताहिमे अर्थकैँ कोनो प्रधानता नै रहै छै बस खाली बहर, काफिया आ रदीफ रहबाक चाही। जेना की एकटा उदाहरण देखू---

उठैए चलैए खसैए तँ ओ
हँसैए मरैए गबैए तँ ओ

छलै आब बुड़िबक बहुत सभ मुदा
हुनक पाँचटा सन लगैए तँ ओ

पहिने ऐ दूटा शेरक मात्रा क्रम देखी ई मात्रा क्रम अछि लघु-दीर्घ-दीर्घ-लघु-दीर्घ-दीर्घ-लघु-दीर्घ
आब कने पहिल शेरकैँ देखू कोनो खास अर्थ नै निकलि रहल छै ऐ शेरक। तेनाहिते दोसर शेर तँ आर गड़बड़ अछि। मुदा इएह गड़बड़ी सौती मोशायरा लेल चाही। जँ सौती मोशायरामे एकौटा एहन शेर आबि गेल जकर कोनो सार्थक मतलब निकलि रहल छै तँ ओ सौती मोशायरा लेल उपयुक्त नै। मुदा ऐठाम ई धेआन राखब बेसी जरूरी जे मैथिलीमे बाल गजल सेहो अछि आ बाल गजलमे किछु शेर एहनो भऽ सकै छै जकर कोनो अर्थ नै होइक। कारण बच्चाकैँ अर्थसँ मतलब नै रहै छै। देखने हेबै जे माए वा आन कोनो संबंधी बच्चाकैँ उठा कऽ “अर्ररररररररररररररररररररर” बजै छै आ बच्चा खुश भऽ कऽ हँसै छै तँए बाल गजलमे खूब लय ओ आंतरिक सुआद चाही।

35) तरही मोशायरा--ई एक तरहँक आयोजन थिक जैमे कोनो प्रसिद्ध शाइरक कोनो गजलक एकटा कोनो पाँति दऽ देल जाइत छै। रदीफ ओ काफिया पुरने गजल जकाँ रहबाक चाही। आब आन गजलकार सभ एही हिसाबसँ गजल लीखि मोशायरामे प्रस्तुत करै छथि। जे पाँति देल जाइत छै तकरा “तरह-ए-मिसरा” कहल जाइत छै। तरह-ए-मिसरा केर प्रयोग मतलामे नै हेबाक चाही मने मतला नव गजलकारक अपने मूल रहै छै। सौती मोशायराक बाद गजलकारक ट्रेनिंग लेल तरही मोशायरा बहुत प्रभावी होइत छै। अनिचिन्हार आखरपर प्रस्तुत “गजलक इस्कूल” तरही मोशायरासँ अलग अछि। तरही मोशायरामे देल पाँतिक काफिया रदीफकैँ ओइ गजलक “जमीन” कहल जाइत छै। जँ अहाँ कोनो शाइरक काफिया रदीफ आ बहर लऽ कऽ नव गजल कहबै तँ ओकरा अमुक गजलक जमीनपर कहल गजल कहल जाइत छै।

आब उपरकामेसँ किछु प्रमुख पारिभाषिक शब्दावलीक विस्तृत विवरण देखी—
जेना की अहाँ सभ बुझैत छी गजल किछु शेरक संग्रह होइत छैक (कमसँ कम पाँच आ बेसीसँ बेसी कतबो)। किछु

लोकक मोताबिक जँ सत्रहसँ बेसी शेर देबाक हुअए तँ फेरसँ एकटा मतला कहू आ शेर कहैत चलू। आ एना दूगजला, तीनगजला, चौगजला होइत रहत। वर्तमानमे मात्र पाँच, छह, या सात शेर बला गजल बेसी प्रचलित अछि। ओना गजलक संबंधमे ईहो धेआन राखब जरूरी जे प्राचीन गजलगो गजलमे ताक (विषम) संख्या रखैत छलाह जेना 5, 7,9 आदि। एकर कारण ई कहल जाइत अछि जे पहिने गजलक विषय विरह युक्त प्रेम छल तँए जुफ़्त (सम) के छोड़ि ताक (विषम) के प्राथमिकता देल जाइत छलै। मुदा आधुनिक गजलगो एहि रुढ़िके तोड़ि देने छथि। आब ई बूझी जे शेर की थिक। शेर सदिखन दू पाँतिक होइत छैक आ शाइर जे कहए चाहैत अछि ओ दुइये पाँति मे खत्म भए जेबाक चाही, अन्यथा ओ गजलक लेल उपयुक्त नहि। आ एहन-एहन गजल जकर हरेक शेरमे अलग-अलग बात कहल गेल हो ओकरा “गैर मुसल्सल” गजल कहल जाइत छैक। किछु गजल एहनो होइत छैक जकर हरेक शेर एकै विषय पर रहैत छैक। एहि प्रकारक गजलके “मुसल्सल” गजल कहल जाइत छैक, मुदा “मुसल्सल” गजल बेसी नीक नहि मानल जाइत छै। उर्दूमे पाँतिकैँ “मिसरा” कहल जाइत छैक। शेरक पहिल पाँतिकैँ “मिसरा-ए-उला” आ दोसर पाँतिकैँ “मिसरा-ए-सानी” कहल जाइत छैक। शेरक किछु उदाहरण देखू---

अला हुब्बी बेसेह्ने की फ़ सबहीना
वला तब्की ख़मूरल अन्दरीना

अर्थ रे साकी सुन, पेआला उठा कए हमरा एतेक भोरक बचल शराबक पेआला दे की जाहिसँ अन्दरीना (अन्दरीना सीरीया देशक एकटा जगहक नाम अछि)मे एकौ ठोप शराब नहि बचै।
(भाषा- अरबी, शाइर उमरु-बिन-कुलसूम अत़गलबी)

अगर आ तुर्के शीराजी बदस्त आरद दिलेमारा
बखाले हिन्दुवश बख़शम समरकन्दो बुखारा रा

अर्थ जँ ओ सुन्दरि महबूब हमर करेज चोरा लेथि तँ हम हुनकर एकटा तिलबा पर समरकंद आ बुखारा सनसन देश हुनका दए देबैन्ह।
(भाषा- फारसी, शाइर हाफ़िज शीराजी)

उनके आ जाने से आ जाती है मुँह पर रौनक
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है

(भाषा- उर्दू, शाइर गालिब)

बाट तकैत दिन बीति जाएत बुझलिऐ
आस तकैत जिनगी बिताएत बुझलिऐ

(भाषा- मैथिली, शाइर गजेन्द्र ठाकुर)

ओ बिसरि गेलै किए
प्रेम हेरेलै किए

(भाषा-मैथिली, शाइर अमित मिश्र)

हमर मुस्कीक तर झाँपल करेजक दर्द देखलक नहि इ जमाना।
सिनेहक चोट मारूक छल पीडा जकर बूझलक नहि इ जमाना।

(भाषा- मैथिली, शाइर ओमप्रकाश)

बेदरदिया नहि दरदिया जानै हमर
टाकासँ जुल्मी प्रेम कैँ गानै हमर

(भाषा- मैथिली, शाइर जगदानंद झा “मनु”)

एक झोंका पवनकैँ गुजरि गेल देखू
मोन मारल सिनेहक सिहरि गेल देखू

(भाषा- मैथिली, शाइर राजीव रंजन मिश्र)

न कम सम बहुत नहि समावेश चाही
सधेने चली बेश ऋण शेष चाही

(भाषा- मैथिली, शाइर विजय नाथ झा)

टूटल छी तँइ गजल कहै छी
भूखल छी तँइ गजल कहै छी

(भाषा- मैथिली, शाइर जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल)

रहू कमल सन सदा सुवासित
बनू मनोहर हवा सुवासित

(भाषा- मैथिली, शाइर योगानंद हीरा)

जँ उपरका शेर सभके देखबै तँ पता लागत जे ई सभ दुइये पाँतिके छैक आ जे बात कहल गेल छैक से पूरा-पूरी छैक। संगे-संग दूनू पाँतिक छंद (मात्राक्रम) एकै छै। इएह भेल शेर। गजलसँ जुड़ल किछु आर पारिभाषिक शब्द आगू देल जा रहल अछि। बिना एकरा बुझने गजल नहि बुझल जा सकैए।

खण्ड-3

मतला---" मतला" गजलक ओहि पहिल शेरके कहल जाइत छैक जकर दूनू पाँतिमे काफिया आ रदीफ रहै। ओमप्रकाश जीक एकटा गजल उदाहरणक लेल देल जा रहल अछि।

अहाँ कैँ हमर इ करेज बिसरत कोना
छवि बसल मोन मे आब झहरत कोना

हवा सेहो सुगंधक लेल तऽ जरूरी
बिन हवा फूलक सुगंध पसरत कोना

अहीं टा नै, इ दुनिया छै पियासल यौ
बिन बजेने इ चान घर उतरत कोना

जवानी होइ ए नाव बिन पतवारक
कहू पतवारक बिना इ सम्हरत कोना

हमर मोन ककरो लेल पजरै नै ए
बनल छै पाथर करेज पजरत कोना

मफाईलुन (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ) 3 बेर प्रत्येक पाँतिमे।

एहि गजलक पहिल शेरक पहिल पाँतिमे काफिया "अ" स्वरक संग "त" वर्णक मात्रा अछि (केना से काफिया बला खंडमे पता चलत)। आ रदीफ "कोना" अछि। तेनाहिते शेरक दोसरो पाँतिमे काफिया "अ" स्वरक संग "त" वर्णक मात्रा अछि आ रदीफ "कोना" अछि।
संगहि-संग ई शेर गजलक पहिल शेर अछि, तँए ई भेल मतला। आब दोसर शेर पर आउ, मतलाक बाद ई कोनो जरुरी नहि छैक जे दूनू पाँतिमे काफिया आ रदीफ हुअए। मुदा मतलाक बला शेरक बाद जे शेर छैक तकर दोसर पाँतिमे काफिया आ रदीफक रहब अनिवार्य। उपरके गजलके देखू मतलाक बाद जे शेर अछि---

हवा सेहो सुगंधक लेल तऽ जरूरी
बिन हवा फूलक सुगंध पसरत कोना

एहि शेरमे देखू पहिल पाँतिमे ने रदीफ छैक आ ने काफिया, मुदा दोसर पाँतिमे काफिया सेहो छैक आ रदीफ सेहो। अन्य शेरक लेल एहने सन बुझू। ओना मतलाक बाद जे मतला आबए तँ ई शाइरक क्षमता के देखबैत छैक आ गजलके आर बेसी सुन्दर बनबैत छैक। तएँ ओकरा हुस्ने-मतला कहल जाइत छैक ।ओना शाइर चाहए तँ गजलक हरेक शेरके मतलाक रूपमे दए सकैए। बिना रदीफक गजल सेहो होइत छैक जकरा "गैर-मुरद्दफ" गजल कहल जाइत छैक मुदा काफिया रहब बिलकुल अनिवार्य।
केखनो काल कऽ उर्दूक नीक-नीक दीवान सभमे बिना मतलाक गजल सेहो रहैत छै। मुदा ओकर कारण ई छै जे बहुत काल शाइर कोनो गजलक शेर तँ लीखि लै छै मुदा मतला लिखब संभव नै भऽ पाबै छै (कोनो कारणवश) तँ ओइ गजलकैं बिना मतलाक बना कऽ दऽ दै छै। मुदा ई सदिखन धेआन राखब जरूरी जे ई मात्र परिस्थिति जन्य छै व्याकरणिक नै।बहुत दीवान तँ शाइरक मृत्यु भऽ गेलाक बाद प्रकाशित छनि एहन अवस्थामे संपादक बिना मतलाक शेर सेहो दऽ दै छथिन (ऐतिहासिकताक दृष्टिकोणसँ)

खण्ड--4

रदीफ--रदीफ मतला बला शेरक दूनू पाँतिक ओहि अन्तिम हिस्साके कहल जाइत छैक जे दूनू पाँतिमे समान रूपें बिना हेड़-फेरके आबए। गजल रदीफ संगे सेहो भऽ सकैए आ बिना रदीफक सेहो। मतलामे देल गेल उदाहरण बला शेरके देखू एहिमे “कोना “समान रुपसँ दूनू पाँतिमे अछि अर्थात ई भेल रदीफ। ई रदीफ गजलक हरेक शेरक हरेक दोसर पाँतिमे (मतला बला शेरकँ छोड़ि) अनिवार्य रुपें अएबाक चाही (जइ गजलमे रदीफक प्रयोग भेल छै)। ओमप्रकाश जीक एकटा आर दोसर मतलाकँ देखू

नैनक छुरी नै चलाबू यै सजनियाँ
कोना कऽ जीयब बताबू यै सजनियाँ

एहि शेरमे “यै सजनियाँ” रदीफ अछि से स्पष्ट अछि। पूरा गजलमे रदीफ एकै होइत छैक।

रदीफ अक्षरसः एकै समान हो मुदा अर्थ अलग-अलग भए सकैत छै, जेना जेना मतलामे “सार “रदीफ छै तँ ई जरूरी नै जे एकै अर्थ लेल जाए। एकटा “सार “केर अर्थ संबंधवाची भए सकैए तँ दोसर “सार” केर मतलब संक्षेपण सेहो। रदीफक दोष जँ मतलाक बाद बला कोनो शेरक पहिल पाँतिमे (जे बिना काफियाक हो) रदीफ वा रदीफक कोनो भाग अबै छै तँ ई दोष मानल जाइ छै आ एकरा “तकाबुल-ए-रदीफ “कहल जाइत छै। जेना एकटा गजलक उदारहण लिअ (ई गजल हमर लिखल अछि)

गजल

हमरा दया आ दुआ दुन्नू चाही
भगवान संगे खुदा दुन्नू चाही

सभ ठीक छै ठीक छै सभ ठीके छै
कुटियासँ कटिया पता दुन्नू चाही

नेता तँ अछि नीक मिश्रण संसारक
सज्जन मुदा बेठुआ दुन्नू चाही

ऐ क्रांतिमे जोश अनुभव सभ चाही

तँइ बूढ़ संगे युवा दुन्नू चाही

शुभकामना अछि अहाँकँ सुख सागर
हमरा सजा आ मजा दुन्नू चाही

भौजी जँ हारथि तँ भैयाजी आबथि
हुनका तँ घर आ जथा दुन्नू चाही

ऐ गजलमे रदीफ छै "दुन्नू चाही "आ काफिया छै "आ "स्वर। आब ऐ गजलक चारिम शेरक पहिल पाँति देखू" ऐ क्रांतिमे जोश अनुभव सभ चाही" ऐ पाँतिक अंतमे रदीफक अंतिम भाग "चाही" दोहरा देल गेल छै। आ अरूजी सभ एकरे तकाबुल-ए-रदीफ दोष कहै छथि। ऐ दोषसँ बचबाक उपाय इएह छै जे या तँ ओहि पाँतिमे रदीफक प्रयोग नै करी या नै तँ ओहिसँ पहिने काफिया दए ओकरा हुस्ने-मतला बना ली। जँ रदीफ नमहर छै तँ ओहिमहँक किछु भाग आन शेरक पहिल पाँतिमे आबि सकैए। आब कने दोष युक्त चारिम शेर के एना देखू--

ऐ क्रांतिमे जोश अनुभव सभ लागत
तँइ बूढ़ संगे युवा दुन्नू चाही

मने "चाही "हटि गेलै पहिल पाँतिसँ आ ओकरा बदलामे "लागत" आबि गेलै। आ एना केलासँ ई दोष हटि गेलै। एकटा आर महत्वपूर्ण गप्प केखनो काल कए एहन शब्द आबि जाएत जे रहत तँ एकैटा शब्द (मूल शब्द सेहो भए सकैए, सन्धि बला शब्द सेहो भए सकैए सङ्गे-सङ्ग प्रत्यय वा उपसर्ग बला शब्द सेहो भए सकैए) मुदा ओहि शब्दमे काफिया आ रदीफ दूनू रहत। जँ एहन शब्द आबए तँ ओ एकै सङ्ग काफिया आ रदीफ लेल प्रयोग भए सकैए। जेना कि विजय नाथ झा जीक लिखल एकटा गजलक उदाहरण देखू--

हमर नाम परिचय पता लापता सन
बनल भार बहिया नियम व्रत प्रथा सन

केहन की नियोगी वियोगक बहुलता
रथी सारथी पथ पतन रति यथा सन

बहल संग लागल कठिन कहि तपस्या

बनू जड़ सुखक लेल करिऔ शिवासन

आब जँ अहाँ ऐ गजलक मतलाकैँ देखबै तँ पता चलत जे रदीफ “सन “अछि आ काफिया “आ “केर मात्रा अछि। आब एही गजलक तेसर शेरक दोसर पाँति देखू अंतमे शब्द छै “शिवासन “, ऐ शब्दकैँ अंतसँ देखलापर पता लागत जे अन्तिम भाग “सन “छै आ ताहिसँ पहिने “व” वर्णमे “आ “केर मात्रा छै आ ई शब्द एकै सङ्ग काफिया आ रदीफक शर्त पूरा करैए तँए ई ठीक अछि आ गजलमे ई मान्य अछि। ऐ प्रकारक रदीफकैँ “तहलीली रदीफ” कहल जाइत छै। किछु लोकक हिसाबसँ ई दोष भेल, मुदा अधिकांश शाइर एहन काफिया प्रयोग करै छथि।। ओना तँ ई नियम अरबीकैँ छै मुदा मैथिलीमे विभक्ति शब्दमे सटि जाइत छै तँए मैथिली गजल लेल ई नियम बड्ड महत्वपूर्ण अछि। आ एकर विस्तारसँ वर्णन विभक्ति बला खण्डमे कएल जाएत।
मैथिलीमे तहलीली रदीफक महत्व एहि द्वारें सेहो अछि।तँए मैथिलीमे काफिया निर्धारण धेआनसँ करए पड़त आ एकर विस्तृत विवरण काफिया बला प्रकरणमे भेटत।

खण्ड-5

(खण्ड 5सँ 12 धरि काफियाक विवरण अछि, जाहिमे खंड 5 ओ 6 केर अधिकांश तथ्य विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा संपादन पाठ्यक्रम (भाषापाक)सँ लेल गेल अछि जकरा विदेह पोथीसँ डाउनलोड कएल जा सकैए)

काफिया--काफिया मने स्वर साम्य युक्त तुकान्त चाहे ओ वर्णक स्वरसाम्य हो की मात्राक स्वरसाम्य। रदीफसँ पहिने जे स्वर साम्य युक्त तुकान्त होइत छैक तकरा काफिया कहल जाइत छैक। आ ई रदीफे जकाँ गजलक हरेक शेरक (मतला बला शेरकैँ छोड़ि) दोसर पाँतिमे रदीफसँ पहिने अनिवार्य रुपें अएबाक चाही (जँ रदीफ छै गजलमे तँ नै तँ काफिया खाली)। काफिया दू प्रकारक होइत छैक (क) वर्णक स्वरसाम्य आ (ख) मात्राक स्वरसाम्य। वर्णक काफिया लेल शेरक हरेक पाँतिमे रदीफसँ पहिने समान वर्ण आ तकरासँ पहिने समान स्वरसाम्य होएबाक चाही। एकटा गप्प आर, बहुतों शाइर खाली रदीफक पहिने बला वर्ण वा मात्राकैँ काफिया बूझि लैत छथि से गलत। खाली रदीफक पहिने बला वर्ण वा मात्राकैँ तुकांत कहल जाइत छै। तुकान्त तीन प्रकारक होइत अछि उत्तम, मध्यम आ अधम। गजल लेल उत्तम आ मध्यम तुकान्त प्रस्तावित अछि। अधम तुकान्त गजलमे वर्जित अछि। आब किछु उदाहरण देखी--

1) जमीन-अमीन, जमीन-पसीन, घर-डर, घर-बर, डगर-मगर, जीवन-तीमन आदि उत्तम प्रकारक तुकांत अछि।

2) जमीन-उरीन आदि मध्यम प्रकारक तुकांत अछि।

3) घर-नगर, घर-दूर, नगर-उर, घर-तीर आदि अधम प्रकारक तुकांत अछि।

ई जानब रोचक जे संस्कृतक काव्य लेल तुकांत वा अंत्यानुप्रास जरूरी नै छलै कारण अंत्यानुप्रास छन्दक नै

अलंकारक भाग छल मुदा अरबीमे शुरूआतेसँ काफिया भेनाइ अनिवार्य छै। काफियाक निर्धारण काफिया लेल प्रयुक्त शब्दकँ अन्तसँ बीच वा शुरू धरि कएल जा सकैए। उदाहरण देखू--

करेज घसैसँ साजक राग निखरै छै
बिना धुनने तुरक नै ताग निखरै छै

एहि शेरक पहिल पाँतिमे रदीफ "निखरै छै" छैक। आ रदीफसँ ठीक पहिने "राग" शब्द छैक। जँ अहाँ "राग" शब्द पर धेआन देबै तँ पता लागत जे ऐ शब्दक अन्तिम वर्ण "ग" छैक मुदा ऐ "ग" संग "आ" ध्वनि (रा) सेहो छैक। तहिना दोसर पाँतिमे रदीफ " निखरै छै "सँ पहिने "ताग" शब्द अछि। आब फेर अहाँ सभ "ताग" शब्दकँ देखू। ऐमे अन्तिम वर्ण "ग" तँ छैके संगहि-संग "आ" ध्वनि (ता) सेहो छैक। मतलब जे उपरक शेरक दुनू पाँतिमे रदीफ "निखरै छै"सँ पहिने "ग" वर्ण अछि, "आ" स्वर (ध्वनि)क संग। अर्थात "आ" ध्वनि संगे "ग" वर्ण ऐ शेरक काफिया भेल। आब ऐठाम ई मोन राखू जे जँ उपरक ई दूनू शेर कोनो गजलक मतला छैक तँ ओइ गजलक हरेक शेरक कफिया "ग" वर्णक संग "आ" ध्वनि होएबाक चाही। अन्यथा ओ गजल गलत भए जाएत। आब ऐ गजलक दोसर शेरकँ देखू--

इ दुनिया मेहनतिक गुलाम छै सदिखन
बहै घाम तखन सुतल भाग निखरै छै

ऐ शेरमे पहिल पाँतिमे ने रदीफ छैक आ ने काफिया मुदा दोसर पाँतिमे रदीफ सेहो छैक आ रदीफसँ पहिने शब्द "भाग" अछि। ऐ शब्दक अंतमे "ग" वर्ण तँ छैके संगहि-संग "ग"सँ पहिने "आ" ध्वनि सेहो छैक। ऐ गजलक आन काफिया सभ अछि "लाग", "बाग", "पाग" । एकटा आर दोसर उदाहरण देखू--

कहू की, कियो बूझि नै सकल हमरा
हँसी सभक लागल बहुत ठरल हमरा

ऐ मतलाक शेरमे "हमरा" रदीफ अछि। आ रदीफसँ पहिने पहिल पाँतिमे "सकल" शब्द अछि। संगहि-संग दोसर पाँतिमे "ठरल" शब्द अछि। आब हमरा लोकनि जँ एहिमे काफिया निर्धारण करी। दुनू शब्दकँ नीक जकाँ देखू। दुनू शब्दक अंतिम वर्ण "ल" अछि मुदा पहिल पाँतिमे "ल"सँ पहिने "अ" ध्वनि अछि (क) आ दोसरो पाँतिमे "ल"सँ पहिने "अ" ध्वनि अछि (र) तँ एहि दुनू शब्दक मिलानके बाद हमरा लोकनि देखै छी जे दुनूमे "ल" वर्ण समान अछि। संगहि-संग वर्ण "ल"सँ पहिने "अ" स्वर अछि। आब सभ व्यंजन हलन्तमे अ लगिते छै तखने ओ

गुणिताक्षर बनै छै (कचटतप, यह) तँए ऐ गजलक काफिया कोनो कचटतप वर्ग(कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग) वा यह संग “ल” वर्ण भेल। आब शाइरकेँ बाँकी शेरमे काफियाक रूपमे एहन शब्द चुनए पड़तन्हि जकर अन्तमे “ल” वर्ण अबैत हुअए एवं तइसँ पहिने कोनो “कचटतप, यह” भऽ सकैए। ऐ गजलमे प्रयुक्त भेल आन काफिया अछि” जरल “, “खसल”, “रहल” “कहल” । तेसर उदाहरण सेहो देखू--

रानी मेघ सगरो जल पटाएत ना
बौआ हमर खेलत आ नहाएत ना

(अमित मिश्र)
ऐ मतलामे “ना” रदीफ अछि। आ रदीफसँ पहिल पाँतिमे “पटाएत” शब्द अछि आ दोसर पाँतिमे “नहाएत” । जँ दुनू शब्दमे मिलान करबै तँ “एत” दुनू पाँतिक काफियामे कामन छै आ “एत”सँ पहिने “आ” स्वरक मात्रा छै (पहिल पाँतिमे “टा” आ दोसर पाँतिमे “हा” । ऐ मतलामे काफिया हएत “आ” मात्राक संग “एत” वर्ण समूह। ऐ गजलमे लेल गेल आन काफिया अछि बहाएत, बनाएत, चलाएत आ खाएत। काफियाक ऐ विवरणकेँ एना बूझी तँ नीक रहत—

1) जँ कोनो मतलामे “छन” आ “दन” काफिया छै तँ ऐमे “न” वर्ण मूल वर्ण भेलै (काफियाक मिलान सदिखन अन्तसँ कएल जाइत छै) आ ओइसँ पहिलुक वर्णक स्वर सेहो बराबर हेबाक चाही। उपरका उदाहरणमे “न” वर्णक बाद क्रमशः “छ” आ “द” वर्ण बचै छै आ दुनूक स्वर “अ” छै मने अकारान्त छै तँए कोनो मतलामे ई काफिया सही हएत। आब ऐ गजलमे आन शेर सभमे एहने काफिया हेतै जेना “हन”, “मन”, “जीबन” आदि। ऐठाम ई बात बुझबाक अछि जे जँ मतलामे “छन” आ “धुन” रहितै तँ काफिया गलत भऽ जेतै कारण मूल वर्ण “न” केर बादक स्वरक मात्रा सेहो अनिवार्य रूपें मिलबाक चाही मुदा ऐ उदाहरणक एकटा काफियामे “न” केर बाद “अ” स्वरक गुणिताक्षर छै तँ दोसरमे मूल वर्ण “न” केर बाद “उ” स्वर छै, तँए ई गलत भेल। ऐठाम ईहो मोन राखू जे “छन” आ “दन” केर बाद कोनो आन शेरमे “धुन”, “आन”, “निन” आदि काफियाकेँ नै लऽ सकैत छी। ईहो मोन राखू जे एकै गजलक आन-आन शेरमे मूल वर्ण एकै रहतै। जेना उपरका उदाहरणमे “छन” आ “दन” काफिया छै तँ आन शेरक काफियाक अंतमे “न” वर्ण अनिवार्य रूपसँ रहतै।

2) जँ कोनो मतलामे “जीवन” आ “तीमन” छै तँ काफिया “अ” स्वरक संग “न” मूल वर्ण हएत। आ तँए आन शेरक काफिया लेल “धूमन”, “केहन”, “पावन” एहन शब्द उपयुक्त रहत।

3) जँ कोनो मतलामे काफिया “तीमन” आ “नीमन” शब्द छै तखन कने धेआन राखए पड़त। दुनू शब्दकेँ धेआनसँ

देखू, अंतमे “मन” वर्ण समूह उभयनिष्ठ छै तँ एहन काफियामे “मन” मूल वर्ण समूह भेल आ तइसँ पहिने दुनूमे “ई” स्वरक मात्रा छै (ती, नी) तँए एकर काफिया भेल “ई” स्वरक मात्राक संग “मन” वर्णक समूह। जँ कोनो शाइर “तीमन” आ “नीमन” केर बाद कोनो आन शेरमे “जीबन”, “धूमन”, “केहन”, “पावन” काफिया लेताह तँ गलत हएत। सही काफिया हेत “परिसीमन” आदि। ऐठाम ईहो मोन राखू जे जँ कोनो मतलामे “तीमन” आ “धूमन” काफिया छै तँ ओ गलत हएत कारण “मन” वर्ण समूहसँ पहिने एकटामे “ई” स्वरक मात्रा छै तँ दोसरमे “उ” स्वरक मात्रा। तेनाहिते “खाएत” एवं “आएत” काफियामे अन्तसँ “एत” उभयनिष्ठ छै एवं तइसँ पहिने “आ” स्वरक मात्रा छै, तकर बाद आन शेरमे “जाएत”, “नहाएत”, “पाएत”, “बुड़िआएत” आदि काफिया सही हेतै। जँ कोनो गजल बिना रदीफक अछि तैयो ई नियम सभ लागत (पहिने हमरा बिना रदीफ बला गजलक काफियापर किछु भ्रम छल मुदा आब ई फाइनल अछि संगे-संग हमर भ्रमक कारणे जे गलत गजल लिखाएल ताहि लेल हमहीं टा उत्तरदायी छी)

4) कोनो मतलामे “खौंझाएत” आ “बुझाएत” शब्दक काफिया नै भए सकैए से आब अहाँ सभ नीक जकाँ बुझि गेल हेबै। जँ कोनो शाइर एहन काफिया लै छथि तँ काफियामे “सिनाद दोष” आबि जाइत छै।

5) केखनो काल किछु एहन शब्द आबि जाइत छै काफियामे, जे अधिकांशतः एक समान रहैत छै जेना “पसार” एवं “सार” । ऐ दूटा शब्दमे अन्तसँ खाली “सार” उभयनिष्ठ छै आ स्वरक मिलान नै भए रहल छै तँए कोनो मतलामे “पसार “आ “सार “काफिया नै बनि सकैए। तेनाहिते विचारक संग “चार” आदि काफिया नै लऽ सकैत छी। “धार” आ “उधार “सहित एहन आन-आन शब्द लेल एहने सन बूझू। जँ कोनो गजल बिना रदीफक अछि तँ ई नियम नै लागत आ बिना रदीफ बला गजलमे धार उधार आदि काफिया आबि सकैए।

ऐ ठाम किछु गोटे कहि सकै छथि जे अकारान्त काफियामे वर्णक समानता किएक। । कारण गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे “नीलम “आ “सीलम “काफियामे “अम “उच्चारण छै, आ “रूपम”, “पूनम “आदि शब्दमे सेहो “अम “उच्चारण छै। । ई गप्प सदिखन मोन राखू जे कोनो एकटा ध्वनिकैँ अधार मानि कए नियम नै बनाएल जाइत छै। दोसर उदाहरण लिअ जँ मतलामे “नहाएत “आ “खाएत “काफिया छै तखन आन शेरक काफिया लेल कोन काफिया हैतै। एतए “एत “सँ पहिने “आ “स्वर लेबहे पड़त। ऐठाम फेर मोन पाड़ू जे कोनो नियम एकटा उच्चारणपर नै बनाएल जाइत छै। तँए व्यावहारिक रूपें अहाँकैँ वा किनको ई बुझाएत जे “नीलम “आ “सीलम “के बाद “रूपम “, “पूनम “आदि काफिया बनि सकैए मुदा भाषायी दृष्टिसँ ई गलत हएत।
तेनाहिते उपरका उदाहरण धार-उधार बाला प्रसंगमे अहाँकैँ लागि सकैए जे धार-उधार काफिया बनत मुदा ईहो भाषायी दृष्टिसँ गलत हएत। ओना बनेबाक लेल तँ किछु बनाएल जा सकै छै आ बनितो छै मुदा मानकताक स्तरपर...

6) आब कने संयुक्ताक्षर बला काफियाकेँ देखी। किछु आर विवरणसँ पहिने किछु संयुक्त शब्द सभकेँ देखल जाए। प्रस्थान, चुस्त, दुरुस्त, किस्मत। आब ई देखू जे संयुक्त वर्ण अन्तसँ कोन स्थानपर पड़ैत अछि। जँ ई अन्तसँ तेसर आ ओकर बाद मने चारिम या पाँचम स्थानपर अबैत हो तँ काफियाक नियम पहिने जकाँ हएत। मुदा जँ इएह संयुक्त वर्ण काफिया बला शब्दक अंतसँ दोसर स्थान पर अबैत हो तँ कने धेआन देबए पड़त। मानि लिअ जे मतलाक पहिल पाँतिमे "मस्त" काफिया छैक। तँ आब हरेक काफियाक अंतमे "्+त" हेबाक चाही जेना तप्त, सप्त आदि रहबाक चाही। उदाहरण लेल "मस्त" केर काफिया "दस्त", "पस्त", "हरस्त", "तप्त", "सप्त" आदि भऽ सकैए। उपर हम धेआन देबाक लेल हम एहि दुआरे कहलहुँ जे हलंत लागल अक्षरक उच्चारण अलग भऽ जाइत छै। उर्दूमे तँ संयुक्ताक्षर बला शब्दमे बदलाव नै भऽ सकैए जेना उर्दूमे मस्त केर काफिया पस्त हेतै तप्त नै मुदा हम मैथिलीक प्रकृतिक अनुरूप एकरा विस्तार केलहुँ। मुदा जखन हम मतलामे "मस्त" केर काफिया "पस्त" लेबै तखन बाध्यता भऽ जाएत जे हरेक शेरक काफिया "स्त" हो। उदाहरण रूपमे एकटा शेरकेँ देखल जाए--

हेतै कोना कऽ गुदस्त जीबन
भेलै चिन्तासँ हरस्त जीबन

आब ऐ शेरमे रदीफ "जीबन" भेल आ पहिल पाँतिमे काफिया "गुदस्त" अछि, आब संयुक्ताक्षर बला नियमक हिसाबें काफिया बला शब्दमे अन्तसँ दोसर वर्ण "स्त" होएबाक चाही। आब दोसर पाँतिके देखू रदीफसँ पहिने काफियाक रूपमे "हरस्त" अछि जकर अंतसँ "स्त" संगे-संग "अ" वर्णक स्वरसाम्य सेहो छै जे नियमक मोताबिक सही अछि। ऐ गजलमे आन काफिया सभ एना अछि "व्यस्त", "मदमस्त", "मस्त", "सस्त" आदि। उपरके नियम जकाँ मतलाक पहिल पाँतिमे जँ "मस्त" काफिया छै तँ ओकर बाद आन शेरमे "चुस्त" "सुस्त" आदि काफिया नै आबि सकैए। संयुक्ताक्षरक ई नियम मात्रा बला काफिया लेल कने अलग ढ़ंगसँ छैक। किछु विस्तृत विवरण मात्रा बला खण्डमे भेटत। पंचमाक्षरक कारण बनल संयुक्ताक्षर लेल ई नियम काज नै करत आ एकर विवरण आगू भेटत।

7) आब आबी कने "ए" आ "य "बला प्रसंगपर (ई प्रसंग भारत आ नेपालक भाषा वैज्ञानिक सभहँक आलेखपर आधारित अछि। जै ठाम हमरा गलत लागल तै ठाम हम कोष्ठकमे ओकरा स्पष्ट केलहुँ अछि)।

ए आ य : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि। मुदा "ए "केर प्रयोग प्राचीन मैथिलिएसँ अछि।

प्राचीन वर्तनी--कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी--कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक। आरम्भोमे "ए" कैँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।
ए आ "य" क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण शैली "य "क अपेक्षा "ए"सँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकैँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो "ए" क प्रयोगकैँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।
एतेक जनलाकैँ बाद आबी "ए "वा ' य "केर ध्वनि लोप पर। ओना "ए "वा "य" क संगे-संग आन ध्वनि लोप सेहो होइत छै मुदा ओकर चर्चा एतए आवश्यक नै। तँ देखी ध्वनि लोपक नियम---

ध्वनिलोप : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ "ए "वा "य "केर ध्वनिलोप भऽ जाइत अछि:--

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमेसँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोपसूचक चिह्न वा विकारी (' / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़' गेलाह, क' लेल, उठ' पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(हमर कथन य वा ए लोप भेलापर पहिने बला अक्षर लघुए रहैत छै। उच्चारण किछु रेघा कऽ जरूर होइ छै मुदा ओइसँ एकरा दीर्घ नै मानल जा सकैए।)

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोपसूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना--

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

आब एक बेर फेर घुरि जाइ उच्चारण पर। उच्चारणमे लोपसूचक चिह्न (') वा विकारी (ऽ) केर कोनो महत्व नै होइत छैक। मने लोप सूचक चिन्ह वा विकारीसँ पहिने जे वर्ण छै तकरे पूरा-पूरी उच्चारण हेतै कनेक नमहर उच्चारणक संग (मुदा ऐ कने नमहर उच्चारणक कारण ओ वर्ण दीर्घ नै मानल जाएत। बहुत रास भाषा वैज्ञानिक सभ "भ" वा "भ' "वा "भऽ" मने य वा ए केर लोप हेबासँ पहिनुक अक्षरकैँ दीर्घ मानै छथि मुदा हमर कहब जे जखन "घर "शब्दमे "घ" केर कनेक नमहर उच्चारण भेलाक बादो जखन ओ दीर्घ नै होइए तखन "भ" वा "भ'" वा "भऽ" केर उच्चारण जँ कनेक नमहर छै तँ फेर ओकरो लघु मानू।) जेना "लए "शब्दमे ल केर बाद ए केर उच्चारण होइत अछि मुदा जखन ओही "लए "शब्दकैँ "ल' "वा "लऽ "लिखबै तखन ओकर उच्चारण बदलि जाएत आ एकर उच्चारण "ल "केर बराबर हएत। मतलब जे "ल' "वा "लऽ "केर उच्चारण "लए "वा "लय" शब्दसँ बिल्कुल अलग अछि। तेनाहिते "खस' "वा "खसऽ "केर उच्चारण "खसए "वा "खसय "शब्दसँ अलग अछि। एहन एहन शब्द जकर अंतमे "ए "वा "य "लोप होइत होइ तकरा लेल एहने सन नियम हेतै।
जँ कोनो शाइर ध्वनि लोपक चिन्ह वा विकारी बला शब्दक काफिया बनबै छथि तँ ओ धेआन राखथि जे हरेक काफियामे लोपसूचक चिह्न (') वा विकारी (ऽ)सँ पहिनुक वर्ण एकसमान राखथि। जेना "ल' "वा "लऽ केर काफियाक बाद शाइर एहन शब्द चुनथि जकर अंतमे लोपसूचक चिह्न (') वा विकारी (ऽ) लागल हो तकरा बाद वर्ण "ल "हो जेना "चल' "वा चलऽ। जँ कोनो शाइर "राख' "वा "राखऽ "केर काफिया "बाज' "या "बाजऽ "रखताह तँ ओ गलत हेतै।" बाज' "या "बाजऽ "केर बाद "साज' "वा "साजऽ "काफिया हेतै। संगे-संग काफियाक उपरका बला नियम सभ पहिनेहें जकाँ एहूमे लागू रहत। जँ कोनो एहन शब्द जकर अंतमे "ए "वा "य "केर लोप भेल छै आ ताहिसँ पहिने कोनो मात्रा छै तँ ओकर काफिया लेल मात्राक काफिया बला नियम लागत जकर विवरण आगू देल जा रहल अछि।
आब अहाँ सभ ई बूझि सकैत छिऐ जे--

लए - ह्रस्व-दीर्घ

लऽ- ह्रस्व

ल'- ह्रस्व

लय - ह्रस्व ह्रस्व वा दीर्घ

दए, कए आदि लेल एहने सन नियम रहत।

किछु लोक सभ "लऽ, दऽ, कऽ, भऽ," आदि शब्दकैँ एक-दोसरक काफिया मानि लै छथि मुदा ई गलत हएत। आशा

अछि जे एतेक उदाहरणसँ ई नियम सभ बुझबामे आएल हएत। बहुत ठाम देखबामे आएल अछि जे लोक विकारी बदला पूरा "अ" लीखि दै छथि जेना--" जोतऽ" बदला "जोतअ", "करऽ" बदला "करअ" आदि-आदि। एहन स्थितिमे मोन राखू जे गितनी पूरा हएत मने "जोतअ" = दीर्घ-दीर्घ (संस्कृतक हिसाबें दीर्घ-लघु-लघु) "करअ" =लघु-दीर्घ। ई प्रकरण आरो स्पष्ट भेल हएत से उम्मेद।

"ए" बदलामे "य" किएक

जेना की हम पहिने कहि चुकल छी जे अधिकांश गीतमे तुकान्त रहै छै मुदा मैथिलीक अधिकांश गीतमे अंत्यानुप्रास वा काफियाक निर्वाह भेल अछि। ऐ प्रसंगमे एकटा रोचक गप्प हम जोड़ब। जहाँ धरि हमरा ज्ञान अछि पूर्वक कोनो विद्वान ऐ प्रसंगपर अपन मंतव्य ऐ रूपें नै रखला अछि जँ रखने हेता तँ ई हमर अज्ञानता बूझल जाए।

प्राचीन मैथिलीमे "ए" केर बेसी प्रयोग होइत छल जेना

आएल, देखाएल, भुखाएल, कए, लए ......

मुदा मध्यकालीन मैथिलीमे "ए" केर प्रयोग कम भेल आ तकर स्थानपर "य" केर प्रचलन भेल जेना

आयल, देखायल, भुखायल, कय, लय.........

मैथिलीक विद्वान ऐ गप्पपर तँ खूब चर्चा केला जे "ए" केर बदलामे "य" आएल, ईहो चर्चा केला जे "य" उर्दू-ब्रजभाषासँ मैथिलीमे आएल। एहू गप्पपर खूब घमर्थन भेल जे के-के "ए" केर पक्षमे छथि आ के-के "य" केर पक्षमे (मुदा हमर कहब जे जँ ई उर्दू-ब्रजभाषाक नकल छै तैयो ऐ गप्पपर घमर्थन हेबाक चाही जे ई नकल किएक भेल)।

ऐ "ए" आ "य" बला चक्करमे रमानाथ झा आ काश्चीनाथ झा किरण जीक वैचारिक युद्ध पठनीय अछि। मुदा ने तँ रमानाथ झा जी ई स्पष्ट केलाह जे "य" बदलामे "ए" किएक वा ने काश्चीनाथ झा किरण जी ई स्पष्ट केलाह जे "ए" बदलामे "य" किएक। रमानाथ जीक उद्येश्य मात्र छलनि जे "ए" नीक तँ किरण जीक उद्येश्य छलनि "य" नीक। मुदा "य" केर प्रचलन किएक भेल तकर कोनो विचार नै भेटल। मैथिली परिशीलन केर पृष्ठ 46पर पं.गोविन्द झाजी "ए" केर बदला "य" केर प्रयोग केनाइकैँ स्वन समुच्चय मानै छथि मुदा हमरा ई तर्क संगत बुझना नै जा रहल अछि कारण गद्यक संग-संग उच्चारणमे साफे-साफ "कएल" अबै छै। दिक्कत खाली पद्यमे छै तँए हमरा हिसाबें "ए" केर बदला "य" केर प्रचलन अंत्यानुप्रास, तुक, वा काफियाक संदर्भमे अछि।। उदाहरण देखू--

कवन नगरकैँ सेनुरिया सेनूर बेचे आयल हे
आहे कवन नगरकैँ कुमारी धिया सेनूर बेसाहल हे

(ई सेनुरदानक गीत अछि जकरा हम कुंज बिहारी मिश्र जी द्वारा गाएल राम विवाह प्रसंगसँ लेलहुँ अछि। रचनाकार शायद कदमलता छथि)

आब कने ऐ गीतक अवलोकन करू। पहिल पाँतिमे “आयल” छै आ दोसर पाँतिमे “बेसाहल” छै मने “अल” भेल अंत्यानुप्रास वा काफिया। आब कने ई विचारू जे जँ ऐ गीतक पहिल पाँतिमे “आयल” केर बदलामे “आएल” रहितै तँ की दोसर पाँतिक “बेसाहल” केर प्रयोग केहन रहितै। निश्चित रूपसँ जे कनियों संगीतक जानकारी रखैत हेता से कहता जे “आएल” केर बाद “बेसाहल” देलासँ भास गड़बड़ा जेतै। एही गीतक आन पाँति देखू--

रामरंग रसिया जे बरबा सेनूर चढ़ायल हे
आहे सिया धिया बड़ सुकुमारि से सेनूर सवाँरल हे

ऐ दूनू पाँतिकेँ देखलासँ आर स्पष्ट भेल हएत जे “य” केर प्रचलन किएक बेसी भेल। जँ ऐ गीतमे “य” केर प्रयोग नै रहितै तँ ऐ गीतक भास उतरब बड्ड कठिन छलै।

आ हमरा जनैत मध्यकालीन मैथिलीमे एही लेल “ए” केर प्रयोग बन्द कऽ “य” केर प्रयोग शुरू भेल। ऐ तरहँक आनो-आन मौखिक लोकगीत भेटत जकरा अवलोकनसँ अहाँ सभ अपने निर्धारित कऽ सकै छी जे कतऽ “ए” हेबाक चाही आ कतऽ “य” । ओना हमरा ई स्वीकार करबामे कोनो दिक्कत नै अछि जे साधारण बोलचालमे सभ गोटा “आएल” बजै छथि मने “ए” बला रूप खाली पद्यमे काफिया लेल “य” केर प्रयोग होइत छै। ई अकारण नै अछि जे समदाउनक प्रचुर मात्रामे रचना केनिहार गणनाथ झा, विंध्यनाथ झा आदि ओ संत कवि सिनेहलता जी एवं तात्कालीन संत ओ आन साहित्यकार “य” केर बेसी प्रयोग करैत छलाह। आ एही कारणसँ कतहुँ-कतहुँ “ए” बदलामे “ओ” केर सेहो प्रयोग होइ छै जेना- “देखाएल” बदलामे “देखाओल” आदि। आन शब्द लेल एहने बूझू।

खण्ड-6

पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि आ एकरा नासिक्य वर्ण कहल जाइत छै मने एहन वर्ण जकर उच्चारण नाकसँ होइत हो। संस्कृत भाषाक अनुसार नासिक्य शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओहिसँ पहिने ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे पहिने ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे पहिने ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे पहिने ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे पहिने न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे पहिने म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना अंक,पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। अनुस्वारक चिन्ह ं अछि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि। नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ। आब कने आबी काफिया पर जँ मतलाक कोनो काफिया मे पंचमाक्षर वा अनुस्वारक प्रयोग छैक तँ हरेक शेरक काफियामे अनुस्वार वा पंचमाक्षर हेबाक चाही ओहो ठीक ओही स्थान पर जाहि पर पहिल काफियामे छैक। जेना मानि लिअ कोनो मतलाक पहिल पाँतिक काफिया “बसंत” छैक, तँ आब अहाँके ओहन शब्द काफियामे देबए पड़त जकर अंतसँ दोसर वर्ण पर अनुस्वार वा पंचमाक्षर अबैत होइक जेना की “अनंत”, “दिगंत” इत्यादि। आ एहने सन नियम चंद्रबिंदु लेल सेहो छैक।एकटा बात आर जँ कोनो मतलाक दूनू पाँतिमे अनुस्वार बला काफिया छै तँ ओकर बाद बला शेरक काफिया लेल पंचमाक्षर बला शब्द सेहो लए सकैत छी जेना जँ मतलामे की “बसंत” आ “अनंत” छै तँ बाद बला शेरक काफिया लेल “दिगन्त” सेहो लए सकैत छी। आन सभ पंचमाक्षर लेल एहने नियम बुझू। मुदा एहन ठाम ई मोन राखू जे पंचमाक्षर अपने वर्गक हेबाक चाही ।हमर पोथी अनचिन्हार आखरमे ई नियम गलत रूपमे छल। ऐठाम ई सही रूपमे अछि। ऐठाँ ई मोन राखू जे काफियामे ईता दोष नै एबाक चाही। आब ई कोन दोष भेल तकर वर्णन मात्रा बला काफियाक संग कए जाएत।

नासिक्ये वर्णसँ अनुनासिक वर्ण बनाएल जाइत छै। जखन कोनो वर्णक उच्चारणमे मूँहक संगे नाक केर प्रयोग होइत छै तखन ओकरा अनुनासिक कहल जाइत छै (सानुनासिक सेहो कहल जाइत छै)। अनुनासिक केर चिन्ह ँ मने चंद्रबिंदु होइत छै। “न” आ “म” वर्ण अनुनासिक होइत छै तँए एकर उच्चारण बहुत बेर अनुनासिके सन सुनाइ पड़ै छै मुदा ओ लिखित रूपमे नै आबै छै। अनुनासिक शब्द दू तरहसँ होइत छै पहिल ओ जैमे खाली व्यंजन अनुनासिक होइत छै जेना-माला, माघ आदि, दोसर जैमे स्वर आ व्यंजन दूनू अनुनासिक होइत छै जेना-माँगब, नींद आदि। आन वर्ण आ पंचमाक्षरे जकाँ सेहो अनुनासिक केर काफिया हेतै।

नासिक्य आ अनुनासिक केर भेद बुझलाक बाद ईहो स्पष्ट करब जरूरी जे हिंदीमे “हंस” मने पक्षी आ “हँस” मने हँसनाइ दूनू एकै तरीकासँ लिखल जाइत अछि। हिंदीमे दूनू लेल “हंस” शब्द अछि जे की अनर्थकारी अछि कतेको हिंदीक विद्वान एकर विरोध केने छथि तँइ चंद्रबिंदु आ अनुस्वार केर सही प्रयोग हेबाक चाही। हमरा हिसाबें पंचमाक्षरक बदलामे अनुस्वार तँ प्रयोग कऽ सकै छी मुदा चंद्रबिंदु केर बदलामे हिंदी जकाँ अनुस्वार केर प्रयोग

करब गलते नै अनर्थकारी सेहो अछि।

खण्ड-7

मात्रा बला काफिया पर विचार करबासँ पहिने कनेक फेरसँ तहलीली रदीफ आ मैथिली विभक्ति पर विचार करी। कारण जे मैथिली विभक्ति मूल शब्दमे सटि जाइत छैक। आ तँए ओ केखन काफियाक रूप लेत आ केखन रदीफक से बुझनाइ परम जरूरी।

विभक्ति- मैथिलीमे विभक्ति चिन्ह समान्यतः पाँच गोट अछि।

1) कर्म- कैं (कें केर प्रयोग हिन्दीक “को” लेल कैल जाइत अछि। उदाहरण लेल रामकैं आम पठा दियौन्ह)

2) करण- एँ /सँ

3) अपादान-सँ

4) सम्बन्ध- क/के /केर /केरि (क/के /केर /केरि सभहँक प्रयोग हिन्दीक का, के, की लेल कएल जाइत अछि। ऐठाम धेआन राखू जे विकारी युक्त या एफास्ट्राफी बला “क” केर प्रयोग हिंदीक “कर” लेल उपयोग कएल जाइत छै । उदाहरण लेल- ई काज हम कऽ चुकल छी। या ई काज हम क' रहल छी।
नोट--हिंदीक “के” लेल आएल “कऽ” शब्दसँ हटा कऽ लिखबाक परिपाटी अछि। तेनाहिते “के”, “केर”, “केरि” सेहो हटा कऽ लिखल जाइत छै।

5) अधिकरण- मे /पर

एहिकैं अतिरिक्त विद्वान लोकनि कर्ताक चिन्हकैं सुन्नाकैं रूपमे लैत छथि। ई पाँचो चिन्ह मूल शब्दमे सटि जाइत छैक(किछु लोक जे कि मैथिलीकैं हिन्दीक उपबोली बनेबापर लागल अछि से विभक्तिकैं मूल शब्दसँ हटा कए लिखै छथि, संख्या आ अंग्रेजी शब्दसँ विभक्ति हटा कऽ लिखल जाए कारण संख्या कोनो शब्द नै छै आ अंग्रेजी शब्द विजातीय भेने विभक्तिसँ सटि अर्थक अनर्थ कऽ सकैए, हँ संख्यावाची शब्द आ देवनागरी वा तिरहुता लिपिमे लिखल अंग्रेजी शब्दमे विभक्ति सटा कऽ लीखू)। आ एहि पाँचोमैंसँ “एँ” चिन्ह मूल शब्दक ध्वनि बदलि दैत छैक। उदाहरण लेल देखू “बाट” शब्दमे “एँ” चिन्ह सटने “बाटेँ” होइत छैक। “हाथ” शब्दमे सटने “हाथेँ” इत्यादि। आब कने ई विचारी जे जँ कोनो शाइर एहन शब्द, जाहिमे विभक्ति सटल होइक जँ ओकर काफिया

बनेता तँ की हेतै। एहि लेल किछु एहन शब्द ली जाहिमे विभक्ति सटल होइक। उदाहरण लेल मूल शब्द विभक्तिसँ सटल शब्द--

हाथ- हाथक /हाथेँ/ हाथसँ/ हाथमे/ हाथकेँ
फूल- फूलक /फूलसँ /फूलेँ
संग- संगमे /संगेँ
राति- रातिसँ /रातिमे
एहि विवरणकेँ हमरा लोकनि दू भागमे बाँटि सकै छी--
1) एहन मूल शब्द जे अंतसँ अकारान्त हुअए, आ
2) एहन मूल शब्द जकर अंतमे मात्राक प्रयोग होइक

1) आब जँ कोनो शाइर एहन मूल शब्द जे अकारान्त छैक आ ओहिमे विभक्ति लागल छैक तकरा काफिया बनबै छथि तँ हुनका ई मोन राखए पड़तन्हि जे बादमे आबए बला हरेक आन-आन काफियामे वएह विभक्ति कोनो आन मूल शब्दमे आबै जे अकारान्त होइक संगहि-संग स्वरसाम्य सेहो रखैत हो उदाहरण लेल मानू जे केओ मूल "हाथ" शब्दमे "क" विभक्ति जोड़ि "हाथक" काफिया बनेलक। दोसर आन-आन काफिया लेल ई मोन राखू जे आबए बला ओहि काफियाक अंतमे "क" विभक्ति तँ एबै करतै, मुदा विभक्ति "क"सँ ठीक पहिने अकारान्त वर्ण एवं स्वरसाम्य होएबाक चाही जेना की मानू "बात" शब्दमे विभक्ति "क" जुटला पर "बातक" शब्द बनैत अछि। आब पहिल काफिया "हाथक" आ दोसर काफिया "बातक" मिलान करू (काफियाक मिलान सदिखन शब्दक अंतसँ कएल जाइत छैक)। देखू पहिल काफिया "हाथक" आ दोसर काफिया "बातक" दूनूक अंतमे विभक्ति "क" अछि संगहि-संग विभक्ति "क" केर बाद दूनू काफियाक शब्द "थ" आ "त" अकारान्त अछि संगहि-संग "हा" केर स्वरसाम्य "बा"सँ छैक। आब फेर तेसर शब्द "पात" लिअ आ जँ ओहिमे "क" विभक्ति जोड़बै तँ "पातक" शब्द बनतै। आब पहिल काफिया "हाथक" आ दोसर काफिया "पातक" मिलान करू । देखू अंतसँ दूनू शब्दमे "क" विभक्ति छैक आ ठीक ओहिसँ पहिने दूनू शब्द अकारान्त छैक आ संगहि-संग "हा" के स्वरसाम्य "पा"सँ छैक।एनाहिते दोसर उदाहरण देखू--मूल शब्द "पात" विभक्ति "मे" जुटला पर "पातमे" शब्द बनैत अछि। फेर दोसर शब्द "बाट" विभक्ति "मे" जुटला पर "बाटमे" । आब फेरसँ मिलान करू दूनू शब्दक अंतमे विभक्ति "मे" लागल छैक । विभक्ति "मे"सँ ठीक पहिने अकारान्त वर्ण सेहो छैक संगहि-संग "पा" केर स्वरसाम्य "बा"सँ छैक। किछु आर उदाहरण लिअ "कलमसँ" "पतनसँ", "बापकेँ" "आबकेँ" इत्यादि। मुदा ऐठाम ई बात सदिखन धेआन राखू जे जँ कोनो शाइर लेखनमे हिन्दीक प्रभावसँ मूल शब्दमे विभक्ति नै सटबै छथि से गलत करै छथि कारण मूल शब्दमे विभक्तिकेँ सटब मैथिलीक बहुत रास मुख्य विशेषतामेसँ एकटा अछि। तँए चाहे गजल लिखू, कविता लिखू वा कथा, आलोचना वा किछु लिखू मैथिलीमे विभक्ति मूल शब्दमे सटल रहबाक चाही। ऐठाम बात गजल

लेल चलि रहल अछि तँ एकरा एना बूझी कोनो मतलामे “कलमसँ “आ “पतनसँ “काफिया बनि सकैए मुदा मतलामे “कलमसँ “आ “पतनसँ “काफिया नै बनि सकैए। तेनाहिते “आँखिसँ” आ चाँकिसँ “काफिया सेहो ठीक रहत मुदा “आँखिसँ” आ चाँकिसँ “नै ।

2) एहन मूल शब्द जकर अंतमे मात्रा होइक ओकर काफिया लेल धेआन राखू जे विभक्ति के बाद ठीक वएह मात्रा स्वरसाम्यक संग एबाक चाही। उदारहरण लेल--

आँखिसँ, चाँकिसँ, बाँहिसँ, इत्यादि
रातिमे, जातिमे, जाठिमे, इत्यादि
घुटठीकैँ, गुड्डीकैँ, चुट्टीकैँ, इत्यादि
पानिक, आनिक, इत्यादि

केखनो काल दूटा विभक्ति एकै संग जुटि जाइत छैक एहन समयमे अहाँकैँ दोसरो काफिया ओहने लेबए पड़त जाहिमे दूनू विभक्त समान होइक स्वरसाम्यक संगे।विभक्ति बला काफियाक संबंधमे एकटा आर खास गप्प। कोनो एहन मूल शब्द जकर अंत कोनो एकटा खास विभक्तिसँ साम्य रखैत हो, विभक्तिसँ पहिने बला वर्ण अकारान्त वा मात्रा युक्त (जेहन स्थिति) हो संगहि-संग ओहिसँ पहिने स्वरसाम्य हो तँ ओ दूनू काफियाक रूपमे लेल जा सकैए। उदाहरण लेल एकटा विभक्ति बला शब्द “पातक” वा “बाटक” लिअ। आ आब एहन मूल शब्द ताकू जकर अंतमे “क” होइ, “क”सँ पहिने अकारान्त वर्ण होइक (जँ अकारान्त वर्णसँ पहिने स्वरसाम्य होइ तँ आरो नीक) तँ ओ दूनू (एकटा विभक्ति युक्त आ दोसर मूल) शब्द काफिया भए सकैत अछि। उदाहरण लेल उपर लेल दूनू विभक्त युक्त शब्द “पातक” आ “बाटक” के मूल शब्द “बालक” पालक” वा “चालक”सँ मिलाउ। जँ गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे ई शब्द सभ काफिया लेल एकदम्म उपयुक्त अछि। तेनाहिते मात्रा बला शब्द जाहिमे विभक्ति सटल हो आ ओहन मूल शब्द जे ओकरासँ मिलैत हो एक-दोसराक काफिया बनि सकैत अछि। आब कने ऐठाँ ई विचारि ली जे जँ कोनो शेरक अंतिम शब्द सभमे विभक्ति सटल छै तँ कोन रदीफ हेतै आ कोन रदीफ नै हेतै। जेना की शुरूमे रदीफ प्रकरणमे विजय नाथ झा जीक गजलक (तहलीली रदीफ) उदाहरण देने छलहुँ तकरा मोन पाड़ू (हलाँकि विजय नाथ झा जी बला शब्द सन्धिक कारणें अछि मुदा ऐठाम विभक्ति सटबाक कारणें)। तकरा बाद ई देखू जे विभक्ति हटेलाक बाद काफिया बनै छै की नै। जँ विभक्ति हटेला बाद काफिया बनि रहल छै तखन ओकरा रदीफ युक्त शेर वा गजल मानू। आ जँ विभक्ति हटेलाक बाद काफिया नै बनि रहल छै तखन ओकरा बिना रदीफक शेर वा गजल मानू। उदाहरण लेल—

पसरल छै शोणित सगरो बाटपर

घर आँगन बाड़ी झाड़ी घाटपर

एहि गजलक आन अन्तिम शब्द अछि “हाटपर”, “खाटपर”, “टाटपर” । देखू एहि सभमे अंतसँ विभक्ति “पर “सेहो छै एवं विभक्ति हटेलाक बादो “आ “स्वरक संग “ट “वर्णक काफिया बनि रहल छै । तँए एकरा रदीफ युक्त शेर मानल जाएत।मुदा जँ कोनो शेरक पहिल पाँतिमे “कलमसँ” आ दोसर पाँतिमे “पतनसँ” काफिया लेल गेल छै तखन ई बिना रदीफक गजल मानल जाएत कारण विभक्ति हटेलाक बाद “कलम “आ “पतन” एक दोसराक काफिया नै बनैए। आब ई देखू जे जँ विभक्ति बला शब्द पाँतिक बीचमे एतै तँ ओकर की व्यवस्था हेबाक चाही आ ऐ लेल एकटा उदाहरण देखू--

हमरा संगमे आम छै
हमरा हाथमे आम छै

ऐ शेरकँ नीकसँ देखबै तँ पता लागत जे “मे आम छै” दूनू पाँतिमे उभय (कामन) छै तँए ई रदीफ भेल मुदा ऐ ठाम हमरा सभकँ ऐ नियमक मैथिलीकरण करऽ पड़त। आ ई नियम मनमाना नै बल्कि भाषायी मजबूरी अछि (उर्दूमे सहो एहने समझौता करए पड़ल छै तकर विवरण आगू भेटत)। तँए ऐ शेरमे “संगमे” आ “हाथमे” काफिया भेल आ “आम छै” रदीफ। एहन नियम मात्र विभक्तिए बलामे आबि सकैए। एक तरहें एकरा नियममे छूट वा ढ़िलाइ सेहो बुझि सकै छिऐ।
ऐठाम दू टा गप्प बेसी जरूरी जेना कि उपरे कहने छी विभक्ति सटेनाइ मैथिलीक मूल थिक तँए सभ विधामे विभक्ति सटाउ, एहन नै जे खाली गजलक काफियामे छूट लेबाक हिसाबें विभक्ति सटा देलहुँ आ आन विधामे हटा देलहुँ आ दोसर गप्प जे ई छूट वा ढ़िलाइ मात्र विभक्तिए बला अक्षर लेल अछि। मैथिली बहुत संभावना भरल भाषा छै आ ऐमे काफियाक ढ़ेरी लागल अछि तँए एहन दुविधा बला शेर कम्मे हेबाक चाही। ओना ई संभावना बेसी अछि जे भविष्यमे ऐ नियमक दुरुपयोग होबए लागत।
आन सभ विभक्तिमे तँ दिक्कत नै मुदा “कर्म” ओ “सम्बन्ध” बलाके गौरसँ देखू। “कर्म कारक” चिन्ह अछि “कँ” आ “सम्बन्ध कारक” क चारिटामेसँ एकटा “के” सेहो अछि। बस एहीठाम धेआन रखबाक छै। जैठाम कोनो सम्बन्ध देखाओल गेल हो ततए चारिटामेसँ एकटा “के” सेहो आबि सकैए। उदाहरण लेल--

1) राम के घरमे चोरी भेलनि,
2) रामक घरमे चोरी भेलनि
ई दूनू वाक्य सही अछि कारण दूनू वाक्यसँ कर्मक सम्बन्धक पता चलै छै।

मुदा जँ हम पहिल वाक्यके एना लीखी--
1) रामकेँ घरमे चोरी भेलनि
तँ ई गलत हएत। आशा अछि जे किछु गप्प फड़िच्छ भेल हएत।

विशेष टिप्पणी-- उच्चारणमे केखनो काल "कर्म कारक" क चिन्ह "केँ" आ "सम्बन्ध कारक" चिन्ह "के" दूनूक अंतर खत्म भऽ जाइत छै। मुदा लिखित रूपमे मानकताक लेल ई अंतर राखल गेल छै। संगहि-संग ईहो स्पष्ट करब जरूरी जे "सँ" विभक्तिकेँ लघुमे सटा कऽ लिखलापर एकटा दीर्घ सेहो मानि सकै छी आ दू टा लघु सेहो। जेना "रामसँ" एकरा 22 सेहो मानि सकै छी आ 211 सेहो।
बहुत आदमी नासिकताक कारणे "जँ", "सँ", "तँ" आदिक रेघेनाइकेँ दीर्घ मानै छथि मुदा ई गलत अछि। जँ रेघेनाइए टा कसौटी छै तखन तँ कोनो शब्द दीर्घ भऽ सकै छी- कियो "स" केर उच्चारण सेहो रेघा कऽ कहता जे ई दीर्घ छै। एहन बहुत उदाहरण भेटि जाएत। तँइ हम ऐ प्रकारक बहसकेँ वितंडा बूझै छी। सोझ रूपें बुझू जे लघु वर्ण उपर जँ चंद्रबिंदु छै तँ लघुए रहत।

खण्ड-8

आब कने मात्रा बला काफिया पर विचार करी। मैथिली वर्णमालामे 14 गोट स्वर देखाओल गेल अछि। अ, आ, इ, ई उ, ऋ, ॠ, लृ,(आ लृक आर एकटा दीर्घ रूप) ऊ, ए, ऐ, ओ, एवं औ। जाहिमे "अ" तँ हरेक वर्णक (जाहिमे हलन्त् नहि लागल होइक)मे अंतमे अबिते छैक। अन्य चारि गोट स्वर (ऋ,ॠ, लृ आ लृक आर एकटा दीर्घ रूप) खाली तत्सम शब्दमे अबैत छैक। बचल दस गोट स्वर आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, एवं औ (एकर लेख रूप क्रमशः ा, ि, ी, ु, ू, े, ै, ो एवं ौ अछि) ।संगे-संग हम मैथिलीमे रेफ बला काफिया पर सेहो बिचार करब। मतलब जे एहिठाम हम कुल दस गोट मात्रा पर बिचार करब। मुदा एहि दसोमे "इ", "उ" आ रेफ पर बिचार हम बादमे करब। एकर कारण जे मैथिलीमे एहि तीनूक उच्चारण कने अलग ढंगसँ होइत अछि। तँ चली मात्रा बला काफिया पर। मतलामे रदीफसँ पहिने जँ वर्णमे कोनो मात्रा छैक। तँ गजलक हरेक शेरक काफिया मे वएह मात्रा अएबाक चाही चाहे ओहि मात्राक संग बला वर्ण दोसरे किएक ने हो।

पूब मे उगल ललका थारी तऽ देखू
दूइभक घर चमा चम मोती तऽ देखू
(अमित मिश्र)

ऐ गजलमे लेल गेल आन काफिया सभ अछि--किलकारी, बेमारी, पारी, साड़ी आ तरकारी। ऐठाम ई धेआन

देबए बला बात अछि जे मतलामे जे काफिया प्रयोग भेल छै तकर अंतमे “ई “केर मात्रा छै वर्ण मुदा अलग-अलग छै मुदा ओहिसँ पहिने बला स्वर नै मीलि रहल छै एकर मतलब ई भेल जे मात्रा बला काफिया लेल शब्दक अंतमे जे मात्रा छै सएह आन शब्दक अंतमे अएबाक चाही बशर्ते की वर्ण अलग-अलग हो । आब ऐठाम ई देखू जे जँ मतलामे “थारी “क संग साड़ी रहितै तखन आन काफियामे “ड़ी” वा “री” कामन रहितै आ ताहिसँ पहिने “आ” केर स्वरसाम्य रहितै। जेना “बाड़ी “, उधारी, अधकपारी इत्यादि। जँ “थारी “आ “बाड़ी” केर बाद “मोती “शब्दक काफिया लै छी तँ सिनाद दोष आबि जाएत आ काफिया गलत भए जाएत। तेनाहिते जँ कोनो मतलामे “मोती “आ कोठी” काफिया लेबै तखन साड़ी, उधारी आदि काफिया भए सकैए। कोना से आब अहाँ सभ नीक जकाँ बुझि गेल हेबै। एखन हमरा लोकनि “ई “मात्राक उदाहरण देखलहुँ। ऐठाम ई मोन राखू जे “दीर्घ इ “मने “ई “अपन शुद्ध रूपमे सेहो आबि सकैए शुद्ध रूप मने वर्णक रूपमे जेना की

जे गलत छै ओ सही छै
हुनक गप्पे सन तँ ई छै

आब ऐ शेरकेँ देखू जे ऐमे “छै” रदीफ भेल आ पहिल पाँतिमे काफिया “ह” वर्णपर “ई” केर मात्रा अछि मुदा दोसर पाँतिमे “ई” अपन वर्णक रूपमे अछि मने शुद्ध रूपमे अछि। शाइर एनाहुतो काफिया बना सकैत छथि। ई नियम पूर्णतः उच्चारण सम्मत छै। मुदा ऐठाँ ई मोन राखू जे एहन सुविधा “ह्रस्व इ “लेल नै अछि। मने “ह्रस्व इ “अपन वर्णक रूपमे काफिया नै बनि सकैए। जाहि-जाहि वर्णक शुद्ध रूप काफिया बनि सकैए तकर वर्णन ओही मात्राक उदाहरणक सङ्ग देल जा रहल अछि।
ऐ नियम सभहँक अधार पर हमर प्रकाशित पोथी “अनचिन्हार आखर “केर बहुत रास काफिया गलत अछि। मुदा ओहि समय हमरा लग काफिया जतेक समझ छल ओहि हिसाबसँ ओकर प्रयोग कएल। आ तँए ओहि पोथी महँक किछु काफियाक नियम आब पूर्णतः बेकार भए चुकल अछि। संगे संग ईहो धेआन राखू जे आन मात्रा बला कफिया लेल एहने नियम रहत।
एकटा गलत उदाहरण देबासँ हम अपनाकेँ रोकि नै रहल छी। ई शेर हमरे थिक--

एनाइ जँ अहाँक सूनी हम
नहुँएसँ सपना बूनी हम”

(काफिया “ई” क मात्रा)
एहि गजलक अन्य काफिया अछि “चूमी”, “पूछी”, “बूझी”, “खूनी”,,” लूटी”, “सूती” आदि। आब ऐ शेरमे देखू दूनू पाँतिक काफियामे “नी “छै आ ताहि हिसाबसँ हमरा हमरा एहन काफिया चुनबाक छल जकर अंतमे “नी “अबैत

हो आ ताहिसँ पहिने “ऊ “केर मात्रा हो। ऐ शेरमे “ऊ “केर मात्रा तँ लेल गेल अछि मुदा “नी “केर पालन नै भेल अछि तँए ऐ गजल महँक एकटा काफिया “खूनी “छोड़ि आन सभ (जेना चूमी”, “पूछी”, “बूझी ““लूटी”, “सूती”) आदि गलत अछि। अन्य बचल मात्राक लेल एहने समान नियम अछि आ हरेक मात्राक एक-एकटा उदाहरण देल जा रहल अछि। (ऐ ठाम ई मोन राखू जे उर्दूक किछु घराना ऐ नियमकँ तोड़बाक ओकालति करै छथि। हुनक कहब छन्हि जे अंतमे मात्रा आबि रहल छै वर्णक कोन काज। मुदा हमरा हिसाबें मूल नियम ठीक अछि।)

1) छोड़ि कऽ जे बिनु बजने जा रहल अछि
हृदै चिरैत आगि सुनगा रहल अछि

(काफिया “आ” केर मात्रा)
(गजेन्द्र ठाकुर)
ऐ गजल आन काफिया सभ अछि--कना, भसिया, जा, खा इत्यादि।
मैथिलीमे “आ” वर्ण केर शुद्ध रूपमे काफिया बनि सकैए।

2) “जँ तोड़ब सप्पत तँ जानू अहाँ
फाँसिए लगा मरब मानू अहाँ”

(काफिया “ऊ” क मात्रा)
(आशीष अनचिन्हार, सरल वार्णिक)
एहि गजलमे लेल गेल अन्य कफिया “गानू”, “आनू”, “टानू” आदि।
मैथिलीमे “ऊ “वर्ण केर शुद्ध रूपमे काफिया बनि सकैए।

3) “मोन तंग करबे करतै
देह भाषा पढबे करतै”

(काफिया “ए” क मात्रा)
एहि गजलमे लेल गेल अन्य कफिया “खुजबे”, “उड़बे”, “सटबे” आदि अछि।
“ए” वर्ण केर शुद्ध रूपमे काफिया बनि तँ सकैए मुदा ओतेक प्रभावी नै हएत कारण मैथिलीमे शब्दक अंत बला “ए” केर उच्चारण अपूर्ण होत छै। मोन राखू मात्रा बला उच्चारण पूरा होइत छै।

4) भोरे उठि मैदान गेलै बौआ
ओम्हरहिसँ दतमनि तँ लेतै बौआ

(आशीष अनचिन्हार)
(काफिया “ऐ” क मात्रा)
ऐ गजलक आन काफिया सभ अछि--एतै, जेतै, बनतै, चलतै आदि-आदि।
ऐ केर मात्राक एकटा आर उदाहरण देखू

करबै नै मजूरी माँ पढबै हमहूँ
नै रहबै कतौ पाछू बढबै हमहूँ

(ओमप्रकाश)
ऐ गजलमे लेल गेल आन काफिया अछि--चढ़बै, मढ़बै, गढ़बै आदि-आदि। मैथिलीमे “ऐ “वर्णक काफिया शुद्ध रूपमे बनि सकैए।
केखनो काल “ऐ” केर उच्चारण “अइ” जकाँ होइत अछि। जेना “सैतान” बदलामे सइतान, बैमानक बदलामे “बइमान” इत्यादि।

5) “आब हरजाइकेँ तों बिसरि जो रे बौआ
मोन ने पड़ौ एहन सप्पत खो रे बौआ

(काफिया “ओ” क मात्रा)
(आशीष अनचिन्हार, सरल वार्णिक)
एहि गजलमे लेल गेल अन्य कफिया--ओ, खसो, पड़ो इत्यादि अछि। मैथिलीमे “ओ “वर्णक काफिया शुद्ध रूपमे बनि सकैए।

6) “एक बेर फेर हँसिऔ कनेक
ओही नजरिसँ देखिऔ कनेक”

(काफिया “औ” क मात्रा)
(आशीष अनचिन्हार, सरल वार्णिक)
एहि गजलमे लेल गेल अन्य कफिया --” रहिऔ”, “चलिऔ”, “बुझबिऔ” आदि अछि।

मैथिलीमे “औ “वर्णक काफिया शुद्ध रूपमे बनि सकैए। बशर्ते की जखन “यौ “केर बदलामे “औ” केर प्रयोग हो तखन।

**** केखनो काल “औ” केर उच्चारण “अउ” जकाँ होइत अछि।

ऐठाम ईहो मोन राखू जे जँ कोनो मात्रापर अनुस्वार वा चंद्रबिंदु छै तँ ओकर पालन हेबाक चाही। जेना मतलामे “चुँइयाँ “एवं “घुँइयाँ” केर बाद कोनो शेरमे “बुइया “काफिया नै आबि सकैए । तेनाहिते कोनो मतलामे “चुँइयाँ “एवं “बुइया “काफिया नै बनि सकैए । तेनाहिते “बुइया “एवं “रूइया “(मतलामे) केर बाद “चुँइयाँ “काफिया नै आबि सकैए।

आब हमरा लोकनि फेरसँ एकबेर संयुक्ताक्षर बला शब्दपर चली। मात्रा बला संयुक्ताक्षर लेल पहिनेसँ कने अलग ढ़गसँ देखू। ई गप्प उदाहरणसँ बेसी फड़िच्छ हएत। मानू जे मतलाक पहिल पाँतिमे काफियाक रूपमे “चुट्टी” शब्द लेल गेल। आब दोसर काफिया लेल मोन राखू जे “ई” मात्रा युक्त कोनो शब्द भए सकैत अछि। उदाहरण लेल “चिन्नी”, “बुच्ची”, “खटनी “आदि “चुट्टी” क काफिया भए सकैत अछि। मुदा जँ मतलाक काफिया “मुट्ठी” आ “घुट्ठी” छैक तखन आन शेरक काफिया “चिन्नी” या “बुच्ची” नहि भए सकैत अछि। कारण तँ अहाँ सभ बुझिए गेल हेबै। उम्मेद अछि जे उपर देल गेल मात्रा बला उदाहरणसँ काफिया संबंधी नियम बेसी फड़िच्छ भेल हएत।

खण्ड-9

आब चली “इ”, “उ” आ रेफ पर। जेना की पहिने लीखि चुकल छी जे मैथिलीमे “इ “केर उच्चारण दू तरहें होइत अछि तथापि एकरा एक बेर आर देखू” एकटा आर गप्प मैथिलीमे एहन शब्द जे “इकारान्त” अछि ओकर उच्चारण दू तरहें होइत अछि मने पहिल भेल जे लिखलो पहिने जाइए आ बाजलो पहिने जाइए जेना की लिखै तँ छी “माटि” मुदा बाजै छी “माइट”, लिखै छी “देखि” मुदा बाजै छी “देइख” एकर आन-आन सभ उदाहरण सभ सेहो अछि। तेनाहिते दोसर भेल लिखै छी पहिने आ बाजै छी बादमे जेना “माटि “, “देखि “इत्यादि । ऐ दूनू तरहँक उच्चारण केर विस्तृत विवेचन पं.गोविन्द झा अपन पोथी सभमे नीक जकाँ केने छथि (देखू उच्चतर मैथिली व्याकरणक पृष्ठ 16-17, प्रकाशक मैथिली अकादेमी पटना, द्वितीय संस्करण, तेनाहिते हुनके द्वारा लिखित मैथिली परिचायिकाक पृष्ठ -21 प्रकाशक शेखर प्रकाशन 2006, तेनाहिते फेर हुनके द्वारा लिखित मैथिली परिशीलनक पृष्ठ- 37 प्रकाशक मैथिली अकादेमी 2007)। ऐठाम ईहो कहब बेजाए नै जे पं.गोविन्द झा जी अपन तीनू पोथीमे तीन नामसँ एकर व्याख्या केने छथि। उच्चतर व्याकरणमे एकरा मध्य उपनिहित कहै छथि तँ परिचायिकामे अपसृति तँ परिशीलनमे मध्यनिहित । एकटा बात आर पं. जीक ओहि गप्पसँ हम पूर्णतः सहमत छी जाहिमे ओ कहने छथि जे लोक भले ही दू टामेसँ कोनो तरहें उच्चारण करथि मुदा लिखबा कालमे वर्तनी एक समान राखथि। सङ्गे-सङ्ग ईहो लिखब बेजाए नै जे पं.गोविन्द झा जी ईहो मानने छथि जे पहिल तरहँक उच्चारण शैली मने जाहिमे लिखलो जाइए पहिने आ बाजलो जाइए पहिने (जेना माटि लेल माइट इत्यादि) आब

मैथिलीमे बेसी प्रचलित भेल जा रहल अछि।”

तँ आब आउ “इ“ केर मात्रा युक्त काफियापर। आब ऐठाँ अहाँ सभ ई प्रश्न करब जे जँ उच्चारण शैली दू तरहें छै तँ की नियम सेहो दूटा रहतै? मुदा हमर उत्तर हएत जे नै नियम एकैटा रहतै। तँ देखू जे “इ “केर काफिया केना हएत--

जँ अहाँ कोनो एहन शब्दक काफिया बना रहल छी। जकर अन्तिम वर्ण “इ” कार युक्त अछि तँ अहाँकैं आन-आन काफिया लेल “इ” कार युक्त वएह वर्ण लेबए पड़त जे पहिल काफियामे अछि। उदाहरण लेल जँ अहाँ पहिल पाँतिमे “राति” शब्द काफिया लेल लेलहुँ तँ आब अहाँकैं दोसर पाँति आ आन-आन शेरक काफिया लेल “त” वर्ण “इ” कार युक्त हेबाक चाही। जेना की “नाति”, “जाति”, आदि। आ हमरा जनैत एहीठाम मैथिली गजल उर्दू गजलसँ पूर्णतः अलग भए जाइत अछि। आ संगहि-संग इ विशेषता मैथिली गजलके एकटा अपन अलग छवि बनबैत अछि। आ ई विशेषता ह्रस्व “उ” बलामे सेहो अबैत अछि। ई नियम “इ “केर दोसरो उच्चारण शैली लेल उपयुक्त अछि। जेना की खास कए तत्सम शब्दमे इकार बादमे उच्चारणक कएल जाइत अछि जेना “मति “, “गति “इत्यादि आब जँ अहाँ “गति “केर काफिया “हथि “बनेबै तँ केहन प्रभाव हेतै से अहाँ अपने बुझि सकै छिऐ। ओना स्वच्छन्दतावादी सभ कहता जे “गति “केर काफिया “हथि “बनि सकैए। मुदा ऐठाम ई मोन राखू जे गजल सदिखन उच्चारणपर निर्भर छै आ जखन हमहूँ अहाँ सभ दैनिक व्यवहारमे सूनि रहल छिऐ जे “इ “केर पहिले उच्चारण शैली बहु प्रयोगी अछि तखन स्वच्छन्दतावादी सभहँक कुतर्क अपने आप ध्वस्त भए जाइए । जहिया फेर पुनः दोसर तरहँक उच्चारण शैली एतै काफियाक नियमने बदलाव आनल जा सकैए। ओना जँ तत्वतः देखी तँ “इ “केर दूनू उच्चारण शैली लेल उपरका नियम बेसी नीक रहत। ऐठाम ई स्पष्ट करब बेसी जरूरी जे “इ” आ “उ” बला लेल मात्रा निर्धारण लिखित रूपमे करू। जेना “माटि” एकर मात्राक्रम 21 छै। एकर मात्राक्रम 22 मने “माइट” मात्र परिस्थितिवश छूट लेल हएत जकर विवरण आगू चलि कऽ भेटत।

खण्ड-10

आब कने “रेफ” बला काफिया पर बिचार करी। रेफ “र” वर्णक एकटा रूप अछि।जे “र्” मने आधा “र्” मानल जाइत अछि। मैथिलीमे रेफ आ ओकर पूर्ण रूप (र वर्ण) दूनू चलैत अछि । जेना

मर्द - मरद

बर्खा- बरखा

बर्ख- बरख

चर्चा- चरचा

उपरका चारिटा शब्द देखलासँ ई बुझाइत अछि जे रेफक पूर्ण रूप आ रेफ बला शब्दक उच्चारणमे कनेक अंतर भए जाइत छै। संगे-संग किछुए शब्द अपन रेफकैं छोड़ि पूर्ण र केर स्वरूपमे अबैत अछि। तँए काफियाक संबंधमे हमर ई विचार अछि जे जँ शब्द रेफ युक्त हो मुदा बिना मात्राक हो तँ समान स्वर आ उच्चारणक प्रयोग करी।

जेना मानि लिअ अहाँ मतलामे “सर्द “आ “पर्द” काफिया लेलहुँ आ तकरा बादक शेरमे “मरद” काफियाक प्रयोग हमरा हिसाबें गलत हएत कारण स्पष्ट रूपैँ “गर्द “आ “पर्द “शब्दक उच्चारण “मरद “शब्दसँ अलग अछि। तेनाहिते मतलामे “सर्द “आ “मरद” शब्दक काफिया गलत हएत। “मरद “शब्दक बाद “बड़द “, “शरद”, “दरद” आदि काफिया ठीक रहत। मुदा जँ कोनो एहन शब्द जकर अन्तमे रेफ हो आ संगे-संग ओ शब्द मात्रा बला हो तँ नियम बदलि जेतै। मतलब जे शाइर तखन बिना कोनो दिक्कतकेँ काफिया बना सकैत छथि। कहबाक मतलब जे जँ अहाँ मतलाक पहिल पाँतिमे काफिया “गर्दा” लेलहुँ आ तकरा बाद आन काफिया बर्खा या बरखा लेलहुँ तँ बिलकुल सही हएत। आब अहाँ सभ बुझि सकैत छिऐ जे कोनो मतलामे “बर्खी “आ “करची “बनि सकैत अछि। स्वरसाम्य, सिनाद दोष आ ईता दोष बला प्रसंग सभ आने काफिया जकाँ एहूमे लागू हएत। तेनाहिते ई मोन राखू जे जँ रेफ शब्दकेँ अन्त छोड़ि (शुरूमे वा बीचमे कतौ) छैक तँ संस्कृतक शब्दमे तँ रेफे रहत मुदा विदेशज खास कए अरबी-फारसी आ उर्दू बला शब्दमे “र” भए जाइत अछि। जेना की पर्वतकेँ “परवत” लिखब कने गलत सन लगैए मुदा शर्बतकेँ “शरबत” जरूर लीखि सकैत छी। एहिठाम ई मोन राखू पर्वत आ शरबत दूनू एक दोसराक काफिया भए सकैए।

काफियाक सम्बन्धमे महत्वपूर्ण गप्प ई जे संस्कृत परम्परा हिसाबें “स, श आ ष “केर उच्चारण अलग-अलग अछि। तेनाहिते “न “आ “ण “केर उच्चारण अलग अछि। “र” आ” ड़ “केर उच्चारण अलग अछि आ “ॠ” ओ “रि “केर उच्चारण सेहो अलग अछि। मुदा प्राकृत-अप्रभंश भाषामे ई नियम टूटल। ई नियम दूनू स्तर मने लिखित आ उच्चरितपर टूटल। संस्कृतमे लिखल जाइत अछि “गणेश “आ उच्चारणो होइत छै “गणेश “मुदा प्राकृत-अप्रभंशमे लिखल जाइत अछि “गनेस” आ बाजलो जाइत अछि “गनेस “। मुदा आधुनिक भारतीय भाषा (जे की प्राकृत-अप्रभंशसँ तँ निकलल अछि मुदा आब संस्कृतनिष्ठ भऽ चुकल अछि)मे विचित्र प्रचलन आबि गेल अछि। एखन अधिकांश लोक लिखैए “गणेश “मुदा उच्चारण करैए “गनेस “। जँ काफियाक नियमसँ देखी तँ “गणेश “केर काफिया “गनेस “नै भऽ सकैए। एहने गप्प “ष, न, ण, र,ड़ आ ॠ” लेल बूझल जाए। ढ आ ढ़ केर उच्चारण शब्दक पहिल स्थानपर ढ केर प्रयोग होइत छै मने निच्चामे बिंदु नै लागै छै। एकर उच्चारण शुद्ध होइत अछि उदाहरण लेल ढक्कन। शब्दक दोसर, तेसर, चारिम... अंतिम स्थानपर ढ केर निच्चा बिंदु लागै छै आ लोकमे एकर उच्चारण "र्" ओ "ह" मिला क' होइत छै उदाहरण लेल पढ़ाइ शब्दक उच्चारण प+र्+हा+इ होइत छै। शाइर गजलमे काफिया निर्धारण करैत काल एहू बातक धेआन रखता तँ गजल आरो नीक आर फलेक्सिबल हएत (जँ एहि पोथीमे कोनो शब्दक शुरूमे "ढ़" आएल अछि तँ ओकरा गलत मानू आ आग्रह जे ओकरा उजागर करू जाहिसँ हम ओकरा सुधारि सकी)। काफियाक एतेक चर्चाक पछाति आब अहाँ सभ अपने निर्णय कऽ सकै छी जे एहन काफिया लेल की कएल जाए। ओना किछु गोटें कहि सकै छथि (जेना उत्तर प्रदेश)क हिंदी बजनिहार सभ जे “र” आ” ड़ तेनाहिते “स, श” आदि-आदिक अलग-अलग उच्चारण अछि आ जे नै बाजि सकै छथि तिनका उच्चारण दोष छनि तँ हुनका कहिऔन जे सरकार उच्चारण दोषेकेँ कारण संस्कृतसँ प्राकृत आ प्राकृतसँ अप्रभंश आ अप्रभंशसँ आधुनिक मैथिली ओ आन भाषा निकलल छै।

आब कने हम अपन व्यक्तिगत विचार राखब--

कोनो भाषा लेल ध्वनि सभसँ बेसी महत्वपूर्ण छै। पहिने ध्वनि तकर बाद ओकर रैखिक रूप। हरेक भाषाक अपन-अपन ध्वनि विशेषता होइत छै जकरा एक सीमा धरि सुरक्षित रखबाक चाही एक सीमा धरि ऐ द्वारे जे बेसी ढ़ील देलासँ दोसर भाषाक ध्वनि ओकरा उपर चढ़ि जाएत आ आस्ते-आस्ते पहिल भाषा गाएब भऽ जाएत मने प्रचलनसँ बाहर भऽ जाएत। आ बेसी कठोर ध्वनि नियम बना देलासँ कतबो शक्तिशाली भाषा रहत ओ मरि जाएत। अपना देशमे संस्कृत एकर सभसँ बड़का उदाहरण अछि। कठोर ध्वनि नियम कारणें संस्कृतसँ प्राकृत आ प्राकृतसँ आधुनिक भारतीय भाषा सभ निकलल। ओना जँ हमरासँ व्यक्तिगत रूपें पूछल जाए तँ हम उच्चारणक नियममे कठोरता नै चाहै छी आ हम ऐ विचारपर जोर देब जे भाषाक लिखित वा मानक रूप एक हो आ ओकर उच्चारण क्षेत्रक हिसाबसँ । वर्तमान समयमे अंग्रेजीक विस्तार एही कारणे भेलै जे हरेक क्षेत्रमे अंग्रेजीक उच्चारण बदलि गेलाक बादो ओकर लिखित रूप एकसमान होइत छै (अमेरिकी अंग्रेजी एकर अपवाद अछि)। तेनाहिते मैथिली लेल जँ एहने सुविधा रहै तँ भविष्यमे मैथिली आगू बढ़त से हमर विश्वास अछि। ऐ ठाम हम ई स्पष्ट रूपसँ कहि दी जे लिखित रूप वा मानक मैथिली मने ब्राह्मणवादी भाषा नै होइत छै। हरेक जातिमे प्रचलित शब्दक सङ्ग जे भाषा आएत सएह मानक वा लिखित भाषा बूझल जाएत।केखनो काल “त्र” केर लेख रूप “तर्” आ “क्ष” केर लेख रूप “च्छ” अबैत अछि। शाइर उपरकें नियमक हिसाबें एकर काफिया बनाबथि। आब कने एक बेर काफियामे ईता दोष देखल जाए--

ईता दोष काफियामे बहुत बड़का दोष मानल जाइत छै। ऐपर कने विचार कए ली। एकरा चारि भागमे देखू--

1) ईता दोष मात्र मतलामे होइत छै।

2) जँ मतलाक दूनू काफिया मात्रा युक्त हो, वा प्रत्ययसँ बनल हो वा सन्धि वा उपसर्गसँ बनल शब्द हो तँ दूनू काफियाक मात्रा हटा दिऔ, वा प्रत्यय हटा दिऔ वा सन्धि विच्छेद कए दिऔ। आब ई देखू जे मात्रा, प्रत्यय वा विच्छेदक बाद जे पहिल शब्द बचल शब्द छै से सार्थक छै की निरर्थक। जँ दूनूमेसँ एकौटा निरर्थक अछि तँ चिन्ता करबाक गप्प नै कारण एहन स्थितिमे ईता दोष नै रहत।

3) जँ दूनू शब्द (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाद वा विच्छेदक बाद) सार्थक छै आ ओहि बचल पहिल सार्थक शब्दक आपसमे तुकान्त बनि रहल छै तखन मात्रा वा प्रत्यय वा सन्धि बला शब्द सेहो काफिया बनत आ ऐमे ईता दोष नै हएत।

4) मुदा जँ दूनू शब्द (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाद वा विच्छेदक बाद) सार्थक छै आ ओहि बचल पहिल सार्थक शब्दक आपसमे तुकान्त नै बनि रहल छै तखन मात्रा वा प्रत्यय वा सन्धि बला शब्द सेहो काफिया नै बनत आ ऐमे ईता दोष हएत।

आब कने उदाहरणसँ देखी ऐ प्रकरणकैं मानू जे मतलामे “बिमारी” आ “हरामी” काफिया छै। तँ आब जँ दूनूक मात्रा हटेबै तँ क्रमशः “बिमार “आ “हराम “शब्द बचै छै जे की सार्थक छै। मुदा “बिमार” आ “हराम” एक दोसराक तुकान्त नै बनि सकैए। तँए मतलामे “बिमारी” एवं “हरामी” काफिया नै बनत। उर्दूमे जँ केओ एहन

काफिया बनबै छथि तँ ओकरा ईता दोषसँ ग्रस्त मानल जाइत छै। एकटा दोसर उदाहरण लिअ “दोस्ती” आ “दुश्मनी” मतलामे काफिया नै बनि सकैए। कारण वएह मात्रा हटेलाक बाद दोस्त आ दुश्मन शब्द बचै छै जे की दूनू सार्थक छै आ दूनू एक दोसराक तुकान्त नै बनै छै तँए दोस्ती आ दुश्मनी मतलामे काफिया नै बनि सकैए। मैथिलीमे प्रत्यय बला शब्द संग सेहो एना कएल जा सकैत अछि। प्रत्यय बला शब्दक किछु उदाहरण देखू धान शब्दमे गर प्रत्यय लगेलासँ नव शब्द बनै छै “धनगर” । तेनाहिते मोन शब्दमे गर प्रत्यय लगेलासँ “मनगर “शब्द बनै छै (किछु गोटेँ मोनगर सेहो लिखै छथि)। एनाहिते आन प्रत्ययसँ बहुत रास नव शब्द बनै छै।
आब कने ऐ नव शब्दक काफियापर आउ जँ धनगर शब्दक काफिया मनगर बनेबै तँ ईता दोष नै रहतै। कारण जँ ऐ दूनू नव शब्दमेसँ गर प्रत्यय हटेबै तँ क्रमशः धन आ मन बचै छै आ दूनूमे तुकान्त सेहो बनि रहल छै (ऐठाम ई मोन राखू जे प्रत्यय हटलाक बाद धन शब्द मिलाएल जेतै ने की धान, तेनाहिते मन मिलाएल जेतै ने की मोन)। आब जँ मतलामे धनगर संगे दुधगर आबै तँ देखू की हेतै। प्रत्यय हटलाक बाद क्रमशः धन आ दुध बचै छै मुदा दूनू एक-दोसराक तुकान्त नै बनि रहल छै तँए धनगर आ दुधगर एक-दोसराक काफिया नै हएत। आन-आन प्रत्यय वा सन्धि वा मात्रा लेल एहने सन बुझल जाए।
आब जँ बिमारी संग उधारी आबै तँ देखू की हेतै। बिमार एवं उधार दूनू शब्द (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाद वा विच्छेदक बाद) सार्थक छै आ संगे संग दूनू एक दोसरक तुकान्त बनि रहल छै तँए बिमारी आ उधारी सेहो एक दोसरक काफिया बनत आ ऐमे ईता दोष नै रहतै।
आब जँ बिमारी संग जिनगी लेबै तँ देखू की हेतै। बिमार एवं जिनग (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाद वा विच्छेदक बाद) बिमार शब्द सार्थक छै मुदा जिनग शब्द निरर्थक तँए बिमारी आ जिनगी सेहो एक दोसरक काफिया बनि सकैए।किछु शब्द एहन होइत छै जकरा पर मात्रा रहैत छै तखन अलग मतलब होइत छै आ मात्रा हटलाक बाद दोसर मतलब बनि जाइत छै जेना “कारी” तँ एकर मतलब भेलै रंग कारी। मुदा जँ एकर मात्रा हटा देबै तँ बचतै “कार “जे की गाड़ीक संदर्भमे सार्थक शब्द तँ छै मुदा मतलब दोसर छै। तँए अहूँ काफियामे ईता दोष नै रहत। आन शब्द एनाहिते ताकल जा सकैए। आब केओ कहि सकै छथि जे बिमार आ बिमारी शब्द अलग-अलग छै मुदा हमर कहब जे बिमार आ बिमारी दूनूक अर्थ एक-दोसरामे निहित छै मुदा कारी आ कार शब्दमे से नै छै।तेनाहिते व्याकरणिक भेद बला शब्दमे ईता दोष नै हएत। जेना पहिल काफिया हो संज्ञा आ दोसर काफिया हो विशेषण इत्यादि। अस्तु ई भेल ईता दोष प्रकारण।
हिन्दीमे बहुतों शाइर ईता दोषकेँ नै मानै छथि, मुदा ई मोन राखू जे मैथिली आ हिन्दी अलग-अलग भाषा छै। मैथिलीमे बहुत रास प्रत्यय गेना गर, आदि अरबी फारसीसँ आएल अछि तँए ईता दोष मैथिलीमे रहत।
ऐठाम हम किछु उर्दू आ अंग्रजीक प्रत्यय दऽ रहल छी सुविधा लेल (बहुत शब्द मैथिलीमे नहि अबैत अछि)--
उर्दूक किछु प्रत्यय--

आ	सफ़ेद	सफेदा
आना	जुर्म, दस्त, मर्द	जुर्माना, दस्ताना, मर्दाना

आनी	जिस्म, बर्फ	जिस्मानी, बर्फानी
इयत	इंसान, खैर	इन्सानियत, खैरियत
कार	दस्त, सलाह	दस्तकार, सलाहकार
खोर	घूस, हराम	घूसखोर, हरामखोर
गर	धान, जादू	धनगर, जादूगर
गार	परहेज़, मदद	परहेज़गार, मददगार
गी	ज़िंदा, बंदा	ज़िंदगी, बंदगी
चा/ची	देग, संदूक	देगचा, संदूकची
ज़ाद/ ज़ादा	आदम, शाह	आदमज़ाद, शाहज़ादा
दां	उर्दू, कद्र	उर्दूदां, कद्रदां
दान	इत्र, कलम	इत्रदान, कलमदान
दानी	चाय, गोंद	चायदानी, गोंददानी
दार	ईमान, माल	ईमानदार, मालदार
बाज़/बाज़ी	चाल, मुक़दमा	चालबाज़, मुक़दमेबाज़ी
बान	दर, बाग	दरबान, बागबान
मंद	अक्ल, दौलत	अक्लमंद, दौलतमंद
साज	घड़ी	घड़ीसाज

अंग्रेजीक किछु प्रत्यय--

इज्म	बुद्ध, सोशल	बुद्धिज्म, सोशलिज्म
इस्ट	बुद्ध, सोशल	बुद्धिस्ट, सोशलिस्ट

खण्ड-11

आब कने ह्रस्व “उ” पर धेआन दी। मैथिलीमे जँ शब्दक अन्तमे “उ” अबैत हो आ ठीक ओहिसँ पहिने अकारान्त वर्ण हो तखन “उ” केर उच्चारण प्रायः औ/अउ जकाँ होइत अछि सङ्गे-सङ्ग संस्कृतक पण्डित सभ “मधु “केर मूल उच्चारण मने “मधु “सेहो करैत छथि। उदाहरण लेल मधु शब्दक उच्चारण मौध/मअउध होइत अछि। “उ “के काफिया लेल “इ “जकाँ नियम मानू जेना मधु लेल वधु काफिया तँ सही रहल मुदा मह‌ु नै। आ जँ “उ”सँ पहिने आकारान्त वर्ण हो तखन “इ” ए जकाँ “उ” केर उच्चारण पहिने होइत अछि। उदाहरण लेल “साधु” केर उच्चारण “साउध”, “बालु” केर उच्चारण “बाउल” इत्यादि। ओना उच्चारण लेल आनो शब्द लेल जा सकैए। आब आबी ओहन

शब्दपर जकर अंत “उ” होइक आ ठीक ओहिसँ पहिने आकारान्त वर्ण होइक (जेना की उपरमे एकर उच्चारण पद्धित देखा देल गेल अछि, तँए सोझें काफिया पर चली)। ठीक ह्रस्व “इ” जकाँ नियम छैक एकरो। मानि लिअ जँ अहाँ “बालु” शब्द लेलहुँ, तँ मोन राखू दोसर काफियाक उच्चारण “आकारान्त कोनो वर्ण + उ + ल” होइक जेना की “भालु” इत्यादि। कुल मिला कए कहबाक ई मतलब जे “उ “केर दुनू स्वरूपमे (अकारान्त आ आकारान्त)मे “इ “समान नियम लागू हएत। मैथिलीमे बहुत काल “उ” आ चन्द्रबिंदु एकै संग अबैत अछि। जेना “कहलहुँ”,” सुनलहुँ”, “रहलहुँ” आदि। मानि लिअ जँ ई शब्द सभ जँ काफियाक रूपमे आबि रहल अछि तँ एहन समयमे धेआन राखू जे काफियामे ठीक वहए वर्ण “उ” आ चन्द्रबिंदुक संग आबए। से नहि भेला पर काफिया गलत भए जाएत। उपरमे देल तीनू शब्दके देखू । तीनू शब्दक अन्त “ह”सँ अछि ओहो “उ” आ चन्द्रबिंदुक संग। मने ई तीनू काफिया लेल उपयुक्त अछि।

खण्ड-12

आघात बला शब्दक काफिया

पं.गोविन्द झाजी अपन पोथी “मैथिली परिशीलन” केर पन्ना 53 पर सूचना दै छथि जे मैथिलीमे रागात्मक आघात प्राचीने कालमे समाप्त भऽ गेल छल। पन्ना 54 पर ओ मात्रात्मक आघात केर बारेमे सूचना दै छथि। ओही पन्नापर ओ ईहो सूचना दै छथि जे डा. रामावतार यादवजी मैथिलीमे मात्रात्मक आघातकेँ नै मानै छथि संगे-संग कहै छथि जे आघातसँ स्वरक प्रलम्बता बढ़ै छै आ तँइ लघु स्वर दीर्घमे नै बदलै छै। पं.जी ईहो लीखै छथि जे आघातसँ रैखिक प्रतीकमे कोनो बदलाव नै होइ छै। पन्ना 55 पर ओ बलात्मक आघात (बलाघात) केर बारेमे सूचना देने छथि। ऐठाम ईहो ध्यान राखब उचित जे पं.गोविन्द झाजी अपन पोथी “उच्चतर मैथिली व्याकरण” क पृष्ठ 18 पर बलाघातकेँ मानक नै मानै छथि। व्यक्तिगत रूपसँ हमरा हिसाबें मैथिलीमे खाली दू लघु वर्ण आ किछु हद धरि तीन वर्णसँ बनल शब्दमे मात्रात्मक आघात अछि आ बाद बाँकीमे खत्म भऽ गेल अछि, तँए हम एतए खाली मात्रात्मक आघात पर बिचार करब आ ओइ हिसाबसँ कतऽ लघु, कतऽ दीर्घ से देखाएब। मैथिलीमे कोन शब्दमे कतए आघात पड़त तकरा देखल जाए--

1) एक वर्णक शब्दमे ओहीपर आघात पड़ै छै। दू वर्ण धरि बला एहन शब्द जाहिमे एकौटा गुरू वर्ण नहि हो एहन शब्दमे अन्तसँ दोसर शब्द पर आघात पड़ैत छैक जेना “घर”, “बर” । एकर उच्चारण “घऽर”, “बऽर” आदि होइत अछि। मतलब “घ” आ “ब” पर आघात पड़ल छैक। एकर अपवादो छै आ ताही अनुकूल अर्थो बदलि जाइत छै जेना एकटा शब्द अछि “रस” आब जँ एहि शब्दक “र” पर आघात हेतै तखनो ओ खाए-पीबए बला वस्तुक तरल पदार्थ रूपमे जानल जेतै मुदा जँ “र” पर बिना आघात देल बाजल जाए तँ ओ साहित्य बला भाव, अर्चा-चर्चा बला भाव रूपमे लेल जेतै। दोसर उदाहरण लिअ जेना “घर-घरमे हरकंप” अइ वाक्य खंडमे उच्चारण “घऽर-

घऽरमे हरकंप" नै अछि मतलब आघात गाएब अछि))। जँ दू वर्ण बला शब्दमे एक या एकसँ बेसी दीर्घ हुअए तँ पहिल दीर्घ पर आघात पड़ैत छैक। जेना "हाथ", "सही" आदि।मतलब "हा" आ "ही" पर आघात छैक। "हाथी" "माछी" । एहि शब्द सभमे पहिल गुरू "हा" एवं "मा" पर आघात छैक। संयुक्ताक्षर बला शब्दमे संयुक्ताक्षरसँ पहिने बालपर आघात होइ छै जेना "खत्ता" अइमे "ख" पर आघात छै।

2) तीन वर्ण बला एहन शब्द जाहिमे तीनू लघु वर्ण हो एहन शब्दमे अन्तसँ दोसर वर्ण पर आघात पड़ैत छैक आ तँइ एहन शब्दक उच्चारणमे पहल आ दोसर वर्ण एक संग आ तेसर वर्ण अलग उच्चरित होइ छै। जेना "तखन", "बिगड़ि" ।एहिमे "ख" आ "ग" पर आघात छैक मने एकर उच्चारण "तख-न" वा "बिग-ड़ि" अछि। जँ तीन वर्ण बला शब्दमे एक या एकसँ बेसी दीर्घ हुअए तँ पहिल दीर्घ पर आघात पड़ैत छैक। जेना "ओसारा" मे "ओ" पर आघात छैक। "बतासा" मे "ता" पर आघात छैक। वर्तमान समयमे बहुतो तीन लघु वर्ण बला शब्दपर आघात गायब भऽ गेल अछि। उपर देल शब्द "तखन" केर उच्चारण "त-खन" होइत अछि। तेनाहिते "बि-गड़ि" बाजल जाइत अछि मुदा किछु एहनो शब्द अछि जइमे आघातक कारणे अर्थे बदलि जाइत छै आ तँइ ओकर उच्चारण पहिने जकाँ रहत उदाहरण लेल एकटा शब्द "कमल "लिअ। आब जँ अहाँ एकर उच्चारण क-मल (मने लघु-दीर्घ) करबै ताहिसँ एकटा फूलक अर्थ निकलत मुदा जखन अहाँ एही शब्दकेँ कम-ल (मने दीर्घ-लघु मने "म" पर आघात) करबै तखन एकर अर्थ घटनाइमे हेतै जेना पानि कमल की नै इत्यादि। तँए हमर आग्रह जे पहिने कोनो शब्दकेँ उच्चारणक हिसाबेँ अर्थ देखू जाहिसँ उच्चारण अनर्थ नै हुअए।

3) चारि वर्णक एहन शब्द जइमे सभ लघु हो तइमे अन्तसँ दोसर वर्ण पर आघात पड़ैत छैक। उदाहरण लेल "भिनसर" मे "स" पर आघात छैक, "अगहन" मे "ह" वर्ण पर छैक। जँ चारि वर्ण बला ओहन शब्द जाहिमे दीर्घ सेहो छैक तकर आघात उपरमे देल गेल आने नियम जकाँ अछि। जेना "उच्चारण" मे च्चा पर आघात छैक। कुल मिला कए एकसँ चारि वर्ण धरिक शब्द लेल एकै रंगक नियम अछि। वर्तमानमे चारि वर्णक एहन शब्द जइमे सभ लघु हो तइमे आघात खत्म भऽ गेल अछि उदाहरण लेल "भिनसर" एकर उच्चारण छै "भिन+सर एकर मतलब जे "भिनसर" मे जे "सर" छै तकर उच्चारण समान्यतः "सऽर" नै होइत अछि। दोसर शब्द "कबकब" लिअ एकर वर्तमान उच्चारण "कब+कब" अछि।

4) पाँच वर्ण बला शब्दमे पहिल दीर्घक संगे अन्तसँ दोसर वर्ण पर सेहो आघात होइत छैक। उदाहरण लेल "देखलहक" मे पहिल दीर्घक संग अन्तसँ दोसर वर्ण "ह" पर आघात छैक, तेनाहिते "कमरसारि" मे "सा" पर आघात छैक, "कनपातर" मे दीर्घक संग "त" पर आघात छैक। मूल रूपसँ पाँच वर्ण बला शब्दमे आघात बहुत मंद रूपें अबैत छै तँइ वर्तमान समयमे एहनो शब्दसँ आघात हटि गेल अछि।

5) छह वर्णमे आघात पाँचे वर्ण जकाँ होइत छै।

अइ ठाम धरि अबैत-अबैत हमरा बुझाइए जे वर्तमान मैथिलीमे आघात हटि जेबाक कारणे रामावतारजी मात्रात्मक आघातकेँ अमान्य केने हेता।

जँ पूरा विवेचनाकेँ देखबै तँ पता लागत जे मैथिलीमे दू वर्णक ओहन शब्द जाहिमे सभ लघु हो (अपवाद छोड़ि) आघात प्रकरण ओहीपर बेसी टिकल छै। तेनाहिते किछु अपवाद छोड़ि तीन, चारि, पाँच वा छह वर्ण ओहन शब्द जाहिमे सभ वर्ण लघु हो तइमे आघात गाएब भऽ चुकल अछि। तँए जँ कोनो शाइर मतलाक कोनो पाँतिमे दू अक्षर बला शब्दक काफिया लै छथि तँ ओ प्रयास राखथि जे पूरा गजलमे आन-आन काफिया दुइए अक्षर बला शब्द बला हो। शुरूआतमे सभ गोटा (हमरा सहित) "घर "केर काफिया "भिनसर" सेहो बनबै छलाह। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ प्रवाह देखथि।
एहन ठाम ई मोन राखू जे काफियामे आघात बला स्थान आ वर्णक मात्रा समान रहए। उदाहरण लेल "घर" आ "मजूर" दूनूमे दोसर स्थान पर आघात छैक मुदा मात्रा अलग-अलग छैक, तँए इ दूनू एक-दोसराक काफिया नहि बनि सकैए। तँ "घर" शब्दक काफिया लेल "बर", "तर", "हर", आदि उपयुक्त रहत । आ "मजूर" लेल "मयूर", "हजूर" आदि उपयुक्त रहत। आनो-आन आघात बला शब्दक काफिया लेल इएह नियम बूझू। एहिठाम हम फेर मोन पाड़ी जे काफियाक निर्धारण खाली मतलामे होइत छैक आ बाँकी शेरमे ओकर पालन। तँए जँ केओ मतलामे विभक्ति बला शब्दकेँ "फूलक" आ हाथक" काफिया लेताह तँ सही हएत आ बाद-बाँकी शेरमे "अक" काफियाक प्रयोग हेतैक। मुदा जँ केओ मतलामे "फूलक" आ "अड़हूलक" लेता आ तकरा बादक शेरमे "हाथक" प्रयोग करता तँ ओ बिल्कुल गलत हएत। "फूलक" आ "अड़हूलक" बाद आन शेर लेल काफिया "ूलक" होएबाक चाही।
(किछु उर्दू शाइरक सभहँक मोताबिक जँ एकै शब्दक दूटा अर्थ हो तँ ओ मतलामे आबि सकैए। जेना "बौआ" बच्चा केर अर्थमे आ "बौआ" बेकार घूमब केर अर्थमे। मुदा हमरा जनैत मैथिलीमे ई गलत हएत कारण अर्थ संगत रूपें बैसबे नै करतै। बेसी प्रमाण चाही ऐ "बौआ" शब्दकेँ मतलामे प्रयोग कऽ कऽ देखि लिऔ।)
ई तँ काफिया लेल छल मुदा अहूसँ आगू ई आघात गजलक हरेक पाँतिमे प्रभावी हएत कारण आघातक पालन केलासँ गजलमे उच्चारण स्पष्टता आएत आ गजल प्रभावी बनत। उर्दूमे एहने सन नियम छै जकरा मुतहर्रिक-साकिन व्यवस्था नामसँ जानल जाइत छै (किछु अंतरक संग)। ऐ ठाम एकटा महत्वपूर्ण गप्प जे आघातक कारणे मैथिलीमे लघु-गुरू व्यवस्थामे सेहो प्रभावित अछि खास कऽ एहन शब्द जइमे सभ वर्ण लघुए-लघु हो। एकर वर्णन विस्तारसँ निच्चा कऽ ली तँ आगू लेल सुविधा रहत—

1) दू वर्णसँ बनल शब्दक दोसर वर्णपर आघात रहै छै तँइ एकरा दीर्घ मानू मने “घर” =दीर्घ (संस्कृतमे लघु-लघु)

2) तीन वर्णसँ बनल शब्दपर जाएसँ पहिने लेखक अपन निर्णय लेथि जे ओ पारंपरिक रूपें आघात मानै छथि वा वर्तमान उच्चारण मानै छथि (बिना आघातक)। जँ कियो शाइर आघात मानै छथि तँ अनिवार्य रूपें ओ अपन सभ गजलमे आघातक पालन करथि। एहन नै जे कोनो गजलमे मात्रा पुरेबा लेल आघात मानि लेलहुँ आ कोनोमे नै मानलहुँ। जे कियो एना करता तँ हुनकर काव्य दोषसँ ग्रसित बूझल जाएत। जे आघात नै मानै छथि तिनकोसँ आग्रह जे ओ अपन गजलमे उच्चारणक एकरूपता राखथि। मने तीन वर्णसँ बनल शब्द लेल दू टा ग्रुप भेल--पहिल जे आघात मानै छथि, दोसर जे आघात नै मानै छथि। तँ आब आउ तीन वर्णसँ बनल शब्दपर---

“पहिल” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हेतै पहि-ल मने दीर्घ-लघु मने 2-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल उच्चारण प-हिल मने लघु-दीर्घ 1-2
“तखन” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हेतै तख-न मने दीर्घ-लघु मने 2-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल उच्चारण त-खन मने लघु-दीर्घ 1-2
“बिगड़ि” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हेतै बिग-ड़ि मने दीर्घ-लघु मने 2-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल उच्चारण बि-गड़ि मने लघु-दीर्घ 1-2
आन शब्द लेल एहने सन बुझू।

आब आउ चारि लघु वर्णसँ बनल शब्दपर --

“भिनसर” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हएत भिनस-र मने दीर्घ-लघु-लघु मने 2-1-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल भिन-सर मने दीर्घ-दीर्घ मने 2-2
“कबकब” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हएत कबक-ब मने दीर्घ-लघु-लघु मने 2-1-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल कब-कब मने दीर्घ-दीर्घ मने 2-2
आन शब्द लेल एहने सन बुझू।

आब आउ पाँच लघु वर्णसँ बनल शब्दपर--

“चहटगर” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हएत चहटग-र मने लघु-दीर्घ-लघु-लघु मने 1-2-1-1 । जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल चहट-गर मने लघु-दीर्घ-दीर्घ मने 1-2-2
आन शब्द लेल एहने सन बुझू।

आब आउ छह लघु वर्णसँ बनल शब्दपर--

“चपलचरण” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हएत चप-ल-चर-ण मने दीर्घ-लघु-दीर्घ-लघु मने 2-1-2-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल च-पल-च-रण मने लघु-दीर्घ-लघु-दीर्घ मने1- 2-1-2
आन शब्द लेल एहने सन बुझू।
ऐठाम धरि आबैत-आबैत बुझा गेल हएत जे आघात कोना मात्राक स्थान परिवर्तन करा दै छै तँए मैथिली गजल लेल आघात महत्वपूर्ण रहत। व्यक्तिगत रूपें हम वर्तमान उच्चारणकेँ (बिना आघातक) मानै छी। एकटा आर विशेष गप्प हमर सभहँक एखन धरि गजलमे आघातक अनियमता भेटि सकैए आ ताइ लेल एकटा मेंटरक रूपमे हमहीं दोषी छी।

नोट--” उच्चतर मैथिली व्याकरण” केर पृष्ठ18 पर पं.गोविन्द झाजी लीखै छथि जे कोनहुँ स्थितिमे आघात अंतसँ तेसर वर्णसँ पाछू नै जा सकैए मुदा “मैथिली परिशीलन पृष्ठ” केर 54पर ओ लीखै छथि जे तीनसँ अधिक अक्षर बला शब्दमे आघात दू ठाम पड़ैत अछि पहिल ठाम मंद आ दोसर ठाम स्वाभाविक मुदा कतए मंद आ कतए स्वाभाविक से नै फड़िछाएल गेल अछि। तथापि जखन पंडित जी बिना कोनो सूचना देने जखन अपन पोथी “उच्चतर मैथिली व्याकरण” केर तर्क अपने दोसर पोथी “मैथिली परिशीलन” मे काटि दै छथि तखन हम सभ की करी। मुदा पाठक भ्रममे नै पड़थि तँइ अइ प्रकारक सूचना हम पाठककेँ दऽ रहल छी।

एक नजरि विसर्ग बला काफियापर सेहो फेरि ली--

विसर्ग कोनो अलग वर्ण नै छै खाली स्वाराश्रित छै। विसर्गक उच्चारण विशिष्ट आ अलग हेबाक कारणें ओकरा सही रूपमे लिखब संभव नै छै।

सामान्यतः जँ विसर्गक पहिले ह्रस्व स्वर/व्यंजन हो तँ ओकर उच्चारण त्वरित ‘ह’ जेहन होइत छै आ जँ विसर्गक पहिले दीर्घ स्वर/व्यंजन हो तँ विसर्गक उच्चारण त्वरित ‘हा’ जेहन करबाक चाही।

विसर्गक पूर्व ‘अ’कार हो तँ विसर्ग का उच्चारण ‘ह’ जेहन, ‘आ’ हो तँ ‘हा’ जेहन; ‘ओ’ हो तँ ‘हो’ जेहन, ‘इ’ हो तँ ‘हि’ जेहन होइत छै। मुदा जँ विसर्गक पूर्व अगर ‘ऐ’कार हो तँ विसर्ग का उच्चारण ‘हि’ जेहन होइत छै--
केशवः = केशव (ह)
बालाः = बाला (हा)
भोः = भो (हो)

मतिः = मति (हि)
चक्षुः = चक्षु (हु)
देवैः = देवै (हि)
भूमेः = भूमे (हे)

पँतिक बीचमे विसर्ग हो तँ ओकर उच्चारण आघात देल ‘ह्’ जेह्न करबाक चाही।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

विसर्गक बाद अघोष (कठोर) व्यंजन आएल हो, तँ विसर्गक उच्चारण आघात देल ‘ह’ जेह्न करबाक चाही।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ।

विसर्गक बाद यदि ‘श’, ‘ष’, या ‘स’ आबै, तँ विसर्गक उच्चारण क्रमशः ‘श’, ‘ष’, या ‘स’ हेतै ।
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः (लिखित रूप)
यज्ञशिष्टाशिन(स्)सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः (उच्चारण रूप)

धनञ्जयः सर्वः = धनञ्जयस्सर्वः
श्वेतः शंखः = श्वेतश्शंखः
गंधर्वाः षट् = गंधर्वाष्षट्

‘सः’ केर सामने (बाद) ‘अ’ एलापर दूनूक ‘सोऽ’ बनि जाइत छै; आ ‘सः’ केर विसर्ग, ‘अ’ केर छोड़ि आन वर्ण सामने एलापर, लुप्त भऽ जाइत छै।
सः अस्ति = सोऽस्ति
सः अवदत् = सोऽवदत्

विसर्गक पहिले जँ ‘अ’कार हो आ ओकरा बाद मृदु व्यञ्जन आएल हो तँ “अकार” आ विसर्ग मीलि कऽ ‘ओ’ बनि जाइत छै।
पुत्रः गतः = पुत्रो गतः
रामः ददाति = रामो ददाति

विसर्गक पहिले जँ ‘आ’कार हो आ ओकरा बाद मृदु व्यञ्जन आएल हो तँ, विसर्गक लोप भऽ जाइत छै।

असुराः नष्टाः = असुरा नष्टाः
मनुष्याः अवदन् = मनुष्या अवदन्

विसर्गक पहिले जँ 'अ' या 'आ'कार के छोड़ि कऽ आन स्वर आबैत हो, आ ओकरा बाद जँ स्वर अथवा मृदु व्यञ्जन आबैत हो, तँ विसर्गक 'र्' बनि जाइत छै।
भानुः उदेति = भानुरुदेति
दैवैः दत्तम् = दैवैर्दत्तम्

विसर्गक पहिले जँ 'अ' या 'आ'कार के छोड़ि कऽ आन स्वर आबैत हो, आ ओकरा बाद जँ 'र'कार आबैत हो, तँ, विसर्गक पहिले आबऽ बला स्वर दीर्घ भऽ जाइत छै।
ऋषिभिः रचितम् = ऋषिभी रचितम्
भानुः राधते = भानू राधते
शस्त्रैः रक्षितम् = शस्त्रै रक्षितम्

मैथिलीमे शब्दक अंत बला विसर्गक उच्चारण प्रलंबित (रेघाएल) "ह" वर्ण सनक होइत छै जेना "अतः=अतह", "समान्यतः=समान्यतह" मुदा वास्तविक तौरपर ई "ह" केर असली उच्चारण नै छै से उपर पढ़ि स्पष्ट भऽ जाएत। आब ऐठाम प्रश्न उठि सकैए जे 'विरह' आ 'अत:' केर उच्चारण "ह" छै तँ की ई दूनू एक दोसराक काफिया बनि सकैए?
सुनलापर 'विरह' आ 'अत:'ऑल्मोस्ट समान बुझाइए मुदा ऐ दूनू शब्दक अन्तमे दृष्टव्य आकृति [देखाए बला] एक नै हेबाक कारणें एकरा उचित / सटीक काफिया नै मानल गेल छै। उपर कहले गेल अछि जे विसर्ग खाली स्वाराश्रित छै। तँए 'विरह' आ 'अत:' एक दोसराक काफिया नै बनि सकैए।मने "ह" आ "विसर्ग" एक दोसरक काफिया नै बनि सकैए।

मैथिली आ उर्दू वर्णमालामे अंतर

जखन मैथिली गजलमे नियम सभ लागू होमए लागल तखन बहुत लोक सभकेँ कष्ट शुरु भेलन्हि। जिनका सभकेँ कष्ट एखनो छन्हि ओहिमे दू तरहँक आदमी छथि। पहिल तरहँक तँ ओ भेलाह जे पहिनेसँ गजल लिखै छथि मुदा बिना कोनो नियमक आ नियम लागू भेलासँ हुनक सभ रचनापर प्रश्न चिन्ह लागि गेल तँए ओ सभ नियमक विरोध करए लगलाह। दोसर तरहँक आदमी ओ छथि जे गजल तँ नै लिखै छथि मुदा गजल विधाक विकास नै सोहेलन्हि तँए ओहो विरोध करए लगलाह। हमरा लग एकटा एहन आदमी छथि जे अपने गजल तँ नै लिखै छथि

मुदा नियमक विरोध करै छथि। एक दिन ओ कतहुँसँ उर्दूक एकटा नीक शाइर केर गजल पोथी किनलन्हि जे की देवनागरीमे लिप्यंतरण भेल रहै। आब भाइ मैथिली आ उर्दू तँ अलग भाषा छै से ओ नै बूझि सकलाह आ हमरासँ प्रश्न पूछि देलाह जे ई महान उर्दू शाइर फल्लाँ केर पोथी थिक आ ऐमे "त "अक्षर केर काफिया "थ "अक्षर छै मुदा अहाँ मैथिलीमे तँ "त" आ "थ" केर अलग नियम बना देने छिऐ। जे नियम उर्दूमे नै चललै से मैथिलीमे कोना चलत आदि-आदि। हम तँ गुम्म रहि गेलहुँ। ई एकटा खिस्सा अछि मुदा एहन घटना अहाँ संग सेहो भए सकैत अछि। मानि लिअ जे अहूँ कोनो उर्दू गजलक देवनागरी लिप्यंतरण भेल पोथी किनलहुँ आ पढ़लापर देखलहुँ जे "भ "केर काफिया "ब" भेल छै तँ अहूँ भ्रममे पड़ि जाएब। मुदा ऐठाम मोन राखू जे उर्दू आ मैथिली भाषा अलग छै आ ओकर लिपि सेहो अलग-अलग छै तँए काफियाक नियम दूनू भाषामे थोड़े अलग रहतै। इहो मोन राखू जे उर्दू केर जन्म भारतमे भेलै मुदा लालन-पालन अरबी-फारसी बला सभ केलकै। फलस्वरूप उर्दू भाषामे भारतीय भाषाक संगे-संग अरबी-फारसीक नियम चलैत अछि। आ तँए हम अतए देवनागरी (संगे संग मिथिलाक्षर सेहो) आ उर्दू लिपिमे अंतर दए रहल छी जाहिसँ अहाँ सभ ओहि आदमी जकाँ भ्रमित नै हएब।

देवनागरी (संगे-संग मिथिलाक्षरमे सेहो) कुल 16 टा स्वर आ 36 टा व्यंजन अछि मतलब जे हरेक ध्वनि लेल अलग-अलग अक्षर बनाएल गेल छै मुदा उर्दूमे किछुए अक्षर छै आ तकरामे नुक्ता लगा वा "ह" ध्वनिक प्रयोग कए नव शब्द बनाएल जाइत छै।नुक्ता लगा वा "ह "मिला कए जे नव शब्द बनैत छै तकरा उच्चारणक हिसाबसँ चारि भागमे बाँटि सकैत छी--

a) जे लिखलो जाइत छै आ तकरा उच्चारणों कएल जाइत छै (हर्फे मक्तूबा मलफूजा) ई सरल बात छै आशा अछि जे एकरा बुझि गेल हेबै।

b) जे लिखल तँ जाइ छै मुदा ओकर उच्चारण नै कएल जाइत छै (हर्फे मक्तूबा गैर मलफूजा) उर्दूमे बहुत रास एहन शब्द छै जाहिमे किछु अक्षर लिखल तँ जाइ छै मुदा ओकर उच्चारण नै होइत छै आ मात्रा गनबा काल सेहो ओकरा नै गनल जाइत छै जेना "तुम अपनी" ऐकेँ आवश्यकता पड़लापर "तुमपनी" सेहो उच्चारित कएल जाइत छै। आब देखू जे "तुम अपनी" मे अ लिखल छै मुदा ओकर उच्चारण नै भए रहल छै (आवश्यकता पड़लापर) । शब्दकेँ ऐ तरीकासँ मिलेनाइकेँ "अलिफ वस्ल" नियम कहल जाइत छै।

c) जे लिखल तँ नै जाइ छै मुदा ओकर उच्चारण नै कएल जाइत छै (हर्फे मलफूज गैर मक्तूबा) जेना पढ़ल तँ बिल्कुल जाइ छै मुदा लिखल बालेकुल जाइ छै। आ चूँकि उच्चारणमे आबि रहल छै तँए मात्रा सेहो गनल जाइत छै। एहन-एहन आर उदाहरण सभ अछि।

एहन अक्षर जकर अन्तमे "ह" केर उच्चारण होइक (हाए मख्तूली) लगभग कुल चौदहटा अक्षर उर्दू वर्णमालामे संस्कृत वर्णमालासँ लेल गेल छै। ई अक्षर सभ अछिख, घ, ङ, छ, झ,ठ,ढ,थ, ध,फ,भ, ल्ह,म्ह आ न्ह।

उर्दूमे ऐ शब्द सभकेँ एना लिखल जाइत छै--

क संग ह जोड़लापर ख

ग संग ह जोड़लापर घ

च संग ह् जोड़लापर छ

ज संग ह् जोड़लापर झ

ट संग ह् जोड़लापर ठ

ड संग ह् जोड़लापर ढ़

त संग ह् जोड़लापर थ

द संग ह् जोड़लापर ध

प संग ह् जोड़लापर फ

ब संग ह् जोड़लापर भ

ङ, ल्ह, म्ह आ न्ह स्वतंत्र रूपेँ लिखल जाइत छै।

आब अहाँ सभ देखि सकै छी जे देवनागरीमे तँ ख,घ इत्यादि लेल स्वतंत्र अक्षर आ तकर ध्वनि छै मुदा उर्दूमे एकरा लेल "ह्" मिलाबए पड़ैत छै संगे संग ङ आदिक उच्चारणमे तँ "ह "छैके।आब जँ कोनो उर्दू शाइर "ह "फेंटाएल अक्षरक काफिया बनबै छथि तँ ओ उर्दूक उच्चारण परम्पराक अनुसार "ह "केर उच्चारण नै करै छथि। तँए उर्दूमे "बात "शब्दक काफिया "साथ "बनि सकै छै। कारण "साथ "मे जे "थ" छै तकर "ह्" उच्चारणमे निकालि देल जाइत छै। आन-आन "ह "मिश्रित शब्दक काफिया लेल एनाहिते बुझू। ऐठाँ ईहो मोन राखू जे मात्रा सेहो उच्चारणक हिसाबसँ गानल जाइत छै उर्दूमे तँए जँ कोनो देवनागरी लिप्यंतरण बला पोथी केर अधार पर मात्रा निकालि रहल छी तँ गड़बड़ भए सकैए। मूल उर्दू लिपि सीखू आ तकर उच्चारण सेहो तखने अहाँ उर्दू गजलक सही मात्रा पकड़ि सकै छी। उर्दू गजलमे अरबी-फारसी शब्दक बड्ड प्रयोग कएल जाइत छै ओहो मूल रूपमे। मुदा ओकर देवनागरी लिप्यंतरण दोसर रूपमे भऽ जाइत छै। एकटा उदाहरण देखू अरबीमे शब्द छै "तमईज" एकर मात्रा क्रम भेल 221 मुदा देवनागरीमे एकर लिखित रूप छै "तमीज "जकर मात्रा क्रम अछि 121, आब मानू जे कोनो उर्दू शाइर तमईज शब्दक प्रयोग केलाह् मुदा देवनागरी मे ई भऽ गेलै तमीज आ तखन जे अहाँ गिनती कए कहबै जे गजलमे बहर नै छै से कते उचित? तँए कहलहुँ जे मूल उर्दू लिपि आ उच्चारण सीखू। सङ्गे-सङ्ग ईहो मोन राखू जे उर्दूमे जखन हिन्दी वा ब्रजभाषा वा अवधी आदिक क्रियापद आबै छै (जेना "तेरा, मेरा, से ") तँ उर्दू लिपि केर कारण ओकरा दीर्घ वा ह्रस्व दूनू तरहें पढ़ल जाइत छै ।

एकटा आर गप्प उर्दूमे मात्र गजले नै छै। आर विधा छै आ सभ विधा गजल गायक द्वारा गाएल गेल छै तँ ओहि अधारपर ई निर्णय नै करू जे गजलमे बहर नै होइ छै।

2) वर्तमान सभ भारतीय भाषा लिपि बामसँ दहिन लिखल जाइत अछि मुदा उर्दू दहिनासँ बाम। तेनाहिते देवनागरीमे शब्द रचना काल अक्षरक स्वरूप नै बदलै छै मुदा उर्दूमे बदलि जाइत छै। ऐकैँ अतिरिक्तो आन-आन अंतर छै जे व्यवहारिक स्तरपर बूझल जा सकैए।

आब हमरा पूरा विश्वास अछि जे अहाँ सभ ओहि आदमी जकाँ भ्रमित नै हएब। एक बेर फेर मोन राखू जे देवनागरीक अलग-अलग ध्वनि लेल अलग-अलग अक्षर छै (गाम घरक उच्चारणमे स, श आदि एकसमान

उच्चारण होइत छै जकर विवरण आगू देल जाएत) मुदा उर्दूमे नै तँए देवनागरी (मिथिलाक्षर)मे “त “केर काफिया “थ “नै बनि सकैए वा “प “केर काफिया “फ “नै बनि सकैए।
काफियापर चरचा शुरू करऽ कालमे हम कहने छलहुँ जे संस्कृतमे काफिया वा अंत्यानुप्रास नै छलै मुदा अरबीमे शुरूआतेसँ काफिया भेनाइ अनिवार्य छै।। आब किछु गोटे कहबे करता जे तखन मैथिली गजल लेल काफिया किएक अनिवार्य अछि। संस्कृते जकाँ बिना अंत्यानुप्रासक गजल लिखल जाए आदि-आदि। ऐ प्रश्नक उत्तर देबऽसँ पहिने हम संस्कृतक वैदिक काव्य, लौकिक काव्य, प्राकृत ओ अप्रभंश काव्यक किछु उदाहरणकैँ देखाबऽ चाहब। तँ पहिने देखी वैदिक काव्यकैँ---

ॠगवेद (प्रथम मंडल. अथ प्रथमोऽष्टकः,प्रथमोऽध्यायः, वर्गाः137, ॠषि मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः छन्द गायत्री, देवता अग्नि)
1) ॐ अग्निमीले पुरोहितमं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम्

2) अग्निः पूर्वेभिॠषिभिरीड्यो नूतनैरुत । स देवाँ एह वक्षति

वाजसनेयिमाध्यन्दिनशुक्ल

यजुर्वेदसंहिता
अथ प्रथमोऽध्यायः

1) ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्या ऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽ ईशत माघश थ्ंऽ सो ध्रुवाऽ अस्मिन गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।

2) वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यासिमातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽ असि। परमेण धाम्नाः दृ थ्ंऽ हस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिहर्षीत्

अथर्ववेदसंहिता अथ प्रथमं काण्डम्मेघाजनन सूक्त
ॠषि अथर्वा, देवतावाचस्पति, छन्द अनुष्टुप चतुष्पदा विराट् उरोबृहती

1) ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः

वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे

2) पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह। वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

सामवेद संहिता

पूर्वार्चिकःआग्नेयं काण्डम्अथ प्रथमोऽध्यायः अथ प्रथमप्रपाठके प्रथमोऽर्धः

(1सँ 10 धरिक, 1,2,4,7,9 भरद्वाजो बार्हस्पत्यः,3 मेघातिथिः काणवः, 5 उशनाः काव्यः,6 सुदीतिपरुमीढावाङ्गिरसौ तयोर्वान्यतरः, 8 वत्स काणवः,10 वामदेवः) देवता अग्नि, गायत्री छन्द

1) अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये नि होता सत्सि बर्हिषि

2) त्वमग्ने यज्ञाना होता विश्वेषा हितः देवेभिर्मानुषे जने

3) अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्

4) अग्निवृत्रानणि जङ्घनद्द्रविणस्युवर्पपन्यया समिद्धः शुक्र आहुतः

कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता केर रुद्र नमकम् केर किछु मंत्र देखू---

नमो हिरण्य बाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः सस्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो बभ्लुशाय विव्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्याय वनानां पतये नमो नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृता-यौषधीनां पतये नमो नम उच्चैर्-घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमो नमः कृत्स्नवीताय धावते सत्त्वनां पतये नमः ॥ 2 ॥
उपरक मंत्रमे- (नमो हिरण्य बाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो) पहिल पाँति अछि आब दोसर पाँति (वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः) देखू आ दूनूकेँ मिलाउ। अंतसँ दूनू पाँतिमे(पतये नमो नमो)

उभयरूपसँ अछि आ “दिशां” एवं “पशूनां” दूनू शब्दमे तुकांत छै। एनाहिते सभ पाँतिमे मिलाउ सभमे तुकांत भेटत। आब फेर एनाहिते निच्चाक मंत्रमे तुकांतक मिलान करू--

नमः सहमानाय निव्याधिनं आव्याधिनीनां पतये नमो नमः ककुभाय निषङ्गिणे स्तेनानां पतये नमो नमो निषङ्गिणं इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमो नमः सृकाविभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यः प्रकृन्तानां पतये नमो नम उष्णीषिने गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वाविभ्यश्च वो नमो नम आतन्-वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्यो विसृजद्-भ्यश्च वो नमो नमोऽस्सद्भ्यो विध्यद्-भ्यश्च वो नमो नम आसीनेभ्यः शयानेभ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्-भ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्-भ्यश्च वो नमो नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमो अश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः ॥ 3 ॥

स्पष्ट अछि जे वेदमे अनजान-सुनजानमे तुकांतक प्रयोग भेल अछि। तुकांतक आन उदाहरण चमकम् मंत्रमे सेहो ताकल जा सकैए।

आब आउ लौकिक संस्कृत काव्यक उदाहरणपर--

अथ अर्गलास्तोत्रम्

।।ॐ नमश्चण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ।। 1।।

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ।। 2।।

मधुकैटभविद्रावि विधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। 3।।

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। 4।।

कल्याणवृष्टिस्तवः

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभिर्लक्ष्मीस्वयंवरणमङ्गळदीपिकाभिः।
सॆवाभिरम्ब तव पादसरोजमूलॆनाकारि किं मनसि भाग्यवतां जनानाम्॥1॥

एतावदॆव जननि स्पृहणीयमास्तॆत्वद्वन्दनॆषु सलिलस्थगितॆ च नॆत्रॆ।

सान्निध्यमुद्यदरुणायुतसोदरस्यत्वद्विग्रहस्य परया सुधया प्लुतस्य॥2॥

आदि शंकराचार्य (ऐ काव्यक मात्र दूटा श्लोक हम प्रस्तुत केलहुँ)

भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते।
संप्राप्ते सन्निहिते काले न हि न हि रक्षति डुकृञ् करणे।। 1।।

मूढ जहीहि धनागमतृष्णां कुरू सद्बुद्धिं मनसिवितृष्णाम्।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं वित्तं तेन विनोदय चित्तम्।। 2।।

नारीस्तनभर नाभीदेशं दृष्ट्वा मा गा मोहावेशम्।
एतन्मांसावसादि विकारं मनसि विचिन्तय वारं वारम्।।3।।

नलिनीदलगत जलमतितरलं तद्वज्जीवितमतिशक्तपलम्।
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ।। 4।।

श्री ललिता पञ्चरत्नम्

प्रातःस्मरामि ललितावदनारविन्दंबिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।

आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यंमन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलफालदेशम्॥1॥

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लींरक्ताङ्गुळीयलसदङ्गुळिपल्लवाढ्याम्।
माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानांपुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम्॥2॥

आदि शंकराचार्य (ऐ काव्यक मात्र दूटा श्लोक हम प्रस्तुत केलहुँ)

त्रिपुरसुन्दर्यष्टकम्

कदम्बवनचारिणीं मुनिकदम्बकादम्बिनींनितम्बजितभूधरां सुरनितम्बिनीसेविताम्।
नवाम्बुरुहलोचनामभिनवाम्बुदश्यामलांत्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये॥1॥

कदम्बवनवासिनीं कनकवल्लकीधारिणींमहार्हमणिहारिणीं मुखसमुल्लसद्वारुणीम्।
दयाविभवकारिणीं विशदरोचनाचारिणींत्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये॥2॥

अन्नपूर्णा स्तुति

नित्यानंदकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी निर्धूताखिलघोरपापनिकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥1॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी मुक्ताहारविडम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी।
काश्मीरागरुवासिताङ्गरुचिरा काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥2॥

आदि शंकराचार्य

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुध्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।

मंदाकिनी सलिल चन्दन चर्चितायनन्दीश्वर प्रमध नाथ महेश्वराय
मंदार पुष्प बहु पुष्प सुपूजितायतस्मै मकाराय नमः शिवाय।

शिवाय गौरी वदनार विंद सूर्याय दक्ष द्वार नासकाय
श्री नीलकंठाय वृष ध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।

वशिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमादि मुनेन्द्र देवर्चित शेखराय
चंद्रार्क वैश्वनर लोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय

यक्ष स्वरूपाय जटा धराय पिनाक ह्स्तथाय सनातनाय
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं, नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं, गमनं मधुरं, मधुराधिपते रखिलं मधुरम् ।।1।।

वसनं मधुरं, चरितं मधुरं, वचनं मधुरं वलितं मधुरम्,
चलितं मधुरं, भ्रमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।2।।

वेणर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ,
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।3।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं, भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्,
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।4।।

करणं मधुरं, तरणं मधुरं, हरणं मधुरं, रमणं मधुरम्,
वमितं मधुरं, शमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।5।।

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा,
सलिलं मधुरं, कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।6।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा, राधा मधुरा मिलनं मधुरम्,

दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।7।।

गोपा मधुरा गावो मधुरा, यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा,
दलितं मधुरं, फलितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।8।।

॥इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्॥

लिंगाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गम् निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥1॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गम् कामदहम् करूणाकरलिङ्गम् ।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥2॥

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गम् बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥3॥

कनकमहामणिभूषितलिङ्गम् फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥4॥

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गम् पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥5॥

देवगणार्चितसेवितलिङ्गम् भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥6॥

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गम् सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥7॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गम् सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।
परात्परं परमात्मकलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥8॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

जयदेव कृत गीत-गोविन्दक एकटा गीत--

चंदन-चर्चित-नील-कलेवर-पीतवसन-वनमालिन् ।
केलि-चलन्मणि-कुंडल-मंडित-गंडयुग-स्मितशालीन् ।।

चंद्रक-चारु-मयूर-शिखंडक-मंडल-वलयित-केशम् ।
प्रचुर-पुरंदर-धनुरनुरंजित-मेदुर-मुदिर-सर्वेषम् ।।

संचरदधर-सुधा-मधुर-ध्वनि-मुखरित-मोहन-वंशम् ।
वलित-द्रगंचल-चंचल-मौली-कपोल-विलोलवतंसम् ।।

हारममलतर-तारमुरसि-दधतं परिरभ्य विदूरम् ।
स्फुटतर-फेन-कदंब-करंबितमिव यमुना जल पूरम् ।।

आब आउ प्राकृत-अप्रभंश काव्यपर---

गहणं गइंदणाहो पिअविरहुम्माअपअलिअ विआरो
विसइ तरुकुसुम किसलअ भूसिअणिअदेहपव्भारो

आर्या वा गाथा छंद

कालिदास (विक्रमोर्वशीय त्रोटक) समय प्रथम शती ई.पू. चतुर्थ शती

विहरानल जाल करालिअउ पहिउ कोवि बुड्डिबि ठिअओ

अनिसिसिरकालि सअलजलहु घूमु कहन्तिहु उट्ठिअओ

उल्लाला छंदक कपूर नामक उपभाग

हेमचंद्र (प्राकृत व्याकरण)

त जिणभवणु णिएबि धवलत्तुंगु विसालु
वियसियवयणरविदुं मणिपरिओसिउ बालु

धनवाल (भविसयत्तकहा)

कत न कलावति नारि आ रे
अत सुविह नित रूप बटोरि आ रे

सबे सरीर मोर आ रे
तथिहि मुखमण्डल मोरा आ रे
Xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
आगम वेद किछु किछु जानिअ
परक वित्त धन्धि घर आनिअ
Xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
अरे रे सनातक तोरिहि कुमान्ति
अनङ्गसेना हरि लेल असंजाति

कतए विचार कराओल आनि
जन्हिक चरित सुन मूलनाशक जानि

हेरित हि हरि धन लए गेल चोर
हाथक रतन हेराएल मोर

मैथिली धूर्तसमागम (ज्योतिरीश्वर)

अरु पुरिस पसंसओ राय गुरु कित्ति सिंह गएणेस सुअ
जे संतु समर सम्मद्दि कहु वप्प वैर उद्दरिय धुअ

विद्यापति (कीर्तिलता)
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
कनकभूधर शिखर वासिनी,चन्द्रिकाचय चारू हासिनी
दसन कोटि विकास बंकिम, तुलित चंद्रकले ..../

क्रुद्धसुररिपु बल निपतिनी, महिष सुम्भ निशुम्भ घातिनी
भीत भक्त भायापनोदन, पाटब प्रबले ....//1 //

जय देवी दुर्गे दुरित तारी, दुर्गमारी विमर्द कारिणी
भक्ति नम्र सूरासूरा धिप, मंगला प्रवरे

गगन मंडल गर्भ गाहिन समर भूमिषु सिंहवाहिनी
परशुपाश कृपाण, सायक शंकचक्र धरे // 2 //

अष्ट भैरवी संगशालिनी, स्वकरकृत कपाल मालिनी
दनुज शोणित *पिशित वर्धित, पारना रभसे

संसार बन्धनिदानमोचिनी, चन्द्र भानु कुशाणु लोचिनी
योगनी गण गीत शोभित नृत्य भूमि रसे ....// 3 //

जगति पालन जनन मारण, प कार्य सहस्त्र कारण
हरि विरंचिमहेश शेखर, चुम्बयमानपदे

सकल पापकला, परि च्युति सुकवि विद्यापति कृत स्तुति
तोषिते शिव सिंह भूपति कामना फल दे
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे.

छोड़इत निकट नयन बह नीरे।..
नोरि बिलमओ बिमल तरंगे.
पुनि दरसन होए पुनमति गंगे। .
क अपराध घमब मोर जानी।

परमल माए पाए तुम पानी।।
कि करब जपतप जोगधेआने।

जनम कृतारथ एकहि सनाने।।

भनई विद्यापति समदजों तोही।

अन्तकाल जनु बिसरह मोही।।

विद्यापति

(नव शोधक अधारपर अवहट्ट बला आ पदावली बला विद्यापति भिन्न छथि। मुदा हमर उद्येश्य ऐठाम मात्र तुकान्त देखाएब अछि।)

मेष मीन तिअ दण्डा दीस
ता उप्परि दिअ पल अठतीस
xxxxxxxxxxxxxxxxxx
मिथुन मकर पल तीनि गुनू
कर्कट तेंतालिस धनू
xxxxxxxxxxxxxxxxx

नवमी चौठि चौदिशि भउ पोड़े

पड़िब एकादशि छठिक बिजोड़े
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

पक्ष विराड़ा सिंह सुनइ अहि मूसा गज मेष
अचे हले दुहुकरसे गुणि वर गपमान उलेख

विशुद्ध डाक वचन

वन्दनेवार धएल ठाम ठाम, भगत नगर एहे गुण अभिराम।
वेद मङ्गल धुनि अहनिस होह, दिनकर किरण धरब धओने होइ।

धरम करम सबका थिर नीति, तें फले काहुक होअ न भीति।
त्रिभुवन जननी करथि निवास, अचिरेहि देथि सबक अभिलास।

भनइ वंशमणि हे जगदम्बे, नृप जगजोति मन पुर अविलम्बे।
(जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत हरगौरी विवाह नाटकमे संकलित आ वंशमणि द्वारा विरचित)

उपरका उदाहरण सभकैँ दू भागमे बाँटू पहिल संस्कृत आ दोसर प्राकृत-अप्रभंश। संस्कृतक सभ वेदक उदाहरणमे तुकान्त अनजान-सुनजानमे प्रयोग भेल अछि। जखन अर्गला-कीलक स्त्रोतपर आएब तँ तुकान्त हुलकी मारैत बुझाएत आ शंकराचार्य लग अबैत-अबैत तुकान्त फरिच्छ भऽ जाइत अछि आ गीत-गोविन्दमे तँ पूरा-पूरी तुकान्त छैहे। चूँकि तुकान्त प्राकृत भाषामे महत्वपूर्ण तत्व रहल अछि आ आदि शंकराचार्यसँ पहिने प्राकृत भाषा विकसित भऽ गेल छल तँए ई तुकान्त आदिशंकराचार्यजीकैँ स्वाभाविक रूपसँ भेटल आ जयदेवजीक लेल ई अनिवार्य बनि गेल (ओना ऐठाम ई धेआन राखब बेसी जरूरी जे वैदिक छंद सभ प्रायः एक पाँति होइत छै (वर्तमान अधारपर) तँए ओइमे तुकान्तक बेसी जरूरति नै छलै मुदा जेना-जेना पाँतिक संख्या बढ़ैत गेल तुकान्त जरूरति बुझना गेलै)। जेना की हमरा लोकनि जानै छी जे वैदिक काव्यमे अक्षर जनित छंद छल जकरा सरल वार्णिक छंद सेहो कहल जाइत अछि। बादमे संस्कृत जखन परिनिष्ठित भेल तखन वार्णिक छंद आएल जैमे हरेक पाँतिक मात्राक्रम (मात्राक्रम) एक रहनाइ अनिवार्य भेल। वार्णिक छंद अपना-आपमे कठिन छै तँए लोकमे ई ओतेक प्रचलित वा लोकप्रिय नै भऽ सकल।मुदा लोक तँ लोक अछि ओ अपन अभिव्यक्ति छोड़त कोना? आ तँए लोकमे प्राचीन तालवृत छंद फेरसँ जोर पकड़लक। आब ई तालवृत छंद की भेल से कने आगू जा कऽ हम सभ देखब। ऐ छंदसँ पहिने संगीतक प्रारंभिक जानकारी ली। संगीतमे दू टा तत्व प्रमुख छै पहिल स्वर आ दोसर ताल।

स्वर संगीत मुख्यतः आरोह-अवरोहपर अधारित रहै छै। संस्कृतक शिक्षित वर्ग स्वरकैँ प्रमुखता देलक तँ जन समान्य तालकैँ । स्वर निर्धारण लेल नाना प्रकारक छंद बनल जैमे सरल वार्णिक आ वार्णिक दूनू अबैए। तालवृत छंद लेल मात्र ताल बराबर भेनाइ अनिवार्य अछि। मने हरेक पाँतिमे चाहे अक्षर बराबर हो की नै हो, लघु-गुरू हरेक पाँतिक बराबर हो की नै मुदा हरेक पाँतिक ताल बराबर भेनाइ जरूरी अछि। तालवृत छंदमे कोनो शब्दक कोनो वर्णक उच्चारण नहियो भऽ सकैए। तालवृत छंदमे विराम आ प्लुत केर महत्व अछि। ऐमे शब्दककैँ विशुद्ध उच्चारण अनिवार्य नै अछि। तालवृतमे दीर्घक उच्चारण लघु भऽ सकैए आ लघु केर उच्चारण दीर्घ भऽ सकैए। जेना तालवृतक हरेक पाँतिक तालगण समान रहनाइ जरूरी छै तेनाहिते वैदिक छंदक हरेक पाँतिमे समान अक्षर हेबाक चाही तेनहिते वार्णिक छंदक हरेक पाँतिमे मात्राक्रम समान भेनाइ जरूरी छै। मैथिलीक सभ प्राचीन लोकगीत तालवृत छंदपर अधारित अछि। तालवृत छंदमे हरेक पाँतिक लय मिलबाके टा चाही तँए तालवृतमे तुक कहियौ, तुकान्त कहियौ, अन्यानुप्रास कहियौ की काफिया कहियौ एकर भेनाइ अनिवार्य अछि। एही तुकान्त निर्वाहक कारणे तालवृत बहुत बेसी लोकप्रिय भेल आ ई परवर्ती संस्कृत धरिकैँ बदलि देलक। बादमे आदि शंकराचार्य अपन सभ स्त्रोत सभमे तुकान्तक प्रयोग केला। आ जेना-जेना समय बितैत गेल संस्कृत काव्य तुकान्त होइत गेल। व्याकरणमे अंत्यानुप्रास सन अलंकारक जन्म भेल आ जयदेव रचित गीत गोविन्दम् सन काव्यकैँ जे मात्र सुमधुर ललित शैली आ अंत्यानुप्रासक कारणे संस्कृतमे विश्वविख्यात भेल। तालवृत छंदक ईहो एकटा बड़का विशेषता अछि जे ई गायकपर निर्भर अछि मने जँ एकटा गायक कोनो दू टा पाँतिकैँ अष्टमात्रिक तालमे बान्हि गेला तँ दोसर ओकरा सप्तमात्रिक तालमे सेहो बान्हि सकै छथि। तँए लौकिक संस्कृतक अन्तमे आ प्राकृतक जन्मसँ तुकान्त केर काव्यमे बहुत महत्व अछि आ जेना-जेना समय आगू बढ़ल तुकान्त बिनु काव्यक परिकल्पना असंभव भऽ गेल। पाठक ओ जनता तुकान्तयुक्त काव्यकैँ बेसी मान देलक कारण तुकान्तयुक्त काव्य कर्णप्रिय होइत अछि। प्राकृतक ई गुण अनायास रूपें अप्रभंशमे आएल आ चूँकि अप्रभंशसँ मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय भाषा बनल अछि तँ एहू सभमे तुकान्त अनिवार्य भेल। गएबा कालमे तालवृत छंद हरेक छंद (वैदिक, वार्णिक आ मात्रिक छंदपर) लागू भऽ सकैए। ओना वैदिक छंद ओ वर्णवृत लेल स्वर-संगीत अनिवार्य अछि। तथापि कोनो गायक ओकरा तालवृतमे सेहो गाबि सकै छथि। तालवृतकैँ मैथिलीमे भास कहल जाइत छै हमरा ज्ञानक हिसाबसँ। बूढ़-पुरान गितगाइन सभ एखनो कहै छथि जे ऐ गीतक भासे नै चढ़ि रहल अछि, एकर मतलबे भेलै जे उक्त गीतक तालवृत बराबर नै बैसि रहल छै। तालवृत छंदक किछु उदाहरण देखू--

भादब हे सखी रैनि भेयाओन
दोसरे अन्हरिया के राति यौ

राति दुख सुख संगहि खेपब
लेसब दीप अकास यौ

ऐ बरहमासाक चारि पाँतिक अध्ययन केलासँ ई पता चलत जे पहिल पाँतिमे 19 मात्रा (जँ न्ह बला नियम नै मानी तँ 18)टा मात्रा अछि। दोसर पँतिमे 18 मात्रा, तेसर पाँतिमे 15 आ चारिम पाँतिमे 13 टा मात्रा अछि। चूँकि गायनमे न्हसँ पहिने बला स्वतः दीर्घ होमए लगैत अछि तँए हम पहिल पाँतिमे 19 मात्रा मानि रहल छी।

आब आउ देखू एकर तालवृत-

भादब हे सखी रैनि भेयाओन
दोसरे अन्हरियाx के राति यौ

राति दुxxख सुxxख संगहि खेपब
लेसब दीxxxप अxxxकास यौ

दोसर उदाहरण देखू-

काली के देखलहुँ सपनमा
से ठाड़े अँगनमा

केओ नीपे अगुआर माँ के
केओ नीपे पछुआर माँ के
केओ नीपे काली के भवनमा....

पहिल पाँतिमे 16, दोसरमे 11, तेसर आ चारिममे 17-17 एवं पाँचम ओ अंतिम पाँतिमे 19 मात्रा अछि। आब आउ देखू एकर तालवृत--

काली के देखलहुँ सपनमा
सेxx ठाड़ेx अँगनमाxx

केओ नीपे अगुआर माँ के
केओ नीपे पछुआर माँ के

केओ नीपे काली के भवनमा...

तेसर पाँतिक अगुआर शब्दक "आ" पर विराम अछि तेनाहिते चारिम पाँतिक पछुआर शब्दक "आ" पर विराम अछि। अंतिम पाँतिक केओ शब्दक ओ, नीपे शब्दक पे, एवं काली शब्दक "ली" पर विराम अछि। फलस्वरूप हरेक पाँति 16 तालमात्रिक रचना बनि गेल अछि। प्रस्तुत ऐ गीत सभहँक गायन सुनबा लेल विदेह आडियो केर ऐ लिंकपर जाउ— http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio
संगीतमे x चिन्ह ताल लेल प्रयोग कएल जाइत छै। तँ ऐ उदाहरण देखि रहल छी जे चारू पाँतिमे ने तँ मात्रिक छंद छै ने वार्णिक आ ने वैदिक मुदा पाँतिक बीच-बीचमे रेघा कऽ वा ताल दऽ कऽ वा विराम लऽ कऽ सभ पाँतिके पूरा कएल गेल छै। इएह तालवृत कहबै छै। गीत मुख्यतः तालवृतक अनुगामिनी अछि ताहूमे मैथिलीक सभ प्राचीन गीत आ लोकगाथा सभ तालवृत छंदक सुदंर उदाहरण अछि। जँ कोनो- कोनो गीतमे आन छंदक लक्षण अबैए तँ ओकरा मात्र संयोग बुझू। ओना हम पहिने कहि चुकल छी जे सभ छंदोबद्ध रचना गेय होइत अछि। तालवृत छंद आ वैदिक छंदमे मात्र एकैटा अन्तर छै बाद-बाँकी दूनू एकै अछि आ एही एक अंतरक कारणे एकटा स्वर संचालित भेल तँ दोसर ताल संचालित। आब हम पाठक सभसँ अनुरोध करब जे ओ सभ हिसाबसँ तालवृतक आन-आन उदाहरण ताकथि। आब ऐ पाँति धरि अबैत-अबैत पाठक स्वतः बूझि गेल हेता जे प्राचीन संस्कृत काव्यमे अंत्यानुप्रास नहियो रहैत आधुनिक भारतीय भाषाक गजलमे काफियाकैँ किएक अनिवार्य मानल गेल छै। आ तँए मैथिली गजल लेल सेहो काफिया अनिवार्य अछि। ओनाहुतो जँ अरबी गजलमे काफिया अनिवार्य छै तँ ई गजलक लेल अनिवार्य भेल। ई लेख मात्र परंपरा जनित ज्ञान लेल लीखल गेल अछि। खाली प्राचीने कालमे ई तालवृत छल से गप्प नै आधुनिक कालक मैथिलीक पहिल जनकवि श्री रामदेव प्रसाद मंडल झारूदार एकटा नव छंदक जन्म दऽ ओकरा विकसित केलाह् जकर नाम थिक "झारू छंद "। ई झारू छंद हमरा जनैत तालवृतपर अधारित अछि। दूटा उदाहरण देखू--

भागि गेला अंग्रेज अकेला, छोरि कऽ पाछू ढेरो जाति
कर रंगदारी वसुल रहल अछि,मारि मारि कऽ सभकैँ लाति

पहिल पाँतिमे 32 मात्रा आ दोसर पाँतिमे 31 मात्रा अछि एकरा तालवृतमे एना देखल जा सकैए

भागि गेला अंग्रेज अकेला, छोरि कऽ पाछू ढेरो जाति
कर रंगदारी वसुल रहल अछि, मारि मारि कऽ सभकैँx लाति

आर एकटा उदाहरण लिअ-

हे भूमि कऽ भाग्य विधाता, जगक अदाता भगवान।
कहाँ पता तोरा सिबा छै केकरो, छूपल कतए छै खेतमे धान।

पहिल पाँतिमे 27 आ दोसर पाँतिमे 38 मात्रा। आब एकर तालवृत देखू--

हे भूxxxमि कऽ भाग्य विधाताxxx, जगक अदाxxता भगवाxxxन।
कहाँ पता तोरा सिबा छै केकरो, छूपल कतए छै खेतमे धान।

आब तालवृतसँ संचालित भऽ दूनू पाँतिमे 38-38 तालमात्रा भऽ गेल।
हुनक प्रकाशित पोथी “हमरा बिनु जगत सुन्ना छै “अनेको झारू छंद अछि जकरा पाठक सभ विदेह पोथी डाउनलोडसँ फ्रीमे डाउनलोड कऽ पढ़ि सकै छथि। झारूदार जी मात्र एकटा लेखक नै छथि बल्कि हमरा सभकेँ सिद्ध सरहपासँ लऽ कऽ आधुनिक कालक जे धार बनल अछि तकर दूनू घाटकेँ मिलेबाक लेल पूल सेहो छथि। ऐ ठाम हुनक पोथीक समीक्षा तँ नै कएल जा सकैए मुदा हमरा विश्वास अछि जे पाठक पोथीकेँ पढ़ता जरूर। आब पाठक सभ लग ई प्रश्न अबैत हेतन्हि जे की तालवृतमे गजल भऽ सकैए? हमर उत्तर हएत जे आने छंद जकाँ एकर गायन मात्र तालवृतमे संभव अछि रचना वा लिखित रूप पूर्ववते रहत।

खण्ड-13

मकता--गजलक ओहि अन्तिम शेरके कहल जाइत छैक जाहिमे शाइर अपन नाम-उपनाम (तख़ल्लुस)के प्रयोग करथि। जेना एकटा उदाहरण देखू--

चिन्हार अनचिन्हारक संग
गरदनि कटैए सपनामे

एहिमे हम अपन उपनाम अनचिन्हार के प्रयोग केने छिऐक आ ई शेर गजलक अन्तिम शेर छैक तँए ई शेर भेल “मकता” । बिना मकताक गजल सेहो होइत छैक। मकताक संबंधमे ई धेआन राखू जे शाइर अपन सभ गजलमे या तँ अपन नामके प्रयोग करथि वा अपन उपनामके। मने दूनूमेसँ कोनो एकैटा। एकर उदाहरण हम अपनेपर लैत छी। हम अपन गजलमे या तँ आशीष के प्रयोग करबै वा अनचिन्हार के। ई नहि जे किछु गजलमे आशीष आ किछुमे अनचिन्हार। जँ अन्तिम शेरमे नाम-उपनाम नै छै तँ ओकरा मकता नै कहल जाइत छै। ओ आने साधारण

शेर भेल। तेनाहिते जँ केओ बीच बला शेरमे नाम-उपनाम देने छथि तँ ओहो मकता नै भेल। बहुत शाइर मकतामे अपन उपनाम उद्धरण चिन्ह लगा कऽ प्रस्तुत करै छथि। ओना ई गलत तँ नै छै मुदा एना केलासँ अर्थसंकोच भऽ जाइत छै। उदहारण लेल मानि लिअ जे हम "अनचिन्हार" लिखबै तँ ई व्यक्तिवाची बनि कऽ एकर अर्थ "आशीष अनचिन्हार" भऽ जेतै मुदा जखन हम सोझे अनचिन्हार लिखबै तँ ई शाइरक उपर सेहो लागू हेतै आ आन अपरिचित लोकक संदर्भमे सेहो। तँए हम अपन उपनाममे उद्धरण चिन्हक प्रयोग नै करै छिऐ। एकटा छोट सन अंतर देखाबए चाहब जे उर्दू-हिंदीमे विभक्ति एक छै तँइ ओइमे उपनामपर कोनो फर्क नै पड़ै छै उदहारण लेल--

नज़र में है हमारी जादा-ए-राह-ए-फ़ना ग़ालिब
कि ये शीराज़ा है आ़लम के अज्जाए-परीशां
(गालिब)

था जी में उससे मिलिए तो क्या क्या न कहिये 'मीर'
पर कुछ कहा गया न ग़म-ए-दिल हया से आज
(मीर तकी मीर)

जब मुझसे मिली फ़िराक वो आँख
हर बार इक बात गढ़ गयी है
(फिराक गोरखपुरी)

कहबाक मतल जे हिंदी उर्दूसँ अलग मैथिलीक संज्ञामे विभक्ति सेहो जुटि जाइत छै उदाहरण लेल--

"राजीवक नाम अमर छै"

"अमरक नाम"

एकरा संगे-संग संज्ञामे आनो परिवर्तन सेहो मकता कहल जेतै। जेना--

"ओमो जेतै"

तँइ हमर स्पष्ट मंतव्य अछि जे विभक्ति जुटल नाम-उपनाम आन परिवर्तन बला नाम-उपनाम मैथिलीमे मकता हएत।

खण्ड-14

बहर

छन्दकेँ अरबीमे बहर कहल जाइत छै। गजल सदिखन कोने ने कोने बहरमे होइत छैक। बिना बहरक गजलक कल्पना असंभव। ई स्पष्ट करब जरूरी जे गजल लेल छंद वर्णिक होइ छै मने गजलक हरेक पाँति एक समान मात्राक्रममे रहए। किछु लोक "एकसमान मात्राक्रम" आ "एक समान मात्रा" दूनूकेँ एकै बूझि लै छथि से गलत।

जेना छन्दक आधार लय होइत छैक तेनाहिते बहरक आधार अरूज वा अरूद होइत छैक। अरूज वा अरूद मने शेर मे निहित मात्राक्रम होइत छैक। अरूज वा अरूदके वज़न सेहो कहल जाइत छैक। बहरक चर्च आगाँ बढ़एबासँ पहिने एकटा गप्प आर। एहिठाम हम अरबी बहर केर वर्णन कए रहल छी आ मैथिली गजलमे ई बहर सभक प्रयोग मैथिली गजलक 100 सालक इतिहासमे खूब भेल । प. जीवन झा, कविवर सीताराम झा आदि-आदि प्राचीन गजलकार सभ अरबी बहरपर गजल लिखलथि। मुदा बादमे मायानंद मिश्र जी ई कहि सभकेँ बताह बना देलखिन्ह जे मैथिलीमे गजल लिखब सम्भव नै... जखन की मायानंद जीसँ पूर्वेमे बहर युक्त गजल छल। 1980 केर समयसँ योगानंद हीरा आ विजयनाथ झा अरबी बहरमे मैथिली गजल लिखैत छलाह, मुदा मैथिलीक बहर-अज्ञानी संपादक सभ हुनका कात कए देलक जाहिकेँ फलस्वरूप मैथिली गजलमे बहरक चर्चा नै भए सकल। मुदा हालहिमे फेरसँ (ई बात 2009 केर थिक) गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बहरे-मुतकारिबमे सफलतापूर्वक गजल लिखल गेल। तँए आब एकर चर्चा आवश्यक। ओना मैथिलीमे वार्णिक बहरक खोज सेहो गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेल अछि जकर अनुकरण प्रायः हरेक नव गजलकार कए रहल छथि। ओना एहि बहरक चर्चा हम बादमे सेहो करब पहिने अरबीक बहर देखी।

अरूज वा अरूदक अविष्कार हिजरीक दोसर सदीमे खलीले इब्ने अहमद बसरी केने छलाह। हुनका ई विचार मक्काक ठठेरा बजारमे बर्तन बनेबाक अवाज सूनि अएलन्हि। ऐ ठाम कने बिलमि भारतीय पक्षकेँ देखी- ध्वनि मुख्यतः तीन ठामसँ निकलैत छै मूँह, हृद्य आ ढ़ोंड़ी । साधारण लोक मूँहसँ बजैए, साधक हृद्यसँ आ महा साधक ढ़ोंड़ीसँ। ढ़ोंड़ीसँ ॐ शब्द निकलल छै। ॐ शब्दमे तीन टा ध्वनि छै अ, उ, म।

सभसँ पहिने कने संस्कृतक मूल वर्णमाला दिस चली। संस्कृतमे कुल 16 टा स्वर आ 36 टा व्यंजन अछि मने 52 टा वर्ण (ई 52 टा ध्वनि साधरण मनुख द्वारा मूँहसँ बाजल जाइए, साधक आ महासाधक किछु वर्णक ध्वनि हृद्य आ ढ़ोंड़ीसँ निलाकैत छथि)। बहुत रास प्रतीक ऐ स्वर आ व्यंजनक उद्घोषणा करैए। सनातन धर्मक हरेक मत एक स्वरसँ ई स्वीकार करैत अछि जे शंकर भगवानक डमरूसँ लघु-दीर्घ ध्वनि निकलल छै। जँ कने गौर करबै तँ डमरूमे पहिने कम जोरगर अवाज आ तकर बाद जोरगर अवाज आबै छै। कम जोरगर अवाज लघु केर आ जोरगर अवाज दीर्घक प्रतीक भेल। जखन ध्वनि विकसित भए गेलै तखन रैखिक प्रतीकक जरूरति बुझना गेल (ओना गुणाकर मुले जी अपन पोथीमे ध्वनि आ अक्षरक विस्तृत चर्चा केने छथि)। आब कने काली जीक जीहपर आउ काली जीक जीह बाहर निकलल आ गरामे 52 नरमुंडक माला। इएह विग्रह आ फोटो भेटत काली जीक। कने रूकि कऽ मतलब बूझू। जीह ध्वनि लेल अनिवार्य अंग थिक। जँ जीह नै रहत तँ केओ बाजि ने सकत। तेनाहिते नरमुंड जे की गरा, मूँह, जीह आदिकसँ बनल अछि ध्वनि निकालबाक प्रमुख द्वार अछि। 52 टा नरमुंड मे 16 टा स्वर आ 36 टा व्यंजन। शायद अहाँ सभ बूझि गेल हेबै हमर विवेचना।

प्राचीन कालमे मक्काके अरूज वा अरूद सेहो कहल जाइत छलैक तँए बसरी ओहि मात्रा क्रमके अरूज वा अरूदक नाम देलथि। अरबी साहित्यमे 16 बहरक प्रयोग भेल। बादमे इरानमे तीन टा बहरक अविष्कार भेल। आब हम एहिठाम बहरक संक्षिप्त परिचय दए रहल छी।

अरबी साहित्यमे बहर तीन खण्डमे बाँटल गेल अछि 1) सालिम मने मूल बहर, 2) मुरक्कब मने मिश्रित बहर आ 3) मुदाइफ वा मुजाइफ मने परिवर्तित बहर।
अरबीमे सालिम मने मूल बहर मे 7 टा बहर अबैत अछि। आ मुरक्कबमे 269 टा। मुदा ऐ 269मेसँ मात्र 20टा प्रचलित अछि। हम अपना सुविधा लेल मुरक्कब बहरकेँ दू खण्डमे बाँटि देने छी। संगहि-संग सालिम बहरके हम "समान बहर" नाम देने छिऐक। आ मुरक्कब बहरक पहिल खण्ड (जाहिमे कुल सात टा बहर अछि) तकरा अर्धसमान बहर नाम देलिऐक आ मुरक्कब बहरक दोसर खण्ड जाहिमे तेरह टा बहर अछि तकर नाम "असमान बहर" देलिऐ। तँ आब एकर विवरण निच्चा देखू।

खण्ड-15

बहरसँ पहिने रुक्नकेँ बूझी। संस्कृतक गण जकाँ अरबी मे सेहो होइत छैक जकरा "रुक्न" कहल जाइत छैक। ई रुक्न आठ प्रकारके होइत अछि। जकर विवरण एना अछि--

रुक्नक स्वरूप	मात्रा	रुक्नक नाम	मात्रा क्रम
खमासी रुक्न	5	फऊलुन (फ/ऊ/लुन)	122 (1/2/2)
खमासी रुक्न	5	फाइलुन (फा/इ/लुन)	212 (2/1/2)
सुबाई रुक्न	7	फाइलातुन (फा/इ/ला/तुन)	2122 (2/1/2/2)
सुबाई रुक्न	7	मफाईलुन (म/फा/ई/लुन)	1222 (1/2/2/2)
सुबाई रुक्न	7	मुस्तफइलुन (मुस्/तफ/इ/लुन	2212 (2/2/1/2)
सुबाई रुक्न	7	मुफाइलतुन (मु/फा/इ/ल/तुन	12112 (1/2/1/1/2)
सुबाई रुक्न	7	मुतफाइलुन (मु/त/फा/इ/लुन	11212 (1/1/2/1/2)
सुबाई रुक्न	7	मफऊलातु (मफ/ऊ/ला/तु	2221 (2/2/2/1)

****** एहिठाम 1 मने 1 मने ह्रस्व आ 2 मने 2 मने दीर्घ भेल संगे-संग खमासी मने पाँच मात्राक आ सुबाई मने सात मात्राक रुक्न भेल (केओ-केओ दीर्घ लेल + आ लघु लेल   केर प्रयोग करै छथि। संस्कृतमे I दीर्घ लेल आ U लघु लेल चिन्ह अछि।) लघु= ह्रस्व, दीर्घ=गुरु । एहि रुक्न सभकेँ इयाद रखबाक लेल गणितीय रूपसँ एना बुझू--

a) एकटा लघुकैँ बाद जँ दूटा दीर्घ हो तँ ओकरा “फऊलुन” कहल जाइत छैक।

b) एकटा लघुकैँ बाद जँ तीनटा दीर्घ हो तँ ओकरा “मफाईलुन” कहल जाइत छैक।

c) जँ “मफाईलुन” कैँ उल्टा करबै तँ “मफऊलात” बनि जाएत मने तीनटा दीर्घकैँ बाद एकटा लघु।

d) दूटा दीर्घकैँ बीचमे जँ एकटा लघु रहए तखन ओकरा “फाइलुन” कहल जाइत छैक।

e) “फाइलुन” केर अन्तमे जँ एकटा आर दीर्घ जोडबै तँ ओ “फाइलातुन” बनि जाएत।

f) “फाइलातुन” केर उल्टा रूप “मुस्तफइलुन” होइत छैक।

g) शुरुमे एकटा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घ तकरा बाद फेर दूटा लघु आ तकरा अन्तमे एकटा दीर्घ हो तँ “मुफाइलतुन” कहल जाइत छैक।

h) “मुफाइलुन” केर अन्तसँ तेसर या दोसर लघु हटा कए पहिल लघु लग बैसा देबै तँ “मुतफाइलुन” बनि जाएत। मने शुरुमे दू टा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घ तकरा बाद फेर एकटा लघु आ तकरा बाद अन्तमे एकटा दीर्घ।

कोनो गजलक नाम ओकर बहरसँ होइत छै तकर बाद ओहिमे रुक्नक संख्या जोड़ल जाइत छै आ तकर बाद ओहि रुक्नक प्रकृति सेहो उल्लेख कएल जाइत छै तखन ओहि कोनो गजल पूरा नाम बने छै। तँ आउ देखी किछु उदाहरण--

1) मोसन्ना (मुसना) (एक) एहन गजल जकर हरेक शेरक पाँतिमे एकटा रुक्न हो (मने एकटा शेरमे 2 टा रुक्न) ओकरा मोसन्ना (मुसना) शेर कहल जाइत छै। ई संख्यावाची शब्द कोनो बहरमे आबि सकैए। मुसना शेरक एकटा उदाहरण देखू--

दाइ छी हम
माइ छी हम

ऐ शेरक पहिल पाँतिमे 2122 रुक्न मने फाइलातुन अछि आ एकैटा अछि सङ्गहि-सङ्ग सालिम प्रकृतिक अछि

तेनाहिते दोसरे पाँतिमे सेहो 2122 रुक्न मने फाइलातुन अछि आ एकैटा अछि सङ्गहि-सङ्ग सालिम प्रकृतिक अछि फाइलातुन बहरे रमल केर मूल रुक्न अछि तँए एहन शेरसँ बनल गजलक नाम हएत बहरे रमल मोसन्ना (वा मुसना) सालिम। एकरा एनाहुतो कहि सकै छी बहरे रमल सालिम दू रुक्नी।
आब दोसर गजलमे बहरे रमलक बदला बहरे हजज वा बहरे रजज सेहो आबि सकैए आ एनाहिते नामकरण करऽ पड़त । आन संख्या लेल नाम आगू देल जा रहल अछि—
2) मोरब्बा (दू) एहन शेर जकर हरेक पाँतिमे दूटा रुक्न होइ मने पूरा शेरमे चारिटा । एकर नाम हेतै बहरे रमल मोरब्बा सालिम वा बहरे रमल सालिम चारि रुक्नी।
3) मोसद्दस (तीन) बहरे रमल मोसद्दस सामिल वा बहरे रमल सालिम छह रुक्नी।
4) मोसम्मन (चारि) बहरे रमल मोसम्मन सालिम वा बहरे रमल सालिम अठरुक्नी।
5) मोअश्शर (पाँच) बहरे रमल मोअश्शर सालिम वा बहरे रमल सालिम दसरुक्नी।

मुदा ई बहर सभकेँ देखबासँ पहिने ई देखू जे लघु ओ दीर्घ कोना होइत छै (लघु-दीर्घ लेल हम किछु एहनो नियम लेलहुँ जे कि वर्तमानमे प्रचलित नै अछि। हम कोन कारणसँ ई नियम लेलहुँ तकर खंडन-मंडन आगू भेटत) ।
मात्रा गनबाक लेल निच्चाक किछु नियम देखू--
1) वर्ण दू प्रकार होइत छै। स्वतंत्र रूपसँ बाजल जाए बला वर्ण 'स्वर' कहाइ छै आ जकरा स्वरक सहायतासँ बाजल जाइत हो ओकरा व्यंजन कहल जाइत छै। व्याकरणमे परम्परागत रूपसँ स्वरक संख्या 14 मानल गेल छै जकरा निच्चा देखाओल गेल अछि--
अ, आ, इ, ई उ, ऋ, ॠ, लृ,(आ लृक आर एकटा दीर्घ रूप) ऊ, ए, ऐ, ओ, एवं औ। जाहिमे “अ” तँ हरेक वर्णक (जाहिमे हलन्त् नहि लागल होइक)मे अंतमे अबिते छैक। अन्य चारि गोट स्वर (ऋ,ॠ, लृ आ लृक आर एकटा दीर्घ रूप) खाली तत्सम शब्दमे अबैत छैक। बचल दस गोट स्वर आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, एवं औ (एकर लेख रूप क्रमशः ा, ि, ी, ु, ू, े, ै, ो एवं ौ अछि)। चंद्रबिंदुकेँ स्वरक विकारमात्र बूझल जाइत छै कारण ई स्वतंत्र स्वर नै अछि तेनाहिते अनुस्वार ओ विसर्ग स्वतंत्र रूपसँ दीर्घ व्यंजन अछि।
स्वर दू तरहँक होइत छै- पहिल ह्रस्व स्वर आ दोसर दीर्घ स्वर। अ, इ, उ, ऋ, लृ आदि ह्रस्व स्वर भेल तँ आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ. अं. अः आदि दीर्घ स्वर। दूनू स्वरक मात्रा सेहो छै (ा (आ केर मात्रा), ि (इ केर मात्रा), ी (ई केर मात्रा), ु (उ केर मात्रा), ू (ऊ केर मात्रा), ृ (ॠ केर मात्रा), े (ए केर मात्रा), ै (ऐ केर मात्रा), ो (ओ केर मात्रा), ौ (औ केर मात्रा) ं (अनुस्वा केर मात्रा), ः (विसर्ग केर मात्रा)। ह्रस्व स्वरकेँ बाजएमे कम समय लागै छै तँ दीर्घ स्वरकेँ बाजएमे बेसी। स्वरक अतिरिक्त आन वर्ण सभ एना अछि--
कवर्ग--क्, ख्, ग्....
चवर्ग--च्, छ्, ज्.....
...........आब एही वर्णमे जँ “अ” स्वर जोड़बै तँ ओ व्यंजन बनि जाएत। बिना स्वरक वर्ण आधा होइत छै आ ओकरा हलंत चिन्हसँ देखाएल जाइत छै। व्यंजनमे ह्रस्व-दीर्घ मात्रा कि अनुस्वार-विसर्ग लगा कऽ आन वर्ण

बनाएल जाइत छै। उदाहरण देखू--

क्+अ= क

ख्+अ+आ= खा

ग्+अ+इ= गि

च्+अ+ई= ची

छ्+अ+उ= छु

ज्+अ+ऊ= जू

झ्+अ+ए= झे

ट्+अ+ऐ= टै

ठ्+अ+ओ= ठो

ड्+अ+औ=डौ

क्+अ+ं= कं

त्+अ+ः= तः

मने “क” लघु भेल, “का” दीर्घ भेल, “कि” लघु भेल, “की” दीर्घ भेल, “कु” लघु भेल, 'कू” दीर्घ भेल, “के” दीर्घ भेल, “कै” दीर्घ भेल, “को” दीर्घ भेल, “कौ” दीर्घ भेल “कं” दीर्घ भेल, “कः” दीर्घ भेल।

2) अनुस्वार तँ दीर्घ अछि मुदा चन्द्रबिन्दु लघु। चन्द्रबिन्दु जँ लघु अक्षरपर रहतै तँ लघु मानल जेतै आ जँ दीर्घ अक्षरपर रहतै तँ दीर्घ मानल जाएत। मुदा अनुस्वार लघु केर उपर हो कि दीर्घक उपर अनुस्वार सदिखन दीर्घे होइत छै।

3) जँ कोनो शब्दमे संयुक्ताक्षर हुअए तँ ताहिसँ पहिलेक अक्षर दीर्घ भए जाइत छैक चाहे ओ लघु किएक ने हुअए। उदाहरण लेल--प्रत्यक्ष शब्दमे दूटा संयुक्ताक्षर अछि पहिल त्य एवं क्ष। आब एहिमे देखू “त्य”सँ पहिने “प्र” अछि तँए ई दीर्घ भेल आ “क्ष”सँ पहिने “त्य” अछि तँए इहो दीर्घ भेल। ई नियम जँ दू टा अलग-अलग शब्द हो तैयो लागू हएत जेना उदाहरण लेल--हमर प्रेम छी अहाँ... ऐमे “प्रे” संयुक्ताक्षर भेल आ ताहिसँ पहिने बला शब्द “र” दीर्घ भए जाएत। मतलब जे “हमर” शब्दक अंतिम अक्षर “र” दीर्घ भए जाएत । सङ्गे-सङ्ग मोन राखू “न्ह” आ “म्ह” संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला शब्दमे लघु दीर्घ सेहो हएत। जेना की “कुम्हार” मे “म्ह”सँ पहिने “कु” दीर्घ भेल तेनाहिते “कन्हाइ” शब्दमे सेहो “न्ह”सँ पहिने “क” वर्ण दीर्घ भेल। क्ष, त्र आ ज्ञ संयुक्ताक्षर अछि। तेनाहिते.... प्र, र्व, आदि सेहो संयुक्ताक्षर अछि। मुदा “मृत” शब्दमे “मृ” संयुक्ताक्षर नै अछि कारण ऋ लघु स्वर छै आब अहाँ सभ पूछि सकै छी जे “मृत” मे “मृ” संयुक्ताक्षर किएक नै भेल। तँ हम कहब जे संयुक्ताक्षर लेल ओहि वर्णकेँ आधा होमए पड़ैत छै जैमे कोनो दोसर वर्ण संयुक्त हेतै। जेना--

“प्रेम” = प्+र+ए+म=प्रेम
अर्थात “प” वर्ण आधा भेलै तँए ई संयुक्ताक्षर अछि। मुदा
“मृत” = मऋत=मृत
तँए मृत शब्दमे मृ संयुक्ताक्षर नै भेल। ऋ मात्रा भेल। ऐठाँ ई मोन राखब बड़ बेसी आवश्यक अछि जे “ऋ” आ “ॠ” केर उच्चारण एखन गलत अछि। जेना की पता अछि जे “इ” एवं “ई” स्वर जकाँ “ऋ” आ “ॠ” सेहो स्वर अछि, एकरा ह्रस्व “ऋ” आ दीर्घ “ॠ” कहल जाइत छै। वर्तमान समयमे दीर्घ “ॠ” केर प्रचलन नै अछि आ ह्रस्व “ऋ” केर गलत उचचारण प्रचलित अछि। जेना “कृष्ण” एकर उच्चारण एखन “क्रिष्ण” अछि। शुद्ध उच्चारण सुनबा लेल अरविंद आश्रम वा गुजरात समेत दक्षिण भारतक कोनो संस्कृत शिक्षणशालामे अध्ययन कएल जा सकैए)। नोट--पुरान व्याकरणशास्त्री हिंदी-उर्दूक प्रभावें दू अलग-अलग शब्दक संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षरकैँ दीर्घ नै मानै छथि। तेनाहिते ओ सभ न्ह आ म्हसँ पहिने बला लघुकैँ दीर्घ नै मानै छथि। मुदा हम एकर खंडन कऽ चुकल छी जे आगू देल जा रहल अछि। संयुक्ताक्षर लेल एकै रंगक नियमक पालन करी। एहन नै जे किछु गजलमे एकै शब्दक संयुक्त बलाकैँ दीर्घ मानलहुँ आ किछु गजलमे बहर पुरेबाक लेल दूटा संयुक्त बलाकैँ दीर्घ। व्यक्तिगत रूपसँ हम अलग संयुकक्ताक्षर रहितों लघुकैँ दीर्घ मानै छी आ जँ बचबाक रहैए तँ तत्सम शब्दकैँ तद्भवमे बदलि दै छियै।

4) विसर्ग युक्त लघु वर्ण सेहो दीर्घ होइत अछि।

5) जेना कि पहिने कहि चुकल छी जे गजलमे दूटा लघुकैँ एकटा दीर्घ सेहो मानल जाइत छै मुदा कोन दू लघुकैँ दीर्घ मानल जाए ताहि लेल हम आघात बला प्रकरणमे स्पष्ट केने छी तथापि फेर एक बेर हम दऽ रहल छी--
A) दू वर्णसँ बनल शब्दक दोसर वर्णपर आघात रहै छै तँइ एकरा दीर्घ मानू मने “घर” =दीर्घ (संस्कृतमे लघु-लघु)

B) तीन वर्णसँ बनल शब्दपर जाएसँ पहिने लेखक अपन निर्णय लेथि जे ओ पारंपरिक रूपें आघात मानै छथि वा वर्तमान उच्चारण मानै छथि (बिना आघातक)। जँ कियो शाइर आघात मानै छथि तँ अनिवार्य रूपें ओ अपन सभ गजलमे आघातक पालन करथि। एहन नै जे कोनो गजलमे मात्रा पुरेबा लेल आघात मानि लेलहुँ आ कोनोमे नै मानलहुँ। जे कियो एना करता तँ हुनकर काव्य दोषसँ ग्रसित बूझल जाएत। जे आघात नै मानै छथि तिनकोसँ आग्रह जे ओ अपन गजलमे उच्चारणक एकरूपता राखथि। मने तीन वर्णसँ बनल शब्द लेल दू टा ग्रुप भेल--पहिल जे आघात मानै छथि, दोसर जे आघात नै मानै छथि। तँ आब आउ तीन वर्णसँ बनल शब्दपर---

“पहिल” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हेतै पहि-ल मने दीर्घ-लघु मने 2-1। जे आघात नै मानै छथि

तिनका लेल उच्चारण प-हिल मने लघु-दीर्घ 1-2
“तखन” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हेतै तख-न मने दीर्घ-लघु मने 2-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल उच्चारण त-खन मने लघु-दीर्घ 1-2
“बिगड़ि” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हेतै बिग-ड़ि मने दीर्घ-लघु मने 2-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल उच्चारण बि-गड़ि मने लघु-दीर्घ 1-2
आन शब्द लेल एहने सन बुझू।

आब आउ चारि लघु वर्णसँ बनल शब्दपर --
“भिनसर” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हएत भिनस-र मने दीर्घ-लघु-लघु मने 2-1-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल भिन-सर मने दीर्घ-दीर्घ मने 2-2
“कबकब” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हएत कबक-ब मने दीर्घ-लघु-लघु मने 2-1-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल कब-कब मने दीर्घ-दीर्घ मने 2-2
आन शब्द लेल एहने सन बुझू।

आब आउ पाँच लघु वर्णसँ बनल शब्दपर--
“चहटगर” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हएत चहटग-र मने लघु-दीर्घ-लघु-लघु मने 1-2-1-1 । जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल चहट-गर मने लघु-दीर्घ-दीर्घ मने 1-2-2
आन शब्द लेल एहने सन बुझू।
आब आउ छह लघु वर्णसँ बनल शब्दपर--

“चपलचरण” जे आघात मानै छथि तिनका लेल उच्चारण हएत चप-ल-चर-ण मने दीर्घ-लघु-दीर्घ-लघु मने 2-1-2-1। जे आघात नै मानै छथि तिनका लेल च-पल-च-रण मने लघु-दीर्घ-लघु-दीर्घ मने1- 2-1-2

6) प्लुत----” दूराह्वाने च गाने च रोदने च प्लु तो मतः॥” इति च दुर्गादासधृतवचनम्॥ मने दूर लोककेँ बजबए लेल, गेबाक कालमे वा कनबा कालमे किछु शब्दकेँ रेघा कऽ उच्चरित कएल जाइ छै आ तँइसँ ओकर मात्रा दीर्घसँ बेसी बऽ जाइत छै मने तीनमात्रिक। मुदा ई प्लुत वर्तमान सभ भारतीय भाषासँ हटि गेल अछि। मुदा उर्दूमे ई एखनो पालन कएल जाइत छै जेना उर्दू बला सभ "रास्ता" केर बहर दीर्घ लघु दीर्घ मानै छथि। तेनाहिते दोस्ती एवं एहने सन शब्द लेल मानू। ओना पिंगल कृत छंदः सूत्रम् हिसाबसँ छंद शास्त्रमे प्लुत केर प्रयोग आ नियमक कोनो विधान नै छै (पिंगल कृत छंदः सूत्रम् डा. कपिलदेव द्विवेदी, डा. शयाम लाल सिंह)। आन शब्द लेल एहने सन बुझू। विभक्ति जुटलाक बाद मात्राक्रम सेहो बदलऽ लागै छै। जेना “इज्जत” ई 22 अछि। “इज्जतक” आब

एकरा 221 सेहो मानल जा सकैए मुदा 212 बेसी उचित कारण विभक्ति सटलाक बाद "इज्" लेल 2 फेर "ज" लेल 1 "तक" लेल 2 मने 212 बेसी उचित अछि। तखन हम फेर कहब जे शाइर ई अपने देखथि जे कोन मात्राक्रम लेलासँ बेसी प्रवाह आबि रहल छै। विभक्तिए जकाँ उपसर्ग वा प्रत्ययसँ सेहो मात्राक्रम बदलल सन लागऽ लागै छै। जेना कुशल मूल शब्दमे स उपसर्ग लगलासँ सकुशल शब्द बनै छै। आब जँ सकुशल शब्दक उच्चारणपर धेआन देबै तँ स केर उच्चारण अलग आ कुशल केर उच्चारण अलग होइ छै। एहन स्थितिमे सकुशल केर मात्रा 112 मानब बेसी उचित। आन एहन शब्द सभ लेल इएह बुझू। वर्तमानमे किछु मैथिली शब्दक दू तरहें वर्तनी अछि जेना---

1) केओ-कियो 2) एम्हर-इम्हर- इमहर, 3) देयाद-दियाद 4) एखन-अखन, 5) एते-अते 6) कोनो-कुनो अइ उदाहरणसँ बुझना जाइत अछि जे अधिकांशतः शुरूआतक "ए" "इ" वा "अ" मे बदलि जाइत छै (सभ शब्दमे नै)। पं.गोविन्द झा ओ आन पुरान व्याकरणशास्त्री सभ कियो, इम्हर, दियाद, अखन सभकेँ अशुद्ध वर्तनी मानने छथि मुदा उच्चारणमे सभसँ बेसी प्रचलित इएह रूप अछि। ऐ संदर्भमे हमर मानब अछि जे जेना उर्दू अपन भाषाक लोच बचबऽ लेल "मुहब्बत" आ मोहब्बत" दूनू वर्तनी लेने अछि (ऐठाम ई जानब जरूरी जे मुहब्बत शुद्ध रूप छै) तेनाहिते "केओ-कियो" दूनू तरहँक वर्तनी सही रहत। जखन 12 जरूरत हो तखन "कियो" शब्दक प्रयोग करू आ जखन 22 केर जरूरत हो तखन "केओ" केर प्रयोग करू। "केओ" या "कोनो" लीखि कऽ ओकर मात्रा लघु-दीर्घ मानब हमरा हिसाबें गलत। जे कियो कहै छथि जे शुरूआतक या बीचक दीर्घकेँ सेहो लघु मानबाक चाही। तँ प्रश्न उठैए जे कोन-कोन दीर्घकेँ लघु मानबक चाही आ कोन-कोनकेँ नै मानबाक चाही। किछु लोकक किछु मत हेतनि आ किछु लोकक किछु। तँइ जँ कियो ई बात तार्किक रूपसँ कहि देथि जे "अइ कारणसँ अमुक शब्दक ओइ ठाम शुरूआतक आ ओइ ठामक बीच बला लघु हेतै" तँ हमरा मानबामे कोनो आपत्ति नै कारण बात तर्कसँ संचालित रहतै। आ जँ बिना तर्कक अपना मोने मानि लेबै तखन गजल फेरसँ आजाद भऽ जाएत। आ जखन गजलकेँ आजादे हेबाक छै तखन वार्णिक बहर किए सरल वार्णिकमे गजल लीखू। सरलो वार्णिकमे गजल नियमबद्ध तँ रहबे करतै। ओना हमरा लग किछु एहनो उदहारण अछि जइमे बहुतो शाइर शुरू कि बीच बला दीर्घकेँ लघु रूपमे लीखि काज चलाबै छथि आ एहन रूपसँ किछु हद धरि हमहूँ सहमत छी मुदा एहन तखने भऽ सकैए जखन कि ओ उच्चारण दृष्टिसँ ठीक हो जेना "कानून" लेल "कानुन", "फूल" लेल "फुल" आदि। आ तकरा ओहने लिखल सेहो जेबाक चाही। मने जँ कानून केँ कानुन मानै छी तँ लिखबो कानुन करू। किछु उदाहरण नियम शैथिल्य बला प्रकरणमे सेहो भेटत। मुदा फेर दोहराबी जे शुरू कि बीच बलाकेँ दीर्घ रूपमे लीखि तखन ओकरा लघु मानब हमरा हिसाबें गलत हएत।

जेना विकारी वा एफास्ट्राफी लगा कऽ बहुत रास शब्दकेँ छोट बना देल जाइत छै तेनाहिते जै शब्दक अंतमे "म" हो तकरा हटा कऽ ओसँ पहिने बला शब्दपर चंद्रबिंदु लगा देलासँ वएह अर्थ अबैत छै जेना

नाम= नाँ

गाम=गाँ

ठाम=ठाँ

मुदा ई नियम संज्ञा, तत्सम शब्द ओ रूढ़ अर्थ देबऽ बला शब्दमे नै लागत। जेना--

धाम केर बदला धाँ नै हएत।

दाम केर बदला दाँ नै हएत।

संगे-संग ऐ संक्षिप्त रूपमे "ओं" लगा कऽ एकरा विस्तार सेहो कऽ सकै छी जेना नाँओँ, दाँओँ, गाँओँ आदि-आदि। आ एनाहिते सभ लेल बूझू। मुदा प्रयोगक हिसाबसँ "नाँ" आ "नाँओँ" दूनूमे भिन्नता आबि जाइत छै जेना--

"किदन सन तँ नाँ कहने रहै"

"श्रीमान् अपनेक नाँओँ की भेलै"

आब गजलमे मात्राक्रम आ विषयक हिसाबसँ जे उचित बूझि पड़ए तै हिसाबसँ शब्द चयन कऽ लिअ।

वाव-ए-अत्फ अरबी भाषाक एकटा महत्वपूर्ण नियम अछि जे की फारसी आ उर्दूमे सेहो मान्य अछि। ऐ नियमक हिसाबें जँ दू शब्दक बीच "व" आबै तँ ओकर उच्चारण "ओ" भऽ जाइत छै आ पहिल शब्दक अंतिम अक्षरमे जुटि जाइत छै। जेना--

दैर-व-हरम = दैर-ओ-हरम = दैरो-हरम (दैर मने मंदिर, हरम मने मस्जिद)

सुब्ह-व-शाम = सुब्ह-ओ-शाम = सुब्हो-शाम, आदि-आदि

मुदा मैथिलीमे ई नियम पूरा-पूरी नै लागत। मैथिलीमे एहन शब्द जे की अरबी-फारसी-उर्दूक अछि आ जकर अंतमे "व" छै तखन एकरा "ओ" बना सकै छी जेना--

चुनाव = चुनाओ

लगाव = लगाओ

दाव = दाओ

उपरका नियम हिसाबें गजलमे जतऽ जेहन मात्राक्रमक जरूरति बुझि पड़ैत हो तेहन शब्द बना लिअ।

एकर अतिरिक्त मैथिलीक संज्ञा आ सर्वनाममे सेहो "ओ" एवं "ऊ" केर प्रयोग होइत छै आ एकर अर्थ उर्दूक "भी" केर बराबर होइत छै। जेना--

रामो गेलथि (उर्दूमे राम भी गये)

हमहूँ गेलहुँ (उर्दूमे मैं भी गया)

ओहो गेलथि (उर्दूमे वह भी गये)

आब कने देखू प्राचीन व्याकरणशास्त्री सभहँक मतक खंडन

1) पं.गोविन्द झा अपन पोथी "मैथिली छंद शास्त्र" (मिथिला पुस्तक केन्द्र दरभंगासँ प्रकाशित, द्वितीय संस्करण 1987)मे पृष्ठ 13 मे लिखैत छथि जे "सँ, जँ, तँ, हँ आदि गुरू अछि" मने चंद्रबिंदुकेँ पं.गोविन्द झा जी दीर्घ मानने

छथि (प. दीनबन्धु झा रचित मिथिला भाषा विद्योतनमे एहने लिखल अछि।) मुदा फेर पं.गोविन्द झा जी शेखर प्रकाशनसँ 2006मे प्रकाशित अपन पोथी “मैथिली परिचायिका” केर पृष्ठ 20पर लिखै छथि जे “अनुस्वार भारी होइत अछि आ चंद्रबिंदु भारहीन” मने ऐ पोथीमे पं. जी चंद्रबिंदुकेँ लघु मानने छथि आ एहने सन विचार ओ मैथिली अकादेमीसँ 2007मे प्रकाशित अपन पोथी “मैथिली परिशीलन” क पृष्ट 35पर देने छथि। आब हमरा एहन पाठक लेल ई बड़का प्रश्न अछि जे चंद्रबिंदुकेँ लघु मानल जाए की दीर्घ, कारण एकै पं.गोविन्द झा जी अपन भिन्न-भिन्न पोथीमे भिन्न विचार देने छथि आ ई प्रचारित करबाक उपक्रम करै छथि जे जाहि पोथीमे हम जे लीखि देलहुँ से सही अछि। जँ पं.गोविन्द झा जी बाद बला पोथीमे लीखि देने रहितथिन्ह जे “मैथिली छंद शास्त्रमे चंद्रबिंदु केर सम्बन्धमे हम जे लिखने छी से गलत थिक आब आब हम ऐ पोथीमे एकरा सुधारि रहल छी” तखन हमरा जनैत भ्रम नै पसरितै आ ऐसँ हुनक महानता सेहो सिद्ध होइत। मुदा से नै भेल। कोनो भाषाक वैयाकरणक उपर ओहि भाषाक हरेक लोककेँ विश्वास होइत छै। मैथिल सेहो पं. जीपर विश्वास करैत छथि (हमरा सहित) आ तँए बहुत मैथिल लोकनि चंद्रबिंदुकेँ दीर्घ मानि बैसल छथि। एकर सभसँ बड़का उदाहरण श्री रमण झा सन अलंकार शास्त्री अपन पोथी “भिन्न-अभिन्न” क पृष्ठ 67-73 मे देने छथि जतए श्री रमण जी पं.गोविन्द झा जीक संदर्भ दैत चंद्रबिंदुकेँ दीर्घ मानि लेने छथि। अस्तु ई गप्प फरिछाएल अछि जे चंद्रबिंदु लघु होइत अछि आ अनुस्वार दीर्घ।

2) मैथिली छन्द शास्त्रक पृष्ठ 14पर पं.गोविन्द झा जी लिखै छथि जे “न्ह आ म्ह संयुक्ताक्षरसँ पूर्व लघु वर्ण गुरू नै होइत अछि, कन्हाइ, कुम्हार, एहिठाम क ओ कु गुरू नहि थिक।” मुदा जँ अहाँ मैथिली उच्चारणकेँ अकानब तँ साफ-साफ सुनबामे कन् + हाइ ध्वनि आएत तेनाहिते कुम् + हार ध्वनि सुनबामे आएत। मैथिलीमे क + न्हाइ वा कु + म्हार ध्वनि कदाचिते भेटत (किछु लोप छोड़ि जकर चर्च आगू भेटत) तँए गजलमे कन्हाइ लेल दीर्घ + दीर्घ + लघु हएत आ कुम्हार सेहो दीर्घ + दीर्घ + लघु हएत। ओना गजलेमे किएक हरेक छन्द, हरेक पद्य उच्चारणपर अछि तँए हरेक छंदमे कुम्हार दीर्घ + दीर्घ + लघु हएत। आब कने आर विस्तारसँ चली। उर्दू भाषामे न्ह, म्ह आ ल्हसँ पहिनुक अक्षर दीर्घ नै होइत छै मने जे जाहि सङ्गे ल्ह, म्ह वा न्ह रहैत अछि तकरे उपर ओ प्रभाव दै छै जेना “तुम्हारा “ऐ शब्दक उच्चारण उर्दूमे “तु + म्हारा” होइत छै तँए उर्दूमे “तुम्हारा लेल लघु + दीर्घ + दीर्घ प्रयोग होइत छै। ओना ऐठाम ई कहब बेजाए नै जे उर्दूमे न्ह, म्ह, ल्ह केर ध्वनि संस्कृतसँ आएल मुदा उर्दूक सचेष्ट विद्वान सभ उच्चारण अपने हिसाबसँ रखलथि। उर्दूक ई उच्चारण हिन्दीमे आएल (बजबा कालमे उर्दू आ हिन्दी एक समान होइत अछि)। मुदा जँ मैथिली उच्चारणकेँ देखबै तँ साफे-साफ अंतर बुझना जाएत। आ एही अन्तरक कारणें मैथिल हरेक आन राज्यमे जल्दिये पहिचानमे आबि जाइत छथि। मैथिलीमे आने संयुक्ताक्षर जकाँ म्ह,न्ह आ ल्ह केर प्रभाव होइत छै तँए कुम्हार आ कन्हाइ लेल दीर्घ + दीर्घ + लघु हएत। संस्कृतमे सेहो “म्ह, ल्ह आ न्ह “सँ पहिने केर लघु दीर्घ मानल जाइत छै। आब देखू तुलसी दास जी द्वारा लिखल ई स्त्रोत--

नमामी शमीशान निर्वाण रूपं

विभू व्यापकम् ब्रम्ह् वेदः स्वरूपं

पहिल पाँतिकैँ मात्रा क्रम अछि --ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ दोसरो पाँतिकैँ मात्रा क्रम अछि--ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ । आब ऐ श्लोकक दोसर पाँतिक ब्रम्ह् शब्दपर धेआन देबै सभ बुझबामे आबि जाएत। एहिठाम एक छन लेल ई मानि ली जे ध्वनिमे लोप होइत छै आ "कन्हाइ" शब्दक बदला "कनाइ" प्रचलित छै तखन नव शब्दक मात्रा नव ध्वनिक हिसाबें हेतै। नव शब्द "कनाइ" केर मात्राक्रम मूल शब्द "कन्हाइ" केर आधारपर करबै तँ ई युक्तिसंगत नै।

3) पं.गोविन्द झा जी मैथिली छंद शास्त्रक पृष्ठ 13मे संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षर दीर्घ हएत की लघु तकर व्यवस्था देखेने छथि। हुनका मतें जँ एकैटा शब्दमे संयुक्ताक्षर हो तखने टा संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक अक्षर दीर्घ हएत। सङ्गे-सङ्ग ईहो कहने छथि जे प्रचलित समासमे जँ अलगो-अलग अक्षर छै तखन संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक अक्षर दीर्घ हएत। सङ्गे-सङ्ग ओ एकर सभहँक अपवाद सेहो देने छथि। लगभग इएह नियम मैथिलीक सभ लेखक अपनेने छथि। सङ्गे हम ईहो कहि दी जे हिन्दीयोमे एहने सन नियम छै (आन आधुनिक भारतीय भाषामे की छै से हमरा नै पता) मुदा ई नियम संस्कृतमे नै छै। संस्कृतमे चाहे एकै शब्दमे संयुक्ताक्षर हो की अलग-अलग शब्दमे दूनू स्थितिमे संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक अक्षर दीर्घ हएत। संस्कृत पद्यक किछु उदाहरण देखू--पहिने आदि शंकराचार्यक ई निर्वाण षट्कम देखू--

मनो बुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहम् न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे
न च व्योम भूमिर् न तेजॊ न वायु: चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवॊऽहम्

पहिल पाँतिकैँ मात्रा क्रम अछि--ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ । दोसरो पाँतिकैँ मात्रा क्रम अछि--ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ । जँ अहाँ नीकसँ पढ़बै तँ पता लागत जे संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षर जे अलग शब्दमे छै ओहो दीर्घ भए रहल छै।
ऐ के अलावे पूरा संस्कृत पद्ये एकर उदाहरण अछि (अहाँ सभ आन उदाहरण आन ठाम देखि सकै छी)। मुदा से देब ने हमरा अभीष्ट अछि आ ने उचित। मैथिलीमे ई नियम नै छै तकर कारण प्राकृत-अप्रभंश भाषाक प्रभाव छै। मैथिली सहित आन-आन आधुनिक उत्तर भारतीय भाषामे ई सेहो ई नियम नै मानल जाइत छै प्राकृत-अपभ्रंशक प्रभावें। आब ई देखू जे ई प्राकृत-अपभ्रंश कोन भाषा थिक। प्राकृतक सम्बन्धमे नाट्य शास्त्रक प्रणेता भरत मुनि कहै छथि जे--
एतदेव विपर्यस्तं संस्कार गुण वर्जितम्
विज्ञेयं प्राकृतं पाठ्यं नाना वस्थान्तरात्मकम्।

मने जे मूल शब्दक अक्षरकँ आगू-पाछू कए वा सरलीकृत कए बाजब प्राकृत पाठ कहाइए। ऐठाम मूल शब्द कोनो भाषाक भए सकैए। तेनाहिते आचार्य भर्तृहरि जी प्राकृतक सम्बन्धमे कहै छथि जे--

दैवीवाक् व्यवकीर्णेयम शकतैरभि धातृभिः

मने जे दैवीवाक् अशक्त लोकक मूँहमे आबि भिन्न-भिन्न रूपमे आबि जाइ छै। मुदा महाभाष्यकार पतञ्जलि प्राकृतकँ अपशब्दक रूपमे देखैत छथि आ हुनका मतें ऐ तरहक अपशब्दक प्रयोग चाहे ओ बाजल जाइ की सूनल जाइ दूनू रूपमे अधर्म थिक।

प्रायःप्रायः हरेक भाषाविज्ञानी प्राकृतक बाद बला रूपकँ अपभ्रंशक नाम देने छथिन्हि। लगभग नवम आ दशम शताब्दी धरि प्राकृतक प्रयोग खत्म भए गेल छल आ अपभ्रंशक प्रयोग शुरू भए गेल छल। मुदा ऐ ठाम मोन राखू जे अधिकांश भाषाविज्ञानी अप्रभंशकँ प्राकृतसँ अलग मानने छथि मुदा दूनूक प्रकृति एक समान हेबाक कारणें "प्राकृत-अपभ्रंश "नाम बेसी चलै छै। प्राकृतमे शब्दक निर्माण मुख्यतः लोक रूचिपर निर्धारित छै ने की व्याकरणपर। एकटा उदाहरण देखू--चन्द्र शब्दसँ चन्दा प्राकृत शब्द भेल मुदा इन्द्र शब्दसँ इन्दा शब्द नै बनल ब्लकि इन्दर शब्द बनल। तेनाहिते वधू शब्दसँ बहु बनि तँ गेल मुदा साधु शब्दसँ साहु नै बनल। साहु अलग शब्द अछि। आ लगभग एहने हालति अपभ्रंशक अछि। ई बात जननाइ महत्वपूर्ण अछि जे जेनाहिते प्राकृत लेल मूल शब्द संस्कृत छै तेनाहिते अपभ्रंश लेल मूल शब्द प्राकृत छै। आ बादमे एही अपभ्रंशसँ मैथिली आ आन आधुनिक भारतीय भाषा सभहँक जन्म भेल। ओना प्राकृतक बहुत रूप छै। तेनाहिते अपभ्रंशक सेहो अनेको रूप छै। मैथिलीमे अपभ्रंशकँ अपभ्रष्ट वा अवहट्ट सेहो कहल जाइत छै। मुदा ई प्राकृत रूप हरेक समयमे होइत रहलैए। वेदक नाराशंसी एकर उदाहरण अछि । आ ऋगवेदमे ओहि समयक सामानान्तर भाषाक बहुत रास शब्द भेटत। तेनाहिते अशोक वाटिकामे हनुमान जीक ई चिन्ता जे हम सीता जीसँ देवभाषामे गप्प करी की मानुषी भाषामे सेहो ऐ गप्पक प्रमाण अछि जे ओहू समयमे संस्कृतक समानान्तर भाषा छलै आब ओकर नाम मानुषी होइ की वा अन्य कोनो। महत्वपूर्ण तँ ई छै जे वेदसँ लए कए एखन धरि संस्कृतक समानान्तर धारा बहैत रहल आब भले ही ओकर नाम जे रहल होइ।

संस्कृत शब्द जखन प्राकृत रूपमे आबए लगलै तखन संयुक्ताक्षर शब्दपर बहुत बेसी प्रभाव पड़लै। जँ गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे प्राकृत बाजए बला सभ संयुक्ताक्षर शब्दकँ अपन लक्ष्य बनेने छल ताहूमे एहन संयुक्ताक्षर बला शब्द जे शब्दक शुरूआतमे छल। एकर कारण छलै जे संयुक्ताक्षर बला शब्दकँ बजबामे बहुत सावधानी आ शिक्षा चाही छल। संस्कृतक संयुक्ताक्षर बला शब्द प्राकृतमे दू रूपमे तोड़ल गेल--

1) जै संस्कृतक शब्दक शुरुआत संयुक्ताक्षरसँ भेल छै तकरा प्राकृतमे पूरा-पूरी लोप कए देल गेलै। केखनो-केखनो शुरूआतक संयुक्ताक्षरकँ बादमे आनि देल गेलै जेना

"ग्रह" संस्कृत छै मुदा एकर प्राकृत "गिरहो" छै। तेनाहिते स्कन्द लेल खन्दो, क्षमा लेल खमा वा छमा, स्तम्भ लेल खम्भ, स्खलितं लेल खलिअं, क्लेश लेल किलेसो इत्यादि।

2) जँ शब्दक शुरुआत छोड़ि कतौ संयुक्ताक्षर छै तँ केखनो ओकर लोप भए गेल छै वा नव रूपमे संयुक्ताक्षर छै

जेना--
चतुर्थी लेल चउत्थी, चैत्र लेल चइत्ता, चन्द्रिमा लेल चन्दिमा, क्षेत्रम् लेल छेतम् आदि-आदि। कुल मिला कए प्राकृत-अपभ्रंशमे एहन स्थिति बनल जे दूनू भाषामेसँ कोनो भाषामे एहन शब्द नै छलै जकर शुरूआत संयुक्ताक्षर शब्दसँ होइत हो।
एतेक विवेचनाक बाद हम अपन मूल उद्येश्य दिस चली। हमर मूल उद्येश्य छल जे मैथिलीमे संस्कृते जकाँ अलग-अलग शब्द रहितों संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षर दीर्घ किएक नै होइए। आब जँ गौरसँ उपरका विवरण पढ़ने हएब आ जँ आर प्राकृत-अपभ्रंशक पोथी सभ पढ़ब तँ पता लागत जे प्राकृत-अप्रभंशमे तँ संयुक्ताक्षरसँ शुरूआत शब्द छैके नै। आ मैथिलीयो अपभ्रंशसँ निकलल अछि आ प्रारंभिक मैथिलीमे संयुक्ताक्षरसँ शुरूआत होइत कोनो शब्द नै अछि। आ तँए मैथिलीमे संस्कृतक ई नियम नै आएल। आ अहाँ अपने सोचियौ ने जे जै भाषामे संयुक्ताक्षरसँ शुरू होइत शब्द छैके नै से एहन तरहँक नियम किएक राखत। मुदा जँ नवीन मैथिली भाषाक किछु प्रतिष्ठित लेखकक रचनाकेँ देखी तँ ओ मात्र क्रियापदकेँ छोड़ि सभ संस्कृतक शब्द (तत्सम शब्द)कँ प्रयोग केने छथि। आन-आन कम प्रतिष्ठित लेखक अपन रचनामे तत्सम शब्दकेँ फिल्मी मसल्ला मानि जोरगर प्रयोग करै छथि। एतबा नै पं.गोविन्द झा जी अपन पोथी "मैथिली परिशीलन" क पृष्ठ 29-30 पर गौरव पूर्वक नवीन भारतीय भाषा (जैमे मैथिली सेहो अछि)कँ तत्सम निष्ठ हेबाक बहुत रास फायदा गनौने छथि। आब हमरा सन जिज्ञासु लग ई प्रश्न अपने-आप आबि जाइए जे जँ संस्कृतक शब्द लेलासँ बहुत रास फायदा भेलै (वा भए सकैत छै) तखन तँ संस्कृतक सम्बन्धित नियम लेलासँ सेहो फायदा भेल रहितै (वा भए सकैत छै)। ओनाहुतो मैथिलीमे वा अन्य कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक पद्यमे संस्कृत शब्दक प्रयोग होइ छै तखन ओ नियम स्वतः पालन भए जाइत छै। अहाँ अपने मैथिली महँक एहन कोनो पद्य गाउ जाहिमे कोनो शब्दक लघुक बाद संयुक्ताक्षरसँ शुरू होइत कोनो संस्कृत शब्द हो स्वतः अहाँकेँ बुझा जाएत जे अलग शब्द रहितों संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला अक्षर दीर्घ होमए लगैत छै। ऐठाँ फेर मोन राखू जे प्राकृत-अपभ्रंश भाषामे एहन शब्द छलैहे नै जकर शुरूआत संयुक्ताक्षरसँ होइ तँए ओहि भाषामे ई नियम नै पालित भेल। आब एतेक विवेचनक बाद अहाँ सभकेँ मामिला बुझबामे आएल हएत। तँए हमर आग्रह जे जँ ऐ नियमसँ बचबाक हो तँ संयुक्ताक्षरसँ शुरू होइत शब्दक तद्भव रूप प्रयोग करू जेना "प्रकाश "लेल परकाश, "प्रयोग "लेल परियोग इत्यादि। हमर कहबाक मतलब जे जेना पुरना कालमे प्राकृत संयुक्ताक्षरकेँ हटा देलकै वा आधुनिक कालक किछु भाषामे संयुक्ताक्षर हटि गेलै तेनाहिते मैथिलीमेसँ संयुक्ताक्षर सेहो हटा दिऔ। आ जँ अहाँ संस्कृते शब्द लेब तखन पूरा नियम सहित लिअ। आब अहाँ जँ सकांक्ष पाठक हएब तँ हमरासँ पूछब जे जँ केओ संस्कृत छोड़ि आन भाषाक संयुक्ताक्षर शब्द लेत तखन की ओहि भाषाक नियमक पालन करत? ऐ लेल हमर उत्तर रहत जे नै कारण आन भाषाक शब्द तँ अहाँ देवनागरिए कि तिरहुतेमे लिखबै ने आ जँ देवनागरी या तिरहुतामे लिखबै तखने ओइमे मैथिलीक संयुक्ताक्षर बला नियमे अपने मोने पालन हेबे करतै। ई छल हमर पहिल तर्क। आब कने दोसर तर्क दिस चली--
पद्यमे एकटा पाँतिकेँ इकाइ मानल जाइत छै। आ जँ हम शब्दकेँ भिन्न-भिन्न करै छिऐ मने अलग-अलग शब्दक

संयुक्ताक्षरसँ भेल दीर्घ नै मानै छिऐ तँ एकर मतलब जे हम पाँतिकैँ नै बल्कि शब्दकैँ इकाइ मानि रहल छिऐ आ हमरा जनैत पद्यमे शब्दकैँ इकाइ मानब उचित नै। पद्यमे इकाइ सदिखन पाँति होइ छै। एकटा विडंबना देखू जे मैथिलीक सभ व्याकरणशास्त्री आ कवि लोकनि शब्दकैँ इकाइ तँ मानै छथि मुदा जखन जगण-मगण केर गिनती करै छथि तखन पाँतिकैँ इकाइ मानि लै छथि। एकटा उदाहरण लिअ जे की वसन्त तिलका छन्दक अछि। ऐ छन्दक व्यवस्था एना अछि--

तगण+ मगण+जगण +जगण + गा + गा

मने की दीर्घ+दीर्घ+लघु + दीर्घ-लघु-लघु +लघु-दीर्घ-लघु +लघु-दीर्घ-लघु +दीर्घ+ दीर्घ

आब एकर पद्य उदाहरण देखू--

"ई ने अहाँक सन वीरक काज थीकऽ"

(ई पाँति कविवर सीताराम झाक छनि जे की पं.गोविन्द झाजीक पोथी मैथिली छन्द शास्त्र, पृष्ठ--45सँ लेने छी हम)। ऐ एकटा पाँतिमे देखू जे "ई "आ "ने "दूटा अलग-अलग शब्द अछि सङ्गे-सङ्ग तेसर शब्द "अहाँक" केर पहिल अक्षर "अ "लए कए मात्र एकटा "तगण "बनल अछि। आब हमर कहब अछि जे जँ अहाँ पद्यमे शब्देकैँ इकाइ मानै छिऐ तखन दू-तीनटा अलग-अलग शब्दकैँ सानि एकटा जगण-मगण किएक बनबै छी। जँ केओ शब्देकैँ इकाइ मानै छथि तकर मतलब ई भेल जे ओ अपन पद्यमे एहन शब्दकैँ प्रयोग करथि जे हरेक जगण-मगण मने कोनो दशाक्षरी खण्ड लेल समान रूपसँ रहए। तँए हमर मानब जे संस्कृतक पद्ये जकाँ जँ अलग-अलग शब्द होइ तैयो संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक बला अक्षर दीर्घ हएत। ऐठाँ ई मोन राखू जे एकटा पाँति खत्म भेलै तँ ओ इकाइ खत्म भेलै। आब जँ दोसर पाँतिक शुरूआत संयुक्ताक्षरसँ भए रहल छै तकर प्रभाव पहिल पाँतिक अन्तिम शब्दक अन्तिम अक्षरपर नै पड़त। व्यक्तिगत रूपें हम अलग-अलग शब्द होइ तैयो संयुक्ताक्षरसँ पहिनुक बला अक्षर दीर्घ मानै छी।

पं.गोविन्द झा जी अपन पोथी "मैथिली छन्द शास्त्र "क पृष्ठ 14पर लिखै छथि जे ए,ऐ,ओ,औ कतहु लघु होइत अछि आ कतहु दीर्घ आ तकर बाद ओ समान्य नियम देखेने छथि। मुदा उदाहरणमे देल गेल जे-जे शब्द सभ लेने छथि से प्रयाः-प्रायः आइसँ 150 बर्ख पहिनुक अछि तथापि हम ओइ नियम सभहँक विवेचन आगू करब आ ईहो सिद्ध करब जे ए,ऐ,ओ,औ जतए रहत ततए दीर्घ रहत। हँ, ओइसँ पहिने दूटा गप्प धेआन राखू पहिल जे बहुत काल ए,ऐ,ओ,औ आदिक उच्चारण कोमल भऽ जाइत छै मुदा कोमल उच्चारणक कारणें ओ लघु नै मानल जाएत। आ दोसर गप्प जे प्राकृतकालमे संस्कृतक विरोध स्वरूप लोक सभ अपना सुविधाक हिसाबसँ ए,ऐ,ओ,औ आदिकैँ कतौ लघु आ कतौ दीर्घ मानि लेला। शुरुआती प्राकृत कालमे उच्चारण मुख-सुखपर आधारित अछि मने एहन उच्चारण जकरा बाजएमे बेसी कठनाइ नै हो। मुदा जखन इएह प्राकृत संस्कारयुक्त बनि गेल तखन संस्कृते जकाँ एकरो विरोध भेलै आ अप्रभंश भाषा आएल आ अपभ्रंशो जखन संस्कारयुक्त बनि गेल तखन मैथिली, बंगला, असामी, उड़िया, अवधी सन भाषाक जन्म भेल। मुदा आइकैँ जुगमे जखन की मैथिली संस्कारयुक्त बनि गेल अछि तखन प्राकृत-अप्रभंश नियमक कोन काज (आब अहाँ सभ ई डर नै देखाएब जे संस्कारयुक्त भेलासँ मैथिली

मरि जाएत। जँ एतबे डर अछि तखन मैथिलीकेँ 1000 बर्ख पाछू लऽ जाउ आ तखन प्राकृत-अप्रभंश नियम लिअ। वस्तुतः भाषाकेँ मरब आ जन्मब प्रकिया मनुक्खे जकाँ छै जे की रोकल नै जा सकैए। हँ, किछु स्थान राखल जा सकैए जैसँ मूल भाषाक विशेषता नव भाषामे रहि जाए) तँए हमर ई स्पष्ट रूपें मानब अछि जे ए,ऐ,ओ, औ आदि जतए रहै ओकरा दीर्घ मानू (ओना छन्दमे केखनो काल अपवाद स्वरूप काज चलेबा लेल ए,ऐ,ओ, औ आदिकेँ लघु मानल जाएत रहलैए मुदा ई छूट जकाँ भेल नियम जकाँ नै आ अइ छूट सभहँक विवरण आगू भेटत)।पं. जी एही पोथीक पन्ना 14हेपर एकटा नियम देलाह जे तद्भव शब्दमे अन्तसँ तेसर ओ चारिम स्थानपर पड़निहार ए,ऐ,ओ,औ सभ लघु थिक जेना--

तेल (21) तेलाह (121)

फैल (21) फैलगर (1111)

मुदा पं. जी ई नै स्पष्ट केलाह जे अन्तसँ तेसर ओ चारिम स्थानपर पड़निहार ए,ऐ,ओ,औ सभ लघु किएक होइत अछि। आब आउ चली प. गोविन्द झा जी द्वारा लिखित आ 1987मे प्रकाशित पोथी “मैथिली उद्भम ओ विकास “(पहिल संस्करण 1968मे मैथिली प्रकाशन समीतिसँ आ दोसर परिवर्धित संस्करण मैथिली अकादेमीसँ)क 19एम पन्नापर--

“11 (1) वैदिक कालहिसँ ई नियम चल अबैत अछि जे एके पदमे एके स्वर उदात रहए, आन सभ अनुदात भए जाए। ई नियम शेष निघात कहबैत अछि। एहि प्राचीन नियमक परिणामस्वरूप मैथिलीमे एक बड़े महत्वपूर्ण नियम ई अछि जे अन्तसँ प्रथम ओ द्वितीय स्थानकेँ छोड़ि शेष जतेक ध्वनि अछि से लघु भए जाइत अछि। एहि नियमकेँ पण्डित ग्रिअर्सन साहेब Rule of ऽhort antepenultimate कहल अछि। मैथिलीमे एहि नियमक अनुसारें एक शब्दमे अधिकसँ अधिक दुइ गुरू रहि सकैत अछि, आ सेहो अन्तसँ प्रथम वा द्वितीय स्थानमे,ताहिसँ पूर्व सकल स्वर नियमतः लघु रहत, तथा प्रत्यादि जोड़लासँ जखनहि कोनो गुरू ध्वनि तृतीय वा ताहिसँ पूर्व पड़ि जाएत तखनहि ओ लघु भए जाएत। एकर उदाहरण ग्रंथमे वारंवार भेटत, एतए दुइ-चारि उदाहरण देखबैत छी पानि,पनिगर,काँट,कटाँह, बात, बताह, बतहा, बतहबा।

टि0 एहि नियमकेँ कने आर परिष्कृत करब आवश्यक। ग्रिअर्सन साहेबक कथानुसार यदि तृतीय वर्ण नियमतः लघु होइत अछि तँ “पाओल “, “आबए “इत्यादिमे “आ “लघु किएक नहि भेल? एकर समाधान ग्रिअर्सन साहेब ई देल अछि जे अन्तिम लघु स्वर वा लघुत्तम स्वरक लेखा नहि होइत अछि। परन्तु छन्दमे शतशः उदाहरणसँ आ उच्चारण पर्यवेक्षणसँ ई स्पष्ट अछि जे अन्तिम लघुत्तम स्वरो एक वर्ण एक ऽyliable गनल जाइत छल। तें उक्त नियमक स्वरूपएहन राखब समुचितः मैथिलीमे गुरू ध्वनि अन्तसँ चारि मात्राक भित्तरे रहि सकैत अछि, ताहिसँ पूर्व नहि। फलतः मैथिली शब्दक अवसान 22,112,211,121 एही चारि प्रकारक भए सकैत अछि ओ ताहिसँ पूर्व सकल ध्वनि बिनु अपवादेँ लघु रहत यथास0 आकाश, मै0 अकास इत्यादि।”

फेर पं. जी 1992मे प्रकाशित पोथी “उच्चतर मैथिली व्याकरण “द्वितीय संस्करणक पृष्ठ 19पर, 2006मे प्रकाशित पोथी “मैथिली परिचायिका “केर पृष्ठ 11पर आ 2007मे प्रकाशित पोथी “मैथिली परिशीलन “केर पृष्ठ

56-57पर इएह गप्प एक समान रूपसँ कहने-लिखने छथि।

तँ पं. जीक करीब पाँचटा पोथीमे ऐ विषयवस्तुकेँ पढ़लाक पछाति हम अपन किछु विचार राखए चाहब--

1) वैदिक कालमे छन्द निर्माण लेल लघु-गुरू प्रकिया नै छल। मात्र अक्षरकेँ गानि कऽ छन्द बनै छल जकरा गेबा लेल उदात, अनुदात एवं स्वरित रूपक सहायता लेल जाइत छलै। उदात मने कोनो अक्षरक स्वरकेँ उठा कऽ गाएब, अनुदात मने कोनो अक्षरक स्वरकेँ निच्चा खसा कऽ गाएब तथा स्वरित मने कोनो अक्षरक स्वरकेँ तुरंत उपर उठा कऽ तुरंत निच्चा खसा कऽ गाएब। वैदिक साहित्यमे जे अक्षर लघु अछि तकर उच्चारण उदात भऽ सकैए तेनाहिते जे अक्षर दीर्घ अछि तकर उच्चारण अनुदात भऽ सकै छल। सोझ रूपसँ कही तँ उदात,अनुदात-स्वरित कोनो अक्षरक मात्रापर निर्भर नै छल।

2) वैदिक साहित्य केर बाद लौकिक संस्कृतसँ लऽ कऽ प्राकृत-अप्रभंश भाषा रूपमे मैथिली साहित्यमे वैदिक छन्द नै रहल मने या तँ लौकिक संस्कृतक वर्णवृत रहल या मात्रिक छन्द (अधिकांशतः मात्रिक)।

3) पं. जी लघु-गुरू नियम आ उदात-अनुदात-स्वरित प्रकियाकेँ एकै मानि लेने छथि।

4) पं. जीक हिसाबें ग्रिअर्सन साहेब द्वारा देल गेल Rule of ऽhort antepenultimate बेसी ठीक नै अछि तँए पं. जी ओहिमे संशोधन केलाह। आब हमर प्रश्न ई अछि जे जँ उपरका नियम मैथिली लेल अनिवार्य अछि तखन ओहिमे संशोधन किएक?

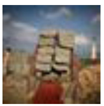
5) पं. जीक पोथी सभ पढ़ि हमरा बहुत बेर ई अनुभव होइए जे पं. जी व्याकरण शास्त्र, छन्द शास्त्र आ ध्वनि विज्ञान तीनूक नियम एकैमे सानि देने छथिन्ह। हरेक भाषामे लघुतर आ अतिलघुतर ध्वनि होइ छै मुदा ओकर विवेचन व्याकरण आ छन्द शास्त्रमे नै भऽ ध्वनि शास्त्रमे होइत छै। जँ लेखककेँ एकै पोथीमे ध्वनि विज्ञान देबाक रहै छै तँ ओकर खण्ड अलग कऽ देल जाइत छै। ऐ लऽ कऽ पं. जीक पोथीमे बहुत ठाम संदेहात्मक स्थिति बनि जाइत छै।

हम उपरमे जे विचार रखलहुँ ताहि अधारपर अपन निष्कर्ष दऽ रहल छी—

6) ई नियम अनिवार्य नियम नै अछि कारण पं. जी स्वयं ऐ नियमक बहुत रास अपवाद देखेने छथि। कोनो अनिवार्य नियममे जँ एतेक अपवाद हो तँ निश्चित रूपसँ ओकर अनिवार्यतापर प्रश्नचिन्ह लागै छै।

7) ई नियम व्याकरणक ओ छन्दशास्त्रक नै बल्कि शब्दकोषीय अछि। मने ऐ नियमक सहायतासँ अहाँ संस्कृत वा अन्य भाषाक शब्दकेँ मैथिलीकरण कऽ सकै छी। मोन पाड़ू प्राकृत भाषा संस्कृतक शब्द सभकेँ (मने शब्दक शुरूसँ पहिल,दोसर वा तेसर दीर्घक उच्चारण गाएब कऽ देलक। आब आगू ऐ गाएब कएल दीर्घ लेल हम मात्र कोमल शब्दक प्रयोग करब) कोमलीकृत केलक जेना--आकाश केर बदला अकास, आत्मा केर बदला अत्मा आदि। बादमे एही नियमक अधारपर अंग्रेजी शब्दक इएह हाल भेलै जेना ड्राइवर केर बदला डरेबर, स्टेशन केर बदला टेशन (टीशन), आदि-आदि। मुदा ई नियम ओहने शब्दमे लागल जै शब्दमे विराम लेबाक सुविधा नै छलै। “परिशीलन” ई एकटा शब्द अछि मुदा एकर उच्चारण “परि-शी-लन” होइत अछि मने एकै शब्दमे दू ठाम विराम अछि तँए ऐ शब्दकेँ कोमल करबाक जरूरति नै भेल। अरबी-फारसीक हजारों शब्द मूल रूपसँ मैथिलीमे चलि रहल अछि

(मने बिना कोमल केने) कारण ओइ शब्द सभमे विराम छै वा रहल हेतै। जँ अहाँ “मैथिली “शब्दक उच्चारण करबै तँ “मै-थिली “उच्चारित हएत। मुदा विरामक ई सुविधा आकाश, आत्मा, ड्राइवर आदि शब्दमे नै छलै तँए ओकरा कोमल बना प्रयोगमे लेल गेलै। स्वयं पं. जी अपवाद स्वरूप जै शब्दक उदाहरण देने छथि तकरा देखू—बासन केर उच्चारण बा-सन भेल। मानल केर उच्चारण मा-नल भेल। अनलहुँ केर उच्चारण अन-लहुँ भेल। मने एहू शब्द सभमे विराम छै तँए एहू शब्द सभकँ कोमल करबाक जरूरति नै बुझाएल। जँ ऐ नियमक अधारपर देखी तँ आधुनिक मैथिली भाषाक कतेको शब्दकँ ठीक करबाक जरूरति बुझाएत। हालेमे दरभंगासँ प्रकाशित मैथिली दैनिक “मिथिला आवाज “ऐ नियमक अधारपर गलत अछि। सही नाम हेतै “मिथिला अवाज “। तँ आब अहाँ सभ बूझि सकै छिऐ जे पं. जी जै नियमकँ अनिवार्य मानै छथि से मात्र अन्य भाषाक शब्दकँ मैथिलीकरण करबाक औजार थिक। उच्चारणक आग्रहसँ औजारक जरूरति भैयो सकैत छै आ नहियो भऽ सकै छै। ई शब्दकोषीय नियम आजुक कालमे ओतबे महत्वपूर्ण अछि जतेक की पहिने छल। लेखक सभसँ आग्रह जे ऐ नियमसँ अन्य भाषाक शब्दकँ मैथिलीकरण करथि आ मैथिलीक निजताकँ सुरक्षित राखथि।ऐ के विपरीत केखनो काल भाषाक निजता रखबाक लेल शब्दकँ दीर्घ सेहो कएल जाइत छै जेना उर्दूमे उस्ताद मुदा मैथिलीमे ओस्ताद। वकील केर बदलामे ओकील आदि-आदि। तँ एतेक धरि एलाक पछाति हम कहि सकै छी जे ए,ऐ,ओ,औ (मात्रा रूप) आदि जै ठाम रहत दीर्घे रूपमे रहत खास कऽ शब्दक शुरुआत आ बीच बला दीर्घ। अकारण रूपसँ वा अपना मोने कोनो ए,ऐ,ओ,औ बला दीर्घकँ लघु मानि लेबासँ नीक जे मैथिली भाषामेसँ लघु-गुरू हटा वैदिक छन्दक फेरसँ प्रचलन कएल जाए। ऐसँ अनावश्यक रूपसँ खर्च होइत उर्जा बचत आ भाषाक विकास सुनिश्चित हएत।
उपरक ऐ खंडनक अतिरिक्त हम फेसबुकपर एकटा बहस चलेलहुँ जे की पं.गोविन्द झाजीसँ संबंधित अछि आ एकरा ऐठाँ देल जा रहल अछि। ई पढ़लासँ पता चलि जाएत जे पं.जी कोना दुविधासँ ग्रस्त छथि---



Ashish Anchinhar

16 September 2014 ·

पं.

गोविन्द झाजीकGovind Jhaलिखल पोथी,

मैथिली परिचायिका पृष्ठ 36मे ई उल्लखित छै जे--” हरेक

शब्दमे एकटा गुरु रहब अनिवार्य अछि ।

जँ ई सत्य तखन गगन, चमन, बदन, कसि, रहि, बहि आदि सभ शब्द छै की नै।

हमर ई प्रश्न मात्र व्याकरणिक आ छंदशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ अछि कारण

ध्वनिशास्त्रमे लघु-गुरूक निर्णय बाजहे कालमे संभव छै।

पं.जी फेसकबुकपर सशरीर उपल्बध छथि आशा अछि जे हमर शंकाकँ ओ ध्वस्त करताह

ऐ बहसमे हम किछु गोटेकेँ टैग कऽ सादर आमंत्रित कऽ रहल छी.Bhavanath JhaGajendra ThakurArvind ThakurRupesh TeothKedar Kanan

LikeShow More Reactions

CommentShare

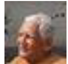
4Gajendra Thakur, Satish Saxena and 2 others

Comments



Ashish Anchinhar मैथिली परिचायिका पृष्ठ 36

16 September 2014 at 22:17 · Like



Govind Jha अहाँक प्रश्नsक उत्तsर हमsर एही वाक्य मे भेटि जाएत। ई उच्चारणक विशेषता थिक लेख मे ई विशेषता प्रकट करबाक होइछ तँ अङरेजी एस अक्षर लगाओल जाइत अछि।

19 September 2014 at 07:56 · Unlike · 1



Ashish Anchinhar Govind Jha Ji---आदरणीय, अहाँक उत्तऽर पढ़ल। मतलब जे अहाँ जतऽ बलाघात पड़ि रहल छै तै ठाम विकारी लगा कऽ ओकरा "गुरु" घोषित कऽ रहल छिऐ। मुदा अहाँ अपने अपन पोथी "मैथिली परिशीलन" केर पृष्ठ 54पर लिखने छी जे-" तें ई नहि बूझल जाए जे आघातक कारणे लघु स्वर गुरु भ जाइछ......... आघातक कारणे ओकर प्रलम्बता बढ़ैत छै"

आब कहू सत्य की थिक।

ओनाहुतो हम पहिनेहें कहि चुकल छी जे उच्चारण विशिष्टता ध्वनिशास्त्रक विषय थिक व्याकरण ओ छंदशास्त्रक नै।

फेर मैथिली छंद शास्त्र नामक पोथीमे जे नगण (लघु-लघु-लघु) केर उदाहरण देने छिऐ से कोना संभव हेतै ।

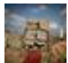
आदरणीय आशा अछि जे आन विद्वान जकाँ अहाँ खिसिआएब नै बल्कि नीक जकाँ हमर शंकाक समाधान करब..

19 September 2014 at 11:02 · Like



Gajendra Thakur मनोज् केँ मनोज बाजल जाए तइ लेल मनोजs लिखबाक आवश्यकता नै।

20 September 2014 at 20:21 · Unlike · 1



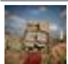
Ashish Anchinhar आदरणीय पं. Govind Jha जी हम अपनेक प्रतिक्रियाक आशामे छी। लोकक नै मात्र हम अपन जिज्ञासाक शांतिक लेल ई प्रश्न राखल अछि। उम्मेद अछि जे यथाशीघ्र हमर जिज्ञासा शांत हएत आ एकर संगे-संग भविष्यमे उठऽ बला प्रश्नक शमन सेहो हएत।

21 September 2014 at 17:22 · Like



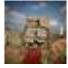
Gajendra Thakur एकटा गलतीकेँ सुधारनाइ ओइ लेल तर्क तकबासँ बेशी नीक

21 September 2014 at 18:04 · Unlike · 1



Ashish Anchinhar मैथिली परिशीलनक पृष्ठ 203पर पं.जी जलद बरिस केर मात्राक्रम लघु लघु लघु लघु लघु लघु लेने छथि। एहन विरोधाभास बहुत अछि

21 September 2014 at 18:45 · Like



Ashish Anchinhar Govind Jha हम एखनो पं. .जीक उत्तऽरक प्रतीक्षामे छी। ओना आब हम ऐ पूरा बहसकेँ अपन गजल व्याकरणक पोथीमे दऽ रहल छी जैसँ भविष्यमे लोककेँ बुझबामे औतन्हि जे मैथिलीक व्याकरण कोन-कोन अवस्थासँ गुजरल अछि।

ओना हम सदिखन पं.जीक उत्तऽरक प्रतीक्षामे रहब।...

24 September 2014 at 15:44 · Like

गजलमे नियम शैथिल्य

नियम शैथिल्य मने ई भेल जे कोनो छंदक नियम तँ ओ छैहे मुदा कोनो कारणवश एक-दू शब्द या एक-दू मात्रा उपर निच्चा भऽ रहल छै। ओइ स्थितिकेँ "नियम शैथिल्य" कहल जाइत छै (एकरा गजलक नियममे छूट सेहो कहल जाइत छै) । प्रश्न उठै छै जे "नियम शैथिल्य केकरा लेल?" । कारण जे स्वच्छंद जँ कहथि जे हमरा अमुक छंद-बहरमे ई शैथिल्य भेटबाक चाही तँ अइसँ बड़का हँसीक बात कोन हएत? हमर कहबाक मतलब जे "अनुशासिते लोककेँ नियम शैथिल्य के लाभ भेटि सकैए" ।

गजल पूरा-पूरी वर्णवृत थिक मने गजलमे हरेक पाँतिक मात्राक्रम एक होइत छै। मुदा केखनो काल एहन स्थिति-परिस्थिति बनै छै जे लघुक स्थानपर दीर्घ आ दीर्घक स्थानपर लघु। एहन समयमे शाइरकेँ किछु छूट सेहो भेटै छै । ऐ छूटक विवरण आगू देल जाएत। संस्कृतमे मात्र एकटा छूटक उल्लेख अछि। संस्कृतमे पाँतिक अन्तिम लघुकेँ दीर्घ वा दीर्घकेँ लघु मानि लेल जाइत छै। प्राकृत-अप्रभंश अधारित भाषामे आर किछु छूट भेटल छै तकर विवरण आगू देल जा रहल अछि। प्राकृत भाषामे संस्कृतक सभ नियम टूटि गेल। अचार्य हेमचंद्र जखन अप्रभंश व्याकरण बनेलाह तखन ओहि समयक उच्चारणक हिसाबें "ए, ऐ, ओ, औ" केँ लघु सेहो मानबाक नियम बनेलाह। मने अप्रभंशमे "ए, ऐ, ओ, औ" आदि दीर्घ आ लघु दूनू रूपमे लेल गेल। आ तँए आधुनिक कालक मैथिलीक व्याकरणशास्त्री सभ अपन-अपन व्याकरणमे "ए, ऐ, ओ, औ" केँ अप्रभंशे जकाँ मानि लेने छथि वा मनाबाक ओकालति करै छथि। मुदा सभ आधुनिक व्याकरणशास्त्रीकेँ ई बूझए पड़तन्हि जे करीब 1200-1500 बर्ख पहिने अप्रभंश भाषाक प्रयोग बन्न भए गेलै आ आब मैथिलीमे स्थायित्व आबि गेल छै। सङ्गहि-सङ्ग आधुनिक मैथिली संस्कृतनिष्ठ सेहो भऽ चुकल अछि तँए अप्रभंश भाषाक नियमसँ आधुनिक मैथिलीकेँ हाँकब उचित नै। आ जँ हँकबे करब तँ हमर कहब जे तखन प्राचीन अप्रभंश भाषाक पूरा लक्षण लिअ आ उच्चारण पद्धति लिअ। तँए ऐ ठाम हम जे छूट लीखि रहल छी से वैदिक-लौकिक आ प्राकृत-अप्रभंशसँ तँ लेले गेल अछि सङ्गहि-सङ्ग अरबी-फारसी-उर्दूसँ सेहो लेल गेल अछि। गजलक मात्राक्रममे ई छूट सभ लैत कालमे शाइर निच्चा लिखल 7 टा गप्पकेँ नीक जकाँ मोन राखथि--

1) छूट सदिखन छूट जकाँ हेबाक चाही। मने एहन आ एते छूट नै लेल जाए जाहिसँ गजलक स्वरूपपर प्रश्न चिन्ह

लागि जाए। जँ गजलमे एक-दू ठाम छूट लेल जाए तँ नीक।

2) छूट सदिखन उच्चारण हिसाबसँ ली आ ओकर लिखित स्वरूप मानक रूपमे हेबाक चाही। मने लिखित वर्तनी मानक हेबाक चाही। अरूजी वा पाठक जखन मात्रा गनता तखन ओहि मानक वर्तनीकेँ लघु वा दीर्घ मानि लेता। ओना परंपरा तँ ई छै जे नागरी वा मिथिलाक्षरमे जे लिखिते स्वरूपकेँ उच्चारण कएल जाए। मुदा एना केलासँ या तँ छूट नै भेटत वा मानक भाषाक स्वरुप बिगड़ि जाएत। तँ हमरा विचारें लिखित स्वरूप मानक हेबाक चाही आ छूट उच्चारणक हिसाबसँ (किछु ओहन अपवाद छोड़ि जकर दू तरहँक वर्तनी मान्य अछि जेना -केओ-कियो, इम्हर-एम्हर, उम्हर-ओम्हर आदि)।

3) कोनो प्रकारक छूट रदीफ आ काफियामे मान्य नै हएत। ऐ प्रकारक छूट रदीफ आ काफियामे लेलासँ गजलक मूल स्वरूपे नष्ट हएत।

4) शाइर जेना बहरक नाम लिखै छथि तेनाहिते गजलमे लेल गेल छूट सेहो लिखथि।

5) मात्र आ, ई ए, ऐ, ओ, औ बला मात्रासँ बनल दीर्घकेँ या शब्दक अंत बला आ, ई ए, ऐ, ओ, औ या एक अक्षरीय आ, ई ए, ऐ, ओ, औ आदिकेँ लघु मानल जा सकैए। अनुस्वार, दूटा लघुकेँ मिला कऽ एकटा दीर्घ, संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला, विसर्ग बला दीर्घकेँ लघु मनबाक परंपरा नै अछि।

6) जँ दीर्घसँ पहिने लघु छै तँ ओहि दीर्घकेँ लघु मानि आ ओइसँ पहिने बला लघु मिला कऽ दीर्घ नै बना सकै छी। एहन स्थितिमे ओ दूटा लघु हएत। जेना “हटा “शब्दमे जँ केओ “टा” दीर्घकेँ लघु मानै छथि तँ एकर मात्राक्रम लघु-लघु हएत। दू टा लघुकेँ मिला कऽ एकटा दीर्घ बला नियम ऐठाँ नै लागत।

7) संज्ञा शब्द, तत्सम शब्द आ रूढ़ अर्थ देनिहारक शब्दमे छूट नै लेल जा सकैए। ओना एकर किछु अपवाद छै जे की निच्चा देखाओल जाएत। तँ चली आब छूटक सूची दिस---

अ) दू टा अलग-अलग शब्दक वर्णकेँ मिला एकटा दीर्घ सेहो मानल जा सकैए बशर्ते की ओहि गजलक हरेक पाँतिमे दीर्घ हेबाक चाही। उदाहरण लेल जँ कोनो गजलक मतलाक पहिल पाँति एहन होइ ---

तोहर आँचर आब हमर जिनगी अछि

एकर मात्रा क्रम अछि 22-22-211-22-22

मुदा ऐमे छूट लेल जा सकैए आ एकरा 22-22-22-22-22 रूपमे सेहो लेल जा सकैए आ शाइर एकर निच्चा बला पाँति सभमे 22-22-22-22-22 लऽ गजल पूरा कऽ सकै छथि (उर्दूक बहुत रास शाइर ऐ बहरमे 121 के सेहो 22 मानै छथि आ हमरा हिसाबें ई आर बेसी सुविधा दै छै गजलमे कारण मैथिली बहुत रास शब्द लघु-दीर्घ-लघु केर आधारपर अछि जेना “उतान”, लगान” बथान” आदि तँइ ईहो छूट मैथिलीमे मान्य हएत। संगे-संग अइ छूटक ईहो लाभ जे दूटा अलग शब्दक कारण जँ लघु-दीर्घ-लघु बनि रहल हो तखनो ई छूट भेटत जेना “लोक छै बहुत” 2222 मानल जाएत। उर्दूमे बेसी दूर-दूर बलाकेँ लघुकेँ सेहो दीर्घ मानल जाइए आ कोनो दीर्घकेँ लघु

मानि कऽ सेहो आन लघुमे जोड़ि देल जाइए मुदा हमर मानब जे दू टा लघुक बीच जतेक कम दूरी हो ततेक नीक। ऐ बहरकेँ बहरे-मीर सेहो कहल जाइत छै। उर्दूक महान शाइर मीर तकी मीर ऐ बहरक बहुत बेसी प्रयोग केने छथि। कहल जाइत छै जे अरबी बहर आ संस्कृतक प्रचलित छंदकेँ मिला कऽ ऐ बहरक निर्माण भेल छै। संस्कृतमे एहन प्रयोग जयदेव रचित "गीत गोविन्द" मे प्रचुरतासँ भेटैत अछि। प्रस्तुत अछि गीत गोविन्दक दूटा पद--

चंदन-चर्चित-नील-कलेवर-पीतवसन-वनमालिन् ।
केलि-चलन्मणि-कुंडल-मंडित-गंडयुग-स्मितशालीन् ।।

चंद्रक-चारु-मयूर-शिखंडक-मंडल-वलयित-केशम् ।
प्रचुर-पुरंदर-धनुरनुरंजित-मेदुर-मुदिर-सर्वेषम् ।।

आशा अछि जे बात स्पष्ट भेल हएत।

आ) संस्कृत परंपरानुसार मात्र पाँतिक अंतिम लघुकेँ दीर्घ मानल जा सकैए मुदा गजलमे ई छूट रदीफ या काफिया (बिना रदीफक गजलमे) मे नै हेबाक चाही। मने ई छूट मतलामे लागू नै हएत आ संगहि-संग आन शेरक रदीफ या काफियामे सेहो नै हएत।

इ) संस्कृत परंपरानुसार पाँतिक अंतिम दीर्घकेँ लघु नै मानल जा सकैए मुदा प्राकृत-अप्रभंश भाषामे ऐ छूटमे विस्तार कएल गेलै जे पाँतिक कोनो शब्दक अंतिम दीर्घकेँ लघु मानल जा सकैए। आ तँए हमरा हिसाबें ई छूट पाँतिक कोनो शब्दक अंतिम दीर्घपर (काफिया-रदीफ छोड़ि) सेहो लागू हएत। जै शब्दमे विभक्ति लागल छै तै शब्द लेल विभक्तिए अंतिम शब्द मानल जाएत। मोन राखू शब्दक पहिल ओ बीच बला दीर्घकेँ लघु नै मानि सकै छी। सभ भाषाक गजलमे एहने नियम छै। गजलमे ई छूट रदीफमे नै हेबाक चाही। मने ई छूट मतलामे लागू नै हएत आ संगहि-संग आन शेरक रदीफमे सेहो नै हएत। मने ई छूट समान्य शेरक पहिले पाँतिमे भेटि सकैए।

ई) मैथिलीमे एकटा बड़का विशेषता अछि जे तद्भव आ देशज शब्दमे ह्रस्व "इ "आ ह्रस्व "उ "केर उच्चारण पाछू घुसुकि जाइत अछि तँए मैथिली गजलमे आपत्तिकालमे ओकरा सेहो छूट मानल जा सकैए। उदहारण लेल--
राति (लिखित रूप 21)
राइत (उच्चारण रूप 22)
साधु (लिखित रूप 21)
साउध (उच्चारण रूप 22)

अछि (उच्चारण रूप अइछ 12 वा 21)
एकटा पाँति देखू—

अजोह सन रातिमे
एकर मानक मात्राक्रम अछि 1212212 मुदा राति केर उच्चारणमे छूट लऽ एकरा अजोह सन राइतमे मने 1212222 सेहो मानल जा सकैए। ई छूट मैथिली भाषाक अपन छूट अछि। तेनाहिते औ लेल अउ भऽ सकैए। ऐ लेल अइ सेहो भऽ सकैए। ऐकैँ संगे बहुत रास तत्सम शब्दमे दीर्घ "इ" वा दीर्घ "उ" केर उच्चारण आबि जाइत अछि जेना "ऋषि" केर उच्चारण "ऋषी", मुनि केर उच्चारण "मुनी", "अनु" केर बदला "अनू" । एहन परिस्थितिमे मोन राखू जे ई सभ गलत उच्चारण छै आ केखनो काल कऽ गायनमे एना करऽ पड़ैत छै। लिखित रूपमे प्रयास राखी जे मानक हो। ओना विपत्तिकालमे "ऋषि" केर मात्राक्रम "ऋषी" जकाँ या मुनि केर मात्राक्रम "मुनी" जकाँ या, "अनु" केर बदला "अनू" मानल जा सकैए। मुदा मात्र विपत्तिए कालमे। लिखित रूप मानक रहबे करत।

उ) मैथिलीमे निश्चित वा अनिश्चित वस्तु लेल मूल "ई "केर प्रयोग होइत अछि। जेना
ई के अछि?
ई हमर भाए अछि।
बहर वा छंदकैँ पुरेबाक लेल "ई "के सेहो लघु मानि सकै छी।

ऊ) "मे" विभक्ति बहुत काल "म" केर उच्चारण दैए। जेना "आइ हमर गाममे भोज छै" एकर उच्चारण अछि "आइ हमर गाम म भोज छै। तँए मे विभक्तिकैँ सेहो लघु मानि सकै छी। आन विभक्ति संदर्भमे एहने सन बुझू। ई छूट मैथिली भाषाक अपन छूट अछि।

ए) दीर्घक बाद बला मूल "ए"कैँ लघु मानल जा सकैए। जेना "होएत" शब्दमे ए के लघु मानि सकै छी। आ एहन स्थितिमे एकर मात्राक्रम 22 भऽ जाएत। आन शब्द लेल एहने बूझू।

ऐ) मात्रा बला एक अक्षरीय दीर्घ शब्दकैँ (के, रे हे टा, जो, खो) सेहो आपत्तिकालमे लघु मानल जा सकैए।

ओ) जँ कोनो पाँतिक अंतमे एकटा लघु मात्रा बढ़ि रहल अछि तँ आपत्ति कालमे एकरो छूट मानल जा सकैए। ई छूट लेबा लेल दू टा स्थिति छै पहिल स्थितिक उदहारण लेल विजयनाथ झा जीक ई गजल देखू-

की कहब हम कहू के सुनत बात ई
कर्म फलहीन किछु गाछ बिन पात ई
ऐ मतलाक हिसाबसँ 212212212212 मात्राक्रम अछि। आब ऐ गजलक दोसर शेर देखू--

सृष्टिसँ पैघ आकार अछि आँखि केर
इष्ट ताकब कठिन शोध धरि माथ ई

जँ ऐ दूनू पाँतिक मात्राक्रम देखबै तँ एना हएत
2122122122121
212212212212
मने पहिल पाँतिक अंतमे एकटा लघु मात्रा अछि मुदा अर्थक संगतक हिसाबसँ एकरा छूट मानि पूरा गजल 212212212212 केर मात्राक्रमपर पूरा कएल जाएत। दोसर स्थिति एकर उल्टा छै जेना कि मानि लिअ कोनो गजलक मतला एना छै---
2122122122121
2122122122121

मने मतलाक दूनू पाँतिक अंतमे एकटा-एकटा लघु बढ़ल छै तँ एकर बाद बला शेरक पहिल पाँति 212212212212 मात्राक्रमपर पूरा कएल जा सकैए (मोन राखू रदीफ-काफियामे ई छूट नै भऽ सकैए)।
विशेष नोट--किछु एहन संज्ञा जे की नामवाची अर्थ छोड़ि आन अर्थ सेहो दैत हो तकरामे छूट लेल जा सकैए। मैथिली लोकगीतमे “आशीष” केर बदला “अशीष” शब्द बहुप्रचलित अछि। मुदा लोकगीतमे “आशीष” वा अशीष” केर मतलब “आशीर्वाद” होइत छै। आ एहि ठाम अहाँ सभ शब्दकेँ कोना खराजपर चढ़ेबाक चाही सेहो बुझि सकै छिऐ। समदाउनमे दूध केर उच्चारण “दुध” होइत छै तँइ गजलमे एहन भऽ सकैए। किछु कोबर गीतमे “फूल” केर उच्चारण “फुल” होइ छै। गजलमे एहन भऽ सकैए मुदा ओइ ठाम दूध बदला दुध या फूल बदला फुल लीखू।
ऐ छूटक अलावे उर्दू वा हिन्दीमे अलिफ-वस्ल नामक छूट सेहो छै मुदा ओ मैथिलीमे एखन लुप्त सन भेल अछि। पं. गोविन्द झा जी द्वारा सम्पादित आ मैथिली अकादेमी, पटना द्वारा प्रकाशित (संस्करण-2008) मे पं.जी अपन भूमिकाक पृष्ठ 6 पर विद्यापतिक गीतक छंदपर विचार करैत लिखै छथि जे --" ---परन्तु तथापि आशंका अछि जे कतोक समान्य पाठककेँ एहू संग्रहमे छंद टूटल सन लगतनि ओ गनलापर मात्राक वा वर्णक न्यूनाधिक सेहो भासित होयतनि। तकर कारण कहल जा सकैत अछि विद्यापतिकालीन उच्चारणक अज्ञान। प्राचीन मैथिलीमे दीर्घो स्वरक लघु ओ ह्रस्वो स्वरक गुरू उच्चारण ठाम-ठाम कयल जाइत छल, कतहुँ-कतहुँ दुइ स्वरवर्णकेँ मिला कऽ एक वर्ण जेकाँ उच्चारण कयल जाइत छल।..." ई दू स्वर वर्णकेँ मिला कऽ उच्चारण करब अलिफ-वस्ल कहाइत छै। अलिफ-वस्ल केर नियम छै जे जँ कोनो शब्दक अंत अकारांतसँ होइत छै (मने बिना कोनो मात्रा बला) आ ओकर बादक शब्दक शुरूआत कोनो दीर्घ स्वरसँ होइत छै तँ ओहिठाम अलिफ-वस्ल केर नियमक प्रयोग कऽ छूट

लेल जा सकैए। उदाहरण लेल— "घर ईंटासँ बनल अछि" एकर समान्य मात्राक्रम 2221122 अछि मुदा छूटक अवस्थामे एकरा "घरींटासँ बनल अछि" मने 1221122 सेहो मानल जा सकैए। ई छूट संगीतक प्रभावसँ अछि। पं.गोविन्द झाजी अलिफ-वस्ल केर नाम मैथिलीमे नै लीखि सकलाह मुदा नियम वएह छै।

आशा अछि जे अहाँ सभ लघु-दीर्घ प्रकरण बुझि गेल हेबै। तँ आब ई देखी जे गजलक निर्माण कोना हो। ऐ प्रकरणकैँ फरिछेबाक लेल हम जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीसँ आग्रह केने रही तँ ओ एकटा लेखक माध्यमे एना देलाह। ऐ लेखमे ओ अपन एकटा गलत गजल लेलाह आ ओकरा पुनः संशोधित केलाह। गलतकैँ ठीक करबाक प्रकियासँ ई सहजे बुझा जाएत जे गजलकैँ बहरमे कोना आनी। तँ चलू "अनिल" जीक गजल रचना प्रकियापर।
अनिलजी कहै छथि--
"हम पहिने एकटा गजल अहाँ सभकैँ सामनेमे राखि रहल छी तकर बाद ओकरा विवेचित करब--

गजल

टूटल छी ते गजल कहै छी
भूखल छी तें गजल कहै छी

आफिस आफिस गेलौ हमहूँ
लूटल छी तें गजल कहै छी

घरमे बैसल दुनियाँ देखू
गूगल छी तें गजल कहै छी

खूब जनै छी खापड़िकैँ हम
भूजल छी छी तें गजल कहै छी

उक्खरि और समाठ जनैत छी
कूटल छी तें गजल कहै छी

यात्रीजीकैँ अहाँ नवतुरिया
सूतल छी तें गजल कहै छी

हम खट्टर कक्काके तबला
फूटल छी तें गजल कहै छी

आब ऐ गजलक मतलाकेँ देखू

टूटल छी तें गजल कहै छी
भूखल छी तें गजल कहै छी

ऐमे जँ पहिल पाँतिक मात्रा क्रम लेबै तँ हेतै
टूटल=2
छी=2
तें=2
गजल=12 वा 21 मुदा उच्चारण हिसाबसँ 12 बेसी ठीक अछि तँए हम 12 लेलहुँ।
कहै=12
छी=2
मने पहिल पाँतिक मात्राक्रम भेल 222212122
आब दोसर पाँतिपर आउ—

भूखल छी तें गजल कहै छी
एकर मात्राक्रम भेल=
भूखल=22
छी=2
तें=2
गजल=12 वा 21 मुदा उच्चारण हिसाबसँ 12 बेसी ठीक अछि तँए हम 12 लेलहुँ।
कहै=12
छी=2
मने दोसरो पाँतिक मात्राक्रम भेल 222212122

मने पहिल दू पाँति अरबी हिसाबसँ बहरमे भेल। आब तेसर पाँति देखू

आफिस-आफिस गेलौं हमहूँ

एकर मात्राक्रम हेतै
आफिस=22
आफिस=22
गेलौं=22
हमहूँ=22
मने तेसर पाँतिक मात्राक्रम भेलऽ2222222
मने मतलाक दूनू पाँतिक मात्राक्रमसँ ई मात्राक्रम अलग अछि। एकरे लोक कहै छै बहरक टुटनाइ वा जे अहाँक गजल बहरमे नै अछि। हम एकरा सुधारबाक लेल अपना हिसाबसँ एना केलहुँ--

टेबुल तर जोर छै कहब हम

एकर मात्राक्रम हेतै
टेबुल=22
तर=2
जोर=21
छै=2
कहब=12
हम=2
मने ऐ पाँतिक मात्राक्रम छै 222212122। आब देखू जे मतलाक दूनूक पाँतिक मात्राक्रम संगे तेसरो पाँतिक मात्राक्रम बैसि रहल छै। मोन राखू मतलाक पहिल पाँतिमे जे मात्राक्रम छै ओइ गजलक सभ पाँतिमे ओएह मात्राक्रम रहबाक चाही। इएह भेल बहरक निर्वाहन।
चारिम पाँतिक मात्राक्रम ठीक अछि पाँचम पाँतिमे फेर गड़बड़ा गेल पाँचम पाँति अछि--

घरमे बैसल दुनियाँ देखू
मने 22222222,मुदा ई गलत अछि। हम एकरा एना लेलहुँ

बैसल बैसल तँ पाबि गेलहुँ
मने 222212122
छठम पाँति ठीक अछि। मुदा सातम पाँति फेर गड़बड़ा गेल

खूब जनै छी खापड़िकैँ हम
मने 211222222 हम एकरा सुधारि एना लिखलहुँ-

यारी छल बालु संग खुब्बे
मने 222212122
आठम पाँति ठीक अछि मुदा फेर नवम पाँतिमे वएह दिक्कत

उक्खरि और समाठ जनैत छी

एकर मात्राक्रम भेल
उक्खरि=22
और=21
समाठ121
जनैत=121
छी=2
मने 22211211212
हम एकरा सुधारि एना लिखलहुँ-

उक्खरि संगे समाठ एलै
मने
उक्खरि=22
संगे=22
समाठ=121
एलै=22

मात्राक्रम भेल- 22212122
दसम पाँति ठीक अछि। एगारहम पाँति फेर गलत अछि

यात्रीजीकैँ अहाँ नवतुरिया
यात्री=22
जी=2

कैँ=2

अहाँ=12

नवतुरिया=222

एकर मात्राक्रम भेल

222212222

हम एकरा एना सुधारलहुँ

जागल लोकक तँ गीत अद्भुत

जागल=22

लोकक=22

तँ=1

गीत=21

अद्भुत=22

मने 222212122

बारहम पाँति ठीक अछि। तेरहम पाँति फेर गलत।

हम खट्टर कक्काकैँ तबला

22222222

हम एकरा एना देलहुँ

घैला छी हम सराध घाटक

मने 222212122

चौदहम आ अंतिम पाँति ठीक अछि। आब हम ऐ गजलकैँ पूरा दऽ रहल छी जे की ठीक भेल अछि (ऐ सुधरल गजलमे तें केर बदालमे हम तँइ लेलहुँ अछि। ऐसँ मात्राक्रममे कोनो फर्क नै हेतै)

गजल

टूटल छी तँइ गजल कहै छी

भूखल छी तँइ गजल कहै छी

टेबुल तर जोर छै कहब हम
लूटल छी तँइ गजल कहै छी

बैसल बैसल तँ पाबि गेलहुँ
गूगल छी तँइ गजल कहै छी

यारी छल बालु संग खुब्बे
भूजल छी तँइ गजल कहै छी

उक्खरि संगे समाठ एलै
कूटल छी तँइ गजल कहै छी

जागल लोकक तँ गीत अद्‌भुत
सूतल छी तँइ गजल कहै छी

घैला छी हम सराध घाटक
फूटल छी तँइ गजल कहै छी

सभ पाँतिमे 222-212-122 मात्राक्रम अछि।
ई सुधार वा परिवर्तन मात्र बहरक निर्वहन देखेबाक लेल कएल गेल अछि। हमरा पूरा विश्वास अछि जे ऐसँ अहाँ सभ सेहो बुझि गेल हेबै जे बहरक निर्वाह कोना हो।"
ज.च.ठा." अनिल"
तँ देखलहुँ जे अनिल जी कोना अपने एकटा बेबहर गजलकैँ कोना संशोधित कऽ बहरमे आनि देलाह। आब हमरा पूरा विश्वास अछि जे अहाँ सभ कहियो बेबहर गजल नै लीखि सकै छी।

खण्ड-16

आब हम ऐठाम अरबी बहर सभ उदाहरणक संग दऽ रहल छी। आशा अछि जे कोना बहरमे हेतै से आर फड़िच्छ

हएत---
समान ध्वनि--एहि खण्डमे कुल सात गोट बहर राखल जाइत अछि। जकर विवरण एना अछि--

क) बहरे हजज --एकर मूल ध्वनि अछि "मफाईलुन" मतलब 1222 (1222) मने ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ। ई ध्वनि शाइर अपना सुविधानुसार प्रयोग कए सकैत छथि। (मुदा ई धेआन राखू जे गजल सङ्गीत सम्मत अधारपर छै तँइ गायन लेल एकटा पाँतिमे तीन टा रुक्न उत्तम, चारिटा रुक्न सर्वोत्तम आ पाँचम रुक्न उत्तम मानल जाइए। ओना दू रुक्न बला गजल सेहो पाठ्यरूपमे प्रचलित अछि। छह, सात आ बेसी बला रुक्न सेहो कम्मे सही मुदा प्रचलित अछि। आब ऐमे अहाँकेँ जे पसिन्न पड़ए से लए सकैत छी)। आ एहि खण्डक सभ बहर लेल एहने सन बूझू। मुदा मात्राक्रम नहि टुटबाक चाही। आ जँ एहि ध्वनि के शेर के रुप मे देबै तँ एना हेतैक---

1222
1222

1222 + 1222
1222 + 1222

1222 + 1222 + 1222
1222 + 1222 + 1222

1222 + 1222 + 1222 + 1222
1222 + 1222 + 1222 + 1222......................................

तँ ई भेल बहरे हजज केर ढ़ाँचा। एहिठाम फेर एक बेर गौरसँ देखू। उपरका ढ़ाँचा सभमे दूनू पाँतिमे मात्रा क्रम एकै छैक। अर्थात ह्रस्व के निच्चा ह्रस्व आ दीर्घ। आ मोन राखू जँ अहाँ बहरे हजजमे गजल लीखि रहल छी तँ हरेक शेरक मात्रा क्रम इएह देबए पड़त। नहि तँ गजल बेबहर कहाओत।
अमित मिश्र द्वारा लिखल बहरे हजज केर उदाहरण देखू--

उड़ल सबटा चिड़ैयाँ गाछपर फुर्रसँ
जँ बैसल चारपर चारो खसल चुर्रसँ

हमर गाड़ी लतामक डाढ़ि आ सनठी
चलै छै तेज अपने मुँह करै हुर्रसँ

गिलासक दूध मिसियो नीक नै लागै
भरल तौला दही आँङुर लगा सुर्रसँ

अपन बाछी अपन गैया त ता थैया
अपन झबरा करै अपनपर नै गुर्रसँ

फटक्का फूटलै ब्राम ब्रम ब्रूमसँ
जड़ै छै छूरछूरी छूर्र छू छुर्रसँ

मफाईलुन
1222 तीन बेर
बहरे हजज

तँ देखू बहरे हजज केर दोसर उदाहरण जे की प्रदीप पुष्प जीक छनि--

पढल पंडित मुदा रोटीक मारल छी
बजै छी सत्य हम थोंथीक हारल छी

बुझू कोना सबसँ काते रहै छी हम
उचितवक्ता बनै छी तें त टारल छी

दियादेकें घरक घटना मुदा धनि सन
कटेबै केश कियै हम जँ बारल छी

मधुर बनबाक छल भेलौं जँ अधखिज्जू
सत्ते नोनगर लाड़ैनेंसँ लाड़ल छी

लगै छल नीक नाथूरामकैँ पोथी
मुदा गाँधीक साड़ा संग गाड़ल छी

किओ ने पूजि रहलै कोन गलती यौ
बिना सेनूर अरिपन पुष्प पाड़ल छी

1222 1222 1222 सब पाँतिमे (बहरे हजज)

ख) बहरे रमल एकर मूल ध्वनि एना अछि फाइलातुन मने 2122, अर्थात दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ। आब जँ एहि ध्वनि के शेर मे प्रयोग करबै तँ एना हेतैक--

2122 + 2122 + 2122 + 2122
2122 + 2122 + 2122 + 2122

(एहिठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिके उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ध्वनिके प्रयोग कए सकैत छथि।) ई भेल बहरे रमल। जगदानंद झा मनु द्वारा लिखल बहरे रमल केर उदाहरण देखू--

धाख सभटा बिसरि गेलै
घोघ हुनकर उतरि गेलै

झूठ कोनाकैँ नुकायत
जखन सोंझा बजरि गेलै

सय बचायब बचत कोना
लाज सभटा ससरि गेलै

ओ छलै फेसनसँ डूबल
काज सयटा पसरि गेलै

भेल नेता नीनमे सभ
देश सगरो रगरि गेलै

(बह्रे रमल, मात्रा क्रम 2122+2122)
फाइलातुन (2122)

ग) बह्रे कामिल एकर मूल ध्वनि अछि “मुतफाइलुन” मने 11212 मने ह्रस्वह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ। शेरमे एकर ढ़ाँचा एना छैक--

11212 + 11212 + 11212 + 11212 + 11212
11212 + 11212 + 11212 + 11212 + 11212

(एहिठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिके उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ध्वनिके प्रयोग कए सकैत छथि।) ई भेल बह्रे कामिल। अमित मिश्र द्वारा लिखल बह्रे कामिल केर उदाहरण देखू--

किछु बात एहन भेल छै
घर घर तऽ रावण भेल छै

बम फोड़ि छाउर देश छै
जड़ि देह जाड़न भेल छै

प्रिय नै विरह जनमै बहुत
सजि दर्द गायन भेल छै

जिनगी भऽ गेल महग कते
झड़कैत सावन भेल छै

दस बात सूनब की “अमित”
सब ठाम गंजन भेल छै

मुतफाइलुन
11212 दू बेर

बह्‌रे कामिल

घ) बह्‌रे-मुतकारिब एकर मूल ध्वनि फऊलुन अछि मने 122 मने ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ। एकर ढ़ाँचा देखू--

122 + 122 + 122 + 122 + 122
122 + 122 + 122 + 122 + 122

(एहिठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिके उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ध्वनिके प्रयोग कए सकैत छथि।)
ई भेल बह्‌रे-मुतकारिब। अमित मिश्र द्वारा लिखल बह्‌रे मुतकारिब केर उदाहरण देखू--

जखन राति आएल कारी पिया यौ अहाँ मोन पड़लौ
जखन होइ घर मोर खाली पिया यौ अहाँ मोन पड़लौ

अहाँ दूर बैसल सताबैत छी साँझभोरे सदिखने
सनेसौँ जँ आएल देरी पिया यौ अहाँ मोन पड़लौ

बरसलै प्रथम बूँद वर्षा मिलन यादि आबै तखन यौ
विरह केर तानल दुनाली पिया यौ अहाँ मोन पड़लौँ

पिया जी जखन बहल पवना मधुर गीत गाबैत कोयल
जखन काँट मे फसल साड़ी पिया यौ अहाँ मोन पड़लौँ

जँ देखब कतौ छिपकली डरसँ बोली फुटै नै हमर यौ
जँ धड़कै हमर सून छाती पिया यौ अहाँ मोन पड़लौँ

कने आबि नेहक जड़ल भाग फेरोसँ चमका दिऔ यौ
अमित आश देखैत रानी पिया यौ अहाँ मोन पड़लौ

बह्‌रे मुतकारिब

{ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ 6 बेर सब पाँतिमे}

बहरे मुतकारिब बहुत लोकप्रिय आ संगीतमय बहर छै। आदि शंकराचार्य आ गोस्वामी तुलसी दास सेहो ऐ बहरक प्रयोग केने छथि। पहिने आदि शंकराचार्यक ई निर्वाण षट्कम देखू--

मनो बुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहम् न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे
न च व्योम भूमिर् न तेजॊ न वायु: चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवॊऽहम्

न च प्राण संज्ञो न वै पञ्चवायु: न वा सप्तधातुर् न वा पञ्चकोश:
न वाक्पाणिपादौ न चोपस्थपायू चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवॊऽहम्

आब देखू तुलसी दास जी द्वारा लिखल ई स्त्रोत--

नमामी शमीशान निर्वाण रूपं
विभू व्यापकम् ब्रम्ह वेदः स्वरूपं

पहिल पाँतिकेँ मात्रा क्रम अछि- ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ
दोसरो पाँतिकेँ मात्रा क्रम अछि- ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ
तिनाहिते शिवाष्टकम् सेहो एही बहरमे छै--
प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथ नाथं सदानन्द भाजाम्
भवद्भव्य भूतेश्वरं भूतनाथं, शिवं शङ्करं शम्भु मीशानमीडे ॥
दूनू पाँतिमे 122-122-122-122-122-122-122-122 केर मात्राक्रम अछि।

फेर जगदानंद झा मनु जी द्वारा बहरे मुतकारिबक मजा लिअ--

हकन नोर माए कनै छै
तकर पुत्र मुखिया बनै छै

कते आब बैमान बढ़लै
गरीबक टकाकेँ गनै छै

पतित बनल नेता तँ देशक

दुनू हाथ ओ मल सनै छै

पएलक कियो जतय मौका
अपन बनि कऽ ओहे टनै छै

बनल भोकना जेठरैअति
मुदा मनु तँ सभटा जनै छै
(बह्रे मुतकारिब, मात्रा क्रम122+122+122)

ङ) बह्रे मुतदारिक---एकर मूल ध्वनि अछि “फाइलुन” मने 212 मने दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ अछि। एकर ढ़ाँचा एना अछि-

212 + 212 + 212 + 212
212 + 212 + 212 + 212
(एहिठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिके उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ध्वनिके प्रयोग कए सकैत छथि)। ई भेल बह्रे मुतदारिक। अमित मिश्र द्वारा लिखल बह्रे मुतदारिक केर उदाहरण देखू-

कुकुर उनटल पड़ल लार पर
बंदरो बैसलै चार पर

मूस दौगै गहुँम भरल घर
कोइली तन दै तार पर

नादि पर गाय दै दूध छै
नजर देने श्रवन ढार पर

स्वागत लेल बौआ कए
फूल मुस्कै गुथल हार पर

भोर भेलै उठल राजा यौ
अमित बौआ चढ़ल कार पर
दीर्घ हर्स्व दीर्घ 3 बेर
च) बहरे रजज एकर मूल ध्वनि “मुस्तफइलुन” छैक। मने 2212 मने दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ। एकर ढ़ाँचा एना हेतैक--

2212 + 2212 + 2212 + 2212
2212 + 2212 + 2212 + 2212

(एहिठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिके उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ध्वनिके प्रयोग कए सकैत छथि।)
ई भेल बहरे रजज ।अमित मिश्र द्वारा लिखल बहरे रजज केर उदाहरण देखू--

बाल गजल

कारी महिस के दूध उज्जर छै कते
भरि मोन पारी पीबि दुब्बर छै कते

रसगर जिलेबी गरम नरमे नरम छै
लड्डू बनल बेसनक बज्जर छै कते

छै पात हरियर फूल शोभित गाछ छै
जामुन लिची आमक इ मज्जर छै कते

दू एक दू आ चारि दूनी आठ छै
अस्सी कते नै जानि सत्तर छै कते

भालू बला देखाबऽ सबके नाँच हौ
झट आगि छड़पै दौड़ चक्कर छै कते

मुस्तफइलुन
2212 तीन बेर
बह्रे रजज
छ) बह्रे वाफिर एकर मूल ध्वनि “मुफाइलतुन” छैक मने 12112 मने ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ। एकर ढ़ाँचा देखू—

12112 + 12112 + 12112 + 12112
12112 + 12112 + 12112 + 12112

(एहिठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिके उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको बेर ध्वनिके प्रयोग कए सकैत छथि। ई भेल बह्रे वाफिर । अमित मिश्र द्वारा लिखल बह्रे वाफिर केर उदाहरण देखू--

खतम सब काज भेल हमर
स्वतंत्र मिजाज भेल हमर

कतौ जिनगी छलै धधकै
खुशी पर राज भेल हमर

पुरान जँ गाछ, मज्जर नव
अपन तऽ अवाज भेल हमर

सरस पल भेल बड दिनपर
सदेह इलाज भेल हमर

सदिखन गजल लिखैत रहब
अमित नव साज भेल हमर

बह्रे वाफिर
12112 मुफाइलतुन 2 बेर सब पाँतिमे

आब अहाँ सभ पूछि सकै छी जे जँ मूल रुक्न आठ (8) टा छै तँ फेर मूल बहर साते (7) टा किएक छै? जँ गौरसँ

देखबै तँ पता लागत जे अन्तिम रुक्न मने “मफऊलातु “लेल कोनो मूल बहर नै छै आ एकर कारण सङ्गीत छै। अहाँ अपने देखिऔ गाबि कए 2221+2221+2221 मने तीन टा दीर्घक बाद एकटा लघु फेर तीन टा दीर्घक बाद एकटा लघु .... श्वास मोसकिलसँ ठहरै छै। तँए “मफऊलातु “ खाली अर्धसमान, असमान मुजाइफ बहरमे प्रयुक्त होइत छै मूल बहरमे नै। आब जँ अहाँ विशेष रुचि लै छी तँ ईहो पूछि सकै छी जे “मुतफाइलुन “मने 11212 आ “मुस्तफइलुन “मने 2212 मे की अन्तर छै? कने धेआनसँ देखबै तँ पता लागत जे “मुतफाइलुन “केर शुरुआतमे दू (2) टा लघु छै आ “मुस्तफइलुन “केर शुरुआतमे एकटा (1) दीर्घ। अरूजी सभहँक मोताबिक जँ कोनो पाँतिक शुरुआत दू टा स्वतंत्र लघुसँ होइत हो तखने ओकरा “मुतफाइलुन “ मानल जा सकैए जेना--

“तँ चलै चलू “(11212)

ऐ पाँतिमे शुरुआत दू टा स्वतंत्र लघुसँ भेल अछि तँए ई “मुतफाइलुन “ भेल। मुदा

“घर छै हमर “(2212)

ऐ पाँतिमे दू टा स्वतंत्र लघु नै अछि तँए ई “मुतफाइलुन “ नै भेल।

उपरमे जे “मुतफाइलुन “बला बहरक उदाहरण देल गेल अछि जे “मुतफाइलुन “ नै अछि। ई गजल प्रारंभिक चरणमे लिखल गेल छलै गजलकार द्वारा। वस्तुतः ओहि समयमे हमरो ई भेद नै पता छल। तँए ई शाइरक नै हमर गलती बूझल जाए। संस्कृत परम्परामे घर शब्दकेँ दू टा लघु मानल जाइत छै। मुदा संस्कृत परंपरा लेलासँ मैथिलीमे मुतफाइलुन आ मुस्तफाइलुन केर भेद खत्म भए जाएत। फऊलुन आ मुफाइलतुन केर भेद आब सेहो अहाँ सभ बुझि गेल हेबै।

खण्ड-17

अर्धसमान बहर ---एहि खण्डमे कुल 56 बहर अछि मुदा मात्र 7 टा प्रचलित अछि। एकरा हम अर्धसमान बहर एहि द्वारे कहैत छिऐक जे एहिमे हरेक पाँतिमे कमसँकम अनिवार्य रुपसँ दूटा ध्वनिके समान रुपमे प्रयोग करए पड़ैत छैक। ई ध्वनि शाइर अपना सुविधानुसार प्रयोग कए सकैत छथि। (मुदा ऐ वर्गक बहर लेल धेआन राखू जे जँ एकटा पाँतिमे अनिवार्य रूपसँ आबए बला दूटा रुक्नकेँ लेबै तँ गायनक हिसाबसँ नीक नै हएत। मुदा जँ एकटा पाँतिमे अनिवार्य रूपसँ आबए बला दूटा रुक्न दू बेर देबै मने एकटा पाँतिमे चारिटा रुक्न देबै तँ सर्वोत्तम हएत। मुदा जँ तिगुन्ना करबै तँ एक पाँतिमे छह टा रुक्न हएत, चौगुन्ना करबै तँ आठटा रुक्न हएत आ ई बेसी रुक्न सभ गायन लेल नीक नै)। आ एहि खण्डक सभ बहर लेल एहने सन बूझू। एकर विवरण निच्चा देल जा रहल अछि--

1) फऊलुन + फाइलुन (एकर उल्टा रूप सेहो छै.....)

फाइलुन + फऊलुन

2) फऊलुन + फाइलातुन (एकर उल्टा रूप सेहो छै.....)

फाइलातुन + फऊलुन

आ निच्चाक सभ बाँचल 26 टा बहरक लेल एनाहिते नियम छै। आ ऐ तरहें ऐ खण्डमे कुल 56 टा बहर भेल।

3) फऊलुन + मफाईलुन

4) फऊलुन + मुस्तफइलुन

5) फऊलुन + मुफाइलतुन

6) फऊलुन + मुतफाइलुन

7) फऊलुन + मफऊलातु

8) फाइलुन + फाइलातुन

9) फाइलुन + मफाईलुन

10) फाइलुन+ मुस्तफइलुन

11) फाइलुन + मुफाइलतुन

12) फाइलुन + मुतफाइलुन

13) फाइलुन + मफऊलातु

14)फाइलातुन + मफाईलुन

15) फाइलातुन + मुस्तफइलुन

16) फाइलातुन + मुफाइलतुन

17) फाइलातुन + मुतफाइलुन

18) फाइलातुन + मफऊलातु

19) मफाईलुन + मुस्तफइलुन

20) मफाईलुन + मुफाइलतुन

21) मफाईलुन + मुतफाइलुन

22) मफाईलुन + मफऊलातु

23) मुस्तफइलुन + मुफाइलुन

24) मुस्तफइलुन + मुतफाइलुन

25) मुस्तफइलुन + मफऊलातु

26) मुफाइलतुन + मुतफाइलुन

27) मुफाइलतुन + मफऊलातु

28) मुतफाइलुन + मफऊलातु

आब अहाँ सभ जरूर कहब जे जखन मात्र साते टा बहर प्रचलित छै तखन एतेक देबाक कोन काज। मुदा बेसी प्रचलित नै हेबाक मतलब ई नै छै जे ई गलत छै। वस्तुतः बहरक प्रयोग अभ्यास पर निर्भर छै आ हरेक शाइर अपना हिसाबसँ बहरक चुनाब करैत छथि। भए सकैए जे जाहि बहरकेँ अरबी जीह पर कठिनाह लागल हो से मैथिलीमे सहज लागए तँए ई सभ देल गेल अछि। तँ देखी ई सात टा बहुप्रचलित बहर आ ओकर नामकेँ। ओना ऐठाँ हम ई कहब जे किछु बहर जेना बहरे वाफिर अरबीमे प्रचलित तँ छै मुदा फारसीमे नै । तेनाहिते किछु बहर फारसीमे प्रचलित छै मुदा उर्दूमे नै तँइ ई पूरा सूची हम प्रस्तुत केलहुँ।

क) बहरे तवील एकर मूल ध्वनि छैक “फऊलुन+मफाईलुन” । एकर ढ़ाँचा देखू--

122 + 1222
122 + 1222

122 + 1222 + 122 + 1222
122 + 1222 + 122 + 1222

122 + 1222 + 122 + 1222 + 122 + 1222
122 + 1222 + 122 + 1222 + 122 + 1222..........................

एहि बहर आ एहि खण्डक बाँकी अन्य छहो बहरक लेल एकटा आर बात मोन राखू जे ध्वनि जाहि क्रममे देल गेल अछि ताही क्रममे रहबाक चाही। जेना की बहरे तवीलमे अहाँ देखलहुँ जे एकर ध्वनि एना छैक “फऊलुन+मफाईलुन” मुदा जँ अहाँ एकरा “मफाईलुन+ फऊलुन” बला क्रममे रखबै तँ ई बहरे तवील नहि हएत। अमित मिश्र जीक लिखल बहरे तवील देखल जाए—

पुन: जोडि लेबै नेहकेँ डोर राजा जी
कनेको बहै नै जानकेँ नोर राजा जी

कने आउ राजा जानि नै की भऽ जेतै यौ
कनेको नचाबू प्रेमकेँ मोर राजा जी

किए सुन्न भेलौं आइ बेमौत मारै छी

कने आइ मस्तीमे करू शोर राजा जी

जमाना मिलेतै नै सुनू बैलगा देतै
अनाड़ी बुझै छै प्रेम छै चोर राजा जी

चटा देब संगे प्यार के चाशनी हमरा
अमीतो बुझू भेलै सराबोर राजा जी

हरेक पाँतिमे “फऊलुन+मफाईलुन” अर्थात (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ + ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घसँ बनल बहरे तवील)

ख) बहरे मदीद---एकर मूल ध्वनि अछि “फाइलातुन+फाइलुन” । एकर ढ़ाँचा एना छैक--

2122 + 212

अमित मिश्र जीक लिखल बहरे मदीद देखल जाए--

कोन टोना केलकै जोगिया सदिखन करेजा हमर जरिते रहल
चोरि केने चैन होशो हमर सदिखन अनेरे उड़िते रहल

नै छलै डर एतऽ मरबाक आ नै मोन मे दर्द अंदेशा छलै
देख नवका एतऽ बहिते हवा से आब नेहक गजल मरिते रहल

भागि गेलै कोन नगरक गली मे आइ देखा कऽ सतरंगी सपन
बाट जोहैते भऽ जेतै कखन की आँखिमे नोर बड भरिते रहल

उजरि गेलै जखन कोनो उपवनक कोनटा परक गाछक फूल यौ
तखन सबटा कोयलक मधुर बोली संग दर्दक हवा उड़िते रहल

आइ खोजै छी अपन ओहि जादूगर कए फेर खेला खेलबै
अमित केने आश नेहक सदिखने भीतरेभीतर जरिते रहल

बह्रे मदीद
फाइलातुन+फाइलुन (2122 + 212) 3 बेर

ग) बह्रे बसीत एकर मूल ध्वनि “मुस्तफइलुन+फाइलुन” छैक। एकर ढ़ाँचा एना हएत--
2212 + 212
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बह्रे बसीतमे अछि--

बेटा अपन मुर्खके सोटासँ हम अकछ छी
बाबाक फूटलहबा लोटासँ हम अकछ छी

पेट्रोल कखनो तऽ कखनो गैस सब्जी महग
काला बजारी करै कोटासँ हम अकछ छी

बेटी कपारपर छै चिन्ता इ सदिखन बनल
कनियाक नेहक भरल मोटासँ हम अकछ छी

छै आगि धरती बनल नै पानि आकाश मे
पीबैत कारी धुआँ मोटासँ हम अकछ छी

दै यै भगा काज छोड़ा जीब कोना बचब
छै खसल टाकाक लंगोटासँ हम अकछ छी

रचना करै छी तऽ खर्चा होइ यै नै मुदा
अतिथी अमित एतऽ दस गोटासँ हम अकछ छी

मुस्तफइलुन+फाइलुन दू बेर (बह्रे बसीत)

घ) बह्रे मुजस्सम वा मुजास---एकर मूल ध्वनि “मुस्तफइलुन+फाइलातुन” छैक। एकर ढ़ाँचा एहन छैक-

2212 + 2122

अमित मिश्र जीक लिखल बहरे मुजास देखल जाए--

बसलौँ अहाँ जखन मनमे हमरा चमकि गेल जिनगी
अनमोल नेहक उड़ल खुशबूमे गमकि गेल जिनगी

माधुर्य माँखैत खुजलै जखने कमल ठोर रानी
लवणीसँ छलकैत ताड़ी बूझू छलकि गेल जिनगी

गाबी अहाँ गीत मोने मोने जँ तैयौ गजब धुन
मुस्की दऽ देलौँ चहटगर अमृत झमकि गेल जिनगी

नीरीह जानबर बनि नैनक मारि खेलौँ सदिखने
फूले छलै बाण नैनक तँए धड़कि गेल जिनगी

सगरो अहाँ के लिखल छवि डूबल कलम नेहमे यै
गाबै अमित गजल लिखलक देखू दमकि गेल जिनगी
बहरे मुजास

ङ) बहरे मुन्सरह एकर मूल ध्वनि “मुस्तफइलुन+मफऊलात” । एकर ढ़ाँचा छैक--

2212 + 2221

अमित मिश्र जीक लिखल बहरे मुन्सरह देखल जाए--

आखर जखन रूपक लिखल
उपमा सजल फूलक लिखल

आदर्श छी रूपक बनल
काजर नयन कातक लिखल

सरगम अहाँक स्वर सजल
मुस्की नगर तानक लिखल

कहलौँ करेजक सब कहल
किछु बात हम राजक लिखल

चमकैत नभ मे छी चान
तारा गजल हाटक लिखल

मुस्तफइलुन+मफऊलातु

च) बहरे मजरिअ एकर मूल ध्वनि छैक “मफाईलुन+फाइलातुन” एकर ढ़ाँचा एना छैक--
1222+2122
छ) बहरे मुक्तजिब एकर मूल ध्वनि छैक “मफऊलात+मुस्तफइलुन” । एकर ढ़ाँचा छैक--

2221 +2212
ओम प्रकाश जीक लिखल बहरे मुक्तजिबमे लिखल ई गजल देखल जाए--

धारक कात रहितो पियासल रहि गेल जिनगी हमर
मोनक बात मोनहि रहल, दुख सहि गेल जिनगी हमर

मुस्की हमर घर आस लेने आओत नै आब यौ
पूरै छै कहाँ आस सबहक, कहि गेल जिनगी हमर

सीखेलक इ दुनिया किला बचबै केर ढंगो मुदा
बचबै मे किला अनकरे टा ढहि गेल जिनगी हमर

पाथर बाट पर छी पडल, हमरा पूछलक नै कियो
कोनो बन्न नाला जकाँ चुप बहि गेल जिनगी हमर

जिनगी “ओम” बीतेलकै बीचहि धार औनाइते
भेंटल नै कछेरो कतौ, बस दहि गेल जिनगी हमर

(बह्रे मुक्तजिब)

फेर पंकज चौधरी नवलश्री जीक ई गजल देखू-

अनकर कहल मानब कते
खाखा ठेस कानब कते

बस किछु दिनक जिनगी तऽ नै
दिन जिनगीक गानब कते

छोड़ू पुरनका राग सभ
ऐ सिट्ठीसँ रऽस छानब कते

बिनु साधनक की साधना
थूकसँ सातु सानब कते

चाही अपन अधिकार जे
माँगू "नवलऽ ठानब कते

बह्रे मुक्तबिज/मात्रा क्रम : 2221+2212

मुस्तफइलुन+ फऊलुन केर उदाहरण लेल राजीव रंजन मिश्रजीक ई गजल देखू--

फूलक गमक भरल हो
जीवन सजल धजल हो

चमकी अहाँ नखत सन
गति मति सहज सरल हो

अगहनकँ मासमे जनि
पुरबा सरस बहल हो

बोली अहाँक मिठगर
आ बानगी चढल हो

गुन रूप शील संगे
गदगद हिया सबल हो

राजीव कामना जे
ऊँचाइ नित नवल हो

2212 + 122

49 टा बाँचल बहरक नाम हमरो एखन धरि नै पता लागल अछि। पता लगिते जरूर कहब।

खण्ड-18

असमान बहर --एहि खण्डमे कुल 213 गोट बहर अछि मुदा मात्र 13 टा प्रचलित अछि। एकरा हम असमान बहर एहि द्वारे कहैत छिऐक जे एहिमे हरेक पाँतिमे कमसँ-कम अनिवार्य रुपसँ तीनटा ध्वनिके समान रुपमे प्रयोग करए पड़ैत छैक। ऐ वर्गक बहर लेल जे अनिवार्य तीन टा रुक्न छै सएह टा देबै तँ नीक रहत कारण दू बेर देबै तँ छह टा हएत आ एनाहिते बढ़ैत रहत जे अनुपयुक्त हएत। आ एहि खण्डक आर अन्य बहर लेल एहने सन बूझू। एकर विवरण निच्चा देल जा रहल अछि--

ऐ असमान बहरक दू भागकँ हमरा लोकनि देखी। पहिल भाग ओ भेल जाहिमे तीनटा अलग-अलग रुक्नकँ एक पाँतिमे एक बेरमे प्रयोग कए जाइत छै। आ दोसर भाग ओ भेल जाहिमे दूटा एक समान रुक्न आ एकटा दोसर रुक्न लेल जाइत छै। तँ पहिने देखी ओ बहर जाहिमे तीनटा अलग-अलग रुक्नकँ एक पाँतिमे एक बेरमे प्रयोग कए जाइत छै--

1) फऊलुन + फाइलुन + फाइलातुन (एकर दूटा आर रूप हेतै)

a) फाइलुन + फाइलातुन+फऊलुन

b) फाइलातुन + फऊलुन + फाइलुन

एनाहिते निच्चो बला सभक दू-दूटा आर रूप हेतै। कुल मिला ऐ खण्डमे 45 टा बहर प्राप्त भेल।

2) फऊलुन + मफाईलुन + मुस्तफइलुन

3) फऊलुन + मुफाइलतुन + मुतफाइलुन

4) फाइलुन + फाइलातुन + मफाईलुन

5) फाइलुन + मुस्तफइलुन + मुफाइलतुन

6) फाइलुन + मुतफाइलुन + मफऊलातु

7) फाइलातुन + मफाईलुन + मुस्तफइलुन

8) फाइलातुन + मुफाइलतुन + मुतफाइलुन

9) मफाईलुन + मुस्तफइलुन + मुफाइलतुन

10) मफाईलुन + मुतफाइलुन + मफऊलातु

11) मुस्तफइलुन + मुफाइलतुन + मुतफाइलुन

12) मुफाइलतुन + मुतफाइलुन + मफऊलातु

13) मफऊलातु + मुतफाइलुन + मुफाइलतुन

14) मफऊलातु + मुस्तफइलुन + मफाईलुन

15) मफऊलातु + फाइलातुन + फाइलुन

आब आबी दोसर भागमे जाहिमे दूटा एक समान रुक्न आ एकटा दोसर रुक्न लेल जाइत छै...........

हरेक पाँतिमे फाइलातुन केर दू बेर प्रयोग आ मफाईलुन केर एक बेर प्रयोग (एकर तीन रूप हेतै)

फाइलातुन+ फाइलातुन+ मफाईलुन (मने--दीर्घ-ह्लस्व-दीर्घ-दीर्घ+ दीर्घ-ह्लस्व-दीर्घ-दीर्घ+ह्लस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ)

मफाईलुन+फाइलातुन+ फाइलातुन

फाइलातुन+मफाईलुन+फाइलातुन

आ) हरेक पाँतिमे मफाईलुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलातुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

मफाईलुन+ मफाईलुन+फाइलातुन

फाइलातुन+मफाईलुन+ मफाईलुन

मफाईलुन+फाइलातुन+मफाईलुन

इ) हरेक पाँतिमे फाइलातुन केर दू बेर प्रयोग आ मुस्तफइलुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

फाइलातुन+ फाइलातुन+ मुस्तफइलुन

मुस्तफइलुन+फाइलातुन+ फाइलातुन

फाइलातुन+ मुस्तफइलुन+फाइलातुन

ई) हरेक पाँतिमे मुस्तफइलुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलातुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

मुस्तफइलुन +मुस्तफइलुन + फाइलातुन

फाइलातुन+मुस्तफइलुन +मुस्तफइलुन

मुस्तफइलुन +फाइलातुन+मुस्तफइलुन

उ) हरेक पाँतिमे फाइलातुन केर दू बेर प्रयोग आ मुफाइलतुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

फाइलातुन +फाइलातुन + मुफाइलतुन

मुफाइलतुन+फाइलातुन +फाइलातुन

फाइलातुन +मुफाइलतुन+ फाइलातुन

ऊ) हरेक पाँतिमे मुफाइलतुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलातुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

मुफाइलतुन+ मुफाइलतुन+फाइलातुन

फाइलातुन +मुफाइलतुन+ मुफाइलतुन

मुफाइलतुन+ फाइलातुन+मुफाइलतुन

ए) हरेक पाँतिमे फाइलातुन केर दू बेर प्रयोग आ मुतफाइलुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

फाइलातुन+ फाइलातुन+मुतफाइलुन

मुतफाइलुन +फाइलातुन+ फाइलातुन

फाइलातुन+ मुतफाइलुन+फाइलातुन

ऐ) हरेक पाँतिमे मुतफाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलातुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

मुतफाइलुन +मुतफाइलुन + फाइलातुन

फाइलातुन+मुतफाइलुन +मुतफाइलुन

मुतफाइलुन +फाइलातुन+मुतफाइलुन

ओ) हरेक पाँतिमे फाइलातुन केर दू बेर प्रयोग आ मफऊलात केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

फाइलातुन+ फाइलातुन+मफऊलात

मफऊलात +फाइलातुन+ फाइलातुन

फाइलातुन+ मफऊलात +फाइलातुन

औ) हरेक पाँतिमे मफऊलात केर दू बेर प्रयोग आ फाइलातुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

मफऊलात +मफऊलात + फाइलातुन

फाइलातुन+मफऊलात +मफऊलात

मफऊलात +फाइलातुन+मफऊलात

अं) हरेक पाँतिमे मफाईलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुस्तफइलुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

मफाईलुन +मफाईलुन + मुस्तफइलुन

मुस्तफइलुन+मफाईलुन +मफाईलुन

मफाईलुन +मफाईलुन+मफाईलुन

अः) हरेक पाँतिमे मुस्तफइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुफाईलुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

मुस्तफइलुन+ मुस्तफइलुन+ मुफाईलुन

मुफाईलुन+मुस्तफइलुन+ मुस्तफइलुन

मुस्तफइलुन+मुफाईलुन+ मुस्तफइलुन

क) हरेक पाँतिमे मफाईलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुफाइलतुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

मफाईलुन+ मफाईलुन+ मुफाइलतुन

मुफाइलतुन+मफाईलुन+ मफाईलुन

मफाईलुन+ मुफाइलतुन + मफाईलुन

ख) हरेक पाँतिमे मुफाइलतुन केर दू बेर प्रयोग आ मफाईलुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

मुफाइलतुन +मुफाइलतुन +मफाईलुन

मफाईलुन +मुफाइलतुन +मुफाइलतुन

मुफाइलतुन +मफाईलुन+मुफाइलतुन

आब आगूक हरेक वर्ग लेल एनाहिते तीन-तीनटा बहर बनैत रहत। हम समयक अबाभकेँ कारणै नै दए रहल छी। अहाँ सभ समय-समय पर एकरा बनबैत रहब। आब ऐठाम देखू जे कुल मिला कए ऐ विवरणमे 56 टा वर्ग अछि आ हरेक वर्गमे तीन-तीन टा बहर अछि मने ऐ खण्डमे कुल 168 टा बहर भेल--

ग) हरेक पाँतिमे मफाईलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुतफाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

घ) हरेक पाँतिमे मुतफाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मफाईलुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

ङ) हरेक पाँतिमे मफाईलुन केर दू बेर प्रयोग आ मफऊलात केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

च) हरेक पाँतिमे मफऊलात केर दू बेर प्रयोग आ मफाईलुन केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)

छ) हरेक पाँतिमे मुस्तफइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुफाइलतुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

ज) हरेक पाँतिमे मुफाइलतुन केर दू बेर प्रयोग आ मुस्तफइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

झ) हरेक पाँतिमे मुस्तफइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुफाइलतुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

ञ) हरेक पाँतिमे मुफाइलतुन केर दू बेर प्रयोग आ मुस्तफइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

ट) हरेक पाँतिमे मुस्तफइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मफऊलात केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

ठ) हरेक पाँतिमे मफऊलात केर दू बेर प्रयोग आ मुस्तफइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

ड) हरेक पाँतिमे मुफाइलतुन केर दू बेर प्रयोग आ मुतफाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

ढ़) हरेक पाँतिमे मुतफाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुफाइलतुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

ण) हरेक पाँतिमे मुफाइलतुन केर दू बेर प्रयोग आ मफऊलात केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
त) हरेक पाँतिमे मफऊलात केर एक बेर प्रयोग आ मुफाइलतुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
थ) हरेक पाँतिमे मुतफाइलुन केर एक बेर प्रयोग आ मफऊलात केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
द) हरेक पाँतिमे मफऊलात केर दू बेर प्रयोग आ मफऊलात केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
ध) हरेक पाँतिमे फऊलुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
न) हरेक पाँतिमे फाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ फऊलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
प) हरेक पाँतिमे फऊलुन केर एक बेर प्रयोग आ फाइलातुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
फ) हरेक पाँतिमे फाइलातुन केर दू बेर प्रयोग आ फऊलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
ब) हरेक पाँतिमे फऊलुन केर दू बेर प्रयोग आ मफाईलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
भ) हरेक पाँतिमे मफाईलुन केर दू बेर प्रयोग आ फऊलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
म) हरेक पाँतिमे फऊलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुस्तफइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
य) हरेक पाँतिमे मुस्तफइलुन केर दू बेर प्रयोग आ फऊलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
र) हरेक पाँतिमे फऊलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुफाइलतुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
ल) हरेक पाँतिमे मुफाइलतुन केर दू बेर प्रयोग आ फऊलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
व) हरेक पाँतिमे फऊलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुतफाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
श) हरेक पाँतिमे मुतफाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ फऊलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
ष) हरेक पाँतिमे फऊलुन केर दू बेर प्रयोग आ मफऊलात केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
स) हरेक पाँतिमे मफऊलात केर दू बेर प्रयोग आ फऊलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
ह) हरेक पाँतिमे फाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलातुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
क्ष) हरेक पाँतिमे फाइलातुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
त्र) हरेक पाँतिमे फाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मफाईलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
ज्ञ) हरेक पाँतिमे मफाईलुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
ॠ) हरेक पाँतिमे फाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुस्तफइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
ॡ) हरेक पाँतिमे मुस्तफइलुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
कॄ) हरेक पाँतिमे फाइलुन केर दू बेर आ मुफाइलतुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
खॄ) हरेक पाँतिमे मुफाइलतुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
गॄ) हरेक पाँतिमे फाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मुतफाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
घॄ) हरेक पाँतिमे मुतफाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ फाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
चॄ) हरेक पाँतिमे फाइलुन केर दू बेर प्रयोग आ मफऊलात केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)
छॄ) हरेक पाँतिमे मफऊलात केर दू बेर प्रयोग आ फाइलुन केर एक बेर प्रयोग(एकरो तीन रूप हेतै)

मुदा ऐ 213 बहरमेसँ मात्र तेरहे टा बहु-प्रचलित छै। आ बाद बाँकी केर उपयोग मुजाइफ रूपमे होइत छै। आब अहाँ सभ जरूर कहब जे जखन मात्र तेरहे टा बहर प्रचलित छै तखन एतेक देबाक कोन काज। मुदा बेसी प्रचलित नै हेबाक मतलब ई नै छै जे ई गलत छै। वस्तुतः बहरक प्रयोग अभ्यास पर निर्भर छै आ हरेक शाइर अपना हिसाबसँ बहरक चुनाब करैत छथि। भए सकैए जे जाहि बहरकेँ अरबी जीह पर कठिनाह लागल हो से मैथिलीमे सहज लागए तँए ई सभ देल गेल अछि। ऐठाम ई कहब कोनो बेजाए नै जे किछु बहर जे अरबीमे प्रचलित अछि से फारसीमे नै आ जे फारसीमे प्रचलित अछि से उर्दूमे नै। तँए हम ई पूरा-पूरी सूची देलहुँ। तँ देखी ई तेरह टा बहुप्रचलित बहर आ ओकर नामकेँ। ई तेरहटा बहर एना अछि---

क) बहरे खफीफ--एकर मूल ध्वनि छैक “फाइलातुन+मुस्तफइलुन+फाइलातुन” । एकर ढ़ाँचा छैक--

2122 + 2212 + 2122

देखू ई उदाहरण जे की बाल मुकुन्द जी द्वारा कहल गेल गजल अछि-

गजल

आँखि सूतल छै मोन जागल कियै छै
गाछ सूखल छै पात लागल कियै छै

भटकि रहलौँ हम नौकरी लेल जुग मैँ
भाग फूटल छै आस लागल कियै छै

प्रेम मैँ हुनकर टूटि गेलै करेजा
शांत मन तैयौँ आगि लागल कियै छै

गाम रहि रहि कैँ याद आबैत रहतै
मोन विचलित छै फेर भागल कियै छै

अपन पीड़ा बेसी बुझाएत तैयौँ
शीश काटल छै देह लागल कियै छै

राति दिन ई सोचैत बाजै मुकुन्दा

नाम ई ओकर आब पागल किये छै

बह्रे खफीफ,मात्रा क्रम 2122+2212+2122

ख) बह्रे जदीद एकर मूल ध्वनि छैक “फाइलातुन+फाइलातुन+मुस्तफइलुन” । एकर ढ़ाँचा छैक--
2122 + 2122 + 2212
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बह्रे जदीदमे अछि--

चादरो फाटल सड़ल बड उठबै कखन
बाढ़ि एलै भासलै घर बनतै कखन

कोन कोना नाह भेटत मजधार मे
राति दिनकर दिन कऽ चन्ना बूझै कखन

चोरि भेलै चैन आ चाहो के अमल
देह टूटै दोष अनका देबै कखन

डाँग लागै दैब के अधगेरे जखन
पानि मानव एक बूँदो माँगै कखन

बेचबै बेटा जँ जिनगी बचतै तखन
अमित कह ने पानि सगरो घटतै कखन

फाइलातुन+फाइलातुन+मुस्तफइलुन
2122 + 2122 + 2212 एक बेर सब पाँति मे (बह्रे जदीद)
ग) बह्रे सरीअ एकर मूल ध्वनि छैक “मुस्तफइलुन+मुस्तफइलुन+मफऊलात” । एकर ढ़ाँचा छैक--
2212 + 2212 + 2221
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बह्रे सरीअमे अछि--

भेटल अहाँके संग हमरा जहियेसँ
जिनगी हमर लेलक करोटो तहियेसँ

हम एकरा की कहब छल एहन भाग
बैसल छलौँ हम बाटमे दुपहरियेसँ

गेलौँ शिखरपर भेल जे एगो स्पर्श
जुड़ि गेल श्वास प्राण संगे तहियेसँ

छी ग्यानके पेटी अहाँ जादू गजल
शाइरक कोनो कलम लागै हँसियेसँ

हम भेल नतमस्तक लिखब कोना शब्द
शाइर अमित छी संग हमरा जहियेसँ

मुस्तफइलुन+मुस्फइलुन+मफऊलात
(2212 + 2212 + 2221) बहरे सरीअ

घ) बहरे करीब एकर मूल ध्वनि छैक “मफाईलुन+मफाईलुन+फाइलातुन”। एकर ढ़ाँचा छैक--
1222 + 1222 + 2122
देखू बाल मुकुन्द पाठक द्वारा लिखल ई गजल जे की बहरे करीबमे अछि--

बिना दागक हमर छल ई चान सन मुँह
कुकर्मी नोचि लेलक मिल राण सन मुँह

कि सपना देखलौँ आ लुटि गेल जिनगी
घटल एहन बनल देखूँ आन सन मुँह

रमल रहियै अपन धुनमेँ आ कि एलै
चिबा गेलै हमर सुन्नर पान सन मुँह

बनल नै स्त्री समाजक उपभोग चलते
किए तैयो मनुख नोचै चान सन मुँह

हमर सभ लूटि गेलै ईज्जत व चामौँ
कि करबै जी कऽ लेने छुछुआन सन मुँह

बहरे करीब मने “मफाईलुन+मफाईलुन+फाइलातुन”
मात्रा क्रम 1222 + 1222 + 2122 बहरेकरीब
ङ) बहरे मुशाकिल--एकर मूल ध्वनि छैक “फाइलातुन+मफाईलुन+मफाईलुन। एकर ढ़ाँचा छैक--
2122 + 1222 + 1222
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बहरे मुशाकिलमे अछि--

हमर नेहक सजा जिनगी जड़ा देलक
गीत दर्दक बना जिनगी कना देलक

छै अनचिन्हार अपने नाम एखन यौ
खेल झूठक जमा जिनगी हरा देलक

नोर बहतै तऽ हमरे पर हँसत दुनियाँ
कसम झूठे गना जिनगी लिखा देलक

जहर के प्रेम मे खूनो जहर भेलै
दाँत विरहक गड़ा जिनगी विषा देलक

गाम उजड़ल शहर कानल हँसल जतऽ ओ
भवर एहन फँसा जिनगी बझा देलक

नै मवाली अहाँ हमरा कहू देखिकऽ
नेह पागल बना जिनगी डरा देलक

जीब कोना बचल जिनगी कहू एखन

अमित मौतसँ सटा जिनगी मुआ देलक

फाइलातुन+मफाईलुन+मफाईलुन (2122 + 1222 + 1222) बहरे मुशाकिल

च) बहरे कलीब एकर मूल ध्वनि छैक "फाइलातुन+फाइलातुन+मफाईलुन" । एकर ढ़ाँचा छैक--
2122+ 2122 +1222
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बहरे कलीबमे अछि--

युग विज्ञानक शोध एखन कऽ देखै छी
अपन मन परबोध एखन कऽ देखै छी

रहत जगमे अमर मानव मरत दानव
नव मशीनक रोध एखन कऽ देखै छी

भाग बनतै मात्र दस खा कऽ रसगुल्ला
शक्ति के हम बोध एखन कऽ देखै छी

सत्त सी ओ टू बनल झूठ आँक्सीजन
कार्बनक अबरोध एखन कऽ देखै छी

डाहि हम संस्कार संस्कृति मुस्कै छी
मान लेल क्रोध एखन कऽ देखै छी

देश चलबै छी तऽ सब राज के देखू
जोड़ि कर अनुरोध एखन कऽ देखै छी

बहरे कलीब

छ) बहरे असम एकर मूल ध्वनि छैक फाइलातुन+ मफाईलुन +फाइलातुन । एकर ढ़ाँचा छैक-
2122+ 1222 +2122
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बहरे असममे अछि--

आब आगिक पता पुछतै पानि ऐठाँ
नै जड़त यौ कतौ घर लिअ जानि ऐठाँ

कखन धरि लोक जड़तै चुप जानवर बनि
तोड़बै जउर से लेतै ठानि ऐठाँ

छै दहेजो तऽ महगाई कम कहाँ छै
ओझरी सोझरेतै लिअ मानि ऐठाँ

बदलतै समय सगरो नवका जमाना
नै जँ बदलत तऽ ओ मरतै कानि ऐठाँ

जे जनम देलकै हुनका बिसरलै सब
माँथ पर जनकके रखतै फानि ऐठाँ

भाइ मे उठमबजड़ा नै आब हेतै
आइ तऽ स्वर्ग के देबै आनि ऐठाँ

आगि पर पानि नेहक हँसि ढ़ारि दिअ ने
अमित सब के मिला सुख लिअ सानि ऐठाँ

फाइलातुन+मफाईलुन+फाइलातुन
(2122+ 1222 +2122) बह्रे असम
ज) बह्रे कबीर एकर मूल ध्वनि छैक मफऊलातु+ मफऊलातु +मुस्तफइलुन। एकर ढ़ाँचा छैक--
2221 +2221+ 2212
देखू पंकज चौधरी “नवलश्री द्वारा लिखल ई गजल जे की बह्रे कबीरमे अछि--

एलै घोर कलयुग हरत अन्हार के
सभटा बदलि गेलै नियम संसारकें

पछबा रीत अबिते भेल सभकिछु खतम
चरित्र के हनन आ पतन संस्कारकें

साहित्येसँ छै शोभा समाजक अपन
साहित्यक तऽ काजे सृजन शृंगारकें

बिलटत सभ कला सेहो कलाकार सन
भेटत मान जाधरि नै कलाकारकें

मायसँ मोह आ ने मातृभूमिसँ मुदा
सभ बैसल करू गप अपन अधिकारकें

बाजब "नवल" हमहूँ बेर एतै जहन
सय सोनारकें आ एक लोहारकें

मफऊलातु+मफऊलातु+मुस्तफइलुन (दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व+ दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व +दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घसँ बनल बहरे कबीर)

झ) बहरे सगीर एकर मूल ध्वनि छैक मुस्तफइलुन +फाइलातुन +मुस्तफइलुन। एकर ढ़ाँचा छैक
2212+ 2122+ 2212

ञ) बहरे सरीम एकर मूल ध्वनि छैक मफाईलुन +फाइलातुन +फाइलातुन । एकर ढ़ाँचा छैक---
1222 + 2122 + 2122

देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बहरे सरीममे अछि--

किए एखन मोन हमर शाइर बनल छै
लिखल जेकर नाम ओ एखन कटल छै

बनाबी हम रूप जे शब्दक नगरमे
नगर ओकर नैनके लागै जहल छै

गजल जेहन हम लिखै सबदिन छलौँ से

कहाँ हमरा मोनमे ओहन गजल छै

दिनक काटै रौद रातिक चान धधकै
बहर मारै जान पथ काँटक बनल छै

कखन हारब जीवनक अनमोल पारी
अमित जा धरि छी करै शेरक कहल छै

मफाईलुन+फइलातुन+फइलातुन (बहरे सरीम)

ट) बहरे सलीम एकर मूल ध्वनि छैक "मुस्तफइलुन +मफऊलातु+मफऊलातु"। एकर ढ़ाँचा छैक---
2212 + 2221 + 2221
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बहरे सलीममे अछि--

खिड़कीसँ सीधे देखै छलौँ हम चान
घन तिमिर मोनक छाँटै छलौँ हम चान

हेतै अपन फेरो भेँट ओतै जा कऽ
तैँ जागि आशा लगबै छलौँ हम चान

दिन भरि समाजक पहरा कतेको नयन
छवि संग तोहर भटकै छलौँ हम चान

लागै तरेगण लोचन पलक झपकैत
बनि मेघ घोघट लागै छलौँ हम चान

शुभ राति फेरो भेटब अमिय नेहक लऽ
सब दिन अमित नव आबै छलौँ हम चान

मुस्तफइलुन+मफऊलातु+मफऊलातु
{दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व} बहरे सलीम

ठ) बहरे हमीद एकर मूल ध्वनि छैक “मफऊलातु+मुस्तफइलुन+मफऊलातु” । एकर ढ़ाँचा छैक--
2221 + 2212 + 2221
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बहरे हमीदमे अछि--

नै जीयत शराबक नशा लागल लोक
कोना हँसत कोनो दुखक खेहारल लोक

काठी फेकबै आगि उठतै बोतलसँ
नै रहतै जवानी अपन जाड़ल लोक

के कानत कतौ आन लेए कऽह एतऽ
नै छै समय ककरो अपन भागल लोक

दै छै साँस कखनो अपन धोखा आब
एहन नेहमे छै किए पागल लोक

जड़तै एक दोसरसँ जिनगी मे जखन
कटतै घेँट अपने सबर हारल लोक

क्षण भरि के नवल दोस्त नै चाही आब
हमरा अमित चाही अपन झाड़ल लोक

मफऊलातु+मुस्तफइलुन+मफऊलातु (बहरे हमीद)

ड) बहरे हमीम एकर मूल ध्वनि छैक “फाइलातुन+ मुस्तफइलुन+ मुस्तफइलुन” ।एकर ढ़ाँचा छैक--
2122 + 2212 + 2212
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बहरे हमीममे अछि--

आइ नौला* मे माछ चल मारब कने

जाल मच्छरदानी वला फेकब कने

बहुत टिकुला छै खसल गाछी भरल छै
ओकरो झोरी भरि कऽ चल आनब कने

माछ चटनी खाएब रोटी भात रौ
डोलपाती चल संग मे खेलब कने

छोट बौआ छी पैघ सन छै सोच रौ
आब कखनो संसार नै बाँटब कने

एक छी हम सब एक थारी मे रहब
अमित नवका मिथिला अपन माँगब कने

फाइलातुन+मुस्तफइलुन+मुस्तफइलुन (बहरे हमीम)

ऐकैँ अतिरिक्त केओ चारि-चारिटा रुक्नक समूह सेहो बना सकैत छथि। मुदा ऐठाम ई मोन राखू जे गजल पूरा-पूरी उच्चारण आ संगीतक नियम पर आधारित छै तँए बड़का-बड़का पाँति गेबामे नै बनतै तँए ई चारि आ ओहिसँ बेसी रुक्न बला गजलक सफलता बहुत कम्म भेटतै। आ जखन देखिए रहल छिऐ जे जखन 213 मे टा मात्र तेरहे टा प्रचलित छै जे की तीन रुक्नक समूह थिक। तखन चारि आ ओहिसँ बेसी बलाक सफलता कतेक हेतै से अंदाजा लगा सकैत छी अहाँ।
ऐठाम ई स्पष्ट करब जरूरी अछि जे खाली अरबी बहरपर लिखब अभीष्ट नै। वर्णवृतक कोनो मात्राक्रम हो आ सही रदीफ काफिया केर प्रयोग भेल हो तँ ओ गजल भेल। उपरका बहर सभ अरबी-फारसी-उर्दूमे प्रचलित अछि। मैथिलीमे कोन ढ़ाँचा (उच्चारण आ संगीतक हिसाबें) फिट बैसत तकर निर्धारण अगामी 100-150 बर्खमे हएत। तँए जे ढ़ाँचा वर्णवृतक हो से उपयोग करू। तँ किछु एहन गजल देखू जे की अन्य मात्राक्रमपर अछि। आ ई सभ उदहारण राजीव रंजन मिश्र जीक छन्हि---
1

एक झोंका पवनकैँ गुजरि गेल देखू
मोन मारल सिनेहक सिहरि गेल देखू

कान सुनलक जँ किछुओ हुनक बोल नेहक
सोह बिसरल उचाटे नमरि गेल देखू

चानकेँ आसमे छल चकोरक नजरि धरि
राति कारी अमावस पसरि गेल देखू

के बुझत बात डाहल हदासल हियाकें
गाछ रोपल सवाँरल झखरि गेल देखू

बाट जोहब सदति बस बनल भाग टा तैं
नोर राजीव नैनक टघरि गेल देखू

2122 122 1221 22

2

हियक अहलादकेँ फुसियाएब मोसकिल छल
सुनल सभ बातकेँ बिसराएब मोसकिल छल

उगल छल चान जे पूनमकेर रातिमे ओ
तकर मारल हियक सरियाएब मोसकिल छल

सलटि लेलहुँ जगतकेँ सहजेसँ नित मुदा बस
बढल अनुरागकेँ अनठाएब मोसकिल छल

गुलाबक फूलसन जगती खुब बिहुँसलए धरि
भरल मधुमासमे मुसकाएब मोसकिल छल

बड़ा राजीव छल ललसा दौग मारएकेँ
झटकि धरि डेग नित चलि पाएब मोसकिल छल

122 212 2221 2122

3

बस मान खातिर नै बजबाक चाही कखनो
हिय तोड़ि लोकक नै चलबाक चाही कखनो

बाजब तऽ बाजू छाती ठोकि सत टा सदिखन
बेकार फुइसक नै हकबाक चाही कखनो

जे बेश हल्लुक बुझना गेल देखति माँतर
से बाट चटदनि नै धरबाक चाही कखनो

नै ऊक बिनु फूकक छजलै गऽ ककरो से बुझि
बुधि ज्ञान सहजे नै तजबाक चाही कखनो

राजीव अलगे करमक धाह आ चमकी तैं
कुटिचालि कथमपि नै रचबाक चाही कखनो

221 222 221 2222

4

जिनगी जीबाक नाम रहल सभदिन
नुनगर सेकल बदाम रहल सभदिन

बेसी फटिया कऽ मोन चढ़ा भखने
लोकक दरजा तऽ आम रहल सभदिन

चारि आखर सिनेहक बले देखल

भरिगर सुधिगर तमाम रहल सभदिन

सुख दुख सहबाक नाम कलाकारी
भागक तखने सलाम रहल सभदिन

के कहलक जे सुरा तऽ रमनगर छै
मारुक जोहक तऽ जाम रहल सभदिन

मानब राजीव बात सदति ठोकल
करनी टाकैँ तऽ दाम रहल सभदिन

2222 121 1222

राजीव जीक ऐ चारू गजलसँ अहाँ सभकैँ ई अनुमान लागि गेल हएत जे जँ अरबी मे मान्य ढ़ाँचा नहियो ल कऽ आन वर्णवृतक ढ़ाँचामे गजल संभव छै। आ हम फेर कहब जे ई निर्णय भविष्यमे हेतै जे कोन ढाँचा नीक आ कोन नै नीक।

ऐठाम आब कने रुकि कऽ मैथिलीमे बाल गजल आ भक्ति गजलक दर्शन कऽ ली। पहिने तीन टा भक्ति गजल दऽ रहल छी आ तकर बाद तीन टा बाल गजल---

ई जगदानंद झा “मनु” जीक भक्ति गजल अछि---

नै अहाँ केर बिसरी नाम हे भगवन
होइ कखनो अहाँ नै बाम हे भगवन

सुख कि भेटे दुखे जीवनक रस्तापर
संगमे रहथि सदिखन राम हे भगवन

हम बनेलौं सिया मंदिर अपन मनकैँ
आब कतए अहाँकैँ ठाम हे भगवन

आन नै आश कोनो बचल जीवनकँ
अपन दर्शनक टा दिअ दाम हे भगवन

मनु अहाँकँ करैए जोड़ि कल विनती
तोड़ि फेरसँ तँ अबियौ खाम्ह हे भगवन

(बहरे मुशाकिल, मात्रा कर्म – 2122+1222+1222)

आब अमित मिश्रजीक लिखल ई भक्ति गजल देखू--

आइ नाँचल मधुवन झूमि राधा संग
प्रेममे नाँचल गोपी तँ कान्हा संग

खा कऽ मक्खन खेलथि खेल नटखट चोर
साँझ धरि जंगलमे रहि कऽ मीता संग

नाथि देलनि नागक नाँक यमुना जा कऽ
माँथपर चढ़ि केलनि नाँच यमुना संग

फोड़ि देलनि चूड़ी तोड़ि देलनि हार
जखन रचलनि मोनक रास राधा संग

गायपर बैसल बजबैथ वंशी मधुर
कान्हपर चढ़ि घूमथि गाम बाबा संग

फाइलातुन+मफऊलातु+मफऊलातु
2122+2221+2221

आ अंतमे राजीव रंजन मिश्रजीक लिखल ई भक्ति गजल देखू—

जन्म लेला माधव कि गाबू बधैय्या
आबि गेला मोहन मुरारी कन्हैय्या

नन्द बाबा पुलकित यशोदा निछावर
मोहि रहलै बिहुँसब अठन्नी रुपैय्या

सोनाकैँ पलनामे झुलै झूला ललना
ठोप कारी रहि रहि लगाबै छै मैय्या

देखि लीला अजगुत अचंभामे नारद
नाचि रहला शंकर मगन ता ता थैय्या

नंदलाला राजीवकैँ बड सुखकारी
तीन लोकक मालिक जगतकैँ खेवैय्या

212222122222

भक्ति गजल देखलाक बाद बाल गजल देखू---

पहिने पंकज चौधरी नवल श्रीजीक ई बाल गजल देखू---

दू टा बस सोहारी चाही
माँ कम्मे तरकारी चाही

पुरना छिपलीमे नै खेबौ
हमरो नवका थारी चाही

हमहूँ जेबै इसकुल बाबू
पूरा सभ तैयारी चाही

हाटसँ आनू पोथीबस्ता
मौजाजूता कारी चाही

इसकूलक जलखैमे हलुआ
पूरी आ तरकारी चाही

छीटब बीया गाछो रोपब
आँगन लग फुलवारी चाही

“नवल”सँ नै हम लट्टू माँगब
हमरो कठही गाड़ी चाही

मात्रा क्रम : आठ टा दीर्घ सभ पांतिमे

आब मिहिर झाजीक ई बाल गजल देखू-

माय तरेगन तोडि दे
भानस बासन छोडि दे

खिस्सा राजा भोज के
कहिके घूरो कोडि दे

खेबौ दाना फौँक नै
मूँगफली तूँ फोडि दे

छूछे चूडा पात पर
दहियो कनिये पोडि दे

टूटल घोडा टाँग गै

माटि लगा के जोडि दे

2222212

आ अंतमे कुन्दन कुमार कर्णजीक ई बाल गजल देखू--

पढबै लिखबै चलबै नीक बाटसँ
आगू बढबै अपने ठोस आंटसँ

संस्कृति अप्पन कहियो छोडब नै
अलगे रहबै कूसंगत कऽ लाटसँ

फुलिते रहबै सदिखन फूल बनि नित
डेरेबै नै कोनो चोख कांटसँ

हिम्मत जिनगीमे हेतैक नै कम
चलबै आगू बाधा केर टाटसँ

बच्चा बुझि मानू कमजोर नै यौ
चमकेबै मिथिलाकेँ नाम ठाटसँ

मात्राक्रम: 2222222122

आशा अछि जे बाल ओ भक्ति गजलक संदर्भमे किछु बुझबामे आएल हएत।

मुजाइफ बहर

तँ आउ आब देखी मुजाइफ बहरकेँ। मुजाइफ बहरसँ पहिने एकरा दोबारा देखू--
कोनो शेरक दूनू पाँतिकेँ छह खण्डमे बाँटल जाइत छै--
a) सदर--पहिल पाँतिक पहिल खण्डकेँ सदर कहल जाइत छै। मने पहिल पाँतिक शुरूआत सदर भेल।

b) हश्व--सदर केर बाद बला खण्डकेँ हश्व कहल जाइत छै। हश्व मने विकास, वस्तुतः पाँतिमे निहित भावनाक

विकास एही खण्डमे होइत छै।

c) अरूज--पहिल पाँतिक अन्तिम खण्डकैं अरूज कहल जाइत छैक। अरुज मने उत्कर्ष, वस्तुतः भावनाक उत्कर्ष एही खण्डमे हइत छै।

d) इब्तदा--शेरक दोसर पाँतिक पहिल खण्डकैं इब्तदा कहल जाइत छै। इब्तदा मने सेहो प्रारंभे होइत छै मुदा सदर आ इब्तदा दुन्नूमे ई अंतर छै जे सदर कोनो विचार भए सकैए मुदा सदरक समर्थनमे आएल प्रारंभकैं इब्तदा कहल जाइत छै।

e) हश्व--दोसर पाँतिक बिचलका भागकैं पहिनेहे जकाँ हश्व कहल जाइत छै।

f) जरब--दोसर पाँतिक अन्तिम खण्डकैं जरब कहल जाइत छै। जरब मने अन्त।

उदारहरण लेल अमित मिश्र जीक एकटा शेर देखू--

हमर मुस्की/सँ हुनका आ/गि लागल यौ (1222/1222/1222)
हुनक कनखी/सँ तऽरका आ/गि लागल यौ (1222/1222/1222)

हमर मुस्की--सदर
सँ हुनका आ --हश्व
गि लागल यौ--अरूज
हुनक कनखी--इब्तदा
सँ तरका आ--हश्व
गि लागल यौ--जरब

ई तँ छल तीन रुक्न बला शेर तँ मामिला फरिछा गेल मुदा कम-बेसी रुक्न बला लेल एना मोन राखू--

1) जँ शेरक हरेक पाँतिमे दूटा रुक्न छै तँ ओहिमे हश्व नै होइत छै खाली सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब होइत छै।
2) जँ शेरक हरेक पाँतिमे तीनटा रुक्न छै तँ पूरा शेरमे दूटा हश्व हेतै आ एक-एकटा सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब हेतै। उपरका उदाहरण तीनेटा बला रुक्न पर अछि।

3) जँ शेरक हरेक पाँतिमे चारिटा रुक्न छै तँ पूरा शेरमे चारिटा हश्व हेतै आ एक-एकटा सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब हेतै।

4) जँ शेरक हरेक पाँतिमे पाँचटा रुक्न छै तँ पूरा शेरमे छह टा हश्व हेतै आ एक-एकटा सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब हेतै।

5) जँ शेरक हरेक पाँतिमे छह टा रुक्न छै तँ पूरा शेरमे आठ टा हश्व हेतै आ एक-एकटा सदर, अरूज, इब्तदा आ जरब हेतै।

एतेक देखलाक बाद ई बुझना जाइत अछि जे कोनो शेरक पहिल पाँतिक पहिल रुक्न "सदर "भेल आ अंतिम रुक्न "अरुज "भेल आ बचल बीच बला रुक्नकेँ "हश्व "कहल जाइत छै। तेनाहिते कोनो शेरक दोसर शेरक पहिल रुक्नकेँ "इब्तदा "कहल जाइत छै आ अंतिम रुक्नकेँ "जरब "आ बीचमे बचल रुक्नकेँ "हश्व "कहल जाइत छै। आब एनाहिते एक पाँतिमे जतेक रुक्न हो तकरा बाँटि सकै छी।
मुदा शेरक ई बाँट बखरा मात्र वर्णवृत बलामे नै लागत। उदाहरण लेल मानू जे अहाँ 2222112121 बला मात्रा क्रम लेलहुँ। मुदा ई मात्रा क्रम किनको लेल 222-2112-121 भऽ सकैए आ ऐमे ओ तँ किनको लेल 22-2211-2121 सेहो भऽ सकैए । आब लोक घनचक्करमे पड़ता जे ऐमे कोन तरहँसँ छह भागमे बाँटी। तँए हमर ई स्पष्ट मानब अछि जे जा धरि मैथिलीक अपन निज मात्राक्रम नै हो ताधरि ई नियम मात्र अरबी बहरमे प्रचलित मात्राक्रम जेना122+122+122 वा 2122+2122+2122 आदि सभपर लागत। सरल वार्णिक बहरमे सेहो ई नियम नै लागत। मूल रुक्नमे एकटा निश्चित नियमसँ मात्राकेँ घटा कऽ सेहो बहर बनाएल जाइत छै आ एहन बहर सभकेँ मुजाइफ बहर कहल जाइत छै। मुजाइफ बहर मात्र सालिम बहरसँ बनि सकैए। मुजाइफ बहरमे घटल रुक्न सभ ठाम नै आबि सकैए ओकर स्थान अरबी-फारसी-उर्दू गजलमे सुनिश्चित छै आ मुजाइफ रुक्न ठीक ओही स्थानपर एबाक चाही। अरबी-फारसी-उर्दू मिला कऽ कुल 60-62 टा एहन नियम छै जाहि अधारपर मुजाइफ बहर बनाएल जाइत छै मुदा गजलमे मुख्यतः 14-15 टा नियम लागै छै। ऐ नियम सभहँक विवरण निच्चा देल जा रहल अछि (मुजाइफ बहर लेल हिंदी अंग्रेजीक कोनो पोथी मने जे की हमरा लग रेफरेन्स रूपमे अछि से एकमत नै अछि। सभ अलग-अलग फर्मूला लगेने छथि। ऐ अवस्थामे हमरा जे विश्वसनीय लागल तकरे अधार मानलहुँ अछि ।)—
1) महजूफ---जै अर्कानक अन्तमे दू वा ओइसँ बेसी दीर्घ रहैत छै ताहिमहँक अन्तिम दीर्घ हटा देलासँ महजूफ नामक जिहाफ बनै छै जेना
122 केर अन्तिम दीर्घ हटेलासँ 12 बचै छै

1222 केर अन्तिम दीर्घ हटेलासँ 122 बचै छै

2122 केर अन्तिम दीर्घ हटेलासँ 212 बचै छै..आदि।

महजूफ जिहाफ शेरक अरूज आ जरब मात्रमे आबि सकैए।

एकटा उदाहरण लिअ--

1222+1222+122

1222+1222+122

ई मुजाइफ बहरक लक्षण। मानू जे आब जँ कोनो शाइर

122+1222+1222

122+1222+1222 लेता तँ अरबी-फारसी-उर्दूक हिसाबें ई मुजाइफ बहर नै हएत। कहबाक मतलब जे घटाएल रुक्न लेल जे स्थान निश्चित कएल गेल छै से वएह रहबाक चाही। मुदा मैथिलीमे हमरा जनैत एखन एहन निर्णय करब कने जल्दबाजी हएत कारण एखन मैथिली गजलक अपन बहर वा कही जे निज मात्राक्रम बनबाक प्रकियामे अछि आ तँए हमरा जनैत मैथिलीमे मुजाइफ बहरकँ हरेक स्थानपर राखल जाए। आ जखन निज मात्रा क्रम निश्चित भए जाए तखने निश्चित स्थान बला नियम लागू कएल जाए। अर्थात

122+1222+1222

122+1222+1222

ई मात्रा क्रम मैथिलीमे मुजाइफ बहर हएत । वा 1222+122+1222 सेहो मुजाइफ बहर भऽ सकैए। आब आगू देल जा रहल हरेक मुजाइफ रुक्न लेल एहने सन बूझल जाए।

2) मख्बून---जै अर्कानक शुरूआत दीर्घसँ हो तैमहँक पहिल दीर्घक बदलामे लघु लेलासँ मख्बून जिहाफ बनै छै। जेना

212 केर पहिल दीर्घक स्थानपर लघु लेलासँ 112

2122 केर पहिल दीर्घक स्थानपर लघु लेलासँ 1122

2212 केर पहिल दीर्घक स्थानपर लघु लेलासँ 1212 आदि।

ई जिहाफ शेरक कोनो स्थानपर लेल जा सकैए आ मैथिलीमे एहने सन रहत।

3) मतव्वी---जै अर्कानक शुरूमे दू वा दूसँ बेसी दीर्घ हो तैमे दोसर दीर्घक स्थानपर लघु लेलाँ मतव्वी जिहाफ होइत छै। जेना

2212 केर शुरूसँ दोसर दीर्घक स्थानपर लघु लेलासँ 2112

2221 केर शुरूसँ दोसर दीर्घक स्थानपर लघु लेलासँ 2121 आदि। ई जिहाफ शेरक कोनो स्थानपर लेल जा सकैए आ मैथिलीमे एहने सन रहत।

4) मक्फूफ---जै रुक्नक अन्तमे दीर्घ हो ओकरा हटा लघु देलासँ मक्फूफ जिहाफ बनै छै। जेना

1222 केर अन्तिम दीर्घ हटा कऽ लघु देलासँ 1221

2122 केर अन्तिम दीर्घ हटा कऽ लघु देलासँ 2121

2212 केर अन्तिम दीर्घ हटा कऽ लघु देलासँ 2211 आदि। ऐ जिहाफकेँ सदर, हश्व एवं इब्तदा,हश्वमे स्थान निश्चित छै मुदा मैथिलीमे उपरका हिसाबें राखल जाए।

5) मारफो--2221 केर लघु हटा कऽ दोसर दीर्घकेँ बदलामे लघु देलासँ मारफो जिहाफ होइ छै। जेना 2221 केर बदलामे 212। ई मात्र अरूज आ जरबमे आबि सकैए। मैथिलीमे सभ ठाम देलासँ नीक।

6) मत्कूअ---2212 केर मुजाइफ वा मारफो मुजाइफमे बीच बला लघु हटा देलासँ मत्कूअ जिहाफ होइ छै। जेना 212 केर लघु हटा देलासँ 22। ई जिहाफ शेरक कोनो स्थानपर लेल जा सकैए आ मैथिलीमे एहने सन रहत।

7) मश्कूल---2212 केर पहिल आ अन्तिम दीर्घक बदलामे लघु देलासँ मश्कूल जिहाफ बनै छै। जेना 2212 केर बदलामे 1121। सदर-इब्तदा-हश्व एकर स्थान छै मुदा मैथिलीमे उपरकाँ हिसाबैँ देखू।

8) मक्बूज---जै अर्कानक अन्तमे दूटा दीर्घ हो तकर अन्तसँ पहिल दीर्घक स्थानपर लघु बना देलासँ मक्बूज जिहाफ होइत छै। तेनाहिते जै अर्कानक अन्तमे तीनटा दीर्घ हो तकर अन्तसँ दोसर दीर्घक स्थानपर लघु देलासँ मक्बूज जिहाफ होइ छै। जेना--

122 केर अन्तसँ पहिल दीर्घक बदलामे लघु देलासँ 121

1222 केर अन्तसँ दोसर दीर्घक स्थानपर लघु देलासँ 1212। ई जिहाफ शेरक कोनो स्थानपर लेल जा सकैए आ मैथिलीमे एहने सन रहत।

9) अस्लम--122 केर लघु हटा देलासँ अस्लम जिहाफ बनै छै। जेना 122 केर बदलामे 22। ई जिहाफ शेरक कोनो स्थानपर लेल जा सकैए आ मैथिलीमे एहने सन रहत।

10) अखरब---1222 केर लघु हटा कऽ अन्तिम दीर्घकेँ बदलामे लघु देलासँ अखरब बनै छै। जेना-1222 केर बदलामे 22 सदर आ इब्तदा एकर स्थान छै। मैथिलीमे उपरका हिसाबसँ देखू।

11) मन्हूर---2221 केर अन्तसँ 221 हटा देलासँ मन्हूर बनै छै। जेना 2221 बदलामे 2 अरूज आ जरब एकर स्थान छै। मैथिलीमे उपरका हिसाबसँ देखू।

12) अस्तर---1222 केर लघु हटा कऽ बिचला दीर्घक स्थानपर लघु देलासँ अस्तर बनै छै। जेना 1222 बदलामे 212। एकर स्थान अरूज आ सदर-इब्तदा-हश्व छै। मुदा मैथिलीमे उपरकाँ हिसाबसँ देखू।

13) अखरम---1222 केर लघु हटा देलासँ अखरम बनै छै। जेना 1222 बदलामे 222। एकर स्थान सदर-इब्तदा छै। मैथिलीमे उपरका हिसाबसँ देखू।

14) अबतर----122 केर 12 आ 1222 केर 122 हटा देलासँ अबतर बनै छै। मने 122 बदलामे 2 वा 1222 बदलामे 2। अरूज-जबर एकर स्थान छै मुदा मैथिलीमे सभ स्थानपर दिऔ।

ऐ जिहाफ सभहँक अलावे असरम, मुस्बबा, मजाल,मुरफ्फल,मुख्लला,मतमूस,अजल,अश्तर, आरज आदि-आदि नाना प्रकारक जिहाफ होइ छै। मुदा बहुत रास जिहाफ गजल छोड़ि आन-आन विधामे लागै छै। जिज्ञासु आन-आन रूपें एकरा आनि सकै छथि।

ऐकँ अलावे बहुत बेर दूटा वा तीन टा जिहाफ (दू टा बेसी बेर) आबै छै। तकरो मुजाइफ बहर मानल जाइत छै। जेना--मक्बूज महज़ूफ (12112112112) आदि आर बहुत रास एहन उदहारण छै पाठक मूल अरबी-फारसी-उर्दू अरूजक पोथीसँ सहायता प्राप्त कऽ सकै छथि। ऐमे मुजाइफ केर निश्चित स्थानक हिसाबसँ राखल जाइत छै। मुदा मैथिलीमे उपरका हिसाबसँ देखू। मुजाइफ बहरक नाम सालिम वा मुरक्बबे जकाँ होत छै बस खाली जिहाफक नाम आ सालिम वा मुरक्बबक बदलामे मुजाइफ सेहो आबि जाइ छै। जेना बहरे मुतकारिब मुसद्दस महज़ूफ मुजाइफ,मुतकारिब मुसम्मन मक्बूज आदि। शाइर आन नाम सभ एनाहिते बना सकै छथि।

खण्ड-19

आब हमरा लोकनि ई जानी जे अरबीक एहि आठो रुक्नकेँ मैथिलीमे केना बदलि सकैत छी। मैथिलीमे दू प्रकारक छन्द पद्धति अछि मात्रिक आ वार्णिक ।

A) मात्रिक--एहिमे दू, तीन, चारि, पाँच आ छह मात्रा खण्डके जोड़ि कए अक्षर विन्यास कएल जाइत छैक। आ एहि अक्षर विन्यासकेँ गण कहल जाइत छैक। मात्रिक छन्दमे पाँच टा गण होइत अछि--

क) ण (णगण) = द्विकल मने दू मात्राक खण्ड

ख) ढ (ढगण) = त्रिकल मने तीन मात्राक खण्ड

ग) ड (डगण) = चतुष्कल मने चारि मात्राक खण्ड

घ) ठ (ठगण) = पंचकल मने पाँच मात्राक खण्ड

ङ) ट (टगण) = षटकल मने छह मात्राक खण्ड

एहि गणकेँ अतिरिक्त मैथिलीमे एक मात्रा, सात मात्रा आ आठ मात्राक वर्ण विन्यास सेहो होइत छैक। मुदा ओकरा गण नहि मानल जाइत छैक। कारण एक मात्रा अपूर्ण भेल। तेनाहिते सात वा आठ मात्रा बला विन्यास कोनो ने कोनो रुपेँ उपरक पाँचो गणसँ मिलैत अछि। उदाहरण लेल सात मात्राक वर्ण विन्यास देखू" पहिराओल" = 11221 । आब एहिमे देखू पहिल तीन मात्रा मने (112) चतुष्कलक रुप थिक आ अन्तिम दूनू मात्रा मने (21) त्रिकलक रुप थिक। आठ मात्राक लेल एहने सन गप्प। उपरक पाँचो मात्रा विन्यासकेँ अलग-अलग रुपेँ लिखल जा सकैए आ एहि हिसाबें द्विकल दू रूप मे लिखल जाइत अछि--

1) घर = 11 (गजलमे 2)

2) ओ = 2

त्रिकल तीन रूप मे लिखल जाइत अछि--

1) भिजा = 12

2) अपन = 111 (गजलमे 12)

3) आब = 21

चतुष्कल पाँच रूप मे लिखल जाइत अछि--

1) छौंड़ी = 22

2) तकरा = 112 (गजलमे 22)

3) चुमान = 121

4) फेकल = 211 (गजलमे 22)

5) सदिखन = 1111 (गजलमे 22)

पञ्चकल आठ रूप मे लिखल जाइत अछि--

1) लड़ाकू = 122

2) तिलकोर = 1121 ((गजलमे 221)

3) ठेकुआ = 212

4) तरेगन = 1211 (गजलमे 122)

5) सरधुआ = 1112 (गजलमे 122)

6) जागरण = 2111 (गजलमे 212)

7) अंगूर = 221

8) चहटगरि = 11111 (गजलमे 122)

षटकल तेरह रूप मे लिखल जाइत अछि---

1) सोहारी = 222

2) बपखौकी = 1122 (गजलमे 222)

3) सुधामयी = 1212

4) मादकता = 2112 (गजलमे 222)

5) असगरुआ = 11112 (गजलमे 222)

6) सिताएल = 1221

7) लालटेन = 2121

8) खटखटाह = 11121 (गजलमे 2121)

9) मोताबिक = 2211 (गजलमे 222)

10) अधमौगति = 11211 (गजलमे 222)

11) सुरेबगर = 12111 (गजलमे 1212)

12) राजभवन = 21111 (गजलमे 2112)

13) चपलचरण = 111111 (गजलमे 1212)

जेना कि पहिनेहेंसँ कहैत आबि रहल छी जे गजलमे दूटा लघुकेँ सेहो दीर्घ मानल जाइ छै।
तँ चलू आब एहि पाँचो गणसँ अरबी रुक्न बनाबी (संस्कृतानुसार उदाहरण दऽ रहल छी)। ई अरबी रुक्न आठ अछि। तँ देखू एकर नियम--
1) जँ द्विकलक (णगनक) एहन रूप जाहिमे एकसरें दीर्घ मने22 (जेनाजे, गे, खो, जो आदि) रहए आ तकरा बाद पञ्चकल (ठगण)क ओ रूप रहए जाहिमे पहिल वर्ण लघु आ तकरा बाद दूनू दीर्घ (122) हो तँ जे रूप बनत से उर्दू मे "फाइलातुन" कहबैत छैक। एकटा उदारहरण लिअ "गे सुशीला" एकर मात्रा क्रम अछि (2122) आब एकरा "फाइलातुन" (2122)सँ मिलाउ। एकरा एना देखू 2 + 122 = 2122
2) जँ पञ्चकल (ठगण)क ओ रूप जाहिमे पहिने दूटा दीर्घ आ तकरा बाद एकटा लघु हो (221) तकरा द्विकल (णगन)क ओहन रूपसँ जोड़ू जाहिमे एकसरें दीर्घ (2) हो। तँ ओ "मुस्तफइलुन" (2212) बनत। एकरा एना देखू221 + 2 = 2212
3) जँ त्रिकल (ढगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल लघु आ दोसर दीर्घ (12) हो तकरा चतुष्कल (डगण)क ओहन रूपसँ जोड़ू जाहिमे दूनू दीर्घ (22) छैक। तखन जे बनत तकरा "मफाईलुन" (1222) बनत मने। उदाहरण लेल-- निशा एलै (1222)। एकरा एना देखू12 + 22 = 1222
4) जँ चतुष्कल (डगण)क ओहन रूप जकर शुरूआतमे दूटा लघु आ अन्तमे एकटा दीर्घ होइ मने (112) तकरा त्रिकल (ढगण)क ओहन रूपसँ जोड़ू जाहिमे पहिल लघु आ अंतिम दीर्घ मने (12) तँ "मुतफाइलुन" (11212) बनि जाएत। एकरा एना देखू112 + 12 = 11212
5) जँ पञ्चकल (ठगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल लघु दोसर दीर्घ आ तकरा बाद अन्तिम दूनू लघु मने (1211) हो तकरा द्विकल (णगण)क ओहन रूपसँ जोड़बै जाहिमे एकटा दीर्घ होइक मने (2) तँ मफाइलतुन बनि जाएत। एकरा एना देखू1211 + 2 = 12112
6) जँ चतुष्कल (डगण)क ओहन रूप जाहिमे दूनू दीर्घ हो (22) मने तकरा त्रिकल (ढगण)क ओहन रूपसँ जाहिमे पहिल दीर्घ आ अन्तिम लघु (12) मने हो तँ "मफऊलात" (2212) बनत। एकरा एना देखू22 + 12 = 2212
7) पञ्चकल (ठगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल लघु आ तकरा बाद दूनू दीर्घ हो मने (122) से "फऊलुन" कहाइत अछि। एकरा एना देखू 122
8) पञ्चकल (ठगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल दीर्घ आ तकरा बाद लघु तकरा बाद फेर दीर्घ हो मने (212) से "फाइलुन" कहल जाइत अछि। एकरा एना देखू 212

खण्ड-20

B) वार्णिक छन्दमे (वार्णिक छन्दमे हरेक पाँतिक मात्रा क्रम आ शब्दक संख्या एक समान रहैत छै) तीन-तीन मात्रा खण्डक आठ विन्यास कएल जाइत अछि। एहि तीन-तीन खण्डक गनणा "दशाक्षरी" पद्धतिसँ कएल जाइत

अछि। इ एक प्रकारक सूत्र अछि। इ सूत्र अछि" यमाताराजभानसलगा" । एहि दसो अक्षरमेसँ पहिल आठ अक्षर आठो गणक नामक पहिल अक्षर थिक। आ ई आठ गण अछि---

य = यगण

मा = मगण

ता = तगण

रा = रगण

ज = जगण

भा = भगण

न = नगण

स = सगण

आ अन्तिम दूटा अक्षर "लगा" कोनो गण नहि अछि। कारण इ जे वार्णिक छन्दमे तीन-तीन मात्रा होइत छैक। मुदा "लगा" केर बाद कोनो अक्षर नहि अछि। तँए "स" के बाद कोनो गण नहि बनि सकैत अछि। आब गण बनेबाक तरीका देखू अहाँ जे गण बनबए चाहैत छी तकर पहिल अक्षर आ तकरा बादक दू अक्षर आरो लिअ। जे अक्षर क्रम आएत तकर मात्रा गणक मात्रा कहाएत। उदाहरण लेल मानू हमरा "मगण" बनेबाक अछि तँ सभसँ पहिने "मा" लिअ तकरा बादक दू शब्द अछि "तारा" । आब एकरा एकठाम लेने "मातारा" बनत। आब एकर मात्रा अछि--222 । तँ ई भेल "मगण" । एकटा आर उदाहरण लिअ मानू हमरा जगण बनेबाक अछि तँ ज लिअ आ तकरा बाद दू शब्द अछि "भान" । तँ दूनू मिला कए "जभान" बनत मने "जगण" केर मात्रा क्रम 121अछि। एनाहिते आठो गण बनैत अछि। आठो गणक रुप देल जा रहल अछि---

गणक नाम	दशाक्षरी खंड	मात्रा क्रम
यगण	यमाता	122
मगण	मातारा	222
तगण	ताराज	221
रगण	राजभा	212
जगण	जभान	121
भगण	भानस	211
नगण	नसल	111
सगण	सलगा	112

वार्णिक छन्दकेँ वर्णवृत सेहो कहल जाइत छै। तँ चलू आब एहि आठो गणसँ अरबी रुक्न बनाबी। ई अरबी रुक्न

आठ अछि । तँ देखू एकर नियम--

1) यगण (122)सँ पहिने एकटा दीर्घ लगेने “फाइलातुन” बनत। मने 2 + यमाता = 2122 = फाइलातुन (वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कए सकैत छी रगण मने (212) कैँ बाद एकटा आर दीर्घ लगेने “फाइलातुन” बनत। मने 212 + 2 = 2122

2) रगण (212)सँ पहिने एकटा दीर्घ लगेने “मुस्तफइलुन “बनत। मने 2 + रगण = 2212 = मुस्तफइलुन (वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कए सकैत छी तगण मने (221) कैँ बाद एकटा आर दीर्घ लगेने “मुस्तफइलुन” बनत। मने 221 + 2 = 2212

3) यगण (122)कैँ बाद एकटा दीर्घ लगेने “मफाईलुन” बनत। मने 122 + यगण = 1222 = मफाईलुन (वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कए सकैत छी मगण मने (222)सँ पहिने एकटा लघु लगेने “मफाईलुन” बनत। मने 1+222 = 1222

4) रगण (212)सँ पहिने दूटा लघु लगेने “मुतफाइलुन” बनत। मने 11 + रगण = 11212 = मुतफाइलुन (वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कए सकैत छी सगण मने (112) कैँ बाद एकटा लघु आ तकरा बाद एकटा दीर्घ लगेने “मुतफाइलुन” बनत। मने 112 + 1 + 2 = 11212

5) जगण मने (121) कैँ बाद एकटा लघु आ तकरा बाद एकटा दीर्घ लगेने “मुफाइलतुन” बनत। मने 121 + 1 + 2 = 12112

6) मगण मने (222) के बाद एकटा लघु लगेने “मफऊलात” बनत। मने 222 + 1 = 2221 = मफऊलात (वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कए सकैत छी तगण मने (221)सँ पहिने एकटा दीर्घ लगेने “मफऊलात” बनत। मने 2 + 221 = 2221

7) यगण मने (122) पूरा-पूरी “फऊलुन” कैँ बराबर अछि।

8) रगण मने (212) पूरा-पूरी “फाइलुन” कैँ बराबर अछि।

तँ दूनू प्रकारक छन्द आ तकरा रुक्नमे बदलनाइ हमरा लोकनि सेहो देखलहुँ। तँ आब चलू तैआर भए जाउ गजल लिखए आ पढ़ए लेल। एहि लेखक सहायतासँ खाली मैथिलीए नहि कोनो आन भाषामे सेहो सही गजल लीखि सकैत छी, खाली काफियाकैँ नियम बदलि जेतै भाषाक हिसाबें। ऐ ठाम ई स्पष्ट करब जरूरी जे अरबी बहर संस्कृतक वार्णिक छन्दक बराबर अछि। गजल मात्रिक वा सरल वार्णिकमे नै हेबाक चाही (मैथिलीमे गजल लेल किएक सरल वार्णिक चलल से आगू देखा रहल छी)।

गजल कहलाक पछाति शाइर ओकर बहरक नाम, मात्रा क्रम सेहो लिखथि। एकर सभसँ बड़का फायदा ई अछि जे पाठक सभ सेहो ई बुझैत चलताह जे कोन बहरक की लक्षण छै आ हमरा हिसाबें ई गजल विधाक लेल खादक काज करत। किछु लोक बहरक नाम वा मात्रा क्रम लिखबाक विरोध करै छथि। कहै छथि जे हिन्दी आ उर्दूमे बहरक नाम नै लिखल जाइ छै। मुदा ओहि लोककैँ ई नै बूझल छै जे संस्कृत परंपरामे हमर ऋषि-मुनि सभ अपन श्लोक शुरु करऽसँ पहिनेहे छंदक नाम लीखि दै छलाह। दुर्गा शप्तशती प्रायः सभ गोटें देखने-पढ़ने हेता। मार्कण्डेय

ऋषि ग्रंथक शुरूमे कहि दै छथि जे ई श्लोक सभ अनुष्टुप छंदमे अछि। जखन हमर पुरखा सभ बहुत पहिनेसँ छाती ठोकि कऽ छंदक नाम लीखि सकै छलाह तखन ऐ अत्याधुनिक कालमे हम सभ किएक नै लीखि सकै छी। की हमर सभहँक आत्मविश्वामे कमी अछि? हँ ओहन लोक सभ जे की छंदक रचनामे अशक्त छथि ओ तँ बहर वा छंदक नामसँ डेरेबे करता।

संस्कृतक वार्णिक छंद आ अरबी बहरक माँझ सम्बन्ध

संस्कृतक वार्णिक छंद आ अरबीक बहर दूनू मात्राक्रम अधारित अछि तँए संबंध हएब स्वाभाविक छै मुदा ऐ संबंधक चर्च करैत काल प्रायः सभ विद्वान किछु तथ्य बिसरि गेल छथि। हम कने ऐ तथ्य दिस अहाँ सभकेँ लऽ चलै छी--

1) संस्कृतमे मात्र अंतिम लघुकेँ दीर्घ वा अंतिम दीर्घकेँ लघु मानबाक परम्परा अछि। मुदा उर्दू शाइरीमे शब्दक अंत महँक दीर्घ सेहो लघु होइत अछि।

2) संस्कृतक वर्णवृतमे दू टा लघुकेँ एकटा दीर्घ मानबाक परम्परा वा नियम नै अछि। उर्दूमे दूटा लघु मीलि एकटा दीर्घ सेहो बनैत अछि।

3) संस्कृतक वार्णिक छन्दमे जतेक मात्राक्रम छै ततेक अक्षर भेनाइ जरूरी अछि, तखने ओकरा वर्णवृत मानल जाइत अछि। मुदा ई उर्दूमे नै अछि। आब देखी किछु उदाहरण--

1) संस्कृत नाम “समानिका” मात्रा क्रम 212+12+12
एकर अरबी नाम भेलै “बहरे रमल मुरब्बा मकफूफ महजूफ”

2) संस्कृत नाम बिद्दुन्माला। मात्रा क्रम 22222222
एकर अरबी नाम भेलै “बहरे गरीब मुसद्दस मजमून मुसक्किन”

3) संस्कृत नाम भुजंगप्रयात। मात्राक्रम 122+122+122+122
एकर अरबी नाम भेलै “बहरे मोतकारिब मोसम्मन सालिम”

4) संस्कृत नाम त्रोटक। मात्राक्रम 112+112+112+112
एकर अरबी नाम भेलै “बहरे मुतदारिक मुसम्मन मजनून”

5) संस्कृत नाम पंच चामर। मात्राक्रम 12+12+12+12+12+12+12+12
एकर अरबी नाम भेलै “बहरे मुतकारिब मुसम्मन महजूफ

छंद आ ओकर भेदकेँ हजारों तरीकासँ प्रयोगमे आनल जाइत रहलैए तँए ई बहुत संभव जे सभ संस्कृतक छंद अरबी बहरक समान हुअए आ ई शोधक विषय अछि। मुदा हमर स्पष्ट मानब अछि जे मैथिलीक वर्णवृत संस्कृत ओ अरबीसँ भिन्न ढ़ाँचा लेने हेतै। तँए संस्कृत ओ अरबी ढ़ाँचाक सहायतासँ मैथिलीक ढ़ाँचा बनेबाक प्रयास रहत हमर आ ई काज तुरंत हेतै से नै ऐमे करीब 100-150 बर्ख लगतै।
ओना ऐठाम ई धेआन राखब जरूरी जे 122+122+122+122 अरबीमे बहरे मोतकारिब होइत छै बल्कि ओकरा बदलामे 122+122+122 करबै वा 122+122+122+122+122 करबै तैयो बहरे मोतकारिब हेतै मने रुक्न वा गणकेँ घटेला-बढ़ेलासँ अरबी बहर प्रभावित नै होइ छै खाली बहरक नाममे संख्यावाची शब्द बदलि जाइत छै। मुदा संस्कृतमे एहन गप्प नै छै जँ अहाँ 122+122+122+122 बदलामे 122+122+122 करबै वा 122+122+122+122+122 करबै तखन ओ भुजंगप्रयात छंद नै रहत बल्कि ओ दोसर छंद भऽ जाएत।

खण्ड-21

मैथिलीमे बहर

उपरमे हमरा लोकनि जतेक बहर देखलहुँ ताहिमेसँ किछु बहरक उपर मैथिलीमे गजल कहल गेल। मुदा मैथिलीक किछु सम्पादक सभ गोलबंदी कए ई देखेबाक प्रयास केलक जे गजलमे बहर होइते नै छै। अर्थात जीवन झासँ लए कए 2008 धरि मैथिलीमे बहर बला गजल रहितो देखार नै छल। 2008क बाद गजेन्द्र ठाकुर उपरका बहरमे गजल तँ कहबे केलाह संगहि-संग मैथिली लेल एकटा अन्य बहर सेहो तकलाह जकर नाम देल गेल वार्णिक बहर। एहि बहरक मतलब छैक मतलाक पहिल पाँतिमे जतेक वर्ण छैक ओहि गजलक आन हरेक शेरक पाँतिमे ओतबए वर्ण हेबाक चाही। उदाहरण---

जहिआ धरि हमर श्वास रहत
तहिआ धरि हुनक आस रहत

आब एकरा गानू। एहि दूनू पाँतिमे 13-13 वर्ण अछि। ई भेल सरल वार्णिक बहर। वर्ण कोना गानल जाए ताहि लेल धेआन राखू
हलंत बला अक्षरकेँ 0 मानू
संयुक्ताक्षरमे संयुक्त अक्षरके 1 मानू। जेना की “हरस्त” मे स्त=1 भेल।
तकरा बाद सभ अक्षरकेँ 1 मानू चाहे ओकर मात्रा लघु हो की दीर्घ।
इरा मल्लिकजीक सरल वार्णिक बहरमे कहल एकटा गजल उदाहरण लेल ऐठाम दऽ रहल छी ---

बाट जाम होय कि मगज विकास रुकबे करत
बेइमान हो नेता तँ देशक नैया डूबबे करत

पूँजीपति हो लालची चोर धनबटोर सूदखोर
विकराल मँहगाइ तँ आसमान छुबबे करत

भूखसँ बिलबिलाइत अछि बाल बच्चा वृध्दजन
अइ सरकार के थूका फजीहत करबे करत

बढ़ैत जनसँख्यासँ त्रस्त अछि सौंसेसँसार आइ
बेरोजगारीक मारिसँ लाचार तँ होबहे पड़त

जहि देशमे होय एकता अखँडताक दिव्यमंत्र
ओते सुख शांति समृध्दि के त्रिवेणी बहबे करत

वर्ण-19

वार्णिक बहर दू तरहक अछि--सरल वार्णिक बहर, आ वार्णिक---
1) सरल वार्णिक बहर उपरका सभ उदाहरण सरल वार्णिकक अछि।
2) वार्णिक एहिमे वर्णक संग-संग मात्राक सेहो धेआन राखए पड़ैत छैक। मने वर्णक संख्या तँ निश्चित हेबाके चाही संगहि-संग ह्रस्वके निच्चा ह्रस्व आ दीर्घ के निच्चा दीर्घ हेबाके चाही। उदाहरण लेल—

नचनी नाच नचा गेल प्रेम हुनकर
जिनगी बाँझ बना गेल प्रेम हुनकर

आब एहि शेरके देखू दूनू पाँतिमे 15 वर्ण तँ छैके संगे-संग पहिल पाँतिमे जाहि ठाम जे मात्रा छैक वएह मात्रा दोसरो पाँतिमे ओही ठाम छैक। तँ ई भेल वार्णिक बहर। जँ अहाँ एकरा मात्रा क्रम देबै तँ पता चलत जे एकर रुप एना छैक—2221-1222-2122
आब कने ई विचारी जे मैथिलीमे कोन बहरके प्रधानता दी। जेना की हमरा लोकनि जनैत छी “सरल वार्णिक बहर” सभसँ बेसी हल्लुक अछि तँए गजलगो (शाइर) शुरुआतमे एही बहरमे गजल लिखथि तँ नीक। तकरा बाद

अभ्याससँ दोसर बहर (वार्णिक बहर) पर आबथि आ तकरा बाद उर्दू बला बहरपर हाथ अजमाबथि। ऐठाँ ई कहब विशेष रूपें जरूरी अछि जे सरल वार्णिक बहर मात्र शुरूआती अभ्यास लेल अछि। अंतिम लक्ष्य छै वर्णवृत वा अरबी बहर (जे गजलक शुद्ध बहर छै)कैं प्रयोग। जेना बच्चाकैं जखन चलल नै होइ छै तखन ओकरा कटही गाड़ी पकड़ा चलेनाइ सिखाएल जाइत छै तेनाहिते सरल वार्णिक केर प्रयोग करैत शाइर गजल कहनाइ सीखि सकैत छथि (जँ प्रतिभाशाली शाइर वर्णेवृत बहरसँ शुरू करथि तँ नीक) । जेना आदमी जुआन भेलापर चलबा लेल कटही गाड़ीक प्रयोग करै छथि तँ समाजमे हँसीक पात्र बनै छथि तेनाहिते सिखलाक बाद जँ शाइर सरल वार्णिक बहरक प्रयोग करै छथि तँ हुनक ई लक्षण मेहनत नै करबाक अछि। अंतमे सबसँ खास गप्प गजल चाहे अहाँ कोनो बहर मे किएक ने लिखब रदीफ आ काफियाक नियम सभ लेल एकै रंग रहत (शुरूआतमे सरल वार्णिक बला गजल सभमे काफियाक विस्तृत प्रयोग नै भऽ सकल अछि जाहि लेल हमहीं दोषी छी)।

मैथिली गजलमे कोन बहर हेबाक चाही तै संबंधमे श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक विचार देखू (हुनक ई विचार हुनके गजल संग्रह "धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ" मे संकलित "मैथिली गजल शास्त्र" मे व्यक्त भेल अछि) --" कोनो गजलक पाँती (मिसरा)क वज्न/ वा शब्दक वज्न तीन तरहेँ निकालि सकै छी, सरल वार्णिक छन्दमे वर्ण गानि कऽ; वार्णिक छन्दमे वर्णक संग ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) क क्रम देखि कऽ; आ मात्रिक छन्दमे ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) क क्रम देखि कऽ। जिनका गायनक कनिकबो ज्ञान छन्हि ओ बुझि सकै छथि जे गजलक एक पाँतीमे शब्दक संख्या दोसर पाँतीक संख्यासँ असमान रहि सकैए, मुदा जँ ऊपर तीन तरहमेसँ कोनो तरहेँ गणना कएल जाए तँ वज्न समान हएत। मुदा आजाद गजल बे-बहर होइत अछि तँ ओतऽ सभ पाँती वा शब्दमे वज्न समान हेबाक तँ प्रश्ने नै अछि। ऐ तीनू विधिसँ लिखल गजलमे मिसरामे समान वज्न एबे टा करत। ओना ई गजलकार आ गायक दुनूक सामर्थ्यपर निर्भर करैत अछि; गजलकार लेल वार्णिक छन्द सभसँ कठिन, मात्रिक ओइसँ हल्लुक आ सरल वार्णिक सभसँ हल्लुक अछि, मुदा गायक लेल वार्णिक छन्द सभसँ हल्लुक, मात्रिक ओइसँ कठिन, सरल वार्णिक ओहूसँ कठिन आ आजाद गजल (बिनु बहरक) सभसँ कठिन अछि।"
श्री ठाकुरजीक मंतव्यक पुष्टि चैतन्य महाप्रभु द्वारा रचित "हरे राम हरे कृष्ण" मंत्रसँ सेहो होइत अछि। ऐ मंत्रक पाठ वा गायन दू तरहें होइत छै। पहिल भेल--

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

आब पहिल पाँतिक मात्रा क्रम देखू--1221—1221--21-21-12-12
फेर दोसर पाँतिक मात्राक्रम देखू--1221—1221--21-21-12-12

मने दूनू पाँतिक मात्राक्रम बराबर अछि।

आब एही मंत्रक दोसर रूप देखू--

हरे रामा हरे रामा रामा रामा हरे हरे
हरे कृष्णा हरे कृष्णा कृष्णा कृष्णा हरे हरे

आब ऐ दू पाँतिक मात्राक्रम देखू—1222-1222-22-22-12-12
दोसरो पाँतिक मात्राक्रम अछि --1222-1222-22-22-12-12

मने स्वरूप बदलि गेलै, शैली बदलि गेलै मुदा मात्राक्रम निर्धारण नै बदलि सकलै। आ एही कारणसँ ई मंत्र जतबे पढ़ल-लिखलमे प्रचार पेलक ततबे अशिक्षितमे सेहो। इस्काँन द्वारा एही मंत्रकेँ आगू बढ़ाएल गेलै मात्र एही लोचक कारणे आ विदेशी सभ आब एकरा नीक जकाँ गाबै छथि। आब अहाँ सभ कहबे करब जे जँ सरल वार्णिक बहर गजल लेल नै छै तखन अहाँ सभ एकरा प्रचारित किए केलहुँ। सही गप्प मुदा श्री गजेन्द्र ठाकुर जी किछु फायदा सोचि एकरा विवेचित केलाह। टू टा जे तात्काल फायदा भेल से देखू
1) विलुप्त होइत वैदिक छन्दक पुर्नजागरण लेल। सभ वैदिक छन्द सरल वार्णिक छन्द अछि। वर्तमानमे श्री गजेन्द्र ठाकुर जी एकरा विवेचित कए मात्र किछुए समयमे आ सेहो सरल रूपें वेद-विज्ञानक परिचय करबौलथि। एखन जे गजल लिखै छथि वा जे गजेन्द्र ठाकुर जीक पोथी वा अनचिन्हार आखर पढ़ताह हुनका स्वतः ई बुझा जेतन्हि जे गायत्री छन्द की छै आ अनुष्टुप छन्द की ।
2) बहुत गजलकार (मैथिलीक) छन्दक दृष्टियें अनुशासनहीन गजलकार छलाह। तँए सभकेँ अनुशासनमे अनबाक लेल पहिने सरल वार्णिक बहर देल गेल। ई साधारण नियम छै जे जँ कोनो आदमी हल्लुक अनुशासन नै मानि सकैए ओ भारी अनुशासन कोना मानत। तँए सभहँक शुरुआत हल्लुक बहरसँ भेल। एकटा खास गप्प-हिन्दीमे बहुतों गजलकार मात्रिक छन्दमे सेहो गजल लिखै छथि मुदा एकर ई मतलब नै जे मात्रिक छन्द गजलक छन्द अछि। हिन्दी बला सभ मेहनति नै करऽ चाहै छथि तँए मात्रिक छन्दमे लिखै छथि आ जखन मेहनति करबाके नै छै तखन तँ "सरल वार्णिक बहर "सभसँ नीक। सभ झंझटि खत्म। सदिखन मोन राखू जे गजलक बहर वा छन्द वर्णवृत थिक। मात्रिक वा सरल वार्णिक नै। बहुतों हिन्दी व्याकरण आ छन्दक पोथीमे वार्णिक वा वर्णवृतक परिभाषा मात्रिक छन्द सन दऽ देल गेल छै वा जानि बूझि कऽ देल जा रहल छै आ मैथिल तँ बस राति-दिन हिन्दीक नकलमे लागल रहै छथि तँए विशेष सावधानीक जरूरति अछि। मोन राखू—
1) हरेक पाँतिक वर्णकेँ गानि कऽ छन्द बनलापर सरल वार्णिक छन्द वा बहर भेल।
2) हरेक पाँतिक मात्राक्रम ओ वर्ण संख्या समान रहलापर जे छन्द वा बहर बनै छै से वार्णिक वा वर्णवृत भेल

(गजलमे मात्राक्रम बराबर हेबाक चाही, जँ वर्ण संख्या समान भेल तँ बहुत उत्तम)

3) हरेक पाँतिक मात्राक जोड़कैँ बराबर राखि कऽ छन्द वा बहरक निर्माण भेलापर ओ मात्रिक छन्द वा बहर भेल।

चूँकि गजलक हरेक पाँतिक मात्राक्रम बराबर होइत छै आ तँए मात्राक जोड़ सेहो बराबर होइ छै आ साइत तँए लोक सभकैँ ई भ्रम होइ छै जे गजल मात्रिक छन्दपर आधारित छै मुदा मोन राखू जे गजलमे सदिखन मात्रा क्रम बराबर हेबाक चाही। तेनाहिते हिन्दीक विद्वान सभ बहर आ छन्दकैँ दू अलग-अलग वस्तु मानै छथि मुदा ई गलत थिक। वस्तुतः बहर आ छन्द एकै छै। मात्र एकटा अंतर छै जे बहर अरबी शब्द छै आ छन्द संस्कृतक। ओना हिन्दीक विद्वान सभ कविता आ पोयममे सेहो अंतर कहि सकै छथि भविष्यमे। मुदा जँ विशेष रूपें कही तँ छन्द आ बहरमे मात्र भाषिक अंतर छै। मैथिलीमे किछु गोटे मानै छथि जे गजलमे कोनो बहर, कोनो सीमा कोनो बंदिश नै होइ छै आ ने कोनो व्याकरण नै होइ छै। ई हुनक सोच छनि मुदा हँसी तखन आबै छै जखन की ओ लोक सभ उर्दू ओ किछु हिन्दीक शाइर सभहँक गजल उठा कऽ कहै छथि जे एहने गजल हेबाक चाही। हेबाक तँ चाही मुदा तखन फेर व्याकरणोकैँ तँ हेबाक चाही। ऐ ठाम हम हिन्दी-उर्दूक किछु गजलकारक गजलकैँ तक्ती कऽ कऽ देखा रहल छी जे कोना हिनकर सभहँक गजल व्याकरण ओ बहरमे अछि। मैथिलीक अराजक गजलकार सभ हिंदीक निराला, दुष्यंत कुमार आ उर्दूक फैज अहमद फैज केर बहुत मानै छथि। एकर अतिरिक्तो ओ सभ अदम गोंडवी मुन्नवर राना आदिकैँ मानै छथि। मैथिलीक अराजक गजलकार सभहँक हिसाबें निराला, दुष्यंत कुमार आ फैज अहमद फैज सभ गजलक व्याकरणकैँ तोड़ि देलखिन मुदा ई भ्रम अछि। सच तँ ई अछि जे निराला मात्र विषय परिवर्तन केला आ उर्दू शब्दक बदला गजलमे हिंदी शब्दक प्रयोग केला, तेनाहिते दुष्यंत कुमार इमरजेन्सीक विरुद्ध गजल रचना क्रांतिकारी रूपें केलथि। फैजकैँ साम्यवादी विचारक गजल लेल जानल जाइत अछि। मुदा ई गजलकार सभ विषय परिवर्तन केला आ समयानुसार शब्दक प्रयोग बेसी केला। हम ऐठाम पहिने निराला आ शमशेर बहादुर सिंह केर गजलक व्याकरण देखा रहल छी आ तकर बाद जयशंकर प्रसाद सहित दुष्यंत कुमार, फैज अहमद फैज, अदम गोंडवी, मुनव्वर राना सहित आन-आन गजलकारक गजलक व्याकरण देखा रहल छी। तँ पहिने निराला आ शमशेर बहादुरक गजलकैँ देखू—

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाए जो पूँजी तुम्हारी मिल में है

मतला (मने पहिल शेर)क मात्राक्रम अछि--2122+2122+2122+212 आब सभ शेरक मात्राक्रम इएह रहत। एकरे बहर वा की वर्णवृत कहल जाइत छै। अरबीमे एकरा बहरे रमल केर मुजाइफ बहर कहल जाइत छै। मौलाना हसरत मोहानीक गजल “चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है” अही बहरमे छै जकर विवरण आगू

देल जाएत। ऐठाँ ई देखू जे निराला जी गजलक विषय नव कऽ देलखिन प्रेमिकाक बदला विषय मिल आ पूँजी बनि गेलै मुदा व्याकरण वएह रहलै। बाँचल शेर एना छै--

हार होंगे हृदय के खुलकर तभी गाने नये,
हाथ में आ जायेगा, वह राज जो महफिल में है

तरस है ये देर से आँखे गड़ी शृंगार में,
और दिखलाई पड़ेगी जो गुराई तिल में है

पेड़ टूटेंगे, हिलेंगे, जोर से आँधी चली,
हाथ मत डालो, हटाओ पैर, बिच्छू बिल में है

ताक पर है नमक मिर्च लोग बिगड़े या बनें,
सीख क्या होगी पराई जब पसाई सिल में है

शमशेर बहादुर सिंह
1
जहाँ में अब तो जितने रोज अपना जीना होना है,
तुम्हारी चोटें होनी हैं हमारा सीना होना है।

वो जल्वे लोटते फिरते है खाको-खूने-इंसाँ में :
'तुम्हारा तूर पर जाना मगर नाबीना होना है!

ऐ गजलक मतलाक मात्राक्रम अछि 1222-1222-1222-1222 आ एकर पालन दोसर शेर सहित आन सभ शेरमे अछि।

जयशंकर प्रसाद

सरासर भूल करते हैं उन्हें जो प्यार करते हैं
बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं

उन्हें अवकाश ही इतना कहां है मुझसे मिलने का
किसी से पूछ लेते हैं यही उपकार करते हैं

जो ऊंचे चढ़ के चलते हैं वे नीचे देखते हरदम
प्रफ्फुलित वृक्ष की यह भूमि कुसुमगार करते हैं

न इतना फूलिए तरुवर सुफल कोरी कली लेकर
बिना मकरंद के मधुकर नहीं गुंजार करते हैं

'प्रसादऽ उनको न भूलो तुम तुम्हारा जो भी प्रेमी हो
न सज्जन छोड़ते उसको जिसे स्वीकार करते हैं

पहिने आजुक समयक प्रसिद्ध शाइर आ फिल्मी गीतककार जावेद अख्तरजीक ई गजल देखू जे की जगजीत सिंह गेने छथि---

जाए मचल फिर तमन्ना, अगर तुम मिलने आ जाओ
ये मौसम ही बदल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ
1222122212221222

आब पूरा गजल देखू--

तमन्ना फिर मचल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ
ये मौसम ही बदल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ

मुझे गम है कि मैने जिन्दगी में कुछ नहीं पाया
ये ग़म दिल से निकल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ

नहीं मिलते हो मुझसे तुम तो सब हमदर्द हैं मेरे
ज़माना मुझसे जल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ

ये दुनिया भर के झगड़े, घर के किस्से, काम की बातें
बला हर एक टल जाए, अगर तुम मिलने आ जाओ

आब हसरत मोहानीक ई प्रसिद्ध गजल देखू---

2122+2122+2122+212
चुपकेचुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
हमको अब तक आशिक़ी का वो ज़माना याद है

आब पूरा गजल देखू---
चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
हमको अब तक आशिक़ी का वो ज़माना याद है

बाहज़ाराँ इज़्तराबओसद हज़ाराँ इश्तियाक़
तुझसे वो पहले पहल दिल का लगाना याद है

तुझसे मिलते ही वो बेबाक हो जाना मेरा
और तेरा दाँतों में वो उँगली दबाना याद है

खेंच लेना वोह मेरा परदे का कोना दफ़तन
और दुपट्टे से तेरा वो मुँह छुपाना याद है

जानकार सोता तुझे वो क़स्दे पाबोसी मेरा
और तेरा ठुकरा के सर वो मुस्कराना याद है

तुझको जब तन्हा कभी पाना तो अज़ राहे लिहाज़
हाले दिल बातों ही बातों में जताना याद है

ग़ैर की नज़रों से बच कर सबकी मरज़ी के ख़िलाफ़

वो तेरा चोरी छिपे रातों को आना याद है

आ गया गर बस्ल की शब भी कहीं ज़िक्रे फ़िराक़
वो तेरा रोरो के मुझको भी रुलाना याद है

दोपहर की धूप में मेरे बुलाने के लिए
वो तेरा कोठे पे नंगे पाँव आना याद है

चोरी चोरी हम से तुम आ कर मिले थे जिस जगह
मुद्दतें गुज़रीं पर अब तक वो ठिकाना याद है
कबीर दासक एकट गजलकेँ तक्ती कऽ कऽ देखा रहल छी---

बहर—ए—हजज केर ई गजल जकर लयखंड (अर्कान) (1222×4) अछि--
ह1 मन2 हैं2 इश्2, क़1 मस्2ता2ना2, ह1 मन2 को 2 हो 2, शि1 या2 री2 क्या2

हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या?
रहें आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या?

जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दरबदर फिरते,
हमारा यार है हम में हमन को इंतजारी क्या?

खलक सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है,
हमन गुरनाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या?

न पल बिछुड़े पिया हमसे न हम बिछड़े पियारे से,
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या?

कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से,
जो चलना राह नाज़ुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या?

तेनाहिते आजुक प्रसिद्ध शाइर मुनव्वर राना केर ऐ गजलक तक्ती देखू—

बहुत पानी बरसता है तो मिट्टी बैठ जाती है
न रोया कर बहुत रोने से छाती बैठ जाती है

यही मौसम था जब नंगे बदन छत पर टहलते थे
यही मौसम है अब सीने में सर्दी बैठ जाती है

नकाब उलटे हुए जब भी चमन से वह गुज़रता है
समझ कर फ़ूल उसके लब पे तितली बैठ जाती है

मुनव्वर राना (घर अकेला हो गया, पृष्ठ 37)
तक्तीअ
बहुत पानी / बरसता है / तो मिट्टी बै / ठ जाती है
1222 / 1222 / 1222 / 1222
न रोया कर / बहुत रोने / से छाती बै / ठ जाती है
1222 / 1222 / 1222 / 1222
यही मौसम / था जब नंगे / बदन छत पर / टहलते थे
1222 / 1222 / 1222 / 1222
यही मौसम / है अब सीने / में सर्दी बै / ठ जाती है
1222 / 1222 / 1222 / 1222
नकाब उलटे / हुए जब भी / चमन से वह / गुज़रता है
1222 / 1222 / 1222 / 1222
(नकाब उलटे के अलिफ़ वस्ल द्वारा न/का/बुल/टे 1222 मानल गेल अछि)
समझ कर फ़ू / ल उसके लब / पे तितली बै / ठ जाती है
1222 / 1222 / 1222 / 1222

आब राहत इन्दौरी जीक ऐ गजलकेँ देखू—

गजल (1222 / 1222 / 122) (बहर-ए-हजज केर मुजाइफ)
चरागों को उछाला जा रहा है
हवा पर रौब डाला जा रहा है

न हार अपनी न अपनी जीत होगी
मगर सिक्का उछाला जा रहा है

जनाजे पर मेरे लिख देना यारों
मुहब्बत करने वाला जा रहा है
राहत इन्दौरी (चाँद पागल है, पृष्ठ 24)
तक्तीअ =
चरागों को / उछाला जा / रहा है
1222 / 1222 / 122
हवा पर रौ / ब डाला जा / रहा है
1222 / 1222 / 122

न हार अपनी / न अपनी जी / त होगी
1222 / 1222 / 122
(हार अपनी को अलिफ़ वस्ल द्वारा हा/रप/नी 222 गिना गया है)
मगर सिक्का / उछाला जा / रहा है
1222 / 1222 / 122
जनाजे पर / मेरे लिख दे / ना यारों
1222 / 1222 / 122
मुहब्बत कर / ने वाला जा / रहा है
1222 / 1222 / 122

फेरसँ मुनव्वर रानाजीक एकटा आर गजलकैं देखू—

हमारी ज़िंदगी का इस तरह हर साल कटता है

कभी गाड़ी पलटती है कभी तिरपाल कटता है

सियासी वार भी तलवार से कुछ कम नहीं होता
कभी कश्मीर कटता है कभी बंगाल कटता है
(मुनव्वर राना)
1222 / 1222 / 1222 / 1222
(मुफाईलुन / मुफाईलुन / मुफाईलुन / मुफाईलुन)
हमारी ज़िं / दगी का इस / तरह हर सा / ल कटता है
कभी गाड़ी / पलटती है / कभी तिरपा / ल कटता है

सियासी वा/ र भी तलवा/ र से कुछ कम / नहीं होता
कभी कश्मी/ र कटता है / कभी बंगा / ल कटता है

आब दुष्यंत कुमारक ऐ गजलक तक्ती देखू---

2122 / 2122 / 2122 / 212
हो गई है / पीर पर्वत /सी पिघलनी / चाहिए,
इस हिमालय / से कोई गं / गा निकलनी / चाहिए।

आब अहाँ सभ ऐ गजलकँ अंत धरि जा सकै छी। पूरा गजल हम दऽ रहल छी—

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

आब कने अदम गोंडवी जीक दू टा गजलक तक्ती देखू—
1222 / 1222 / 1222 / 1222
ग़ज़ल को ले / चलो अब गाँ / व के दिलकश /नज़ारों में
फ़न मुसल्सल / का दम घुटता / है इन अदबी / इदारों में
आब अहाँ सभ ऐ गजलकेँ अंत धरि जा सकै छी। पूरा गजल हम दऽ रहल छी
ग़ज़ल को ले चलो अब गाँव के दिलकश नज़ारों में
में इदारों अदबी इन है घुटता दम का फ़न मुसल्सल

न इनमें वो कशिश होगी, न बू होगी, न रानाई
खिलेंगे फूल बेशक लॉन की लम्बी क़तारों में

अदीबों! ठोस धरती की सतह पर लौट भी आओ
मुलम्मे के सिवा क्या है फ़लक़ के चाँदतारों में

रहे मुफ़लिस गुज़रते बेयक़ीनी के तज़रबे से
बदल देंगे ये इन महलों की रंगीनी मज़ारों में

कहीं पर भुखमरी की धूप तीखी हो गई शायद
जो है संगीन के साये की चर्चा इश्तहारों में

फेर गोंडवीजीक दोसर गजल लिअ—
2122 / 2122 / 2122 / 212s
भूख के एह / सास को शे / रोसुख़न तक /ले चलो
या अदब को / मुफ़लिसों की / अंजुमन तक /ले चलो

आब अहाँ सभ ऐ गजलकैं अंत धरि जा सकै छी। पूरा गजल हम दऽ रहल छी—

भूख के एहसास को शेरोसुख़न तक ले चलो
या अदब को मुफ़लिसों की अंजुमन तक ले चलो

जो ग़ज़ल माशूक के जल्वों से वाक़िफ़ हो गयी
उसको अब बेवा के माथे की शिकन तक ले चलो

मुझको नज़्मोज़ब्त की तालीम देना बाद में
पहले अपनी रहबरी को आचरन तक ले चलो

गंगा जल अब बुर्जुआ तहज़ीब की पहचान है
तिश्नगी को वोदका के आचरन तक ले चलो

ख़ुद को ज़ख्मी कर रहे हैं ग़ैर के धोखे में लोग
इस शहर को रोशनी के बाँकपन तक ले चलो

आब आधुनिक उर्दूक प्राचीनतम गजलकार हरी चंद अख़्तरजीक ई गजल देखू--

सुना कर हाल क़िस्मत आज़मा कर लौट आए हैं
उन्हें कुछ और बेगाना बना कर लौट आए है
1222+1222+1222+1222

आब पूरा गजल देखू----
सुना कर हाल क़िस्मत आज़मा कर लौट आए हैं
उन्हें कुछ और बेगाना बना कर लौट आए है

फिर इक टूटा हुआ रिश्ता फिर इक उजड़ी हुई दुनिया
फिर इक दिलचस्प अफ़साना सुना कर लौट आए हैं

फ़रेबएआरज़ू अब तो न दे ऐ मर्गएमायूसी
हम उम्मीदों की इक दुनिया लुटा कर लौट आए हैं

ख़ुदा शाहिद है अब तो उन सा भी कोई नहीं मिला
बज़ोमएख़ुवेश इन का आज़मा कर लौट आए हैं

बिछ जाते हैं या रब क्यूँ किसी काफ़िर के क़दमों में
वो सज्दे जो दरएकाबा जा कर लौट आए हैं

("फिर इक" मे अलिफ-वस्ल छूट छै आ एकर उच्चारण "फिरिक" छै। तेनाहिते "हम उम्मीदों "लेल तेहने सन बूझू।)
अंतमे एकटा ओहन गजलकारक गजल केत तक्ती देखा रहल छी जिनक नाम लऽ सभ झुट्ठा प्रगतिशील सभ बहर ओ छंदक विरोध करैए ओ। तँ चलू फैज अहमद फैज जीक ई गजल देखू--

शैख साहब से रस्मो-राह न की 2122-1212-112
शुक्र है ज़िन्दगी तबाह न की 2122-1212-112

तुझको देखा तो सैर-चश्म हुए 2122-1212-112
तुझको चाहा तो और चाह न की 2122-1212-112

तेरे दस्ते-सितम का इज्ज़ नहीं 2122-1212-112
दिल ही काफ़िर था जिसने आह न की 2122-1212-112

थे शबे-हिज़्र काम और बहुत 2122-1212-112
हमने फ़िक्रे-दिले-तबाह न की 2111-1212-112

कौन क़ातिल बचा है शहर में फ़ैज़ 2111-1212-112 (ऐ पाँतिमे अंतिम लघु छूटक तौरपर अछि)
जिससे यारों ने रस्मो-राह न की 2122-1212-112

ई झुट्ठा प्रगतिशील सभ अपन अयोग्यता नुकेबाक लेल हल्ला करैए। ई सच जे फैज जी बेसी गजल नै लिखला। ओ बेसी नज्म लिखला आ झुट्ठा क्रांतिकारी सभ नज्मे पढ़ि कऽ कहऽ लागल जे गजलमे बहर नै होइत छै। कतेक

नाम आ गजल दिअ ऐ ठाम। कहबाक मतलब जे हरेक शाइर अपन गजलमे नव-नव काफिया-रदीफक सहायतासँ कथ्य आ तेवर बदलै छथि व्याकरण वएह रहै छै। मुदा मैथिलीक विद्वान तँ बस विद्वान छथि हुनका के टोकत। ऐ ठाम ई लेख देबाक मतलब मात्र सही पक्षकेँ उजागर करबाक अछि। ऐ उदाहरण सभसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे व्याकरण केखनो भाव या कथ्य लेल बाधक नै होइत छै।

खण्ड-22

प्रिंट पत्रिकाक संपादक आ गजलकारसँ अपील

पहिने गजलकार सभसँ

कोनो पत्रिकाकेँ अपन गजल पठएबासँ पहिने ई देखू जे अहाँक गजल कोन बहरमे अछि। आ से देखि लेलापर तकर नाम लीखू आ संगे-संग ओहि बहरक मात्रा क्रम लिखबे टा करू। कारण अलग-अलग पत्रिकाक अलग-अलग वर्तनी आ ओहि हिसाबें प्रकाशित केने अहाँक गजलक बहर टूटि जाएत। एकरा हम एकटा उदाहरणसँ देखाएब। मानू जे अहाँ कोनो बहरक हिसाबसँ "कए "शब्दक प्रयोग केलहुँ जकर मात्रा क्रम छै 1+2 "ह्रस्व-दीर्घ" मुदा कतेको पत्रिका एकरा "कय" बना देताह जकर मात्रा क्रम छै 1+1 "ह्रस्व-ह्रस्व" वा 2 "दीर्घ" (दूटा लघु मिला एकटा दीर्घ)। तँ कतेको पत्रिका एकरा खाली "कऽ "वा "क "लीखि देताह जकर मात्रा क्रम छै 1 "ह्रस्व" । आब अहाँ अपने बुझि सकैत छी जे वर्तनी बदलने मत्रा क्रम टूटि जाएत। मने बहर टूटि जाएत आ गजल बेबहर भए जाएत। ऐठाम हम खाली एकटा शब्दक उदाहरण देलहुँ अछि मुदा अनेको शब्दपर ई लागू हएत। तँए गजलक संगे-संग बहरक नाम आ ओकर मात्रा क्रम जरूर लीखी। संगहि-संग गजल वा शेरो-शाइरीक अन्य विधा कोनो पत्रिकाकेँ पठबैत काल संपादक जीसँ ई आग्रह करू जे जँ हुनका अपन वर्तनीक हिसाबें गजल नै बुझान्हि तँ गजल नै छापथि। कारण जखन बहर टूटिए जेतै तँ ओ गजल बेकार। छपियो जाएत तँ कोनो कर्मक नै। जँ गजल सरल वार्णिक बहरमे अछि तैओ ई समस्या आएत। उदाहरण लेल मानू जे अहाँ "नहि "शब्दकेँ प्रयोग करैत एकटा गजल सरल वार्णिक बहरमे लीखि संपादक जीकेँ देलिअन्हि मुदा ओ संपादक जी अपन वर्तनीक हिसाबें ओकरा "नै "लीखि देलखिन्हि। मतलब जे सरल वार्णिक बहर सेहो टूटि गेल। तँए गजलकार सभसँ विशेष आग्रह जे ओ प्रिंट पत्रिकाक संपादककेँ अनिवार्य रूपें लिखथि जे जाहि स्वरूपमे गजल छै ताही स्वरुपमे गजल प्रकाशित हेबाक चाही नै तँ प्रकाशित नै करू।

आब प्रिंट पत्रिकाक संपादक सभसँ---

जँ संपादक महोदयमे कनियों बुझबाक शक्ति हेतन्हि तँ उपरका विवरणसँ हुनका गजलक संबंधमे व्यवहारिक समस्या बुझा जेतन्हि। तँए संपादक जी लेल हम विशेष नै लिखब।बस हमहूँ एतबे आग्रह करबन्हि जे अपन वर्तनीक पक्ष लए ओ गजलक संग बलात्कार नै करथि। जँ हुनका अपन वर्तनीकेँ रखबाक छन्हि तँ ओ गजलकेँ नै छापथि। या एकटा उपाय इहो भए सकैत छै जे ओ गजलकेँ छापथि आ संगे-संग ई नोट दए देथि जे "ई वर्तनी गजलकार विशेषक वर्तनी थिक, पत्रिकाक नहि" । अंतिकाक संपादक अनलकान्त जी अपन पत्रिकामे एहन नोट छापि लेखक विशेष आ अपन पत्रिका दूनूक वर्तनीक रक्षा केने छथि।
एकटा आर गप्प कविता जकाँ पाँतिकेँ सटा कए छापब गजल परंपराक विरुद्ध अछि। सङ्गे-सङ्ग एक पन्नाक दू भाग वा दू पन्नाक दू भागमे गजलकेँ छापब सेहो गजल परंपराक विरुद्ध अछि। एकटा गजल दए रहल छी राजीव रञ्जन मिश्र जीक जाहिसँ ई पता लागत जे एकटा गजलक विभिन्न शेरक बीचमे कतेक जगह रहबाक चाही---

गजल
कखनो किछु बात बुझल करू मोनक
धरकन दिन राति बनल करू मोनक

ई जे सिसकल तऽ लता पता सुनलक
आहाँ फरियाद सुनल करू मोनक

छोहक मारल तऽ घड़ी घड़ी तड़पल
मरहम बनि घाव भरल करू मोनक

कहबो ककरो जँ करब तऽ के बूझत
संगे बस मीत रहल करू मोनक

गाबी राजीव सदति गजल नेहक
ततबा धरि चाह सुफल करू मोनक
2222 112 1222
शीर्षक दऽ कऽ गजल छापब बेकार कारण गजलक शीर्षक नै होइ छै। चूँकि एकटा गजलमे जतेक शेर होइ छै ओतेक विषय रहैत छै गजलमे तँए शीर्षक देबाक परंपरा नै छै। हम अपन एकटा गजल दए रहल छी जाहिसँ ई

स्पष्ट हएत जे ऐ तरीकासँ गजल नै प्रकाशित हेबाक चाही---

गजल

ओकर हाथसँ छूल अछि देह
सदिखन गम गम फूल अछि देह
प्रेमक उच्चासन मिलन छैक
दू टा घाटक पूल अछि देह
कोना चलि सकतै गुजर आब
देहक तँ प्रतिकूल अछि देह
गेन्दा सिंगरहार छै मोन
चम्पा ओ अड़हूल अछि देह
ऐठाँ अनचिन्हार चिन्हार
सभ देहक समतूल अछि देह

मात्रा क्रम 222221221 हरेक पाँतिमे

ऐ तरीकासँ छापब गलत थिक। एहन रूपसँ गजल प्रकाशित करब परम्परा विरुद्ध अछि। गजलमे सदिखन दूटा शेरक बीचमे जगह हेबाक चाही। ओना हिन्दीमे सेहो कविता जकाँ पाँति सटा कऽ गजल प्रकाशित कएल जाइत छै मुदा एकर मतलब नै जे दोसर इनारमे खसत तँ हमहूँ सभ खसि पड़ब।

एकटा दिक्कत जे कि शाइर आ संपादक दूनू दिससँ अबैए ओ थिक दू शब्दक बीचक जगह। मात्राक्रमक हिसाबसँ कोनो पाँति छोट नहमर भऽ भऽ सकैए (खाली मात्राक्रम बराबर हबाक चाही)। आब शाइर वा संपादक दू शब्दक बीचक जगह बढ़ा कऽ छोट पाँतिकेँ नमहर पाँतिक बराबर कऽ दै छथि। आब हमरा ई नै बुझाइए जे आखिर कागजपर पाँति बराबर कऽ देलासँ मात्राक्रम कोना बराबर भऽ जेतै। वास्तवमे ई किछु एहन संपादकक अज्ञानताक सूचक थिक जे कि बराबर पाँति बला दू पाँतिक रचनाकेँ गजल मानि लै छथि। मैथिलीक संपादक सभकेँ छंद संबंधी निर्देश देब कतेक जरूरी अछि से एहीसँ बुझाइए जे पं. गोविन्द झा जी द्वारा सम्पादित आ मैथिली अकादेमी, पटना द्वारा प्रकाशित (संस्करण-2008) मे पं.जी अपन भूमिकाक पृष्ठ 6 पर विद्यापतिक गीतक छंदपर विचार करैत लिखै छथि जे --" छंदक दुर्दशा जहिना स्रोतग्रंथ सभमे अछि तहिना वा ताहूसँ बेसी आजुक संपादित संस्करण सभमे दृष्टिगत होइत अछि।......विद्यापतिक कालमे छंदक दू धारा छल वर्गवृत ओ मात्रावृत। मैथिलकेँ जें मात्रावृतक ज्ञान रहैत छनि तँ वर्णवृतक नहि कारण जे मिथिलामे वर्णवृत बहुत दिन पूर्वहि अप्रचलित भऽ गेल।.....आजुक संपादक लोकनि अपनेसँ छंद बैसयबाक प्रयासमे बहुधा शुद्धो छंदकेँ खास कऽ वर्णवृतकेँ बिगाड़ैत गेलाह अछि।"

मने हम गजलक संबंधमे जतेक संपादकीय अज्ञानताकेँ अनुभव कऽ रहल छी तेहने सन अनुभव पं.गोविन्द झाजी

सेहो अपना समयमे केने छलाह आ लिखलाह। तँइ गजलक संबंधमे हमर किछु विचार संपादक महोदय सभ लेल देल गेल अछि उपरमे।

गजलक भाषा

चूँकि गजलकेँ प्रेमी-प्रेमिका (आत्मा-परमात्मा)क गप्प-सप्प सेहो मानल जाइत छैक। आ गप्प-सप्प सदिखन गद्यमे होइत छैक तँए गजल लेल गद्यात्मक भाषा हेबाक चाही। एहि स्तर पर ई संस्कृत काव्यसँ बिलकुल अलग अछि। जे गजल जतेक गद्यात्मक हएत ओ ओतेक बेसी नीक हएत। भाषाक संबंधमे एकटा आर गप्प हरेक भाषाक दूटा रूप होइत छैक पूर्ण आ अपूर्ण। मैथिलीओमे छैक, किछु उदाहरण देखू--

पूर्ण रूप ---अपूर्ण रूप

नहि--नै

जाहिठाम---जैठाम

कतेक--कते

हेतैक---हेतै

एहि ---ऐ, अइ

गजलक संदर्भ मे हमर ई अनुभव अछि जे अपूर्ण भाषा गजल लेल बेसी नीक। कारण भाषाक अपूर्ण रूप लोकमे उच्चरित होइत छैक आ गजल तँ पूरा-पूरी उच्चारण पर निर्भर छैक। तँए जे तेजी अहाँकेँ “नै हेतै” वाक्य खंडमे भेटत ततेक तेजी “नहि हेतैक” वाक्य खंडमे नहि भेटत। मने गजल जँ लोक भाषामे रचल जाए तँ बहुत बेसी सफल हएत। धोती-चानन-टीका बला भाषा गजल लेल उपयुक्त नै अछि। तथापि जे कियो धोती-चानन-टीका बला भाषामे लिखै छथि ओ खराप काज नै छै। अन्तर मात्र एतबे जे धोती-चानन-टीका बला भाषाक गजल लोकक जीहपर चढ़त की नै से देखबाक योग्य। हम अपन गजलमे अपूर्ण रूपकेँ प्रधानता देने छी। पूर्ण रूपकेँ प्रयोग हम खाली वर्ण आ मात्रा मिलेबाक लेल करैत छी। आ गजले किए हम अपने एही पोथीमे दूनू तरहँक वर्तनीकेँ प्रयोग केने छी। जेना कि पहिनेहों कहने छी जे जँ अपन भाषामे कोनो शब्द नै हो तखन ओकरा अपना भाषामे आनल जा सकैए। बहुत लोक जबरदस्ती विदेशज शब्दक प्रयोग करै छथि तँ बहुत लोक देसी शब्दपर अटकल रहै छथि मुदा हमर कहब जे हम सभ ओलक सन्ना खाइत छी तँ पिज्जा सेहो। मुदा पचा जाइ छी सभ। चूड़ा दही संगे इडली सेहो खाइत छी खेबाके चाही। आ पचियो जाइए कारण लीभर दुरुस्त अछि। तेनाहिते जे वास्तविक कवि हेताह से देसी शब्द आनथि कि विदेशी ओ रचनामे स्वाभाविक बनि जेतै, मुदा पोनठेलुआ, पुरस्कारक लेल, देखाँउस बला कवि, नकलबाज कवि आदि जँ देसियो शब्द प्रयोग करता तँ रचनामे अनफिट रहत, पानि महँक तेल जकाँ उपरे-उपर छताइत रहत। पाठक मूल्याकंनमे बैमानी कऽ सकैए मुदा समय नहि तँइ हरेक कविकेँ धैर्य धऽ कऽ रहए पड़तनि। अपना मोने अपनाकेँ देसी शब्दकक सम्राट आ कि अत्याधुनिक एवं ग्लोबल कवि कहबासँ बचए पड़तनि इएह बात बिंब लेल सेहो बुझू।

संस्कृतमे विराम चिन्ह नै होइ छै चाहे ओ गद्य हुअए की पद्य। भारतीय भाषामे विराम चिन्ह अंग्रेजीसँ आएल अछि। हमरा जनैत विराम चिन्ह गद्य लेल उपयुक्त भऽ सकैए मुदा पद्य लेल नै। कारण पद्य सदिखन गायन वा आवृति लेल रचल जाइत छै। आ गायक वा आवृतिकार पद्यकेँ सोझे गेता वा आवृति करताह। गायन वा आवृतिमे विराम चिन्हक प्रयोग श्वासक ठहराव आ स्वरक अदला बदलीसँ होइत छै तँए हमरा हिसाबें गजल सहित आन सभ पद्य विधामे (छन्द युक्त)मे विराम चिन्ह प्रयोग नै हेबाक चाही। हिन्दी बला सभ करै छथि तँ करऽ दिऔ। हमरा सभकेँ नकलची नै बनबाक अछि।

मैथिलीमे अवधी, ब्रजभाषा आदिक प्रभावें रस, रीति आ अलंकार आदिपर बहुत चर्चा भेलै मुदा ऐ सभहँक कारणें वाक्य असंतुलित होइत गेलै मने वाक्य केर स्वाभाविकता मरैत गेलै। मुदा अरबी-फारसी-उर्दूमे लोक जेहन अपन घरमे बाजैए ओकर शाइर ठीक ओहने वाक्यसँ शाइरी रचैत अछि तँए शेर-ओ-शाइरी सभहँक जीहपर चढ़ि जाइए मुदा मैथिलीक निज काव्य विधा जीहसँ खसि पड़ैत अछि मने लोक जल्दिए बिसरि जाइत छै। संस्कृतक एकटा प्रसिद्ध वाक्य थिक “गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति” । लोक एकर मतलब निकालै छथि जे कवि लेल गद्य लिखब आवश्यक कारण पद्यमे छंदक हिसाबसँ तोड़-ममोड़ तँ भऽ सकैए मुदा गद्यमे नै। मुदा ई सटीक नै। हमरा हिसाबें एकर गलत अर्थ लगाओल गेल छै। एकर अर्थ एना हेबाक चाही “पद्यमे जे कवि जतेक बेसी स्वाभिक रूपसँ गद्यक प्रयोग कऽ सकता सएह हुनक पद्य लेल निकष हेतनि” । हमरा बूझल अछि ई काज बहुत कठिनाह छै तँए एकरा मानए लेल कवि तैयार नै हेता। गद्यकार तँ अपनाकेँ एही बलें महान मानै छथि हुनका तैयार हेबाक तँ कोनो सवाले नै।

ऐठाम कने रुकि कऽ मैथिलीक वाक्य विन्यासपर सेहो चर्चा कऽ ली तँ बेसी नीक। वाक्य विन्यासक मतलब जे पदक्रम कोना सजाओल जाए। पं.गोविन्द झा जी अपन पोथी “उच्चतर मैथिली व्याकरण” केर पृष्ठ 107पर लिखै छथि---

“133(1) वाक्यमे पद कोन क्रमे राखल जाय तकर सामान्य नियम ई थिक

1) पहिने कर्ता, तखन कर्म, तखन क्रियापद आबय।

2) करणादि कारक तथा क्रियाविशेषणक पद कर्ता ओ कर्मक बीचमे, आ कर्म नहि हो तँ कर्ता ओ क्रियापदक बीचमे आबय।

3) विशेषण विशेष्यसँ पूर्व आबय, किन्तु विधेय वा विधेयतापूरक विशेषण विशेष्यसँ पर आबय।

4) अन्वयसूचक निपात योजनीय कोटि द्वयक बीचमे आबय।

5) विस्मयादिसूचक वाक्यक आदिमे आबय।

उदाहरण

खुशखबरी1 ! जयनारायण2 ओ3 रामनारायण4 आइ5 चारि6 बजैत7 दिनमे8 गाँधी9 मैदानमे10 एक11 विशाल12 सभामे13 पुनः14 ओजस्वी15 भाषण16 देताह17। एहिमे नियम(1) क अनुसार 21617 अछि,

नियम(2) क अनुसार 25+(6+7+8)+(9+10)+(11+12+13)+14 अछि, नियम (3)क अनुसार 6+7+8,9+10,11+12+13, 15+16 अछि नियम (4) क अनुसार 2+3+4 अछि, तथा नियम (5) क अनुसार 1 अछि।

(नोट--बजैत केर बदलामे बजे हेबाक छलै ई शायद प्रिंटिग केर गलती छै आ.अ)

2) एहि पाँचो नियममे दोसर किछु ढील अछि। वक्ता अपन रुचि वा स्मृतिक अनुसार कालबोधक वा स्थानबोधक क्रियाविशेषणकेँ क्रियासँ पूर्व कतहु आबि सकैत छथि। यथा, उपर्युक्त वाक्यकेँ एहि रूपें राखल जाय सकैत अछि

1+5+6+7+8+2+3+4+9+10 अथवा 1+510+2+3+6+11।

(आबि केर बदलामे आनि हेबाक चाही छलै)

134(1) आलंकारिक वा भावावेशात्मक अभिव्यक्तिमे पदक्रम बहुधा तोड़ल जाइत अछि ओ एहि युक्तिसँ नाना भाववेश व्यक्त कयल जाइत अछि। एहिमे सामान्यतः से पद आदिमे राखल जाइत अछि जाहिपर अधिकसँ अधिक जोर रहैत छै, यथा "लाज नहि होइत छौ तोरा" आ कहखनहुँ सभसँ जोरदार पद वाक्यक अन्तमे राखल जाइत अछि, यथा "हओ, भानस नहि करबह तँ खयबह की कटहर "

2) उद्येश्य-विधेयमे उद्देश्य तथा प्रकृति-विकृति भावमे प्रकृति पूर्वमे रहैत अछि। यथा, "गोपाल इंजीनियर छथि" एहिमे इंजीनियर विधेय अछि तँए गोपालक बाद आयल। "स्वर्णपिंड कुण्डल भऽ गेल आ पुनः गलओलापर कुण्डल स्वर्णपिंड भऽ गेल। एत' पहिल वाक्यमे स्वर्णपिंड प्रकृति थिक ओ कुण्डल ओकर विकृति किन्तु दोसर वाक्यमे तद्विपरीत।"

तँ ई छल वाक्य विन्यासक जानकारी। ऐ ठाम हम मात्र ई कहऽ चाहब जे आलंकारि ओ पद्यमे ऐ विन्यासक बहुत समय पालन नै कएल जाइत छै वा कही जे संभवो नै छै। मुदा जहाँ धरि गजलक प्रश्न अछि तँ गजल गप्प-सप्प जकाँ होइत छै मने गद्य तँए धेआन राखी जे अधिकांशतः वाक्य विन्यास सही रूपें आबै गजलमे। ओना गजलमे सेहो विन्यासक उलट-फेर भऽ सकैए।

आधुनिक साहित्यमे "रूपवादी भाषा" वा "कलावादी भाषा" शब्दक बेसी प्रचलन छै। हमरा हिसाबें जँ कोनो शब्दक अर्थ वर्तमान समय (जाहि समयमे रचना लिखल जा रहल हो)क हिसाबें नै हो ताहि रचनाक भाषाकेँ "रूपवादी भाषा" वा "कलावादी भाषा" कहल जाइत छै । मने एहन भाषा जकर शब्दक अर्थ प्राचीन समयक हिसाबें हो (जँ पुरनो शब्दक अर्थ समयक हिसाबें नव छै तखन ओकरा समकालीन भाषा मानबामे कोनो दिक्कत नै)। हमरा जनैत "समकालीन लेखन" लेल ई दोष भेल (ऐतिहासिक वा पौराणिक रचना लेल ई दोष वा गुण दूनू भऽ सकैए)। आब ई बुझू जे "समकालीन लेखन" की भेल। बहुत आलचोक भ्रमित भऽ जाइत छथि जे कोन कालखंडकेँ "समकालीन" कहल जेतै। ओ आलोचक सभ "समकालीन" शब्दकेँ एक समान कालखंडमे बाँटि कऽ गलती करै छथि। वस्तुतः "समकालीन" शब्द प्रयोगकर्तापर निर्भर करै छै। रचनाकार लेल "समकालीन" ओ कालखंड कहेतै जाहि कालखंडमे ओ रचना केलकै मुदा आलोचक लेल "समकालीन" शब्द रचनाक समय आ

आलोचनाक समय दूनू हेतै। वाल्मीकि लेल समकालीन समय ओ रहल हेतनि जहिया ओ रमायणक रचना केने हेता, तुलसी लेल समकालीन समय ओ रहल हेतनि जखन कि ओ मानसक रचना केने हेता तेनाहिते चंदा झा लेल समकालीन समय ओ हेतै जखन ओ मिथिला भाषा रमायणक रचना केने हेता। मुदा जखन कोनो आलोचक आइ केर समयमे वाल्मीकि केर आलोचना करता तँ हुनका लेल वाल्मीकि केर समय आ अजुका समय दूनू मिला कऽ "समकालीन" कहेतै। तुलसीक आलोचना कालमे "समकालीन समय" मने तुलसीक समय आ एखुनका समय हेतै। ठीक तेनाहिते चंदा झा लेल सेहो बुझि लिअ। उम्मेद अछि किछु वैचारिक लाभ प्राप्त भेल हएत।

गजलक भाव ओ कथ्य

कथ्यकेँ परिभाषित करैत कालमे मैथिल गजलकार भ्रममे फँसि जाइत छथि आ भ्रमक कारणे ओ "कथ्य" ओ "कहन" केँ एकै मानि लै छथि। वस्तुतः दूनू अलग-अलग चीज छै। "कथ्य" मने ओ कोनो विषय भेल जैपर किछु कहबाक लेल शाइर चुनने छथि जखन कि "कहन" ओइ चूनल विषयकेँ कहबाक तरीकाकेँ कहल जाइत छै। अरबी-फारसी-उर्दूमे कथ्यसँ बेसी कहनपर जोर देल जाइत छै। निदा फाजली अपन एकटा इंटरभ्यूमे एना कहै छथि--" हँ, हमरा ई कहबामे संकोच नै जे गजल मीनाकारी केर विधा छै। एहिमे कथ्यसँ बेसी कहन केर महत्व छै। ऐ कहन लेल गजलक इतिहासकेँ चीन्हब जरूरी अछि। इतिहासकेँ बिना चिन्हने बात गड़बड़ भऽ जाएत" --(आधारशिला-44, 2006, गजल विशेषांक, पन्ना-69)

तेनाहिते कथ्य आ तेवर सेहो दूनू अलग-अलग चीज अछि। कथ्य उपर देले अछि तँए तेवर की छै से बूझू। शब्दकोशीय हिसाबसँ क्रोधयुक्त भावकेँ तेवर कहल जाइत छै मुदा साहित्यमे सदिखन शब्दकोशक हिसाबसँ अर्थ नै बल्कि प्रयोगक हिसाबसँ अर्थ सेहो बदलि जाइत छै। साहित्यमे तेवर मतलब भेल "कहन केर तासीर"। तासीर मने प्रभाव। मने कहबाक तरीकासँ जे प्रभाव होइत छै तकरा तेवर कहल जाइत छै। एकटा उदाहरणसँ बुझू-- गूड़ आ चिन्नी दूनू मिठ्ठ होइत छै मुदा दूनूक तासीर अलग-अलग होइत छै। गूड़ खूनमे जल्दी घुलनशील नै होइत छै मुदा चिन्नी खूनमे जल्दी मीलि जाइत छै तँइ डाक्टर वैद्य हकीम सभ चिन्नी बदला गुड़ खेबाक लेल कहैत छै। अहाँ देखि सकैत छी जे एकै सुआद भेलाक बादो दूनूक तासीर अलग-अलग अलग छै। आरो लेल एनाहिते बूझू। लेखनमे एकै विषयपर अलग-अलग कहन केर कारणे ओकर तेवर अलग-अलग भऽ जाइत छै। कथित प्रगतिशील मात्र साम्यवादी विचार बला कथ्यकेँ तेवर बुझि लै छथि से सर्वथा भ्रामक अछि आ ताही चक्करमे कहनकेँ छोड़ि दैत छथि जकर परिणामस्वरूप मैथिली गजलमे ने तेवर आबै छै ने लोच अबैत छै आ ने संगीत। मोन राखू गजलमे कथ्य मात्र विषय भेल आ मुख्य वस्तु ओकर कहन छै। कहन गजल केर प्राण छै। पहिने गजलमे मात्र ओहन कथ्य देल जाइत छलै जे की श्रृंगारिक होइत छलै की शराब बला (कहन केर कारण ओकर आंतरिक अर्थ चाहे जे हो)। आ एही कारणें बहुत लोक गजलकेँ इश्क आ शराबक दोसर रूप मानै छथि। मुदा आब गजलमे सभ विषय आबि रहल छै चाहे इश्क हो की घृणा, भूख हो की भरल पेट, भ्रष्टाचार हो की राजनीति, बाढ़ि हो की सुखाड़। बहुतो लोक हमरा कहै छथि जे खाली व्याकरण सिखेलासँ की हएत कथ्य सिखबियौ। वस्तुतः व्याकरण

तँ सिखाएल जा सकै छै मुदा कथ्यक निरूपण नै। कहन तँ आरो नै। कहन तँ मूलतः शाइरक संस्कार ओ अध्ययन दूनूपर टिकल छै। कथ्य तँ शाइरक उपर निर्भर छै जँ ओ प्रेमिकाक उपर लिखत तँ ऐमे हम की कऽ सकै छिऐ। तथापि हमर ई स्पष्ट धारणा अछि जे समकालीन विषय आ ओकर सुख-दुखकेँ रचनामे स्थान देलासँ ओ कालजयी होइत छै, मुदा कलाकेँ उपेक्षा कऽ कऽ नै। जेना की रामायण लिअ। स्त्री अपहरण वा ओकरापर अत्याचार जतबा वाल्मीकि जीक समयमे छल ततबे आइयो छै मुदा वाल्मीकि जी कलात्मक ढ़ंगसँ अनुष्टुप छन्दममे ओकरा रखलखिन्ह तँए आइयो रामायण जीवित अछि। ई कहब असान छै जे भक्तिक कारणें रामायण जीवित अछि जँ सएह तर्क तखन फेर आन धर्मग्रंथकेँ लोक किए बिसरि गेल। बेसी आब लोक अपने बुझता (आन धर्मग्रंथ सभ सेहो छंदमे अछि मुदा कालजयी साहित्य लेल छंद ओ भाव दूनू चाही)। प्राकृतक भाषक जन्मसँ साहित्याकरक माँझ भाव आ व्याकरणपर विचार चलि रहल छै। केओ कहै छथि भाव हेबाक चाही तँ केओ कहै छथि व्याकरण। ऐ संबंधमे श्री गजेन्द्र ठाकुरक जीक विचार देखू---

“हमरा हिसाबें भाव हरेक साहित्यिक विधा लेल आवश्यक अछि मुदा “भावक बहन्ना “लए कऽ व्याकरणकेँ नै छोड़बाक चाही।”

ऐठाम हम गजेन्द्र ठाकुर जीक एकटा आर टिप्पणी देबए चाहब जे---

“गजलक व्याकरण मात्रसँ गजल उत्कृष्ट भऽ जाएत सेहो सम्भव नै, मुदा सम्भावनाक प्रतिशतता बढ़ि जाइ छै जे ओ उत्कृष्ट हएत। संगहि जँ व्याकरणक ज्ञानक बाद अ-बहर युक्त आजाद गजल लिखल जाए तँ ओहो उत्कृष्ट हेबे करत तकरो गारन्टी नै, मुदा ओकरो उत्कृष्ट हेबाक सम्भावना बढ़ि जाइ छै। जँ रामदेव प्रसाद मंडल झारूदार जे पढ़ल नै छथि आ खेती-बाड़ी करैत नीक साहित्य लिखै छथि ओ जँ बहन्ना करथि जे हमर रचना भावनामे भेल अछि से मानल जाएत मुदा जँ पढ़ल-लिखल लोक भावनाकेँ बहन्ना कए व्याकरण छोड़ि देता तँ ई मानल जाएत जे मेहनति नै करए चाहै छथि “

आब ई तय करू जे किनका लेल भावना नीक आ के मेहनति नै करए चाहैत छथि। हरेक भाषामे छंदोमे कूड़ा-कचरा बला रचनाक भंडार अछि ठीक ओनाहिते जेना छंदमुक्त कविताक नामपर ढ़ाकी भरि कूड़ा-कचरा अछि। मुदा एकर मतलब ई नै जे छंद खराप छै। किछु साम्यवादी सभ ई प्रचार केलथि जे छंद काव्यक सीमा छै मुदा हमर कहब जे छंद काव्यक सीमा नै बल्कि मर्यादा छै। आब रचनाकार ऐ मर्यादाक कतेक निर्वाह कऽ पबैत छथि से हुनक सामरथपर निर्भर अछि। मानि लिअ जे अहाँ शस्त्र निर्माता छी। सुविधा लेल बंदूक तँ कने सोचियौ बिना बंदूकक गोली सीनाक आरपार भऽ सकै छै। कथमपि नै। गोलीमे तीव्रता बंदूकक ढ़ाँचा आनै छै। जँ गोलीकेँ हाथसँ फेकि मारल जाए तँ केकरो किछु नै बिगड़तै। ऐ प्रसंगमे छंदकेँ बंदूकक ढ़ाँचा आ गोलीकेँ भाव मानि देखू। ओनाहुतों मनुष्यकेँ सुंदर बनेबामे ओकर वस्त्र वा आवरणक बहुत बड़का हाथ छै। सुंदरसँ सुंदर आदमी नंगटे ठाढ़ भऽ जाइ छै तँ किछुए कालमे मोनमे घृणा आबि जाइत छै। छंदकेँ काव्यक आवरण बूझू। प्राचीन कालमे संस्कृतमे गुण, भाव ओ अलंकारपर बहस होइत छल छंदपर नै, मने छंद अनिवार्य छलै आ काव्यमे भाव बेसी हेबाक चाही की अलंकार तैपर चर्चा कएल जाइत छलै। एखन किछु लोक अलंकार आ छंदकेँ एकै मानि रहल छथि से पूर्णतः

भ्रामक आ गलत अछि। जे प्रगतिशील लेखक खाली लाल झंडा उठेने रहै छथि हुनकासँ हम पूछए चाहब जे ओ अपन कोबरमे की लाले झंडा उठेने रहथिन? की संतानक जन्मपर हुनक मूँहपर उदासी एलनि? गजलक कथ्य या भाव लेल बहुत किछु नै कहल जा सकैए कारण ओ शाइरक उपर छै जे कोन विषयपर केखन लिखल जाए। मनुख लग सुख आ दुख बेरा-बेरी अबै छै, सभ ओकरा अपना हिसाबें अनुभव करै छै आ ओहीपर रचना सेहो करै छै। भात-दालिमे सेहो सुआद होइ छै आ खीर-पूड़ीमे सेहो। खरापसँ खराप भोजनमे सुआद होइ छै। नुनगर तरकारीमे तँ नूनक सुआद रहिते छै ने? कड़ुगर तरकारीमे मिरचाइक सुआद रहिते छै। तेनाहिते प्रेम बला रचनामे सेहो भाव रहै छै आ क्रांति गीतमे सेहो। जे रचनाकार भाव की कथ्य लेल बेसी मगजमारी करथि हुनका कुंठाग्रस्त बुझू। भाइ बेसी प्रेमगीतसँ समाज नै बदलै छै तँ विश्वास राखू बेसी क्रांतिगीतसँ समाज सेहो नै बदलत। हम जहाँ धरि बुझि सकलहुँ अछि सभ कथित प्रगतिशील साहित्यकारक हिसाबें “भाव” या “कथ्य” मने साम्यवादी “भाव” या “कथ्य” । आब ई कते गलत या कते सही हेतै से तँ पाठके सभ कहता। हमरा हिसाबें “साम्यवादी भाव” बहुत रास “भाव” या “कथ्य” मेसँ एकटा “भाव” या “कथ्य” भेल। प्रगतिशील सभ एकैटाकेँ पूरा बुझि लै छथि। ओना कथित प्रगतिशील सभ वैचारिक रूपें कतेक “पतितशील” छथि से मात्र ऐसँ बुझा जाएत जे ओ सभ कबीरकेँ महान क्रांतिकारी कवि घोषित करै छथि मुदा ई नै देखि-बूझि पाबै छथि जे कबीर छंदे टामे अपन रचना केलाह। एकटा पाठकक रूपमे ने हमरा आजाद गजलसँ परेशानी अछि आ ने आजाद कथा-उपन्यास-कवितासँ। हँ, एतेक उम्मेद तँ हम जरूर करै छी जे लेखक अपन लिखल रचना केर लेबल सही लगेता। जँ आजाद गजल लीखि कहबै जे ई गजल भेल तखन हमहीं की कियो नै मानत आ खारिज करबे करत। तँए अपन विधाकेँ देखू जे ओ की अछि तखन ओकर कोनो नाम दियौ। अइ ठाम एक बात आर कहब जे किछु प्रगतिशील सभ साहित्य केर आन विधाकेँ मंचीय आ गंभीर दू कोटिमे बाँटि देने छथि मुदा हमरा हिसाबें साहित्यकेँ “गंभीर” आ “लोकप्रिय” खेमामे बाँटब उचित नै। कोनो रचना कोनो कालखंडमे गंभीर कि लोकप्रिय कि बेकारक दर्जा पाबि सकैए। जे रचना लोकप्रिय हेतै से गंभीर भइयो सकैए आ नहियो भऽ सकैए तेनाहिते गंभीर रचना लोकप्रिय भइयो सकैए आ नहियो भऽ सकैए। लोकप्रियता तँ जनसामीप्यक सूचक थिक तखन प्रगतिशील सभ “लोकप्रिय” वा “मंचीय” रचना नै चाहै छथि एकर मतलब की? हम ऐठाम गजलपर बात कऽ रहल छी आ जेना कि उपर आन-आन ठाम अप्रत्यक्ष रूपें कहले गेल अछि जे गजल गंभीर विषय-वस्तुक सरल प्रस्तुतिकरण अछि तँइ गजलकेँ हम “गंभीर बनाम लोकप्रिय” सन छुद्र विषयसँ काते राखब। एकटा बेमारी आर जे मैथिली किछु शाइर उर्दू शाइरक उदाहरण दऽ कऽ कहै छथि जे देखू ई शाइर गजलक परंपराकेँ तोड़ि देलाह। बात अइ ठाम धरि ठीक होइ छनि मुदा ओ ओइ परंपरा टुटबाक मतलब व्याकरण टूटि जाएब बुझै छथि जे कि गलत अछि। उर्दू गजलमे परंपरा टुटबाक मतलब छै कथ्य-कहन ओ प्रतीक टूटब। शाइर नव-नव काफिया-रदीफसँ कथ्य-कहन ओ प्रतीककेँ तोड़ै छथि, विस्तार करै छथि। जँ कियो चाहथि तँ ओ उर्दूक जानकारसँ जानि सकै छथि। ओना एकर विस्तृत विवरण हम उपर देने छी (उर्दू-हिंदी गजलक तक्ती बला प्रसंगमे)। साहित्यमे नव प्रयोग केर बहुत होइत छै आ हेबाके चाही। प्रयोग नै हेतै तँ नव-नव अर्थ ओ भाव नै आबि सकैए साहित्य आ जीवनमे। एहिठाम सभ

अपनाकैँ नव प्रयोग केनिहार कहैत छै। प्रयोग दू तरहसँ होइत छै पहिल तरीका जे आइडिया अनचोक्केमे अबैत छै आ तकर स्थापना सुसंगत ढ़ंगसँ प्रयोग केनिहार दै छै उदाहरण लेल न्यूटन द्वारा गुरुत्वार्षण केर खोज मुदा आइडिया तँ अचानक आबि सकैए मुदा तकर स्थापना लेल ओहि आइडियासँ संबंधित विषयक विद्वान रहब तखने स्थापना दऽ सकैत छी अन्यथा अहाँ लग ओकरा चमत्कार मानैत रहबाक अतिरिक्त आर कोनो उपाय नै। दोसर तरीका जे अहाँ कोनो प्रचलित आइडियासँ असंतुष्ट हएब आ ओकरा संगत बनेबाक लेल प्रयोग करब आ ओकर पक्ष-विपक्षमे स्थापना देब मुदा अहू लेल ओहि आइडियासँ संबंधित विषयक विद्वान रहनाइ आवश्य अन्यथा अहाँ प्रयोग नै कऽ सकैत छी। एकटा पाकशास्त्रक उदाहरण लिअ आ मानू जे अहाँ पुलाव बनेबामे ओस्ताद छी तँ अहाँ चाउरक क्वालिटी बदलि प्रयोग कऽ सकै छी, काजू संग आर कोनो सूखा मेवा दऽ प्रयोग कऽ सकै छी आ तखन ओकर सुआदक आकलन कऽ सफल बनि सकै छी मुदा जँ अहाँकैँ पुलाव बनाबहे नै आबैए तखन की करबै? सिखबै वा कि प्रयोग करबै? ओनाहुतो मैथिलीमे देखल गेलैए जे जखन रचनाकार लग अपन स्थापना लेल उचित तर्क नै रहै छनि तखन ओ ओकर नाम "नव-प्रयोग" दऽ दै छथि। साहित्यमे किछु आदमी छंदकैँ तोड़ि देब "नव-प्रयोग" मानै छथि। जखन कि नव प्रयोग छंदक विस्तार ओ छंदक अंतर्गत नव विषय, नव कथन अथवा पुरने विषयकैँ नव तरीकासँ कहब हेतै हमरा हिसाबेँ।

गजलक संगीत

गजल लेल तबला उपयुक्त होइ छै। ढ़ोल, नाल वा ओहन अन्य साज गजल लेल बेकार। कारण तबला केर सुर पक्का होइ छै आ ढ़ोल, नाल वा ओहन अन्य साज केर सुर काँच। तबलाक संगे हरमुनिया सही रहै छै। पहिनुक समयमे हरमुनियाक बदला सरंगीपर लहरा देल जाइत छलै। ओना हमरा हिसाबसँ मैथिली गजलक गायन समयमे तबला आ गुदड़ी बाबा बला सरंगीक लहरा बेसी नीक रहत, परंपराक तौरसँ सेहो आ प्रयोगक हिसाबसँ सेहो। भारतीय संगीतमे गजलकैँ उपशास्त्रीय संगीतक दर्जा भेटल छै आ एकर गायन करीब 200-250 बर्खसँ भऽ रहल छै ओना ई धेआन राखब जरूरी जे पहिने गजल गायन लेल नै होइत छलै आ अन्ये साहित्यिक विधा जकाँ प्रचलन छलै। मुदा गजलमे गायनकैँ जुड़िते एकर लोकप्रियता बहुत बढ़ि गेलै।
बहुत रास शाइर अपना आपकैँ गबैया मानि लै छथि संगे-संग बहुत सुनहो बला सभ अपना आपकैँ गबैया मानै छथि आ कहै छथि जे एतऽ ताल नै बैसि रहल अछि। भऽ सकैए जे ओ सभ ठीक कहि रहल होथि मुदा सदिखन ई धेआन राखू जे ताल, सुर, भास ई सभ गबैयाक काज छै शाइरक नै। शाइरक काज छै सही बहर ओ कथ्यक निर्वहन। आब गबैया ओकरा कोन रागमे गेतै, कोन तालमे गेतै, कतेक समयक आलाप लेतै, कोन शब्दपर मुरकी मारतै, कतऽ आरोह हेतै, कतऽ अवरोह हेतै एकर सभहँक निर्धारण गबैया करतै शाइर नै। ई मैथिलीक दुर्भाग्य छै जे शाइर सभ अपना आपकैँ आलरांउडर मानि लै छथि। आ एकरे परिणाम होइत अछि जे ओहन-ओहन शाइर-गीतकारक गजल-गीत काँच रहि जाइत अछि।
कदाचित् मानि लिअ जे शाइर गबैयाक रूपमे सेहो सिद्ध छथि आ ओ अपन गजलकैँ रागबद्ध करै छथि मुदा ऐ

बातक कोन गारंटी छै जे दोसर गायक मात्र ओही रागमे ओइ गजलकैँ गाएत। दोसर गायक दोसरो रागमे ओकरा गाबि सकैए। तँए भलाइ एहीमे छै जे शाइर अपन काज करथि आ गबैया अपन। संगे-संग ईहो कहए चाहब जे जरूरी नै छै जे गायक गजलक हरेक शेरकैँ गाबै। जै शेरमे बेसी लोकप्रियताक संभावना छै बेसी गायक ताही शेर सभकैँ गाबै छै। मानि लिअ कोनो गजलमे पाँचटा शेर छै मुदा गायक चारिए टा गाबए चाहै छै तँ कोनो दिक्कत नै। गजल कोनो कविता तँ नै छै जे कोनो एकटा पाँति छुटि गेने अर्थ विहीन भऽ जेतै। गायक चाहथि तँ कोनो मतला सेहो छोड़ि खाली आन शेर गाबि सकै छथि।

आब किछु बात गायक सभ लेल--

ओना तँ हरेक पद्य रचनाकैँ गाएल जा सकैए मुदा ताहि लेल अनिवार्य रूपसँ गायक हेबाक चाही। जेना कोनो रचनाकार अपन-अपन विधामे पारंगत होइत छथि तेनाहिते गायक सेहो अपन विधामे पारंगत होथि से आवश्यक। पद्य लेल जहाँ छंदक ज्ञान हएब जरूरी (मुक्त छंद छोड़ि) तेनाहिते गायक लेल राग-भासक जानकारी आवश्यक। मैथिलीमे रचनाकारे आ गायक संगीतकार बनि जाइत छथि (किए से आगू स्पष्ट हएत)। हलाँकि पद्यमे सभ रचना आबै छै मुदा रचना अलग-अलग विधाक भऽ सकैए। गीत सेहो पद्य अछि गजल सेहो, दोहा-रोला-सोरठा सेहो मुदा एकर नियम अलग-अलग अछि। गीतोमे एक नै हजारो अवसरक लाखो रचना अछि। पद्योमे किछु एहन विधा होइत छै जकर नियम बहुत कठिन होइत छै मुदा ओहिमे तेहन आकर्षण रहैत छै जे लोक सभ ओहि विधा लेल ललचाइत रहै छथि आ ओहि विधामे हाथ-पएर मारै छथि। किछु लोक मेहनतिसँ ओहि विधाक रस पाबि लै छथि आ किछु आलसी लोक मेहनति करबाक डरसँ कुतर्कपर आबि जाइ छथि आ ओहि विधामे बिना नियमक हाथ-पएर मारै छथि। साहित्यमे गजल एहने विधा अछि जकर आकर्षणमे मेहनती एवं आलसी दूनू फँसल छथि। मैथिली भाषामे गजल विधामे आलसी रचनाकारक संख्या बेसी अछि आ बिना बहर-काफियाक रचना भरल अछि आ ताहिपर तुर्रा जे ससम्मान अपन रचनाकैँ गजल कहि महान बनि गेल छथि वा महान बनि रहल छथि। जेना साहित्यमे आलसी लोक छथि तेनाहिते मैथिली संगीतमे सेहो आलसी लोकक भीड़ अछि। गायक-संगीतकार लेल जरूरी जे ओ साहित्य केर विभिन्न विधासँ परिचित रहथि मुदा गायक-संगीतकार तँ अपन क्षेत्रमे मेहनति नै करै छथि तखन ओ साहित्य केर परिचय कोना लेता। ठीक साहित्यक आलसी जकाँ आलसी गायक-आलसी संगीतकार सेहो कचरा गायन ओ संगीत समाजक सामने राखै छथि। साहित्यकारे जकाँ गायक-संगीतकार सेहो गजलक आकर्षणसँ बाँचल नै छथि आ गजलक नामपर जे किछु कचरा भेटै छनि से गाबि लै छथि। ओना किछु एहनो गायक-संगीतकार छथि जिनकामे प्रतिभा छनि मुदा किछु कारणवश ओ बिना बहर-काफियाक रचनाकैँ गजल कहि गाबि लै छथि। हम निच्चा किछु सलाह ओहने प्रतिभावान गायक-संगीतकार सभ लेल लीखि रहल छी जाहिसँ ओ गजल गायनक क्षेत्रमे गलतीसँ बँचताह आ मैथिली गायनमे नीक अकाशक निर्माण करताह--

1) गजलकैँ चीन्हब---जेना कि उपरे कहलहुँ हरेक पद्यकैँ गाएल जा सकैए मुदा तकर ई मतलब नै जे सभ रचना गजले भऽ जेतै। कोनो गायक-संगीतकार लेल ई आवश्यक जे ओ गजलकैँ चीन्हथि। उदाहरण लेल मानू जे सोहर

आ निर्गुण दूनू पद्य छै आ दूनू गाएल जाइत छै मुदा कि अहाँ ककरो छठिहारमे निर्गुण गाबि देबै? आ जँ गाबि देबै तँ कि घरबैयासँ अहाँ बचि कऽ अपना घर एबै? अहाँ जखन छठिमे मधुश्रावणीक गीत नै गबै छी, कोजगरामे दुरागमनक गीत नै गबै छी, दुरागमनमे सोहर नै गाबै छी तखन गजलक नामपर, गजल कंसर्टक नामपर आन रचना किए गाबै छी? गायक-संगीतकारसँ हमर झगड़े एहि दुआरे अछि जे ओ गजलकनामपर आन रचना गाबै छथि कारण हुनका गजल की छै से नै बूझल छनि। "आप की अदालत" नामक कार्यक्रममे एकटा दर्शक जगजीत सिंहजीसँ पुछलकै- आपकी गजल है "ना चिट्ठी ना कोई संदेश" जगजीत सिंहजी ओकरा रोकैत कहलखिन जे ई गजल नै गीत छै आ सलाह देलखिन जे सभसँ पहिने ओ रचनाकेँ चीन्हथि। एहि कार्यक्रमक लिंक अछि youtube.com/watch?v=nEFcQfbE6sw आ प्रश्न देखबाक लेल 24 मिनट 27 सेकेंड समयपर जाउ। हिंदी-उर्दूक गजल गायक सभ एकै एलबममे गजल, नज्म, तराना आदि विधाक रचना गबै छथि आ मैथिल सभ समवेत रूपें ओहि सभ रचनाकेँ गजले मानि लै छथि, अध्ययन आदि किछु ने करै छथि। कोनो गायक नीक गबै छथि की खराप से हमरा लेल दोसर बात भेल, पहिल बात ई जे ओ गजल गाबै छथि वा गजलक नामपर आन विधाक रचना गाबै छथि। जे गायक कोनो गजलकेँ खराप गाबै छथि से माफी लायक भऽ सकै छथि मुदा जे गायक कोनो आन विधाक रचनाकेँ गजल कहि गाबै छथि (भने नीके किए ने) तँ ओ माफी लायक नै छथि। गायक-संगीतकार गजलकेँ चीन्हथि। गजल लेल बहर ओ काफिया अनिवार्य छै जँ कोनो रचनामे बहर-काफिया समेत गजलक आर गुण नै अछि तँ ओ गजल नै अछि आ गायक-संगीतकार ओकरा गजल नै कहथि।

2) जे गायक रचनाकारसँ लय सूनि कऽ गाबै छथि तिनका हम गायक नै मानै छी। मैथिलीमे एखन धरि कियो वास्तविक संगीतकार नै भेलाह तकर इएह प्रमुख कारण अछि। रचनाकार जे काँच-पाकल लय देलकनि सएह टा प्रयोग केलथि। गायक लग अपन कोनो कंसेप्ट नै रहैत छनि। बहुत गायक तँ पेट भरबाक लेल वएह परने गाएल गजलक लयपर गाबै छथि जखन कि गजल गायन एकटा अलग विधे छै आ एकरा अलग-अलग लयमे गेबाक चाही। "चुपके-चुपके रात दिन" गजल गुलाम अली गेलाह आर बहुतो गायक-गायिका कंठसँ सेहो निकलल मुदा जे गुलाम अलीजीक लय छनि से आशा भोंसलेक नै छनि मुदा गजल तँ वएह एकै छै। एकटा पोस्टमे मैथिलीक गीतकार चंद्रमणि झा लिखलखिन जे हमर अधिकांश गीतक नव लय नै बनल अछि आ जे गीत प्रचलित अछि तकर लय ओ अपने बनेने छथि। ई वास्तविकता अछि मैथिलीक आलसी गायक सभहक।

3) गायक सभ लग नव लय बनेबाक क्षमता एहि दुआरे नै रहैत छनि कारण ओ शास्त्रीय संगीत नै सिखने रहै छथि। बिना शास्त्रीय संगीत सिखने मंचे-मंच कूदए बला गबैया सभ गायन क्षेत्रमे किछु नै कऽ पबैत छथि। शास्त्रीय संगीत अनुशासनसँ संचालित छै आ जखन कियो एक विधामे अनुशासित भऽ जाइ छै तखन ओ दोसरो विधाक अनुशासनक महत्व बूझए लागै छै। मुदा गबैया सभ तँ अपने विधाक अनुशासन नै बूझल छनि आ एकर प्रभाव ई भेलै जे मैथिली गीत-संगीत कहियो उच्चस्तरीय नै भऽ सकल।

गजल गायन एकटा अलगे विधा छै। मुहम्मद रफी गजल सेहो गेलाह मुदा हुनका गजल गायनसँ नै चीन्हल गेलनि जखन कि बेगम अख्तर किछु फिल्मी गीत सेहो गेलीह मुदा हुनकर प्रसिद्धि गजल गायनसँ छनि आ हुनका

"गजलक रानी" कहल जाइत छै। बहर ओ गद्यात्मक शैलीक कारणे गजल लीखब जकाँ गजल गायन सेहो मेहनति माँगै छै। खास कऽ गद्यात्मक शैलीक कारणे मैथिल गायक सभ गजल गायनमे पिछड़ि जाइत छथि। जँ गायक गजलक नामपर आन रचना लेले छथि तँ ओहि रचनाक गायन गीते जकाँ भऽ जाइत छै। गजल गायनक नामपर जे किछु गाएल गेल छै तकरा सुनू बात स्पष्ट भऽ जाएत। एखन धरि मैथिलीमे कियो गजल गायक नै भेलाह् जे दाबी करै छथि से गजलक नामपर आन रचनाकेँ गीते जकाँ गेने छथि।

गजलक प्रभाग

भारतीय परम्परामे काव्यक बहुत प्रभाग छै जेना प्रबन्ध काव्य, खण्ड काव्य, गीति काव्य, मुक्तक आदि-आदि। आब ई प्रश्न उठैए जे गजलकेँ कोन प्रभागमे राखी। बहुत रास विद्वान (हिन्दी बला सभ) गजलकेँ मुक्तक काव्यमे राखै छथि। तँए बेसी अनुमान जे मैथिलिओकेँ विद्वान सभ गजलकेँ मुक्तक काव्यमे रखता मुदा परम्परानुसार गजल मुक्तकमे नै आबै छै कारण गजलक हरेक शेर एक दोसरसँ अलग-अलग होइ छै तँए शेरकेँ तँए मुक्तक काव्यमे राखल जा सकैए मुदा गजलकेँ नै। वास्तवमे गजल प्रबन्ध काव्य, खण्ड काव्य, गीति काव्य, मुक्तक जकाँ अपनाआपमे एकटा अलग प्रभाग अछि। दिक्कत ई छै जे प्रबन्ध काव्य, खण्ड काव्य, गीति काव्य, मुक्तक आदि संस्कृत परम्परासँ अबैत अछि मुदा गजल अरबी परम्परासँ तँए ई समस्या अछि। मुदा हमर स्पष्ट मानब अछि जे गजल प्रबन्ध काव्य, खण्ड काव्य, गीति काव्य, मुक्तक जकाँ अपना-आपमे एकटा अलग प्रभाग अछि। ओना मुस्लसल गजल (बाल गजल आ भक्ति गजल सहित) मुक्तक काव्य परम्परामे आबि सकैए कारण ऐमे हरेक शेरक विषय एकै होइत छै।

की गजल आ कविता एकै थिक?

मैथिली साहित्य केर बहुत रास विडंबनामेसँ एकटा विडंबना ईहो छै जे जँ इज्जत देत तँ ससुर बना कऽ आ बेइज्जत करत तँ सार बना कऽ। मुदा गौरसँ देखल जाए तँ दूनू छै बेइज्जते करए बला गप्प। आधुनिक मैथिली साहित्यमे गजलक संग इएह भेलै। शुरूआतेसँ किछु दुराग्रही आ कमजोर साहित्यकार,संपादक ओ आलोचक गजलक उपर कविताक लेबल साटऽ लगलथि। एखनो बहुत साहित्यिक लोक सभ गजलकेँ कविता कहै छथि। बहुत दुराग्रही सभ तँ ईहो कहै छथि जे गजल कविताक एकटा भाग भेल आ कविता संपूर्ण भेल आदि-आदि।आ एहन ठाम चुप्पे रहि जाए पड़ैए कारण दुराग्रहीसँ मूँह लगेलासँ कोनो फायदा नै।वस्तुतः जँ हमरा लोकनि अपन परम्पराकेँ देखी तँ बहुत रास गप्प फड़िछा जाएत। वेदमे रचनाकेँ काव्य कहल गेल अछि आ ॠचा निर्माताकेँ कवि (रचना मने ओ सभ जे कि रचल गेल चाहे ओ पाँति हो कि पदार्थ)।
पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।
(अथर्ववेद, अर्थ-परमात्माक काव्यकेँ देखू ओ ने तँ नष्ट होइत अछि आ ने मरैत अछि)
परम्परानुसार वेद सभकेँ अपुरुषेय मानल जाइत छै मने एहन काव्य जे मानव द्वारा नै भऽ कऽ भगवान द्वारा भेल

हो। तँए यजुर्वेदमे परमात्माकेँ कवि कहल गेल छै—

---कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः याथातथ्यतो, अर्थात् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः|

ऐ दूटा उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे रचना लेल काव्य शब्द अछि आ रचयिता लेल कवि। चूँकि वेदकेँ अपुरुषेय मानल गेल अछि तँए लोक सभ वाल्मीकि रमायणकेँ पहिल मानव काव्य मानै छथि आ वाल्मीकिकेँ पहिल मानव कवि। ऐ ठाम ई जानब रोचक हएत जे काव्य मने मात्र रचना होइत छलै चाहे ओ एखनका गद्य बला हो की पद्य बला सभ काव्य छल। कालक्रमे बहुत कवि लोकनि ई अनुभव केला जे काव्यक किछु भाग सरस ओ गेय अछि आ किछु भाग नीरस ओ शुष्क। कालक्रमे कवि सभ सरस, गेय ओ पदलालित्यसँ भरल काव्य एवं नीरस ओ शुष्क काव्यकेँ अलग-अलग कऽ देलाह। एही ठामसँ पहिल बेर गद्य ओ पद्य केर अवधाराणा आएल। शुष्क ओ नीरस काव्य गद्य भेल तथा सरस,गेय आ पदलालित्यसँ भरल कव्य पद्य भेल। ॠगवेदसँ किछु ॠचा लऽ कऽ सामवेद बनाएब काव्यसँ पद्य बनेबाक सभसँ पहिल आ सुंदर उदाहरण अछि। ऐठाम कही जे पहिने ॠगवेदक पाठ कएल जाइत छलै बादमे सामवेदक बाद गायन परम्परा शुरू भेल।

ऐ ठाम ई स्पष्ट करब जरूरी जे छन्द व्यस्था गद्य-पद्य निर्धारणोसँ पुरान अछि। दुनिया जै पोथी सभकेँ प्राचीनतम पोथी मानैए तैमे ॠगवेदक पहिल नाम अछि आ ॠगवेदक सभ ॠचा विभिन्न छन्द यथा गायत्री, अनुष्टुप,पंक्ति, महापंक्ति, शक्करी आदि-आदि छन्दसँ रचल सजल अछि। मने ई मानल जाइए वा मानबामे कोनो दिक्कत नै जे छन्द सभ ॠगवेदोसँ पुरान अछि। जँ पुरान नै रहितै तँ ई छन्द सभ ॠगवेदमे एबे नै करितै। वेद पढ़ैत काल तँ ईहो लागत जे कवि पहिने छन्दक रचना केने हेता तकर बादे वेदक। बादमे वैदिक छन्दक सहारासँ बहुत रास छन्द बनल। आ कवि लोकनि सेहो नाना प्रकारक काव्य रचना केला। बादमे जखन संस्कृत टूटल आ प्राकृत भाषा बनल तखन संस्कृतक बहुत रास छन्द नै चलल मुदा ओही संस्कृतक छन्दक सहारासँ अनेक नव छन्द बनल खास कऽ मात्रिक छन्दक अनेक भाग ओ प्रभाग। एही भागमे एकटा भाग अछि कवित्त कहि कऽ (उच्चारणमे कबित्त)। वस्तुतः कवित्त पहिने छन्द मात्र छल बादमे एकर विस्तार होइत गेल आ एकर अनेक भाग-उपभाग जेना भैरव (बंगलामे पयार), रूपघनाक्षरी, घनाक्षरी मनहरण आदि सभ बनल आ कवित्त अपना आपमे जातीय छन्द बनि गेल (जातीय छन्द मने एहन छन्द जकर बहुत उपभाग हो) ई वस्तुतः वैदिक छन्द (सरल वार्णिक)क बेसी लगीच अछि मुदा वैदिक छन्दक गायन उदात-अनुदात-स्वरितसँ चलै छै तँ कवित्त जातीय छन्दक गायन शब्द खण्डपर। एकटा शब्दक अनेक खण्ड भऽ सकैए आ ई जरूरी नै छै जे शब्द खण्ड सभ सार्थक हुअए जेना परिशीलन ऐ शब्दमे तीनटा शब्द खण्ड अछि परि-शी-लन। कवित्त जातीय छन्द एही शब्द खण्डपर टिकल अछि। कवित्त जातीय छन्द चारि पाँतिक होइत अछि आ वैदिके छन्द जकाँ अक्षर गानि कऽ बनाओल जाइत छै। ई कवित्त जातीय छन्द सभ मध्यकालीन ब्रजभाषा साहित्यमे खूब भेल खास कऽ कृष्ण भक्ति काव्यमे। ब्रजभाषामे रसखान कवित्त केर प्रचुर प्रयोग केला। मैथिलीमे सेहो कवित्त जातीय छन्दक रचना भेल मुदा

ब्रजभाषा केर बाद (प्राचीन मैथिली मने प्राकृत-अप्रभंश बला साहित्यमे कवित्तपर शोध एखन बाँकी अछि, कवित्तकेँ घनाक्षरी सेहो कहल जाइत छै)। डा. शिवप्रसाद सिंह अपन पोथी "विद्यापति "मे मैथिली ओ ब्रजभाषा मध्यक समता-विषमताक नीक जकाँ चर्चा केने छथि। निश्चित रूपसँ कवित्त जातीय छन्द ब्रजभाषासँ आएल हएत। मध्यकालीन मैथिली साहित्य सुप्तावस्थामे छल से सभ साहित्यिक इतिहासकार मानै छथि आ बहुत संभव जे ओही कालमे ई कवित्त जातीय छन्द सभ मैथिलीमे आएल आ कृष्ण भक्ति हेबाक कारणें ततेक लोकप्रिय भेल जे मिथिलामे कोनो प्रकारक पद्यकेँ कवित्त कहऽ लागल लोक सभ। मुदा ऐठाम ई धेआन राखब बेसी जरूरी जे ई कवित्त शब्दक प्रयोग महिला द्वारा बेसी होइत छल। गाम घरक पुरान महिला सभ एखनो कहै छथि जे ई बड्ड कवित्त करैए। मने ई सूक्ष्म अवधारणा भेल जे कतिपय पुरुष जे की साहित्यिक छलाह से पद्यक अलग-अलग भागसँ परिचित छलाह एवं असाहित्यिक लोक एवं महिला लोकनि हरेक पद्यकेँ मात्र कवित्त जानै बूझै छलथि। मने ई कवित्त शब्द एक तरहें पद्य शब्दकेँ झाँपि देने छल। आधुनिक कालमे एही कवित्त शब्दसँ कविता शब्द लोकप्रिय भेल। मुदा ई कविता शब्द हिन्दीमे बनल आ तकर बाद मैथिलीमे आएल। भ्रम सदिखन भ्रम होइत छै से पद्य आ कविताक संदर्भमे छै आ ई सभ साहित्यिक लोककेँ बुझबाक चाही। आब अहाँ सभ ऐ पाँतिपर अबैत-अबैत गप्प बुझि गेल हेबै जे कविता संपूर्ण नै थिक ई मात्र काव्यक प्रभाग थिक।मुदा हम मात्र पाठकसँ अपेक्षा करै छी जे ओ ई अंतरकेँ बुझता कारण दुराग्रही आलोचक ओ संपादक संगे-संग जानि-बूझि कऽ बनल अज्ञानी तथ्यकेँ कात कऽ कऽ अपन गप्प रखै छथि से सर्वविदित अछि। जँ ऐ लेखक संक्षिप्त रूप हम राखए चाही तँ एना हएत--

काव्य= रचना

कवि= रचना रचए बला

पद्य= सरस, गेय ओ पदलालित्यसँ भरल रचना

गद्य= नीरस ओ शुष्क रचना

बादमे विषयमे रोचकता आ अद्भुत आख्यान जोड़ि गद्यकेँ सेहो सरस बनाओल गेल किछु गद्यमे सरसता ओ पदलालित्य दूनू आएल मुदा गेयता नै आबि सकल। ऐ काव्य प्रकरणमे नाटक आंदोलनकारी भूमिकामे आएल आ एकरा दृश्य काव्यक उपाधि भेटलै।नाट्यशास्त्रकेँ पंचमवेद सेहो कहल जाइत छै।आब ऐ प्रश्नपर आबी जे गजल लिखनाहरकेँ की कहबाक चाही। गजल चूँकि काव्यक एकटा प्रभाग अछि तँए गजल लिखनाहर लेल कवि शब्द प्रयोगमे आनल जा सकैए मुदा आन-आन विधा जेना कथा लेल कथाकार,उपन्यास लेल उपन्यासकार, नाटक लेल नाटककार, गीत लेल गीतकार आलोचना लेल आलोचक आदि भऽ सकैए तखन गजल लेल गजलकार वा शाइर किएक नै? गद्यो तँ काव्यक प्रभाग छै तखन एकर विधा सभ लेल कवि शब्द प्रयोग हुअए। जहिया गद्य लेल कवि शब्द प्रयोग होमए लागत तहिया गजलो लेल एहन भऽ जेतै।

खण्ड-23

गजलक गुण ओ दोष

गजलक गुण

गजलक किछु अपन विशेषता होइ छै जँ ई शेरमे सुरक्षित रहि गेल तँ वएह गजलक गुण कहबैत छै। तँ देखू किछु गुण---

1) संकेतिकता--जँ शेरक अर्थ संकेतसँ निकलैत होइ तँ ई बड़का गुण भेल। ओना कोनो समयमे एकटा गजलक सभ शेर एहन तँ नै भेलैए मुदा जँ एकटा गजलक एकौटा शेर एहन भऽ गेल तँ बुझू जे गजलकेँ ओ महान बना दै छै।

2) दार्शनिक ओ अध्यातमिक--जै गजलक शेर दार्शनिक ओ अध्यात्मिक रहै छै बेसी नीक। मुदा ऐ ठाम ईहो मोन राखू जे जँ गजलक शेर सभमे प्रेमक वर्णन छै तैयो ओहि प्रेमक वर्णन एना हेबाक चाही जैसँ लागै जे ई शेर आत्मा ओ परमात्माक बीच भेल हो।

3) कहबी ओ मोहावरा----जे शेर जतेक कहबी ओ मोहावरासँ सजल रहत ओइ शेरकेँ लोकप्रिय हेबाक बहुत संभवाना रहै छै।

4) संक्षिप्तता--जै शेरमे बहुत कम शब्दमे बहुत बेसी अर्थ निकलैत हो से शेर ततेक महान। एकरा एनाहुतों बूझि सकै छिऐ जे शेरकेँ बहुअर्थी हेबाक चाही। मने एकैटा शेर जेहन जगहपर कहल गेल ओकर अर्थ ओहि जगह केर हिसाबसँ निकलै। मिहिर झा जीक ई रुबाइ देखू--

शराब तँ पानि छै निसाँ एकर अहीँ तँ छी
सिनेह तँ ठाम छै दिशा एकर अहीँ तँ छी
छैक शराबी संग टूटल करेजक गाथा
शराब पीबै कोइ खिस्सा एकर अहीँ तँ छी

ऐ रुबाइकेँ पढ़ू। ऐ रुबाइमे प्रयुक्त भेल “अँहीं “केओ भऽ सकैए। जँ एकरा अपना माए-बाप लेल पढ़ल जाए तैयो सार्थक छै। जँ प्रेमिका लेल पढ़ल जाए जाए तैयो सार्थक छै। जँ गुरूजन लेल पढ़ल जाए जाए तैयो सार्थक छै। जँ पत्नी लेल पढ़ल जाए तैयो सार्थक छै। तड़िखानामे पढ़ल जाए जाए तैयो सार्थक छै। जँ मंदरि-मस्जिदमे पढ़ल जाए जाए तैयो सार्थक छै। मने जगह वा आदमीकेँ बदलिते ओही अनुरूपसँ अर्थ बदलि रहल छै। गजलक शेरकेँ एहने हेबाक चाही।

5) जँ गजलक शेर सभ समकालीन समस्या ओ वर्तमान विषयकेँ समेटने हो तँ लोकप्रिय होइ छै।

6) ओना तँ गजल अपन विरह-वेदना लेल जानल जाइत अछि मुदा जँ इएह वेदना आशा केर चद्दरिमे झाँपल हो तँ पढ़बा ओ सुनबामे नीक लगै छै।

7) ओना लगभग हरेक रचना लोकक अपन दुखसँ लिखैए (जे ई गप्प कहैए जे हम समाजक दुखसँ दुखी भऽ

रचना केनाइ शुरू केलहुँ ओ फूसि बाजि रहल अछि)। मुदा जँ गजलक शेर सभ ऐ तरीका कहल गेल हो जैसँ पढ़ए वा सुनए बलाकेँ गजलकारक दुख अपन दुख सन लागै तँ बुझू जे ओ शेर कालजयी भऽ जाइत अछि।
8) रचना ओएह टा सर्वकालिक होइ छै जइपर भविष्योमे बहस होइत रहै। तँइ हमरा हिसाबें गजलक रचना ओइ तरहें हेबाक चाही जे वर्तमानक संगे भविष्यो लेल उपयोगी हो।

गजलक दोष

किछु एहनो तत्व छै जकरा रहने गजलक महत्व घटि जाइ छै आ एकरे गजलक दोष कहल जाइत छै। ऐ दोषक वर्णनमे हम पहिने रदीफक दोष तकर बाद काफियाक दोष तकर बाद बहरक दोष तकर बाद शेरक दोष आ अंतमे गजलक दोष कहब। तँ चलू पहिने रदीफक दोषपर--
1) जँ गजलमे रदीफ नै छै तँ ई कोनो दोष नै भेल मुदा ई अनुभवसिद्ध गप्प अछि जे रदीफ बला गजल पढ़बा ओ सुनबामे नीक लगै छै।
2) जँ कोनो शेरक रदीफ काफियासँ तालमेल नै बैसा सकल अछि तँ ई रदीफक बड़का दोष भेल। ऐ दोषकेँ पकड़बा लेल ई नियम मोन राखू---रदीफकेँ हटा कऽ बचल वाक्य खण्डकेँ देखू जँ ओहि वाक्य खण्डक कोनो अर्थ छै तँ मानल जाएत तँ रदीफ ओ काफियामे कोनो तालमेल नै अछि। आ जँ बचल वाक्य खण्क कोनो अर्थ नै छै तँ ई मानल जाएत जे रदीफ आ काफियामे तालमेल छै।   एकरा एनहुतो बुझू जे काफिया आ रदीफ देह ओ प्राण सन हेबाक चाही जेना प्राण बिना देह बेकार आ देह बिना प्राण बेकार बस तेनाहिते रदीफ आ काफियाक सम्बन्धमे बुझू।
3) मतलामे रदीफक निर्धारण भेलाक बाद आन शेर सभमे रदीफ बदलि नै सकै छी।
4) तकाबुले रदीफ नामक दोषक वर्णन रदीफक संगे कएल गेल अछि।
तँ आब आबी काफियाक दोषपर--
1) गजल लेल भाषा सापेक्ष काफिया अनिवार्य अछि। भाषा सापेक्ष काफियाक मतलब ई जे जै भाषामे गजल हो तै भाषाक अनुरूप हो। जँ भाषाक उच्चारण बदलि रहल छै ताहू स्थितिमे काफियाक नियममे बदलाव आएत। बिनु काफियाक गजल नै हएत।
2) ईता दोष पहिनेहें विस्तारपूर्वक देल जा चुकल अछि।
3) ऐ सभहँक अलावे इकवा दोष, इफ्का दोष,गुलू दोष आदि सभ सेहो छै मुदा जँ काफियाक नियमक हिसाबें बनेबै तँ ई दोष नै रहत। ओनाहुतो ऐ दोष सभमे बहुत दोष एहन अछि जे भारतीय भाषामे नै लागत।
आब आउ शेरक दोषपर--
1) जँ शेरक दूनू पाँतिक अलग-अलग अर्थ छै तँ ई शेरक दोष भेल। शेर लेल ई अनिवार्य अछि जे पहिल पाँतिक

अर्थ दोसर पाँतिपर टिकल रहबाक चाही।

2) जँ कोनो पाँतिमे एकौटा शब्द बेमतलब के छै (फाजिल भेलापर एहने बूझू) तँ ईहो शेरक दोष भेल। ऐ दोषकैं एना चीन्हल जा सकैए--

"सुखाइत पोखरि तँ बाजल इनारसँ"

जँ ऐ पाँतिकैं एना लिखबै

"सुखाइत पोखरि बाजल इनारसँ"

दूनू पाँतिक अर्थकैं देखू। दूनू पाँतिक अर्थ एकै अछि। तँ ई मानल जाएत जे पहिल पाँतिमे "तँ "शब्दक बेमतलबक प्रयोग अछि ऐकैं बिना सेहो अर्थ पूरा-पूरी छै। मुदा "तँ" शब्द केर प्रयोग मैथिलीमे बातपर जोर देबाक लेल होइत छै। जेना "अँहीं तँ कहने रही "। एहन अवस्थामे ई दोष नै मानल जाएत।

3) जँ शेरक कोनो पाँतिमे आवश्यक शब्द छोड़ि देल गेल छै तैयो एकरा दोष मानल जाइए।

4) जँ कोनो शेरक पहिल पाँतिमे आदर सूचक शब्द छै मुदा दोसर पाँतिमे बराबरी वा अनादर सूचक शब्द छै (वा एकर उन्टा) तँ ई शेरक दोष भेल। संगे-संग ई गप्प काल मने भूतकाल, वर्तमान काल ओ भविष्यकाल लेल सेहो अछि।

5) जँ शेरक शब्द व्यवस्था चुस्त नै अछि तँ ई दोष भेल। उदाहरण देखू--

अ) पछाति अहाँक एलाक

आ) अहाँक एलाक पछाति

इ) एलाक पछाति अहाँक

ऐ तीनटा वाक्यकैं देखबै तँ पता चलत जे दोसर वाक्य "अहाँक एलाक पछाति" चुस्त-दुरुस्त शब्द बला अछि आ सहज अर्थ सेहो दैए

6) शेरक कोनो पाँतिमे एहन शब्द वा शब्द समूह जकर अर्थसँ अश्लीलताक गंध निकलैत हो से दोष भेल। उदाहरण लेल ई पाँति देखू

"मारि लेलिऐ"

ऐ पाँतिक अर्थ अधिकत्तर अश्लीलताक गंध लेने रहैए तँए ई दोष भेल। ऐ ठाम ई मोन राखू जे ई दोष क्रियासँ संबंधित अछि। ऐ दोषकैं दूर करबाक लेल क्रियासँ पहिने संज्ञाकैं आनि दिऔ

"बाजी मारि लेलिऐ"

आब देखू दोसर पाँतिक अर्थ श्लील अछि।

7) जे गप्प पहिने कहल जेबाक चाही से गप्प जँ बादमे कहल गेल हो (मने शेरक दोसर पाँतिमे) तँ ई शेरक दोष भेल।

8) टंगट्विस्टर बला भाषा शेरमे नै एबाक चाही। जेना "कक्का काकीकैं कटहर कीनि कऽ देलखिन्ह" ई पाँति वा एहन पाँति शेर लेल बेकार।

बहरक दोष बस एक मात्र छै। जँ कोनो गजल सभ शेर एकैटा बहरमे नै अछि तँ ई बहरक दोष भेल। बहर मने छंद। गजल लेल छंद वर्णवृत अछि।

तँ आब आउ अंतमे गजलक दोष देखी हम सभ--

1) जँ कोनो गजलक सभ शेर एकै बहरपर नै अछि तँ ई गजलक दोष भेल।

2) जँ कोनो गजलक सभ शेरमे एकै रदीफ नै अछि तँ ई गजलक दोष भेल।

3) जँ कोनो गजलक एकौटा शेरमे काफिया गलत अछि तँ ई गजलक दोष भेल।

संगे-संग उपरमे देल गेल दोषमेसँ कोनो दोष शेरमे अछि तँ ई गजलक दोष भेल किएक तँ अंततः गजल किछु शेरक संग्रह अछि।

की तुकान्त काव्य आ छन्दोबद्ध काव्य एकै होइत छै?

समान्यतः मध्यकालसँ लऽ कऽ मिथिलामे जेना-जेना शिक्षा घटैत गेल काव्य संबंधी परिभाषा ओझराइत गेल। उदाहरण लेल अधिकांश मैथिल मात्र तुकान्त काव्य के सूनि ओकरा छन्दबद्ध मानि लै छथि। दोष मात्र पाठक वा श्रोताक नै छै। अधिकांश काव्यकार अपनो इएह मानै छथि जे तुकान्ते काव्य छन्दबद्ध होइत छै।

वस्तुतः ई गलत अछि। ई कोनो जरूरी नै छै जे तुकान्त काव्य छन्दबद्ध हेबे करतै। तुकान्तक प्रयोग तँ लोक अनेरे करैत रहै छै जेना एकटा कहबीकैं देखू –

ऐ नदियाक इएह बेबहार
खोलू धरिया उतरू पार

ई तुकान्त तँ अछि मुदा कोनो ज्ञात छन्दमे नै अछि से (ज्ञात छन्द मने ओहन छन्द जकर चर्चा पहिनुक आचार्य कऽ गेल होथि)। आ एहन-एहन उदाहरण बहुत भेटत। तँए ई मात्र भ्रम अछि जे तुकान्त काव्य छन्दबद्ध होइत छै।

गजलक समीक्षाशास्त्र

सभसँ पहिने हम ई स्पष्ट कए दी जे ई मात्र दिशा-निर्देश अछि आ सेहो जेना गजेन्द्र ठाकुर जी आन विधा सभ लेल देने छथिन्ह तेहने सन आ गजेन्द्रे ठाकुर जीक समीक्षा शास्त्र केर रूप अछि। आ एहिमे ओ दिशा निर्देश सभ अछि जे समय-समयपर गजेन्द्र ठाकुर जी गजल लेल फुटकर रूपें दैत रहलाह अछि एहिमे किछु शब्द हम अपनो दिसँ जोड़लहुँ अछि प्रसंगक हिसाबसँ------

1) सभसँ पहिने गजलक भाषा देखू। भाषा मने कहीँ एहन तँ नै छै की कोनो गजलकार स्वतंत्रता केर नामपर गजलमे हिन्दी भाषाक प्रयोग केने छथि। ऐठाम ई धेआन देबाक गप्प थिक जे जँ अपन भाषामे कोनो शब्द नै हो तँ ओकरा लेल जा सकैए।

2) भाषा देखलाक बाद व्याकरणपर आउ। व्याकरण मने रदीफ, काफिया आ बहर।

3) व्याकरण देखलाक बाद समान्य गजल दोष आ गजल विशेषताकैं देखू।

4) गजल दोष आ गजल विशेषताकेँ देखला बाद भावनाकेँ देखू। ऐठाम हम ई मोन पाड़ए चाहब जे काव्य मात्र कागजपर लीखल शब्द नै हेबाक चाही बल्कि अपन जीवनक कर्मसँ अनुप्राणित हेबाक चाही। मने जँ केओ दलितकेँ सतबै छथि मुदा ओ अपन गजलमे दलितकेँ पूजा करै छथि तँ हमरा हिसाबेँ ई दूषित भावना भेल। ओना कहल जा सकैए जे आलोचक की समीक्षक तँ रचने पढ़ि कऽ समीक्षा करता ने। बात सही मुदा रचनाकारक सही-गलत कर्म नुकाएल नै रहै छै। तँए रचनाक संगे-संग कर्मक सेहो समीक्षा हेबाक चाही। एहिठाम मोन राखू जे हम एतए मात्र जीवन कर्म आ रचना कर्मक बीचक मात्र न्यूनतम फाँक दिस इशारा कऽ रहल छी। जखन कोनो लेखक अपन पहिल पत्नीकेँ त्यागि दोसर बियाह कऽ लैत अछि आ ओकर बाद स्त्रीक दुखपर रचना लिखैत अछि तखन लेखकक जीवनकर्म आ रचनाकर्मपर आलोचना करब आवश्यक भऽ जाइत अछि। आन विषय लेल एहने बूझू। लेखक लेल आवश्यक नहि जे ओ हाथमे बंदूक उठा बार्डरपर जा लड़ाइ कइए कऽ वीर रसक रचना करत वा वेश्यागामी भऽ कऽ वेश्यापर रचना लिखत। मुदा ई अपेक्षा तँ राखले जा सकैए जे ओ अपन जीवनमे इमानदारी रखैत हो। खास कऽ ओहन रचनाकार जे कथ्य की भाव लेल अनेरे परेशान रहै छथि तिनकर रचनामे कर्मक सेहो समीक्षा हेबाक चाही। आलोचक की समीक्षक जासूस नै छथि तँए हमरो बूझल अछि जे सभ समय लोक रचनेक समीक्षा करता। रचनाक संग कर्मक नै। ओना हमरा विश्वास अछि जे जहिया आलोचक रचनाक संगे-संग कर्मक आलोचना करता तहियासँ फेरो कविकर्म महान भऽ जाएत। किछु लोक विदेशी लेखकक जीवन केर उदाहरण दै छथि। मुदा धेआन देबाक गप्प ई जे भारत जकाँ विदेशमे लेखक अपनाकेँ खाली लिखबाक कारणे महान नै मानै छथि। ओ विदेशी लेखक सदिखन अपनाकेँ साधारण आदमी बूझि लिखैत अछि आ बेबहारो करैत अछि। मुदा भारतमे एकटा दुमसियो बच्चा एक पाँतिक कविता लीखत तँ ओ अपनाकेँ महान बूझए लागैए तखन तँ कर्म आ लेखन बीचक फाँक उघाड़ हेबे करत संगे-संग आलोचना सेहो हेबे करत। ईहो स्पष्ट करब जरूरी जे हिंदू धर्ममे कर्मकेँ मरलाक बादो प्रधानता देल गेल छै तँइ लेखककेँ मरलाक बादो हुनकर कर्मकेँ समीक्षा हेबाक चाही। आ गंभीर रूपसँ हेबाक चाही तखने दोसर लेखक सभहँक रचना ओ जीवन कर्मक बीच संतुलन एतै। जइ लेखक केर रचना ओ कर्मक बीच जते कम फाँक रहत ओ लेखक आ ओकर रचना ओतबे महान। किछु लोक कहि सकै छथि जे साहित्यिक लेखन आ धार्मिक लेखनमे अंतर होइत छै तँइ साहित्यिक लेखन लेल कर्मक संग ताल-मेल जरूरी नै मुदा हमरा हिसाबें ई कुतर्क थिक कारण कोनो प्रकारक लेखन कि कला समाजकेँ प्रभावित करै छै तँइ लेखक-कलाकारक जीवन-लेखन-कलामे ताल-मेल रहब जरूरी छै। एहिठाम फेर मोन राखू जे हम एतए मात्र जीवन कर्म आ रचना कर्मक बीचक मात्र न्यूनतम फाँक दिस इशारा कऽ रहल छी। एहिठाम ईहो प्रश्न उठि सकैए जे जखन साहित्यकार समाज अपन आलचोना बरदास्त नै करै छथि तखन आन प्रोफेशनक लोककेँ साहित्यकार किए आलोचना करै छै। भारतमे सभसँ बेसी काज पुलिस प्रोफेशन केर लोक करै छै मुदा साहित्यकार ओकरा सदा घूसखोर कहि आलोचना करै छै। तेनाहिते आनो प्रोफेशनक लोकपर साहित्यकारक नजरि रहै छै मुदा अपना बेरमे ओ सभ सुविधा चाहै छथि जे साहित्यकारक काज उपदेश बला नै छै। या तँ साहित्यकार अपन आलोचना लेल कृतिक संगे कर्मो राखथि या आन प्रोफेशन बला लोकक आलोचना छोड़ि देथि।

आब एक बेर गजल आलोचनाक भाषापर बात कऽ ली। देखल जाइए जे आलोचक आलोचनामे कोनो दोष वा कोनो गलत प्रवृति लीखै छथि तखन ओ “अन्य पुरुष” बला भाषामे आलोचना लिखै छथि मने बातकँ एतेक घुमा-फिरा कऽ जइसँ ई पता नै चलै जे किनकर दोषक विवरण छै। ई खराप लक्षण। एहन भाषामे आलोचना करए बला या तँ साहसी नै छथि या कोनो लोभ-लाभसँ ग्रस्त छथि तँइ खुलि कऽ नाम सहित नै लीखि पाबै छथि। हमरा हिसाबें ई गलत परंपरा अछि। जँ कोनो रचनामे दोष छै तँ रचनाकारक नाम सहित ओइपर बहस हेबाक चाही। जँ नै तखन आलोचना-समीक्षा लिखबे नै करू। आजुक गजल तँ अपन कथ्यमे सपाट भेल जाइए मुदा आलोचना घुमावदार। जखन गजलक भाषाकँ घुमादावर हेबाक चाही आ आलोचनाक भाषा सपाट। ऐ किछु समान्य निर्देशक संग हम एकरा विराम दए रहल छी। अहाँ सभ लग जँ कोनो आर गप्प हुअए सूचित कएल जाए।

गजलकारक व्यक्तित्व आ योग

चलू आब करी किछु गप्प गजलकरक व्यक्तित्वक बारेमे। पहिने फाटल-चीटल कपड़ा, दाढी बढ़ल आ बताह शराबी सनक व्यक्तित्व बूझल जाइत छलै गजलकार सभहँक। पहिने शाइरी फुल टाइमक काज छलै मुदा जुग बदलि गेल छै ओ आजुक संदर्भमे अपन राज-काज करैत खाली समयमे शाइरी कऽ रहल छथि तँए आजुक शाइरक व्यक्तित्व सेहो अलग अछि तँ देखी जे आजुक समयमे शाइर अपन व्यक्तित्वकँ कोना नीक बना सकै छथि--

कोनो शाइरक व्यक्तित्वक दूटा पक्ष होइ छै शारिरिक आ मानसिक। किछु लोक कहि सकै छथि जे मानसिक व्यक्तित्व नीक तँ किछु कहता जे शारिरिक पक्ष नीक। मुदा हमरा जनैत पहिने शारिरिक पक्ष मजगूत हेबाक चाही तखन मानसिक पक्ष। हथियार बनेबा कालमे पहिने ओकर ढ़ाँचा बनै छै तखन ओकरा शानपर चढ़ा धार देल जाइ छै तँए पहिने शारिरिक तकर बाद मानसिक। तँ आउ देखी जे कोनो गजलकार अपन शारिरिक विकास कोना कऽ सकै छथि। शारिरिक विकास लेल आसन सभसँ बेसी कारगर अछि। एहि ठाम धेआन राखू जे आइ-काल्हि मात्र आसनकँ योग बुझि लेल गेल अछि से गलत अछि। योग बहुत बड़का खंड छै जकर एकटा भाग आसन छै। आसनसँ पहिने यम-नियम साधए पड़ैत छै तखन आसन लेल योग्य मानल जाइत छै मुदा आइ-काल्हि आधा तीतर आधा बटेर बला हाल अछि टी.भी बाबा सभहँक कृपासँ। ओना बहुतों लोक कहै छथि जे आसनसँ शरीर पूर्णतः निरोग रहत। मुदा हमरा जते ज्ञान अछि तै हिसाबसँ ई गलत अछि। हँ, एते मानबामे हमरा कोनो दिक्कत नै जे योगाभ्याससँ बेमारी देरसँ अबै छै आ जल्दिये चलि जाइ छै। ओना टी.बी बला बाबा सभ कहै छथि जे आसनसँ पूर्णतः निरोग रहल जा सकैए। योगासन विज्ञान भगवान शंकरक देन अछि। भगवान शंकरक हिसाबें धरतीपर जते प्राणी अछि तते योगासन अछि। आ ओहि समयमे चौरासी लाख प्राणी छल। तँए भगवान शंकरक हिसाबें चौरासी लाख आसन भेल मुदा... कालक्रमे असुविधाकँ देखैत चौरासी हजार आसनकँ प्रमुख मानल गेल तकर बाद फेर चौरासी सए, फेर तकर बाद चौरासी, फेर तकर बाद बत्तिस आ अंतमे मात्र एग्यारह वा आठ टा आसनकँ प्रमुख मानल गेल। एहू ग्यारह वा आठमे मात्र चारि टा आसन प्रमुख अछि सिद्धासन (वज्रासन),

पद्मासन, सिंहासन एवं भद्रासन। एहू चारिटामे दूटा प्रमुख मानल गेल--सिद्धासन (वज्रासन ऐ वज्रासनक अलावे एकटा आर वज्रासन अछि।), एवं पद्मासन आ अंतमे एहू दू टामे सिद्धासन (वज्रासन)के सर्वप्रमुख मानल गेल मुदा ई सिद्धासन (वज्रासन) गृहस्थ लेल वर्जित सन अछि कारण एकर अभ्याससँ वीर्य ऊपर चलि अबै छै आ तैसँ लोकमे सेक्स इच्छा कम भऽ जाइत छै। हँ, अखण्ड ब्रम्हचारी लेल ई आसन सर्वोत्तम अछि। ओना हम टी.बी बाबा नै छी मुदा योगाभ्यास सभ दिनसँ करैत रहलहुँ अछि आ तँए हम अपने अनुभव कएल मात्र 12-13 टा आसन कहब जे की शाइरक संगे-संग सभ लोक लेल उपयोगी रहतआसन साधबाक लेल सभसँ नीक समय भोर थिक। लगभग चारिसँ छह बजे धरि। ओना बदलैत समयमे कोनो समय भऽ सकैए मुदा आसन खाली पेटमे कमाल देखबै छै तँए भोरक समय सभसँ नीक। आसन करबाक लेल साफ जगह ताकि ली आ सूती आसन ओछा कऽ चंचल मोनकेँ एकठाम आनी आ पद्मासन, वीरासन, धनुरासन, चक्रासन, उतानपादासन, गर्भासन (विदुषी मने शाइरा लेल विशेष उपयोगी), टिट्टिभासन, कोकिलासन, मत्येन्द्रासन, पश्चिमोत्तासन, तकरा बाद अंतमे श्वासन केर अभ्यास करी। सभ दिन रातिमे खेलाक बाद वज्रासन के अभ्यास करी। ऐ ठाम आसन करबाक विधि ओ लाभ नै देल जा रहल अछि कारण आसन सदिखन गुरुएसँ सिखबाक चाही। ओना हम जै ठाम व्यक्तिगत रूपें रहब आ तै ठामक शाइर चाहथि तँ ओ हमरासँ सीखि सकै छथि (हम मात्र अभ्यास करै छी योग्य नै छी)। शारीरिक चर्चाक बाद चली आब किछु एहन गप्प दिस जैपर धेआन देलासँ कोनो शाइर मानसिक रूपें नीक बनि सकै छथि--

गजल सुनब-पढ़ब-कहब-लिखब सभकेँ नीक लगै छै। मुदा बहुत काल गजलकारमे किछु एहन दोख आबि जाइत छै जै कारण गजलकारक रचना उत्तम (उत्तम) रहितों लोक ओकरा नकारि दै छै। तँ देखी किछु एहन दोख जे की प्रायःप्रायः सभ गजलकारमे आबि जाइत छै चाहे ओ गजलकार हम रही की अहाँ—

1) प्रायः प्रायः सभ गजलकार अपन नव गजल पूर्ण होइते सामनेमे जे भेटलनि तिनका गजल सुनाबऽ लगै छथि। ने समयकेँ धेआन ने स्थानक आ ने सुनऽ बलाक मानसिक अवस्थाक धेआन। एकर परिणाम ई होइए जे सुनऽ बला लोक ओइ गजलकारसँ कनछीया काटऽ लागैए। ताहूसँ बढ़ि ई जे ओ सुनऽ बला लोक पूरा गजलेसँ कनछीया काटऽ लागैए। ओहि सुनऽ बला लोक के होइ छै जे सभ गजलकार एहने होइ छै। फलस्वरूप लोकक व्यक्तिगत संबंध अप्रत्यक्ष रूपसँ बिगड़िते छै गजलोकेँ नोकसान होइ छै। ओनाहुतो गजल एवं शेरो-शाइरी मूडपर निर्भर करै छै तएँ पहिने मूड देखू तखन सुनेबाक प्रयास करू।

2) प्रायः सभ गजलकार “हम” बला बेमारी पोसने छथि। हम ई केलहुँ तँ ओ केलहुँ। हमर गजल एहन तँ हमर शेर ओहन। मने अपनेसँ अपने बड़ाइ। सरकार जँ इएह बड़ाइ दोसर मूँहसँ आएत तखने लोक बूझत जे नीक।

3) मंचपर गजल प्रस्तुत करै कालमे बहुतों शाइर ओइ गजलक भूमिका बान्हऽ लगै छथि। ऐसँ श्रोता अनमना

जाइ छथि। तँए गजल बिना भूमिकाक पढ़बाक चाही (जँ शेर कोनो खास घटनासँ जुड़ल हो तँ ओकर भूमिका फरिछाएल जा सकैए)। बहुतों बेर शाइर कोनो शेर लेल तते ने भूमिका बान्हि दै छथिन्ह जे श्रोताकेँ बुझाइ छै महान शेर आबि रहल अछि मुदा कनेको स्तरहीन भेलापर श्रोता निरास भऽ जाइ छथि। तँए गजल बिना भूमिकाकेँ प्रस्तुत करी।

4) जेना पाइ बिना मेहनतिकेँ नै अबै छै तेनाहिते विद्या बिना विनम्रताकेँ नै अबै छै। गजल लेल जते विन्रम रहब तते नीक। किछु लोक बुझै छथि जे लाठी बलें सेहो साहित्यकार बनल जा सकैए। ओना कने समय लेल तँ ई संभव छै मुदा भविष्य एहन लठिधर साहित्यकार सभकेँ उखाड़ि दै छै। तँए विनम्रता गजल लेल अत्यावश्यक अछि। मुदा विन्रमता मने कायरता, कथित गुट निरपेक्षता आ दब्बूपन नै होइत छै। किछु गोटे सच बाजबकेँ सेहो उडण्ताक रूपमे देखै छथि मुदा एहन लोक सभ वास्तविक शाइर नै भऽ सकै छथि। जँ सच बाजब उडण्ता छै तँ ऐ महान भारत देशमे भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस आदि सेहो उदण्ड छथि आ हम एकटा शाइर लेल एहन उदण्डता जरूरी मानै छिऐ।

5) आब एकटा एहन दोखपर चरचा करी जे सभसँ खराप अछि। सभ शाइर चाहै छथि जे लोक खाली ओकरे गजल सुनथि। मुदा वएह शाइर दोसरक गजल वा रचना सुनबाक लेल तैयार नै छथि। ई केना हतै। सरकार ई धरती गोल छै। जेहन व्यवहार करबै तहने भेटत। जँ अहाँ दोसरक रचना ने सुनबै आ पढ़बै तँ अहाँक के सुनत-पढ़त। गजलसँ हटि कने कथा साहित्यक महान कार्यक्रम “सगर राति” दिस चली। ई बेमारी स्पष्ट भऽ जाएत। 2012सँ पहिने गुटबंदी बला लेखक सभ पहिने अपन कथा पढ़ि अनका बेरमे सूति रहै छलाह। फलस्वरूप मैथिली कथा साहित्य अपन अंतिम अवस्थामे पहुँचि गेल छल। तँए दोसरक रचना सुनी-पढ़ी आ सुनि पढ़ि ओकरा प्रोत्साहन जरूर दी। चाहे ओ प्रोत्साहन गलतिए निकालि कऽ किएक ने हो। मोन राखू साहित्यमे प्रोत्साहन देनाइ बिआह करेबाक बराबर होइ छै। जेना संसारकेँ जीवित रखबाक लेल वांछित वंश वृद्धि आश्यक छै आ वांछित वंश वृद्धि लेल बिआह जरूरी छै तेनाहिते साहित्यकेँ जीवित रखबाक लेल साहित्यकारक वृद्धि आवश्यक छै आ साहित्यकारक वृद्धि लेल प्रोत्साहन जरूरी छै (नव लेल बहुत बेसी)।

6) साहित्य लेल प्रतिभा चाही मुदा शुरूआती अवस्थामे, बादमे प्रतिभाक संग अध्ययन चाहबे करी। एकरा एना बुझू जेना की बाल्यकालमे जखन वंश वृद्धि जरूरी नै छै कोनो लड़का वा कोनो लड़की असगरें रहि सकैए। मुदा वंश चलेबाक लेल लड़का-लड़कीकेँ मिलब जरूरी छै तेनाहिते साहित्यमे शुरूआती दौरमे तँ केओ प्रतिभा वा केओ अध्ययन बलें आबि सकैए मुदा बादमे संपूर्ण बनबाक लेल प्रतिभा बलाकेँ अध्ययन वा अध्ययन बलाकेँ प्रतिभा चाहबे करी। मैथिलीमे आशर्चयजनक रूपसँ काव्यप्रतिभा सभकेँ प्राप्त होइ छै मुदा अधिकांश लोक अध्ययनकेँ नकारि दै छथि तँए आगू आबि कऽ ओ सभ बिला जाइत छथि।

7) बहुत बेर एहन होइ छै जे कोनो लोक कहला जे ई गजलमे वा ऐ शेरमे दोख अछि आ बस गजलकार बहस करऽ लागै छथि। संगे-संग ओ शाइर सुझाव देबऽ बलाकेँ अपन दुश्मन मानि लै छथि। हुनका बुझाइ छनि जे ई सुझाव दऽ कऽ हमर अपमान कऽ देलक। आब जँ लोक खाली अपने लिखलकेँ शुद्ध आ सही मानि लेत तखन तँ मोश्किल। शाइर सिखबाक प्रकियाकेँ सदिखन जीवित राखथि। अपन लिखलकेँ केखनो अंतिम नै मानथि आ सही सुझावक हिसाबसँ संशोधन करबाक लेल तैयार रहथि।किछु आदमी साहित्यिक आलोचना आ सांसारिक खिद्धांशकेँ एकै मानि लै छथि से गलत।

8) जइ क्षेत्रमे कंपटीशन नै होइ छै तइ क्षेत्रक विकास असंभव भऽ जाइ छै। तँइ सभ गजलकारकेँ एक दोसरासँ कंपटीशन करबाक चाही। कंपटीशनसँ अपन आ आनक सामर्थ्यक पता चलै छै। कंपटीशन नै केनिहार कोनो विधाक होथि दोषग्रस्त भऽ जाइ छथि।

9) साहित्यमे ई कामना नै राखू जे हम ओकरा सन लिखबै। एहन कामना एक प्रकारक नकल थिक जाहिसँ लेखक केर अपन मौलिक चिंतन सोझाँ नहि आबि पबैत छै मुदा ई धेआन राखू जे मौलिक चिंतन मने व्याकरण तोड़ब नहि होइत छै। बहुत लेखक अपन कोनो अग्रजकेँ देवता समान मानि लै छथि ईहो गलत कारण एना केलासँ हुनकर दोषसँ अहूँ ग्रसित भऽ जाएब। तँइ सम्यक आकलन करैत नव चिंतन केलासँ लेखक अपन लेखनकेँ परिपक्व बना सकै छथि। ईहो मोन राखू जे अध्ययन, व्याकरण, शब्द आदि लेल सभहँक लीक एकै रहै छै, खाली भाव ओ लेखन तरीका केर नवीनतासँ साहित्यकारकेँ मौलिक मानल जाइत छै।

10) जखन गजल कहल वा लिखल पूरा भ' जाए तखन कमसँ कम ओकरा अपने दस बेर आवृति करबाक चाही। एकर दू टा लाभ पहिल तँ ई पता चलि जाइत छै जे गजल उच्चारणपर सटीक छै वा नै (ओना बहरक कारण पहिनेहे लय आबि जाइत छै आ जे कनी मनी उच्चारणक कठिनता बाँकी रहै छै से आवृतिसँ पता चलि जाइत छै आ शाइर ओकरा प्रकाशित करबाकसँ पहिने सुधारि सकै छथि) आ दोसर जे जीहपर रचना बैसि गेलाक बाद मोशायरामे सेहो नीक जकाँ ओकरा सुना सकै छी।

जँ उपरमे देल गेल दोख सभकेँ गजलकार अपनामेसँ हटा सकथि तँ शुभे-शुभ, लाभे-लाभ।

खण्ड-24

एखन धरि जतेक किछु पढ़लहुँ से गजलक संबंधमे छल (योग बला विषय गजले नै हरेक क्षेत्रमे लागू अछि) तँ चली आब गजल छोड़ि शाइरीक आन विधापर---

1) कसीदा---कसीदा शाइरीक ओ रूप थिक जाहिमे अपन लोकक प्रशंसा आ विपक्षीक खिद्धांश हो। कसीदामे कमसँ कम 19 शेर भेनाइ जरूरी छैक। अधिकतम शेरक कोनो संख्या नहि। कसीदा दू प्रकारक होइत छैक--
a) तमहीदिया--एहन कसीदा जकर शुरुआत प्रेम, मिलन, मस्ती आदिसँ हो ओकरा तमहीदिया कहल जाइत छैक। एहि कसीदामे पाँच टा भाग होइत छैक तश्बीब, गुरेज, मद्ह, दुआ एवं खात्मा। शुरुआतकेँ तश्बीब कहल जाइत छैक। मुख्य वर्णय विषय जाहिठामसँ मोड़ल जाइ छैक तकरा गुरेज कहल जाइत छैक। मुख्य विषयकेँ मद्ह कहल जाइत छैक। प्रशंसा वा खिद्धांश बला भागकेँ दुआ कहल जाइत छैक आ कसीदाक अंतिम भागकेँ खात्मा कहल जाइत छैक।
b) खिताबिया--खिताबिया कसीदामे बिना कोनो भूमिकाकेँ मुख्य विषय कहल जाइत छैक।
मैथिलीमे अनेक कसीदा भेटत। विद्यापतिक (ज्योतिरीश्वरक पछाति बला विद्यापति) अनेक गीत शिव सिंहक कसीदा थिक। एहि प्रकारे आनो मैथिली कविक लिखल कसीदा भेटत।

2) मनसवी --मैथिलीक प्रबंध काव्य अरबी-फारसी-उर्दूक मनसवीक बराबर अछि। ओना मनसवीक शाब्दिक अर्थ दू भाग बला वस्तु छैक। मुदा साहित्यिक रूपमे मनसवी ओहन काव्य रुपकेँ कहल जाइत छैक जकर हरेक पाँतिमे काफिया केर प्रयोग होइक। मनसवीक शुरुआत हम्द (मंगलाचरण) आ अंत कोनो ने कोनो उपदेशसँ हेबाक चाही। मनसवीक लेल बहरे मुतकारिब, हजज, खफीफ, रमल, सरीअ आदि उपयुक्त रहैत छैक। मनसवीक उदाहरण लेल मैथिलीक प्रबंध काव्य सभ देखल जाए।

3) फर्द--फर्द शाइरीक ओहन विधा थिक जकर शेरक कोनो पाँतिमे काफिया नहियो भऽ सकैए या दूनू पाँतिमे काफिया भऽ सकैए। आब भ्रममे नै पड़ब। वस्तुतः फर्द अलग-अलग शेरक संग्रह थिक। मानि लिअ कोनो शाइर एकटा एहन शेर लिखला जकरा ओ कोनो गजलमे नै दऽ सकला या ओ एहन शेर भऽ गेल जकर भाव एते प्रभावी भेल जे ओ असगरे पूरा गजलक बराबरी केलक तखन शाइर ओइ शेरकेँ असगरे रहए दै छथि आ इएह भेल फर्द। मैथिलीमे फर्द शब्द खाली वा उघाड़ल वा बेपर्दा लेल अबैत छै जेना “कनियाँ निर्लज्ज छथि। फर्द आँगनमे चिकरि रहल छथि” । एखन एहन कोनो शेर हमरा नजरिमे नै आएल अछि जैमे पूरा-पूरी फर्दक गुण हो।

4) बन्द--बन्द एहन काव्य विधा भेल जकरा शाइर हम्त, नात,मनकतब, कौवाली, मर्सिया आदिमे सुगमता पूर्वक करैत छथि। बन्द कोना कहल जाइत छैक से देखू पहिने एकटा शेर लिखू आ तकरा बाद दूसँ दस धरिक एहन पाँति कहू जकर काफिया उपरका शेरक काफियासँ मेल नहि खाइत हो मुदा अपना आपमे ओकर काफिया मेल खाइत होइक। आ तकरा बाद अंत मे एकटा एहन पाँति कहू जकर काफिया पहिल शेरक काफियासँ मेल खाइत हो। ई भेल बन्द। बन्द दू प्रकारक होइत छैक। पहिल भेल तरजीअ बन्द आ दोसर भेल तरकीब बन्द। एकटा बन्द जँ पूरा भए गेल तकरा बाद कोनो गजल या कसीदा कहए जाए तखन ओ तरजीअ बन्द कहल जाइत

छैक। जँ बन्दक अंतिम पाँतिक काफिया शुरुआती शेरक काफियासँ मेल नहि खाइत हो तखन ओकरा तरकीब बन्द कहल जाइत छैक। मैथिलीमे बंदक उदाहरण एखन उपलब्ध नै अछि। ओना किछु गीतकार अपन पाँतिक समूहकेँ बन्द कहए लगलाह अछि से अलग बात।

5) रुबाइ--रुबाइमे दू टा शेर मने चारि पाँति (अधिकतम) होइत छैक। एकर हरेक पाँतिमे 24 मात्रा हेबाक चाही। संगहि-संग एकर शुरुआत दीर्घ-दीर्घसँ हेबाक चाही। पहिल शेरक दूनू पाँति आ दोसर शेरक दोसर पाँतिक काफिया सामान हेबाक चाही। जँ दोसर शेरक पहिलो पाँतिमे समान काफिया छैक तँ आरो नीक। रुबाइ लेल 24 मात्रा निर्धारित कएल गेल छै मुदा बहुतों रुबाइमे 20सँ 24क बीचमे मात्रा भेटत। रुबाइ एकटा एहन विधा छै जे ने पूर्णतः बहरपर अधारित छै आ ने मात्रिक छंदपर। ओना रुबाइ लेल बहुत रास बहरक (24टा) नाम गनाओल गेल छै। रुबाइक चारू पाँतिमे चारि तरहँक अलग-अलग बहरक प्रयोग करबाक सुविधा छै। रुबाइकेँ गजलोंसँ बेसी कठिन मानल जाइत छै आ ई मात्र अपने बहरमे मान्य छै तथापि जँ 22सँ शुरूआत करबै तँ एकर बहर अपने-आप आबि जाइत छै। रुबाइक पहिल पाँतिसँ नीक दोसर पाँति हेबाक चाही, दोसर पाँतिसँ नीक तेसर पाँति हेबाक चाही आ तेसर पाँतिसँ नीक चारिम पाँति हेबाक चाही। मने रुबाइक चारिम पाँति सभसँ नीक हेबाक चाही। मौखिक रूपसँ मैथिलीमे रुबाइ खूब प्रचलित रहल हएत मुदा कालक्रमे ओकर निशान मेटा गेल। ऐठाम हम रुबाइक चौबीसो बहर दऽ रहल छी

बहरे हजज अखरबसँ बनल 12 टा बहर---

A) 221-1212-1222-21
B) 221-1221-1222-21
C) 221-1221-1221-12
D) 221-1222-222-21
E) 221-1212-1222-2
F) 221-1221-1222-2
G) 221-1222-222-121
H) 221-1222-221-12
i) 221-1222-222-2
J) 221-1221-1221-121
K) 221-1212-1221-121
L) 221-1212-1221-12

बहरे हजज अखरमसँ बनल12 टा बहर--

a) 222-1212-1222-21

b) 222-221-1222-21

c) 222-212-1221-12

d) 222-222-222-21

e) 222-222-222-2

f) 222-212-1222-2

g) 222-221-1221-121

h) 222-221-1222-2

i) 222-222-221-12

j) 222-221-1221-12

k) 222-212-1221-121

l) 222-222-221-121

किछु अरूजी सभ ऐ चौबीसक अतिरिक्ति रुबाइक बहर सेहो बनेने छथि तँए हमरा लोकनि उपरेमे कहलहुँ जे जँ 2-2 मने दीर्घ-दीर्घसँ शुरूआत करबै तँ एकर बहर अपने-आप आबि जाइत छै। निश्चित रूपसँ हम सभ एकरा मैथिलीकरण कऽ रहल छिऐ बहरक मामिलामे।मुदा एखन धरिक बहुत मैथिली रुबाइ लघुसँ सेहो शुरू होइत अछि आ एकर नीक प्रभाव भेल छै। रुबाइ केर एकटा उदाहरण देखू--

रूसल धेने छी कोन के किएक यै
माहुर केने छी मोन के किएक यै
गहना नै कोनो प्रेमसँ बढ़िकऽ हेतै
रटनी धेने छी सोन के किएक यै

(पंकज चौधरी “नवल श्री”)

6) कता- कता मने टुकड़ा होइत छैक। एहिमे कमसँ कम दूटा शेर हेबाक चाही । हरेक पहिल शेर दोसर शेर पर निर्भर हेबाक चाही। कताक सभ नियम रुबाइये एहन हेतै खाली काफिया बला पाँति छोड़ि कऽ। एहि विधाक दोसर आ चारिम पाँतिक काफिया मिलबाक चाही। संगहि-संग एकर शुरुआत दीर्घ-दीर्घसँ हेबाक चाही। बहुत अरूजीक हिसाबसँ “ओ रुबाइ जाहि मे रुबाइयक चौबीस टा बहरमेसँ कोनो बहरक पालन नै भेल छै तकरा कता

कहल जाइत छै। मौखिक रूपसँ मैथिलीमे कता खूब प्रचलित रहल हएत मुदा कालक्रमे ओकर निशान मेटा गेल। दू टा कता उदाहरण स्वरूप देखू--

जहरक मारल जी जाएत आँखिक नहि
ई बड़का अजगुत प्रेमक संसारमे
अनकासँ जीतब मुदा अपनासँ नहि
ई बड़का अजगुत प्रेमक संसारमे

(आशीष अनचिन्हार)

जे नै नचनियाँ ओकरा नचाबै परिस्थिति
अपन मोनक नै चलै छै एहिमे फँसि कऽ
वीर मनुखकैं छानि कऽ निकालै परिस्थिति
जेना माँछ निकालै मलहा कादोमे धसि कऽ

(अमित मिश्र)

7) हम्त--शाइरीक एहि विधामे बंदा (भक्त) आ खुदा (भगवान)क बातचीतकैं विषय बनाएल जाइत छैक।मौखिक रूपसँ मैथिलीमे हम्त खूब प्रचलित रहल हएत मुदा कालक्रमे ओकर निशान मेटा गेल। आधुनिक कालमे हमरा नजरिमे एखन धरि मैथिली हम्त नै आएल अछि।

8) नात--शाइरीक ई विधा इस्लाममे बहुत पवित्र मानल जाइत छैक। एहि विधामे शाइर पैगम्बर हजरत मुहम्मद आ हुनकासँ जुड़ल चीजक प्रशंसा कहैत छैक। एकरा कहैत कालमे माथपर रुमाल या कपड़ा राखल जाइत छैक जेना की हिन्दू धर्ममे दुर्वाक्षत एवं अन्य धार्मिक विधिमे माथ पर गमछा वा धोतिक ढ़ेका खोलि माथ पर राखि लैत छथि। गायनके बेरमे नात दू रुपें गाओल जाइत छैक। पहिल समूहमे आ दोसर असगरें। एहिठाम मोन राखू वैदिक ॠषि वेदक ॠचाक पाठ सेहो एही दू रूपे करैत छलाह। नात रदीफ युक्त आ बिना रदीफक दूनू तरहें लिखल जाइत छैक। मौखिक रूपसँ मैथिलीमे नात खूब प्रचलित रहल हएत मुदा कालक्रमे ओकर निशान मेटा गेल। जहाँ धरि हमरा ज्ञान अछि मैथिलीमे लिखित रूपमे सोमदेव जी पहिल बेर नात लिखला मुदा ओहि नात सभमे व्याकरणक अभाव अछि । देखू सोम पदावली। एकटा हम अपन लिखल नात मात्र उदाहरण लेल राखि रहल छी--

तँ प्रेमसँ कहू सुभानअल्लाह

मिथिलाकेँ बना देबै मदीना हम
दुनियाँकेँ देखा देबै मदीना हम

पापी-नरकी सभहँक स्वागत छै
सभकेँ तँ घुमा देबै मदीना हम

पहिने जोड़ू सए कमलकेँ
तैमे जोड़ू हजार गुलाब
तकरा बाद जे बनि जाएत
से निशानी हएत प्यारकेँ
डेगे-डेग बसा देबै मदीना हम

9) मनकबत--औलिया (सिद्ध फकीर)क उपर लिखल गेल अशआर (शाइरी)केँ मनकबत कहल जाइत छैक। हम्त, नात आ मनकबत तीनू एकै शैली थिक मुदा विषय अलग-अलग रहैत छैक। केखनो काल कए ई तीनू रुबाइ, कता बंद आदिकेँ मिला कए लिखल जाइत अछि।मौखिक रूपसँ मनकबत खूब प्रचलित रहल हएत मुदा कालक्रमे ओकर निशान मेटा गेल। आधुनिक कालमे हमरा नजरिमे एखन धरि मैथिली मनकतब नै आएल अछि।

10) कोनो प्रिय केर मृत्यु भेलापर अपन दुखकेँ साहित्यमे सेहो व्यक्त कएल जाइत छै। अरबी-फारसी-उर्दू शाइरीमे एकरा मर्सिया कहल जाइत छै। ओना मर्सिया मूल रूपसँ कर्बलाक मैदानमे हज़रत मोहम्मद साहब केर नाती इमाम हुसैन केर मृत्युसँ संबंधित रहै छै। मैथिलीमे मर्सिया “झरनी” केर नामसँ प्रसिद्ध अछि जे की दाहामे गाएल जाइत छै। जँ सही तरीकासँ देखल जाए तँ मर्सिया (झरनी) अरबी-फारसी-उर्दू शाइरीक पहिल एहन विधा अछि जे की मैथिलीक साहित्यमे आएल। विदेह झरनी लेल मो. गुल हसनजीकेँ सम्मानित केने अछि। मर्सिया (झरनी)क उदहारण देब बेकार हएत कारण मैथिल एकरा नीक जकाँ चीन्है छथि।

11) मुस्तजाद-जखन गजल समेत शाइरीक हेरक विधाक हरेक पाँतिमे कोनो उद्येश्य पूर्ण वाक्य या वाक्यांश जोड़ि देल जाइत छैक तखन ओकरा मुस्तजाद कहल जाइत छैक। केखनो काल शाइर गजलक मतलाक बाद कोनो उद्येश्य पूर्ण वाक्य या वाक्यांश जोड़ि दैत छथि आ तकरा बाद आन शेर कहैत छथि। एहनो काव्यकेँ

मुस्तजाद कहल जाइत छैक। ओना उर्दूओमे एहन रूप बेसी प्रचलित नै अछि।

12) नज्म एकै भाव पर तुकांत एवं वज्नदार पाँतिक समूहकेँ नज्म कहल जाइत छैक मतलब जे कथाक पद्यमे रूपांतरण करबै तँ नज्म हेतै। मुदा आब उर्दूमे सेहो बिना काफिया आ बिना वज्नक नज्म आबि गेल अछि जे की शुद्ध रूपसँ आधुनिक कविता जकाँ अछि मने कौआक टाँग आ बेंगक टांग मिला कए जे कविता लिखल गेल हो से। नज्ममे सेहो शेर होइत छै। तँए बहुत रास मैथिल गजल आ नज्म के एकै बूझि कऽ घोंघाउज करऽ लागै छथि जे गजलमे कोनो नियम नै होइत छै। नज्म तीन तरहँक होइत छै, पहिल पाबंद मने पहिल पाँतिसँ अंतिम पाँति धरि वज्न बराबर रहै छै और काफिया रहै छै दोसर मुअर्रा मने ऐमे खाली वज्न बराबर हेबाक चाही काफिया नहियों रहि सकैए तेसर आजाद मने जैमे ने एक वज्न होइत छै आ ने काफिया। आउ देखी किछु अंतर गजल ओ नज्म महँक---

a) गजलक मतलामे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्ममे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। हरेक तरहक नज्म केर उदाहरण देल जा रहल अछि। उदाहरण लेल भारतक प्रसिद्ध उर्दू शाइर आ फिल्मी गीतकार ओ निर्देशक गुलजारजीक ई नज्म देखू—

रिश्ते बस रिश्ते होते हैं
कुछ इक पल के
कुछ दो पल के

कुछ परों से हल्के होते हैं
बरसों के तले चलते-चलते
भारी - भरकम हो जाते हैं

कुछ भारी - भरकम बर्फ के से
बरसों के तले गलते - गलते
हल्के - फुल्के हो जाते हैं

नाम होते हैं रिश्तों के

कुछ रिश्ते नाम के होते हैं
रिश्ता वह अगर मर जाए भी
बस नाम से जीना होता है

बस नाम से जीना होता है
रिश्ते बस रिश्ते होते हैं

आब महान क्रांतिकारी शाइर फैज अहमद फैज जीक ई नज्म देखू---

कोई आशिक किसी महबूबा से

याद की राहगुज़र जिसपे इसी सूरत से
मुद्दतें बीत गयीं हैं तुम्हें चलते-चलते
खत्म हो जाय जो दो-चार कदम और चलो
मोड़ पड़ता है जहाँ दश्त-ए-फ़रामोशी का
जिसके आगे न कोई मैं हूँ, न कोई तुम हो

साँस थामें हैं निग़ाहें, कि न जाने किस दम
तुम पलट आओ, गुज़र जाओ, या मुड़ के देखो
गरचे वाकिफ़ हैं निगाहें, के ये सब धोखा है
गर कहीं तुमसे हम-आग़ोश हुई फिर से नज़र
फूट निकलेगी वहाँ और कोई राहगुज़र
फिर इसी तरह जहां होगा मुकाबिल पैहम
साया-ए-ज़ुल्फ़ का और ज़ुंबिश-ए-बाज़ू का सफ़र

दूसरी बात भी झूठी है, कि दिल जानता है
यहाँ कोई मोड़, कोई दश्त, कोई राह नहीं
जिसके परदे में मेरा माह-ए-रवां डूब सके
तुमसे चलती रहे ये राह, यूँ ही अच्छा है

तुमने मुड़ कर भी न देखा तो कोई बात नहीं!

एक बेर फेर पाकिस्तानक लेखक फह्मीदा रियाज जीक ई नज्म देखू--

तुम बिल्कुल हम जैसे निकले
अब तक कहां छुपे थे भाई?
वह मूरखता, वह घामड़पन
जिसमें हमने सदी गंवाई
आखिर पहुंची द्वार तुम्हारे
अरे बधाई, बहुत बधाई

भूत धरम का नाच रहा है
कायम हिन्दू राज करोगे?
सारे उल्टे काज करोगे?
अपना चमन नाराज करोगे?

तुम भी बैठे करोगे सोचा,
पूरी है वैसी तैयारी,
कौन है हिन्दू कौन नहीं है
तुम भी करोगे फतवे जारी

वहां भी मुश्किल होगा जीना
दांतो आ जाएगा पसीना
जैसे-तैसे कटा करेगी
वहां भी सबकी सांस घुटेगी

माथे पर सिंदूर की रेखा
कुछ भी नहीं पड़ोस से सीखा!
क्या हमने दुर्दशा बनायी

कुछ भी तुमको नज़र न आयी?

भाड़ में जाये शिक्षा-विक्षा,
अब जाहिलपन के गुन गाना,
आगे गड्ढा है यह मत देखो
वापस लाओ गया जमाना

हम जिन पर रोया करते थे
तुम ने भी वह बात अब की है
बहुत मलाल है हमको, लेकिन
हा हा हा हा हो हो ही ही

कल दुख से सोचा करती थी
सोच के बहुत हँसी आज आयी
तुम बिल्कुल हम जैसे निकले
हम दो कौम नहीं थे भाई

मश्क करो तुम, आ जाएगा
उल्टे पांवों चलते जाना,
दूजा ध्यान न मन में आए
बस पीछे ही नज़र जमाना

एक जाप-सा करते जाओ,
बारम्बार यह ही दोहराओ
कितना वीर महान था भारत!
कैसा आलीशान था भारत!

फिर तुम लोग पहुंच जाओगे
बस परलोक पहुंच जाओगे!

हम तो हैं पहले से वहां पर,
तुम भी समय निकालते रहना,
अब जिस नरक में जाओ, वहां से
चिट्ठी-विट्ठी डालते रहना!

आब फेर फैज अहमद फैजजीक ई अतिप्रसिद्ध नज्म देखू जकरा इकबाल बानो गेने छथि--

हम देखेंगे
लाज़िम है कि हम भी देखेंगे
वो दिन कि जिसका वादा है
जो लौह-ए-अजल में लिखा है
हम देखेंगे ...
जब जुल्म ए सितम के कोह-ए-गरां
रुई की तरह उड़ जाएँगे
हम महकूमों के पाँव तले
जब धरती धड़ धड़ धड़केगी
और अहल-ए-हक़म के सर ऊपर
जब बिजली कड़ कड़ कड़केगी
हम देखेंगे ...
जब अर्ज़-ए-खुदा के काबे से
सब बुत उठवाये जायेंगे
हम अहल-ए-सफा, मरदूद-ए-हरम
मसनद पे बिठाए जाएंगे
सब ताज उछाले जाएंगे
सब तख्त गिराए जाएंगे
हम देखेंगे ...
बस नाम रहेगा अल्लाह का
जो गायब भी है हाजिर भी
जो नाजिर भी है मंज़र भी
उठेगा अनलहक का नारा

जो मैं भी हूँ और तुम भी हो
और राज करेगी ख़ल्क-ए-ख़ुदा
जो मैं भी हूँ और तुम भी हो
हम देखेंगे ...

आशा अछि जे नीक जकाँ बुझबामे आएल हएत।

b) गजलक भाषा सांकेतिक हेबाक चाही मुदा नज्मक भाषा खुलल मने नज्म सपाटबयानी भेल।
आब चूँकि उर्दूक शाइरीक सभ विधा संग नज्मो गाएल जाइत छै तँए किछु बुधियार मैथिल ओकरे गजल मानि लै छथि आ बहस करऽ लागै छथि। एहि नज्म सभहँक अतिरिक्त बहुत रास फिल्मी नज्म (गीत) सेहो बहरमे लिखल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम तँ नहिए जानै छथि आ ताहिपरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम दऽ रहल छी-----------------

1) "तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ" एहि नज्मक बहर 122 122 122 122 अछि आ ई हरेक पाँतिमे निमाहल गेल अछि। ठीक एही बहरपर आन नज्म ई सभ सेहो अछि जेना "तेरी याद दिल से भुलाने चला हूँ", "बहुत देर से दर पे आँखें लगी थी, हुज़ुर आते-आते बहुत देर कर दी", "मेरी याद में तुम न आँसू बहाना" आदि।

2) "सजन रे झूठ मत बोलो, खुदा के पास जाना है" एहि नज्मक बहर 1222 1222 1222 1222 अछि आ ई हरेक पाँतिमे निमाहल गेल अछि। ठीक एही बहरपर आन नज्म ई सभ सेहो अछि जेना "बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है", मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा मिल गया होता", "भरी दुनियाँ में आख़िर दिल को समझाने कहाँ जाएं", "अगर दिलबर की रुसवाई हमें मंजूर हो जाये", "खिलौना जानकर तुम तो, मेरा दिल तोड़ जाते हो" आदि।

3) "दिल के अरमां आँसुओं में बह गए" एहि नज्मक बहर 2122 2122 212 अछि आ ई हरेक पाँतिमे निमाहल गेल अछि। ठीक एही बहरपर आन नज्म ई सभ सेहो अछि जेना "कल चमन था आज इक सहरा हुआ", "मंज़िलें अपनी जगह हैं, रास्ते अपनी जगह" आदि।

4) "खुश रहे तू सदा ये दुआ है मेरी" एहि नज्मक बहर 212 212 212 212 अछि।
एकर अतिरिक्त आरो फिल्मी नज्म सभ बहरपर आधारित अछि। जकरा "अनचिन्हार आखर"पर "हिंदी फिल्मी

गीतमे बहर" नामसँ लेखमाला देल गेल अछि। एकर विस्तृत विवरण देखबा लेल एहिठाम आउ https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page_17.html

भारतीय भजन (सभ भाषा)मे गजलक बहुत बड़का प्रभाव छै। एकर कारण छै बहरमे भेनाइ(वार्णिक छंद)। मैथिलीक पहिल अरूजी अपन गजलशास्त्रमे लिखै छथि जे "सरल वार्णिक छंद (वर्ण गानि) गेबामे सभसँ कठिन छै ताहिसँ कम कठिन मात्रिक छंद छै आ सभसँ सरल गेबामे वार्णिक छंद छै। गजलमे वार्णिक छंद, काफिया होइत छै मुदा ताहि संग रदीफ सेहो होइत छै जाहि कारणसँ गजल गेबा लेल आर बेसी उपयुक्त भ' जाइत छै। रदीफ गजल लेल अनिवार्य नै होइत छै मुदा तेहन भ' ने सटल रहै छै जे ओ गजलक मौलिकताक पहिचान सेहो बनि जाइत छै। रदीफेसँ कियो गुणी पाठक पहिचान जाइ छथि जे ई किनकर गजल अछि। गजलमे कोनो एकटा रदीफक प्रयोग भ' गेल छै तकरे फेरसँ दोसर शाइर द्वारा प्रयोग करब ओइ पहिल आ मूल गजलक लोकप्रियताकेँ देखबै छै। आइसँ हम किछु एहन भारतीय भाषाक भजन (सभ भाषा) देखा रहल छी जे कि स्पष्टतः गजलसँ प्रभावित भेल अछि। पहिने हम स्वामी ब्रह्मानंद जीक भजन आ इब्न ए इंशाजीक गजल लेलहुँ अछि। उर्दूक महान शाइर इंशाजीक जन्म 1927 मे भेल छलनि। हुनकर एकटा गजलक शेर अछि...........

दिल इश्क़ में बे-पायाँ सौदा हो तो ऐसा हो
दरिया हो तो ऐसा हो सहरा हो तो ऐसा हो

पूरा गजल रेख्ता केर एहि लिंकपर पढ़ि सकैत छी https://www.rekhta.org/ghazals/dil-ishq-men-be-paayaan-saudaa-ho-to-aisaa-ho-ibn-e-insha-ghazals?lang=hi इंशाजीक एहि गजलक रदीफ "हो तो ऐसा हो" केर प्रयोग स्वामी ब्रह्मानंद (जन्म 14 July 1944) अपन भजनमे केलथि। ई भजन एना अछि.......

राम दशरथ के घर के जन्मे घराना हो तो ऐसा हो
लोग दर्शन को चले आये सुहाना हो तो ऐसा हो

बहुत गायक सुहाना केर बदला "लुभाना" केर प्रयोग केने छथि। ई स्वाभाविक छै जे लोककंठमे बसल गीतक शब्द कालखंडमे बदलि जाइत छै आ असल स्रोत धरि पहुँचबामे बहुत कष्ट होइत छै। बहुत ठाम ब्रह्मेनंदजीक नामसँ एहनो गीत चलैए.....

कृष्ण घर नंद के घर जन्मे दुलारा हो तो ऐसा हो

लोग दर्शन को चले आये सुहाना हो तो ऐसा हो

बहुत ठाम एहनो सुनबा लेल भेटल..........

सदा शिव शंभु वरदाता दिगंबर हो तो ऐसा हो
हर सब दुख भक्तन के दयाकर हो तो ऐसा हो

एहि रदीफसँ युक्त आर भर्सन सभ सुनबा लेल भेटि सकैए आ ई इन्नेजीक गजलक प्रभाव अछि। स्पष्ट अछि इंशाजीक गजल भजनपर बहुत बेसी प्रभाव छोड़लक। दोसर उदाहरण अछि मोमिन ख़ाँ मोमिन जीक गजल आ गोस्वामी बिंदुजी महराज जीक भजन ल' रहल छी। उर्दूक महान शाइर मोमिनजीक जन्म 1800 मे भेल छलनि। हुनकर एकटा गजलक शेर अछि...........

वो जो हम में तुम में क़रार था तुम्हें याद हो कि न याद हो
वही या'नी वा'दा निबाह का तुम्हें याद हो कि न याद हो
पूरा गजल रेख्ता केर एहि लिंकपर पढ़ि सकैत छी https://www.rekhta.org/ghazals/vo-jo-ham-men-tum-men-qaraar-thaa-tumhen-yaad-ho-ki-na-yaad-ho-momin-khan-momin-ghazals?lang=hi मोमिनजीक एहि गजलक रदीफ "तुम्हें याद हो कि न याद हो " केर प्रयोग गोस्वामी बिंदुजी महराज (जन्म 1893) अपन भजनमे केलथि। ई भजन एना अछि.......

अधमों के नाथ उबारना तुम्हें याद हो कि न याद हो।
मद खल जनों का उतारना तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
बिंदुजीक एहि भजनपर मोमिनजीक गजलक प्रभाव अछि। स्पष्ट अछि मोमिनजीक गजल भजनपर बहुत बेसी प्रभाव छोड़लक। बिंदुजीक एकटा आर आन प्रसिद्ध भजन अछि "यदि नाथ का नाम दयानिधि है तो दया भी करेगें कभी न कभी"। मोहन मोहिनीक बहुत भजन गजलसँ प्रभावित अछि। ओना "कभी न कभी" प्रसिद्ध शाइर दाग देहलवी (1831) केर एकटा गजलक अंश अछि https://www.rekhta.org/ghazals/naa-ravaa-kahiye-naa-sazaa-kahiye-dagh-dehlvi-ghazals?lang=hi जकरा बिंदुजी रदीफ जकाँ प्रयोग केलथि संगहि ईहो जानब रोचक जे बहुत बादमे सय्यद अमीन अशरफ़जी एही रदीफसँ एकटा गजल सेहो लिखलाह जकरा एहि लिंकपर पढ़ि सकैत छी https://www.rekhta.org/ghazals/malaal-e-guncha-e-tar-jaaegaa-kabhii-na-kabhii-syed-amin-ashraf-ghazals?lang=hi
एहि दूटा उदाहरणक अतिरिक्त आर बहुत रास उदाहरण अछि मुदा ओकरा देब अभीष्ट नै। पाठक अपना स्तरपर

मिलान क' सकै छथि। भजनपर गजलक विस्तृत प्रभाव देखबाक लेल एहि लिंकपर आउ https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page_72.html

13) मुजरा--मूल रूपसँ अरबी शब्द "सलाम माजरा" केर भारतीय रूप "मुजरा" थिक। अरबीमे एकर अर्थ छै "गुणगान करैत अभिवादन प्रस्तुत करब"। प्रारंभिक कालक हिंदी-उर्दू साहित्यमे ई शब्द अरबिए बला अर्थसँ प्रेरित छल आ तकर पुष्टि कबीरक प्रसिद्ध पद " राम झरोखे बैठ के सबका मुजरा लेय" सँ होइत अछि। वर्तमान समयमे गजल, नज्म,कसीदा, रुबाइ कता, बन्द आदिक समूह पर साज-बाजक संग स्त्री नाच-गानकेँ मुजरा कहल जाइत छैक। ई विशुद्ध रुपसँ नबाबी परंपराक प्रतीक थिक। ई शाइरीक रूप तँ नहि मुदा एकर अंग मानल जाइत अछि। जाहिठाम मुजरा आदि होइत हो ताहिठामकेँ मोहफिल कहल जाइत छैक। मोहफिल दू प्रकारक होइ छै पहिल “बैठी” आ दोसर “खड़ी” जँ मैथिलीमे कही तँ पहिल भेल “बैसल मोहफिल” आ दोसर भेल “ठाढ़ मोहफिल” । जँ बाइजी बैसि कऽ गीत आदि प्रस्तुत करती तँ भेल “बैसल मोहफिल” आ जँ ठाढ़ भऽ कऽ अंग संचालन करैत नाचक सहित गीत आदि प्रस्तुत करती तखन भेल “ठाढ़ मोहफिल” । “ठाढ़ मोहफिल” मे सभ साजिन्दा (साजिन्दा मने तबलची, सारंगिया, ढ़ोलकिया, झालि आदि बजबए बला सेहो ठाढ़ रहै छथि। परंपरागत मुजराक उदाहरण मैथिलीमे दुर्लभ अछि।

14) कौवाली-- कौआली लेखन शैली नै गायन शैली छै मुदा अति प्रसिद्ध तँइ एहि ठाम परिचय करा रहल छी। ओना ई जानब रोचक जे गायन लोकप्रिय भेलाक बाद ओही भास-तर्जपर बहुत कौआलीक रचना भेलै आ एही कारणसँ किछु लोक एकरा लेखन शैली मानए लागल छथि। कोनो गजल, कोनो नज्म आदिकेँ कौआली शैलीमे गाएल जा सकैए आ गाएलो जाइत छै। कोनो-कोनो कौआलीमे मूल रचनाक अतिरिक्त आनो रचनाक किछु शेर, बन्द, रुबाइ, कता आदिकेँ जोड़ि कए एकटा कौवाली बनाएल जाइत छै मुदा पाकिस्तानक प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय गायक एवं कौआल फरीद अयाज जीक मोताबिक कोनो एक कौआली गायनमे आन-आन रचनाक किछु शेर, बन्द, रुबाइ, कता आदिकेँ जोड़ब गलत छै आ ई एहि बातकेँ सिद्ध करैए जे कौआल लग एकै रचना प्रस्तुत करबाक लूड़ि नै छनि आ तकरे भरपाइ लेल ओ विभिन्न शेर आदिकेँ श्रोता लग प्रस्तुत करै छथि। फरीदजीक ई इंटरभ्यू एहि लिंकपर देखि सकै छी https://www.youtube.com/watch?v=zCipH6hshp8&t=2513s । कौवालीक जन्मदाता अमीर खुसरो मानल जाइत छथि आ ओहि समयमे ओकरा कौल कहल जाइत छलैक। धेआन देबाक बात जे मैथिलीमे कौल शब्द वचनबद्धताक संदर्भमे अबैत अछि। जँ हम ऐ विधाकेँ आत्मा ओ परमात्मा (भक्त ओ भगवान या बंदा ओ खुदा) केर बीचक वचनबद्धता मानी तँ कोनो दिक्कत नै। आ ई काव्य मात्र धार्मिक रूप लेल छलैक। मुदा बादमे विलासिताक प्रतीक बनि गेल। नबाबी कालमे कौवालीक रुप स्त्री-पुरूष केर उत्तर-प्रतिउत्तर रुपमे बदलि गेल आ बादमे एही रुपकेँ मान्य मानल गेल। मुदा एखनो बहुत कौवाली असँगरे सेहो गायन कएल जाइत छैक। ई काव्यविधा उत्तेजक आ मनलग्गू होइत छैक। मैथिलीमे लिखित रूपसँ

1923मे यदुनाथ झा यदुवर द्वारा लिखल पहिल कौआली भेटैत अछि।

15) गजलकैँ अलावे एकटा आर टर्म छै उर्दूमे जकरा हजल कहल जाइत छै। आब ई बूझी जे गजल आ हजलमे की अंतर छै। व्याकरण मने रदीफ, काफिया आ बहर गजल आ हजल लेल एक समान छै। मुदा कथन अलग-अलग जतए गजल पूरा-पूरी गंभीर बातसँ बनै छै ओतहि हजल हास्यक फुलझरीसँ। मने हजल आ गजलमे खाली गंभीरताक अंतर छै। हमरा जहाँ धरि बुझाइत अछि जे मुसलमान शासक सभ राज-काजक बीचमे बोर भए जाइत छलाह तखन ई हजल सुनाएल जाइत छल हेतै। उदाहरण लेल कुंदन कुमार कर्णजीक ई हजल देखू--

एक दिन कनियांसँ भेलै झगडा
मारलनि ठुनका कहब हम ककरा

ओ पकडलनि कान आ हम झोंट्टा
युद्ध चललै कारगिल सन खतरा

मारि लागल बेलनाकैँ एहन
फेक देलक आइ आँखिसँ धधरा

बाघ छी हम एखनो बाहरमे
की कहू? घरमे बनल छी मकरा

एसगर कुन्दन सकत कोना यौ
ओ हजलकैँ बुझि लए छै फकरा

मात्राक्रम: 2122-2122-22

मोन राखू हास्य आ व्यंग्यमे महीन अंतर छै तँइ ओहन गजल जाहिमे व्यंग्य हो से हजल केर श्रेणीमे नहि आएत।

16) माहिया--ई विधा मूलतः पंजाबी साहित्य केर थिक आ पंजाबीसँ उर्दूमे आएल आ तकरा बाद सभ भाषामे पसरल। ई विधा मात्र तीन पाँति केर होइत छै जाहिमे पहिल पाँतिमे 12 मात्रा दोसरमे 10 मात्रा आ फेर तेसरमे 12 मात्रा होइत छै आ सङ्गे-सङ्ग पहिल पाँति आ तेसर पाँतिमे काफिया (तुकान्त) होइत छै... तँ देखी

एकर संरचनाकैं--

पंजाबीमे माहियाक पहिल पाँतिक संरचना अधिकांशतः 221-1222 अछि मने दीर्घ-दीर्घ-लघु-लघु-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ।

तेनाहिते दोसर पाँतिक संरचना अछि 21-1222 दीर्घ-लघु-लघु-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ

आ फेर तेसर पाँतिक संरचना पहिल पाँतिक बराबर अछि मने 221-1222 मने दीर्घ-दीर्घ-लघु-लघु-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ।

ओना ई अधिकांश संरचना अछि। ऐकैं अलावे किछु हेर-फेरक संग आन-आन संरचना सेहो भेटैत अछि। मुदा ई निश्चित छै जे हरेक पाँतिमे दीर्घक बेसी संख्या रहने लयमे ई खूब आबि जाइत छै। माहिया छन्दमे अर्थक चारि तरहें विस्तार होइत छै...

1) या तँ पहिल आ दोसर पाँति मीलि कए एकटा अर्थकैं ध्वनित करै आ तेसर पाँति अलग रहै,

2) या तँ दोसर पाँति आ तेसर पाँति मीलि कए कएटा अर्थकैं ध्वनित करै आ पहिल पाँति अलग रहै,

3) या तीनू पाँति मीलि कए एकटा अर्थकैं ध्वनित करै

4) या दोसर पाँति एहन होइ जे पहिलो पाँति सङ्ग मीलि अलग अर्थ दै वा तेसर पाँति सङ्ग मीलि अलग अर्थ दै।

माहिया छन्दक स्थायी अधार श्रृगांर रस थिक मुदा आधुनिक समयमे ई हरेक विषयमे लिखल जाइत अछि। उदाहरण स्वरूप देखू हमर दूटा माहिया

1) तीरसँ ने तरुआरिसँ
हम डरै छी आब
हुनक नजरिकैं मारिसँ

2) डोलैए मोन हमर
उठल आँखिसँ भाइ
करेज मथैए हमर

मैथिलीमे ई माहिया छन्द अज्ञात अछि.. आउ एकरो आगू बढ़ाएल जाए..... खास कए जे कवि श्रृगांर रसमे भीजल रहै छथि।

17) बाल गजल—

की थिक बाल गजलः

किछु लोक “बाल गजल” क नामसँ तेनाहिते चौंकि उठल छथि जेना केओ हुनका अनचोकेमे हुड़पेटि देने हो। जँ

एहन बात मात्र मैथिलिए टामे रहितै तँ कोनो बात नै, मुदा ई चौंकब हिन्दी आ उर्दूमे सेहो भए रहल छै। कारण ई अवधारणा अलगसँ मात्र मैथिलिए टामे छै आर कोनो भारतीय भाषामे नै (हिंदीमे बाल गजलक अवधारणा तँ छै मुदा ओकर कर्ता-धर्ता मात्र एकटा ग्रुप छलै तँए आब ई विधा हिंदीमे लुप्तप्रायः अछि) । जँ हम कोनो हिन्दी-उर्दू भाषी गजलकार मित्रसँ “बाल गजल” क चर्च करैत छी तँ चोट्टे कहैत छथि जे उर्दूक बहुत गजलकार सभ बहुत शेरमे बाल मनोविज्ञानक वर्णन केने छथि खास कए ओ सुदर्शन फाकिर द्वारा कहल आ जगजीत सिंह द्वारा गाओल गजल “ये कागज की कश्ती वो बारिस का पानी” बला संदर्भ दै छथि आ ई बात ओना सत्य छै मुदा “बाल गजल” कैँ फुटका कए ओकरा लेल अलग स्थान मात्र मैथिलिए टामे देल गेलैए। आ ई मैथिलीक सौभाग्य थिक जे ओ “बाल गजल” क अगुआ बनि गेल अछि भारतीय भाषा मध्य। जहाँ धरि बाल गजलक विषय चयन केर बात थिक तँ नामेसँ बुझा जाइत अछि ऐ गजलमे बाल मनोविज्ञान केर वर्णन रहैत छै। तथापि एकटा परिभाषा हमरा दिससँ “एकटा एहन गजल जाहि महँक हरेक शेर बाल मनोविज्ञानसँ बनल हो आ गजलक हरेक नियमकैँ पूर्ववत् पालन करैत हो ओ बाल गजल कहेबाक अधिकारी अछि” । जँ एकरा दोसर शब्दमे कही तँ ई कहि सकैत छी जे बाल गजल लेल नियम सभ वएह रहतै जे गजल लेल होइत छै बस खाली विषय बदलि जेतै।
आब आबी बाल गजलक अस्तित्व पर। किछु लोक कहता जे गजल दार्शानिकतासँ भरल रहै छै तँए बाल गजल भैए ने सकैए। मुदा ओहन-ओहन लोक विदेहक अंक111 जे बाल गजल विशेषांक अछि तकर हरेक बाल गजल पढ़थि हुनका उत्तर भेटि जेतन्हि। ओना दोसर बात ई जे कविता-कथा आदि सभ सेहो पहिने गंभीर होइत छल मुदा जखन ओहिमे बाल साहित्य भए सकैए तँ बाल गजल किएक नै? ओनाहुतो मैथिलीमे गजल विधाकैँ बहुत दिन धरि सायास (खास कए गजलकारे सभ द्वारा) अवडेरि देल गेल छलै तँए बहुत लोककैँ बाल गजलसँ कष्ट भेनाइ स्वाभाविक छै।

की बाल गजल लेल नियम बदलि जेतैः

जेना की उपरमे कहल गेल अछि जे बाल गजल लेल सभ नियम गजले बला रहतै बस खाली एकटा नियमसँ समझौता करए पड़त। माने जे बहर-काफिया-रदीफ आ आर-आर नियम सभ तँ गजले जकाँ रहतै मुदा गजलमे जेना हरेक शेर अलग-अलग भावकैँ रहैत अछि तेना बाल गजलमे कठिन बुझाइए। तँए हमरा हिसाबैँ ऐठाम ई नियम टूटत मुदा तैओ कोनो दिक्कत नै कारण मुस्लसल गजल तँ होइते छै। अर्थात बाल गजल एक तरहैँ “मुस्लसल गजल “भेल। बाल गजलमे किछु शेर एहनो भऽ सकै छै जकर कोनो अर्थ नै होइक। कारण बच्चाकैँ अर्थसँ मतलब नै रहै छै। देखने हेबै जे माए वा आन कोनो संबंधी बच्चाकैँ उठा कऽ “अर्ररररररररररररररररररररर” बजै छै आ बच्चा खुश भऽ कऽ हँसै छै तँए बाल गजलमे खूब लय ओ आंतरिक सुआद चाही। बाल गजलक पूर्व भूमिकाः
बाल गजल मैथिलीक अपन खोज थिक मने ई मैथिलीक अपन विधा भेल। ओना ऐ कसबट्टीपर कसलासँ कविवर

सीताराम झाजी मैथिलीक पहिल बाल गजलकार छथि। ओइ समयमे बाल गजल नामक परिभाषिक शब्द नै उपल्बध छलै तथापि कविवरे एकर शुरुआत केलथि।
तारीखक हिसाबें 24/3/2012कँ बाल गजलक उत्पति मानल जाएत (एहि पाँतिक लेखक मने आशीष अनचिन्हार द्वारा 24/3/2012कँ दिल्लीमे साहित्य अकादेमी आ मैलोरंग द्वारा आयोजित कथा गोष्ठीमे ऐ बाल गजल नामक विधाक प्रयोग कएल गेल) मुदा ओकर स्वरूप मैथिलीमे पहिनेहें फड़िच्छ भए चुकल छल। 09 Dec. 2011कँ अनचिन्हार आखर http://anchinharakharkolkata.blogspot.com पर प्रकाशित श्रीमती शांति लक्ष्मी चौधरी जीक ई गजल देखल जाए (बादमे ई गजल मिथिला दर्शनक अंक मइ-जून 2012मे सेहो प्रकाशित भेलै) आ सोचल जाए जे बिना कोनो घोषणाकँ एतेक नीक बाल गजल कोना लिखल गेलै--

शिशु सिया उपमा उपमान छियै हमर आयुष्मति बेटी
मैत्रेयी गार्गीक कोमल प्राण छियै हमर आयुष्मति बेटी

टिमकैत कमल नयन, धव धव माखन सन कपोल
पुर्णमासीक चमकैत चान छियै हमर आयुष्मति बेटी

बिहुसैत ठोर मे अमृतधारा बिलखैत ठोर सोमरस
शिशु स्वरुपक श्रीभगवान छियै हमर आयुष्मति बेटी

नौनिहाल किहकारी सरस मिश्री घोरल मनोहर पोथी
दादा नाना माँ सारेगामा गान छियै हमर आयुष्मति बेटी

सकल पलिवारक अलखतारा जन्मपत्रीक सरस्वती
अपन मैया पिताश्रीक जान छियै हमर आयुष्मति बेटी

ज्ञानपीठक बेटी छियै सुभविष्णु मिथिलाक दीप्त नक्षत्र
मातृ पितृ कुलक अरमान छियै हमर आयुष्मति बेटी

“शांतिलक्ष्मी” विदेहक घर घर देखय इयह शिशु लक्ष्मी
बेटी जातिक भविष्णु गुमान छियै हमर आयुष्मति बेटी

वर्ण 22

तेनाहिते एकटा हमर बिना छंद बहरक गजल अनचिन्हार आखर http://anchinharakharkolkata.blogspot.com आ विदेहक फेसबुक वर्सन http://www.facebook.com/groups/videha/पर 6/6/2011कैँ आएल छल से देखू--

होइत छैक बरखा आ रे बौआ
कागतक नाह बना रे बौआ

देखिहें घुसौ ने चोरबा घर मे
हाथमे ठेंगा उठा रे बौआ

तोरे पर सभटा मानगुमान
माएक मान बढ़ा रे बौआ

छैक गड़ल काँट घृणाक करेजमे
प्रेमसँ ओकरा हटा रे बौआ

नहि झुकौ माथ तोहर दुशमन लग
देशक लेल माथ कटा रे बौआ

तेनाहिते 4 अक्टूबर 2010कैँ अनचिन्हार आखर http://anchinharakharkolkata.blogspot.com पर प्रकाशित गजेन्द्र ठाकुर जीक ऐ गजलकैँ देखल जाए जे शब्दावलीक आधार पर बाल गजल अछि मुदा अर्थ विस्तारक कारणें बाल आ बूढ़ दूनू लेल अछि--

बानर पट लैले अछि तैयार
बिरनल सभ करू ने उद्धार

गाएक अर्रबों सुनि अनठेने
दुहै समएँ जनताक कपार

पुल बनेबाक समचा छैक नै
अर्थशास्त्रपोथीक छलै भण्डार

कोरो बाती उबही देबाक लेल
आउ बजाउ बुढ़ानुस भजार

डरक घाट नहाएल छी हम
से सहब दहोदिश अत्याचार

ऐरावत अछि देखा देखा कए
सभटा देखैत अछि ओ व्यापार

ऐ तीनटा गजलक आधार पर ई कहब बेसी उचित जे बाल गजलक भूमिका बहुत पहिने बनि गेल छल मुदा विस्फोट 24/3/2012कँ भेलै। आ ऐ विस्फोटमे जतेक हमर भूमिका अछि ततबए हिनका सभकँ सेहो छन्हि। ऐठाम ई कहब कनो बेजाए नै जे विदेहक अंक 111 बाल गजलक पहिल विशेषांक अछि। ऐमे कुल 16 टा गजलकारक कुल 93 टा बाल गजल आएल। हमरा ई पूर्ण विश्वास अछि जे बाल गजल मैथिलीमे पसरत आ नेना भुटका केर जीहपर चढ़त।
ऐ ठाम हम 1942 केर लगीचमे प्रकाशित कविवर सीताराम झा जीक गजल जे की वस्तुतः “बाल गजल “अछि से प्रस्तुत कऽ रहल छी--

बाउजी जागू ठारर भरै छी कियै”
व्यर्थ सूतल कि बैसल सड़ै छी कियै”

वेद पोथी पढ़ू आ अखाढ़ा चढ़ू
बाट दू में ऐकोने धरै छी कियै”

जँ थिकहुँ विप्रवंशीय सत्पुत्र तँ
पाठशालाकनामे डरै छी कियै”

बाट में काँट कै काटि आगू बढ़ू

देखि रोड़ा कनेको अड़ै छी कियै”

मेल चाहय सदा शत्रुओंसँ सुधी
बन्धुऐ में अहाँ सब लड़ै छी कियै”

आधि में माँति छी छी खाधि में जा रहल
देखि आनक समुन्नति जरै छी कियै”

साध्य में बुद्धि नौका अछैतो अहाँ
विघ्नबाधा नदी अहाँ ने तरै छी कियै”

मायबापोक सत्कर्म हो से करू
पापपन्थीक पाला पड़ै छी कियै”

बान्हि कक्षा स्वयं आत्मा रक्षा करू
शेष जीवन अछैतो मरै छी कियै”

सभ पाँतिमे 2122+ 122+ 122+ 12 मात्राक्रम अछि। ए, ऐ आदिकेँ लघु मानल गेल अछि। मतलामे रदीफ “छी किए” अछि तकर बादक शेर सभमे “छी कियै” । हमरा जनैत ई संपादकीय दोष हएत (संपादक छथि विश्वनाथ झा विषपायी,पोथी अछि कविवर सीताराम झा काव्यावली -प्रथम भाग)। आन शेर सभमे “छी कियै” केर बहुलता देखि मतलामे सेहो हम “छी कियै” लेलहुँ।
ऐ गजलक तेसर शेरक संदेशसँ व्यक्तिगत रूपें हम सभ सहमत नै छी कारण ई शेर संकुचित समाजक परिचायक अछि। बाल गजलक संबंधमे हम एकटा पोस्ट फेसबुक पर देने रही जकरा एहि लिंकपर देखल जा सकैए https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2012/04/ashish-anchinhar-like-unfollow-post-27_08.html

18) भक्ति गजल--ईहो ठीक बाले गजल जकाँ अछि। खाली विषय भक्ति भऽ जाइत छै। ईहो मैथिलीक अपन अविष्कार छै। मैथिलीमे भक्ति गजल नामक परिभाषिक शब्दावली अमित मिश्रजी द्वारा 7 अगस्त 2012केँ “विदेहक फेसबुक “केर पटलपर प्रस्तुत कएल गेल। ओना ओहिसँ बहुत पहिनेहें 16/1/2012केँ जगदानंद झा मनु जी बिना कोनो घोषणाकेँ अनचिन्हार आखरपर भक्ति गजल प्रस्तुत केला। एक बेर फेर मैथिलीक आदिक भक्ति

गजलकार कविवर सीताराम झा चिन्हित होइ छथि। विदेहक 15 मार्च 2013 बला 126म अंक भक्ति गजल विशेषांक अछि। भक्ति गजलक संबंधक बेसी विवरण एहि लिंकपर भेटत --
https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2017/07/blog-post_7.html

ऐ ठाम हम 1928मे प्रकाशित कविवर सीताराम झा जीक "सूक्ति सुधा (प्रथम बिंदु)मे संग्रहीत गजल जे की वस्तुतः "भक्ति गजल "अछि से प्रस्तुत कऽ रहल छी—

जगत मे थाकि जगदम्बे अहिंक पथ आबि बैसल छी
हमर क्यौ ने सुनैये हम सभक गुन गाबि बैसल छी

न कैलों धर्म सेवा वा न देवाराधने कौखन
कुटेबा में छलौं लागल तकर फल पाबि बैसल छी

दया स्वातीक घनमाला जकाँ अपनेक भूतल में
लगौने आस हम चातक जकां मुँह बाबि बैसल छी

कहू की अम्ब अपनेसँ फुरैये बात ने किछुओ
अपन अपराधसँ चुपकी लगा जी दाबि बैसल छी

करै यदि दोष बालक तँ न हो मन रोख माता कैं
अहीं विश्वास कैँ केवल हृदय में लाबि बैसल छी
एकर बहर अछि1222+1222+1222+1222 मने बहरे हजज

19) रेख्ती --एकरो सभ नियम गजले बला होइत छै खाली भाषा स्त्री बला भऽ जाइत छै मने एहन भाषा जकरा दू या दूसँ बेसी स्त्री अपनामे बजैत हो।

खण्ड-25

मैथिली गजलक परंपरा ओ इतिहास

ऐ विषय लेल संक्षिप्त रूपसँ हम अपनाकेँ तैयार केने छी कारण कोनो वस्तु टू-द-प्वाइंट रहलासँ नीक। ऐ विषयपर कमसँ कम 1000 पन्नाक शोध तैयार भऽ सकैए मुदा ऐठाम हमर से उद्येश्य नै अछि। तँए हम संक्षिप्त

रूपमे ई विषय राखब। ऐठाँ ई स्पष्ट करब बेसी जरूरी जे गजल अरबी शब्द अछि आ मध्यकालसँ प्रचलित अछि मैथिलीमे। मुदा लौकिक संस्कृतक वर्णवृत गजलक समानांतर अछि आ मैथिली गजलक परम्परा ओही ठामसँ बनल। लौकिक संस्कृतक परंपरा वैदिक संस्कृतसँ अछि आ वैदिक संस्कृत अपन परंपरा लोक प्रचलित गाथा सभ जोड़ने अछि। तँए मैथिली गजलक मूल ओ एखनुक समयमे अज्ञात भाषा अछि जे की वैदिक समयमे लोक प्रचलित रहल हएत आ हमरा लोकनि ओतहिसँ जतरा शुरू करब (ऐठाम ईहो स्पष्ट करब जरूरी जे हमरा लग वैदिक कालीन लोकप्रचलित भाषाक कोनो उदहारण नै अछि तँए हम एतऽ ओकरा प्रस्तुत नै सकलहुँ अछि। ओना वैदिक संस्कृतसँ आधुनिक मैथिलीक किछु उदहारण काफिया बला खण्ड 15मे देल गेल अछि)।
चूँकि वैदिक संस्कृतसँ पहिनेहों अनेक लिखित भाषा छलै जे समय पुरलापर तिरोहित होइत गेल। मैथिली गजलक परंपराकेँ हम ओइ तिरोहित भेल भाषा सभसँ देखै छी जकरा स्थानपर वैदिक संस्कृत पसरल। हम वेदक संगे-संग वेदमे वर्णित" गाथा" नामक लोक परंपराकेँ मैथिली गजलक मूल मानै छी। हमर स्पष्ट मानब अछि जे मैथिली गजल "लोक"सँ भाव ओ तेवर लेलक आ वेदसँ व्याकरण। मैथिली गजल अपन उत्कर्षमे तखन अबैए जखन लोककंठ बाजि उठैए---

"कोने बन बोलै मइया हरियर सुगबा हे,
मइया कोने बन बोललइ मजूर,
जगदम्बा मइयाकेँ आसन डोललइ हे,
भैरब बन बोलै मइया हरियर सुगबा हे,
मइया विषहरि बन बोललइ मजूर,
कि जगदम्बा मइयाकेँ आसन डोललइ हे.."

आ तखने एकर संगे-संग शंकर मिश्र बचपनेमे ताल ठोकि कहै छथि--

"बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती।
अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥"
(अनुष्टुप छन्द)

मैथिली गजल अपन मारक क्षमता कहबी ओ फकड़ासँ लेलक। देखू किछु एहन कहबी जैमे वर्णवृत वा अरबी बहर छै--

जते के बौआ नै

तते के झुनझुन्ना

(122+222)

एकरे दोसर रूप छै—

जते के बहु नै

तते के लहठी

(122+22)

सुगरक गबाही हिरन देल

दूनू पड़ा कऽ जंगल गेल

(221+222+221) कऽ केर उच्चारण दीर्घ अछि।

बाबाजीकँ बेल

हाथे हाथे गेल

बहर अछि 222221

अही बहरपर (222221) ईहो कहबी सेहो अछि। देखू....

प्रेतक भोजन तीन

केरा कबकब मीन

बिन बापक बच्चा सुग्गर

बिन मायक बच्चा टुग्गर

222 222 2 ई एकर बहर छै

ई कहबी सभ अज्ञात रचनाकार अछि आ अपन प्राचीने रूपमे एखनो अछि। एहन-एहन आर बहुत रास कहबी अछि मुदा से देब हमर अभीष्ट नै। कारण हमर ई इच्छा अछि जे मैथिली गजलक परम्पराकँ भविष्यमे आर फड़िच्छा कऽ हमर आबए बला पीढ़ी सभ लीखथि,तखने ई सुचिंतित हएत। ओना हम निश्चित रूपें कहब जे लोक तत्व आ संस्कृत तत्व दूनू मैथिली गजलक प्राण अछि। जँ मैथिली गजलकँ जड़िसँ पकड़बाक अछि तँ कोनो गामक हाट वा शहरक सब्जी मंडीमे प्रयुक्त शब्दावली,वाक्य आ तेवरकँ देखू। तकर बाद

सोहर,बटगबनी,फगुआ,तिरहुत,चैताबर आदि केर भाव लिअ। जँ एतेक कऽ लेब तखन गजल केर भाव ओ कथ्य अपने मोने अहाँ लग आबि जाएत।

आधुनिक मैथिली गजल

लिखित रूपमे पं.जीवन झा आधुनिक मैथिलीक पहिक शाइर छथि (एखन धरिक खोजक अधारपर)। हिनक नाटक “सुंदर-संयोग” मे गीत ओ गजल दूनू देल गेल जे कि ई. 1905 मे प्रकाशित भेल। आधुनिक मैथिली गजलक परंपरा आ इतिहासकैँ हम दू भागमे देखब। पहिल बहरयुक्त गजलक इतिहास आ तकर बाद बिना बहर बला (अजाद) गजलक इतिहास। पहिने बहरयुक्त गजलक इतिहास देखल जाए---

मैथिलीमे बहरयुक्त गजलक इतिहास

मोटा-मोटी1905सँ लऽ कऽ 1970धरि मैथिली गजलक नामपर जे वस्तु देखबामे अबैए ताहि महँक अधिकांश गजलकैँ वस्तुतः गजल नै कहल जा सकैए मुदा हमरा सभकैँ ईहो धेआन रखबाक चाही जे कोनो काजक शुरूआतमे गलती होइते छै तँए जँ पं.जीवन झा,यदुवरजी,आनंद झा न्यायाचार्य प्रभृति गजलकारक अधिकांश गजलमे वर्णवृत नै छन्हि तँ आश्चर्य नै मुदा शुरूआती गलतीकैँ दुरुस्त करैत कविवर सीताराम झा ओ काशीकान्त मिश्र(मधुप)जी गजलमे एला। हमरा सभ लग कविवर जीक कुल 3 टा आ मधुप जीक1 टा गजल अछि मुदा ऐ दूटा गजलकारक चारिटा गजल ई कहबामे सक्षम अछि जे गजल एहने हेबाक चाही। मैथिलीक आरंभिक गजलमे व्याकरण लेल ई विवेचना धेआन राखू---” 1905सँ 1970 धरिक बहुत रास गजल आन-आन संपादक महोदय केर संपादन रूपमे प्राप्त भेल अछि। तँए बहुत संभव जे ई संपादक सभ अपना हिसाबें वर्तनी राखि देने होथि। आ प्राचीन गजलक मूल वर्तनी विलुप्त भऽ गेल हो। उदाहरण लेल देखू मिथिला गीतांजलि जे की 1923मे यदुनाथ झा यदुवरजीक संपादनमे प्रकाशित भेल तैमे यदुवर जी अपन एकटा गजलक शुरूआत एना केने छथि “भगवान हमर ई मिथिला...” मुदा डा. रामदेव झा जी अपन लेख “मैथिलीमे गजल” जे की रचना पत्रिकाक जून 1984 अंकमे छपल तैमे एही गजलकैँ एना देने छथि “भगवन् हमर ई मिथिला...” आब पाठक अपने अंदाजा लगा सकै छथि जे की हाल छै। हम बस ऐठाम मात्र हिंट देलहुँ अछि। एही प्रसंगमे एकटा आर रोचक उदाहरण देखू, श्री चंद्रनाथ मिश्र अमर एवं रामदेव झाजी द्वारा संपादित कविवर जीवन झा रचनावलीमे जीवन झा जीक एकटा गजलकैँ संपादक एना प्रस्तुत केने छथि (तेसर संस्करण-1989 मैथिली अकादेमी, पटना)--

एको कथा ने हमर अहाँ कान करै छी
हम पैर पड़ै छी तँ अहाँ मान करै छी

बाजी तँ हम बताहि कहाबी वियोग मे
चुपचाप ताहि लेल तोहर ध्यान धरै छी

ठीक इएह् गजलकेँ तारानंद वियोगी जीक लेख “मैथिली गजलः मूल्यांकनक दिशा” जे की सियाराम झा सरसजीक संपादनमे निकलल “लोकवेद आ लालकिला” नामक संकलनमे अछि से देखू---

एको कथा ने हमर अहाँ कान करै छी
हम पैर पड़ै छी तँ अहाँ मान करै छी

बाजी हम बताहि कहाबी वियोग मे
चुपचाप ताहि लेल तोहर ध्यान करै छी

ऐ उदाहरण सभकेँ गौरसँ देखू सभ गप्प फड़िच्छा जाएत। बहुत सम्भव जे पं. जीवन झा रचनावली आ आन कोनो प्राचीन गजलकारक पोथी जे की संपादनक माध्यमसँ आएल हो तै महँक गजलक मूल वर्तनी सभमे एहने दिक्कत कएल गेल हो। ओना ई हमर मात्र संभावने टा अछि। निश्चित रूपसँ हम सभ आन गजलक आन नव शोधार्थी (जे की बिना पाइ देने शोधमे रूचि रखैत होथि) ई अपेक्षा करै छी जे ओ प्राचीन गजलक मूल पाठकेँ सामने अनताह। हमरा लग जे सामग्री अछि से बहुत संभव संक्रमित हो तँए हम ओइ गजलक निच्चा ओकर स्रोत ओ अन्य जानकारी देने छी। आ तँए बहुत संभव जे प्राचीन गजल सभमे वर्णवृत ढ़ाँचा बिगड़ि गेल हो। पं. जीवन झा जीक सभ गजल मैथिली अकादेमी, पटनासँ प्रकाशित हुनक रचनावलीपर अधारित अछि (संपादक-पं. चन्द्र नाथ मिश्र “अमर” एवं डा. रामदेव झा, संस्करण-1989)। यदुवरजीक सभ गजल “यदुवर रचनावली” (संपादक रमानंद झा रमण, प्रकाशक-मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी, संस्करण-2003)पर अधारित अछि।”

ऐठाम हम कविवर जीवन झाजीक गजलकेँ तक्ती कऽ रहल छी आ तैसँ पहिने हम किछु निवेदन करी—

1) कविवरजीक सभ गजल “कविवर जीवन झा रचनावली”सँ लेल गेल अछि। ऐमे संकलित “सुन्दर-संयोग” नामक नाटकमे बहुत रास गीतक संग किछु गजल सेहो अछि। ओना ई धेआन देबा योग्य जे उक्त नाटकमे मात्र एकै गोट रचनाकेँ गजल कहल गेल अछि बाद बाँकीकेँ गीत। मुदा हम ऐठाँ किछु एहनो गीतकेँ लऽ रहल छी जे की अरबी बहरमे साधल गजल अछि। ओना कविवर एकरा सभकेँ गजल नै कहि गीत किए कहला से निजगुत रूपें नै बुझना जा रहल अछि। आ ऐ विषयपर कोनो घमर्थन वा कोनो विवाद नै कऽ सोझे हमरा लोकनि ई सिद्ध करब जे उक्त गीत सभ गजल अछि की नै अछि। ओना तँ नाटक सुंदर-संयोग प्रकाशित भेलै आ तैमे संकलित गजलकेँ मैथिलीक पहिल गजल मानल जाइए मुदा रचनावलीमे पहने सामवती-पुनर्जन्म नाटक अछि आ एहूमे गजल अछि। हम ऐ ठाम सामवती-पुनर्जन्म नाटकक गजलसँ शुरूआत केलहुँ अछि।

2) बहुत रास गजलमे ए, शुरूक दीर्घ आदिकेँ लघु मानल गेल अछि संगे-संग चंद्रबिंदुकेँ सेहो दीर्घ मानल गेल अछि जे की ओहि समयक व्याकरणक असफलताकेँ देखबैए।

3) गजल सभमे व्याकरणसँ मान्य छूट सभ सेहो लेल गेल अछि।

4) भऽ सकैए जे हमरो सभसँ किछु गलती छूटल हो। आसा अछि अहाँ सभ एकरा देखार करब खास कऽ पं.

जीवन झाजीक संस्कृत गजलक संदर्भमे। “सामवती-पुनर्जन्म” नाटकमे एकटा मैथिली आ एकटा संस्कृत गजल अछि। तँ देखू पृष्ठ 80परहँ ई गजल जकरा कविवर स्पष्ट रूपें गजल कहने छथि---

निसास लै नोर जौं बहाबी समुद्र पर्यन्त तौं थहाबी
अशेष संसार काँ दहाबी सुरेश प्रासाद वा ढ़हाबी

महा कुलाचार छाड़ि गेहे विशेष अहाँक टा सिनेहे
अरन्यमे बैसि दीन देहे कहु तितिक्षा कतै सहाबी

अनंङ्ग सन्ताप सौं जरै छी अहाँक चिन्ता जतै करै छी
सखीक लाजे ततै मरै छी जतै कही वा जतै कहाबी

विलोचनोदार वारि धारा दिवा निशांमे अनेक वारा
वियोग तापापनोदपारा उरोज गौरीश काँ नहाबी

कथूक चिन्ता ने चित्त आनी अशुद्ध मानी तँ फेरि छानी
जतेक काले विशुद्ध जानी जतेक डाही जतै डहाबी

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 12+122+12+122+12+122+12+122 अछि, शेरक दोसर पाँतिक 12+122+12+122+12+122+12+122 मात्राक्रम अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 12+122+12+122+12+112+12+122 मने मतलाक हिसाबें नै अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें भऽ सकैए बशर्ते की जँ “कहु” केर बदला “कहू” लेबै। ओना ई हमरा जनैत मुद्रण गलती अछि। हम ऐके बाद “कहू” लेब। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। पाँचम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, पाँचम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। मने कुल मिला कऽ मात्र एक पाँतिमे एकटा गलती अछि।

आब पृष्ठ 94पर देल एकटा संस्कृत गजल देखू जकरा कविवर स्पष्ट रूपें गजल कहने छथि—
अन्हाय विधेयाथ मनोरोग चिकित्सा
चेदस्ति तनोरङ्ग ममारोग्य बिधिस्ता

रत्यन्तमलङ्कारमलङ्गारमवागाम्
कोपाग्नि रूपादीप्युभयोरत्र समित्सा

आकारथमथाकारमवैमीह तवेमम्
तत्रैव मतिर्मे तब यत्र प्रतिपित्सा

दन्तअतमाधेहि शरीरे न विरज्ये
स्वीयेहि जने मुग्धमते का विचिकित्सा

गृहणासि कपाटन्तु परित्यज्य सुशय्याम्
स्रग्दामधिया तन्वि भवस्यात्ततिलित्सा

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 221+122+1221+122 अछि, पहिल शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 221+122+1221+122 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 211+1221+1221+122 अछि मने गलत अछि। ऐ पाँतिमे जँ “दन्तअत” केर बदला जँ “दन्तात” रहै तखन बहर बराबर भऽ जाएत आब संस्कृतक विद्वानसँ ई आसा करै छी जे ओ कहता जे ऐठाम संधि हेतै की नै।चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। पाँचम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, पाँचम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। तँ आब चली पृष्ठ 109पर (सुन्दर-संयोग)। ऐ पृष्ठ परहँक सूचनामे राग पीलूमे ई गीत अछि—

अहाँ सों भेंट जहिआ भेल तेखन सों विकल हम छी
उठैत अन्धार होइए काज सब करबामे अक्षम छी

अहाँ काँ छाड़ि कै पृथ्वीमे दोसर हम ने देखै छी
कोना काढ़ू हम अपना मूँहसँ अहाँ सभसँ उत्तम छी

कथू लै फूसि नै बजब शपथ खा खा कहै हम छी
अहीं प्राणेश्वरी छी एकटा सर्वस्व प्रीतम छी

पिनाकी पूजि क्यो राजा होऔ गोविन्द क्यो पूजौ
सम्हारू वा विगाड़ू विश्वमे एकटा अहीं दम छी
पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि, शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 12122+1222+1222+1222 अछि। हमरा जनैत कविवरजी “उठैत” मे त वर्णकेँ हलंत मानने छथि जे की उचित नै मानल जा सकैए। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 1222+2222+11122+1222 अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 1222+1212+1222+1222 अछि मुदा हमरा जनैत मुद्रण दोषक कारणे “बाजब” केर बदला “बजब” भऽ गेल जैसँ बहर गड़बड़ा गेल। हमरा हिसाबें बाजब सही छै आ तखन मतलाक हिसाबें सही हेतै आ तँए हम “बाजब” लऽ रहल छी।।तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि अछि, चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि।
तहिना पृष्ठ 113पर एकटा संस्कृत गजल अछि। ऐ गजलक पहिल दू पाँतिक अंत “शते”सँ भेल अछि बादमे “शेते” आबि गेल हमरा जनैत ई टंकण केर गलती अछि ओनाहुतो शते आ शेते दूनू “सुतनाइ” केर अर्थ लेल अछि। मुदा मात्राक्रमकेँ देखैत शेते सही अछि । ऐठाम हम “शेते” सभ पाँतिमे लेलहुँ अछि---

न जानीमो नवीना कामिना हीना कथं शेते
अहो कन्दर्पकानुज्ञापराधीना कथं शेते

यथा लेभे न संवेशो वसन्ते बापि हेमन्ते
तपत्तोर्रापते मध्यन्दिने दीना कथं शेते

शायानाऽऽलोकते स्वपने सत्पनी सङ्गतं नाथम्
जबादुत्थाय शथ्यायमुदासीना कथं शेते

कपोलं कोमलं वामे करे धृत्वा कुरङ्गीदृक
वियोगव्याकुला चिन्तापरासीना कथं शेते

अखर्वं कुर्वती गर्व पराची संकुचद्वासाः
अनुत्तानोद्धती वक्षोरूहे पीना कथं शेते
पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि, शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम

1222+1222+1222+1222 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि1222+12112+2122+1222 मुदा हमरा जनैत ऐठाम गलती भेल अछि। पाँति एना हेबाक चाही शयानाऽऽलोकते स्वप्ने सपत्नी सङ्गतं नाथम् तखन एकर वर्णवृत हेतै ओनाहुतो देखा रहल अछि जे वर्तनीक गलती कारणे कते बड़का कांड भऽ गेल। तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। पाँचम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, पाँचम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि।

तेनाहिते पृष्ठ 116पर राग पीलूमे जे गीत अछि तकरा देखू--

पड़ैए बूझि किछु ने ध्यानमे हम भेल पागल छी
चलै छी ठाढ़ छी बैसल छी सूतल छी कि जागल छी

कहौ क्यो किच्छु कतबो हम कोनो एक ठाम बैसल छी
कतेको दूरि छौ तैओ अहाँ मनमे तँ पैसल छी

बुझा देमक त चाही कौखना अनजानकैं कनिऐं
जे ई अपराध छौ तोहर किए हमरासँ रूसल छी

बड़ा सन्देहमे छी हम खुशी होइ छै परोसिनी कैं
करै छी जे हँसी सबसँऽ अहाँ अत्यन्त चञ्चल छी

कहै छी प्राण हमरा तँऽ निबाहू प्रीति जा जीबी
अहाँ निश्चिन्त छी तँए की अहाँ बिनु हम तँ बेकल छी

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि, शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 1222+1222+1222+1222 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि, तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 1222+1222+12212+12122 अछि। चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम मतलाक हिसाबें अछि। पाँचम शेरक दूनू पाँति मतलाक बराबर अछि। संगे-संग ईहो कहब उचित जे मतलाक हिसाबें काफिया “आगल” अछि जकर पालन आन शेर सभमे उचित रूपें नै भऽ सकल अछि।

तहिना पृष्ठ 117पर देल गीत देखू—
एको कथा ने हमरा अहाँ कान करै छी
हम पैर पड़ै छी तँ अहाँ मान करै छी

बाजी तँ हम बताहि कहाबी विओगमे
चुपचाप ताहि लेल तोहर ध्यान धरै छी

भूखो पियास गेल तौहर शपथ खाइ छी
बैसलि फराक अपन दुःख गान करै छी

जीवन समर्पिल्लैय की देखी तँ अहाँकैं
सन्ताप सहै छी कि सुधा पान करै छी
पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212+2221+221122 अछि, शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 22112+2112+21122 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212+121122+1212 अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2212+12122+21122 अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212+12122+12212 अछि, तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2212+11221+21122 अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212+2212+221122 अछि, चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 22112+2112+21122 अछि। ऐ गजलमे रदीफक गलती अछि।
आब पृष्ठ 126पर देल ई रचना देखू जकरा कविवर स्पष्टे गजल कहने छथि—
आइ भरि मानि लिअऽ नाथ न हट जोर करू।
देहरी ठाढ़ि सखी हो न एखन कोर करू ॥1॥

हाय रे दैव! इ ककरासँ कहू क्यो न सुनै।
सैह खिसिआइए जकरा कनेको सोर करू ॥2॥

लाथ मानै न क्यो सभ लोक करैए हँसी।
बाजऽ भूकऽ ले जँ कनक जकर सोझ ओठ करू ॥3॥

आइ एखन न धनी एक कहल मोर करू।
आन संगोर करू एहि ठाम भोर करू ॥4॥

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2122+1122+1122+112 अछि, शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2212+1222+1222+112 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2122+1122+1122+112 अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2122+1222+1222+112 अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम2122+1222+1122+12 अछि, तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2122+1212+1221+2112 अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2122+1122+1122+112 अछि, चारिम शेरक दोसर पाँतिक 2122+1122+121+1122 मात्राक्रम अछि। चारिम शेरक दोसर पाँतिमे काफिया "ओठ" अछि जे की शायद प्रमाद वश लेल गेल अछि। आब ई प्रमाद कोन स्तरपर भेल छै से कहनाइ कठिन। ओना जँ "ओठ" केर बदला "ठोर" होइ तँ भाव आ व्याकरण दुन्नू बाँचल रहत।

तेनाहिते पृष्ठ 128पर देल ई गीत देखू—

उद्वेग की रहैछ न जानी जे आइ काल्हि
सन्देह एकटा जे अहाँ चल न जाइ काल्हि

हमरा सोहाय किछु ने हिनक वियोगमे
सप्पत खुआ लिअऽ जँ तखन पान खाइ काल्हि

दूबर शरीर सो त बिदा प्राश होइए
जैखन अहाँ पुछै छि जे मानी तँ जाइ काल्हि

हमरा जे एहि बेर एही ठाम छाड़ि देब
जोरावरीसँ देव अपन जी विदाइ काल्हि

राखै जे लाथ कै क अहाँ काँ दुइ चारि दिन
तकरा बना बना क खुआबी मिठाइ काल्हि

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212+12112+222+121 अछि, पहिल शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2212+12112+212+121 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2222+12212+12+12 अछि, दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2212+12112+212+121 अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212+12112+212+121 अछि मुदा ऐ पाँतिमे "प्राश" शब्दक बदला "प्राण" हेबाक चाही छै भावकेँ देखैत। तेसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2122+12122+2121+21अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212+12112+212+121अछि, चारिम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2212+12112+212+121 अछि। पाँचम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212+12112+222+12 अछि, पाँचम शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम

2212+12112+212+121 अछि।
जीवन झाजीक गजल देखलाक बाद आब देखी हुनके समकालीन आ तुरंत परवर्ती गजलकार यदुवर, कविवर सीताराम झा एवं मधुप जीक किछु गजल---

यदुनाथ झा "यदुवर"
1
भगवान हमर ई मिथिला सुख शान्तिमय नगर हो
सभ कीर्तिमे अमर हो सद्गुण सदैव उर हो

मनमोहिनी प्रकृतिसँ युक्त रहय सदा ई
मंगलमयी सुजनकाँ अलौकिक प्रेम उर हो

सीता सरस्वती ओ लखिमा समानि घर घर
हो जन्म नारि मणि जे आदर्श भूमि पर हो

राजा विदेह सन हो न्यायी प्रजा हितैषी
नृपभक्त उद्यमी औ धर्मी प्रजा सुघर हो

जैमिनि कणाद कपिलादि वाल्मीकि सम
पुनि याज्ञवल्यक मुनि सन विप्रवर हो

घर घर वेदान्त ज्ञाता, हो अष्टावक्र सन सब
पुनि पिंगलाक सदृश, हरि भक्त नारि नर हो

मण्डन,महेश,उदयन,शंकर ओ पक्षधर सन
पुनि कालिदास सन सभ, कवि पण्डित प्रवर हो

मनबोध और विद्यापति, हर्षनाथ, चन्दा
सन मैथिलीक सेवक, कविवर अनेक नर हो

नारायणी ओ गंगा कमला ओ कोशि विमला
सन सर्वदा सुनिर्मल धारा प्रवाह धर हो

निज देश भक्त ज्ञानी सुउदार स्वार्थ त्यागी
नर रत्न हो ओ यदुवर गौरव सुबुद्धि कर हो

2
प्रेममयी रत्न खानि देश मुकुट जननी तों
भारत बिच श्रेष्ठ प्रान्त हमर जन्म धरनी तों

शत शत नैर रत्न सिंह, पण्डित प्रसवनी तों
दार्शनिक शास्त्रकार विज्ञ जनक जननी तों

सुजल सुफल शस्य शालिसौं सुस्वच्छ वरनी तों
विकशित बहुकुंज सुसुम सौं अतीव रमणी तों

धन्य धन्य मातु हमर मिथिले सुख सदनी तों
“यदुवर” जन कल्पलता देवि शत्रु शमनी तों

शाइरक मूल वर्तनी देल गेल अछि। हमरा हिसाबें नैर मने नर

काशीकान्त मिश्र “मधुप”
1
मिथिलाक पूर्व गौरव नहि ध्यान टा धरै छी
सुनि मैथिली सुभाषा बिनु आगियें जड़ै छी

सूगो जहाँक दर्शन-सुनबैत छल तहीँ ठाँ
हा आइ “आइ गो” टा पढ़ि उच्चता करै छी

हम कालिदास विद्या-पति-नामछाड़ि मुँहमे

बाड़ीक तीत पटुआ सभ बंकिमे धरै छी

भाषा तथा विभूषा अछि ठीक अन्यदेशी
देशीक गेल ठेसी की पाँकमे पड़ै छी?

औ यत्र-तत्र देखू अछि पत्र सैकड़ो टा
अछि पत्र मैथिलीमे एको न तैं डरै छी
(2212-122-2212-122)
1932मे मैथिली साहित्य समिति, द्वारा काशीसँ “मैथिली-संदेश” नामक पत्रिकामे प्रकाशित

कविवर सीताराम झा
1
जगत मे थाकि जगदम्बे अहिंक पथ आबि बैसल छी
हमर क्यौ ने सुनैये हम सभक गुन गाबि बैसल छी

न कैलों धर्म सेवा वा न देवाराधने कौखन
कुटेबा में छलौं लागल तकर फल पाबि बैसल छी

दया स्वातीक घनमाला जकाँ अपनेक भूतल में
लगौने आस हम चातक जकां मुँह बाबि बैसल छी

कहू की अम्ब अपनेसँ फुरैये बात ने किछुओ
अपन अपराधसँ चुपकी लगा जी दाबि बैसल छी

करै यदि दोष बालक तँ न हो मन रोख माता कैं
अहीं विश्वास कैँ केवल हृदय में लाबि बैसल छी

एकर बहर अछि-1222-1222-1222-1222 मने बह्रे हजज
1928मे प्रकाशित कविवर सीताराम झा जीक “सूक्ति सुधा (प्रथम बिंदु)मे संग्रहीत गजल जे की वस्तुतः “भक्ति गजल “अछि

2

हम की मनाउ चैती सतुआनि जूड़शीतल
भै गेल माघ मासहि धधकैत घूड़तीतल`

अछि देशमे दुपाटी कङरेस ओ किसानक
हम माँझमे पड़ल छी बनि कै बिलाड़ि तीतल

गाँधीक पक्ष ई जे सुख जौं चहैछ सब तों
राजा प्रजा परस्पर सब ठाम रहै रीतल

एक दिस सुभास बाबू ललकारि ई कहै छथि
कय देब हम बराबरि आकाश ओ महीतल

कर्तव्य की एतए ई हमरा अहाँ पुछी तौं
मिलि जाउ मालवीवत पाटी परीखि जीतल

सभ पाँतिमे 2212+ 122+2212+ 122 मात्राक्रम अछि। बीच-बीचमे “ए” के लघु मानल गेल अछि।

3

बाउजी जागू ठारर भरै छी कियै”
व्यर्थ सूतल कि बैसल सड़ै छी कियै”

वेद पोथी पढ़ू आ अखाढ़ा चढ़ू
बाट दू में ऐकोने धरै छी कियै”

जँ थिकहुँ विप्रवंशीय सत्पुत्र तँ
पाठशालाकनामे डरै छी कियै”

बाट में काँट कै काटि आगू बढ़ू
देखि रोड़ा कनेको अड़ै छी कियै”

मेल चाहय सदा शत्रुओंसँ सुधी
बन्धुऐ में अहाँ सब लड़ै छी कियै”

आधि में माँति छी छी खाधि में जा रहल
देखि आनक समुन्नति जरै छी कियै”

साध्य में बुद्धि नौका अछैतो अहाँ
विघ्न-बाधा नदी अहाँ ने तरै छी कियै”

मायबापोक सत्कर्म हो से करू
पापपन्थीक पाला पड़ै छी कियै”

बान्हि कक्षा स्वयं आत्मा रक्षा करू
शेष जीवन अछैतो मरै छी कियै”

ई गजल कविवर सीताराम झा काव्यावली-प्रथम भाग (संपादक, विश्वनाथ झा विषपायी)क पृष्ठ 108सँ लेल गेल अछि (प्रकाशन वर्ष-2008) ।सभ पाँतिमे 2122+ 122+ 122+ 12 मात्राक्रम अछि। ए, ऐ आदिकैं लघु मानि ले गेल अछि। मतलामे रदीफ “छी किए” अछि तकर बादक शेर सभमे “छी कियै” । हमरा जनैत ई मुद्रण दोष रहल हेतै। आन शेर सभमे “छी कियै” केर बहुलता देखि मतलामे सेहो हम “छी कियै” लेलहुँ।
ऐ गजलक तेसर शेरक संदेशसँ व्यक्तिगत रूपें हम सभ सहमत नै छी कारण ई शेर संकुचित समाजक परिचायक अछि। एतेक विवरण देखलाक बाद ई स्पष्ट होइए जे जीवन झाजीक गजलमे अधिकांशतः बहर अछि मुदा यदुवरजीक गजलमे ने बहर अछि ने किछु। डा. रमानंद झा रमणजी संपादित यदुवर रचनावली पढ़लासँ ई स्पष्ट होइए जे यदुवरजी उप-शास्त्रीय संगीत यथा ठुमरी, दादारा आदिमे बहुत रचना केने छथि बहुत संभवने यदुवरजी गजलोंकैं एहने ढ़ाँचापर कसि देने होथि। तथापि ई निश्चित रूपें कहल जा सकैए जे प्रारंभिक मैथिली गजलक शुरुआत बहुत गंभीर आ नीक ढ़ंगसँ भेल छल, जकरा बादमे मधुपजी आ कविवर सीताराम झाजी नीक ढ़ंगे आगू बढ़ेला मुदा तकर बाद किछु आलसी आ भ्रांतिकार सभहँक कारणें मैथिली गजलक अपेक्षित विकास नै भऽ सकल।1970सँ लऽ कऽ 2008 धरि किछुए गजलकार सभ भेलाह यथा योगानंद हीरा, विजयनाथ झा,

जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल आदि। ई तीनू गजलकारक गजल सभ वर्तमानमे प्रकाशित भऽ रहल छनि तँए एखनुक पाठक सभ एकरा अनचिन्हार आखर सहित आन-आन पत्रिका सभमे सेहो देखि सकै छथि। 2008मे अनचिन्हार आखरक जन्म भेल, ई पत्रिका इंटरनेटपर अछि आ एकर क्रियाकलापक विस्तृत वर्णन कएल जा रहल अछि---

अनचिन्हार आखर आ मैथिली गजल

11/4/2008कँ "अनचिन्हार आखर" नामक ब्लाग इंटरनेटपर आएल। अनचिन्हार आखर केर छोटका नाम "अ-आ "राखल गेल अछि। एकरा ऐ लिंकपर देखल जा सकैए---http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/। ई ब्लाग हमरा द्वारा शुरू कएल गेल छल आ समय-समयपर आन-आन गजलकार सभकँ जोड़ल गेल। तँ देखी अनचिन्हार आखर केर किछु विशेषता-

1) अ-आ प्रिंट वा इंटरनेटपर पहिल उपस्थिति अछि जे की मात्र आ मात्र गजल एवं गजल अधारित विधापर केन्द्रित अछि।
2) अ-आ केर आग्रहपर श्री गजेन्द्र ठाकुर जी गजलशास्त्र लिखला जे की मैथिलीक पहिल गजलशास्त्र भेल। एकरा ऐ लिंकपर देखल जा सकैए--http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page.html

3) अ-आ द्वारा "गजल कमला-कोसी-बागमती-महानन्दा सम्मान" केर शुरूआत भेल। जे की स्वतन्त्र रूपें गजल विधा लेल पहिल सम्मान अछि। एकरा ऐ लिंकपर देखल जा सकैए---
http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page_4.html

4) अ-आ केर ई सौभाग्य छै जे ओ बाल-गजल नामक नव विधाकँ जन्म देलक आ ओकर पोषण केलक। भक्ति गजल सेहो अ-आ केर देन अछि। विदेहक अङ्क 111 पूर्ण रूपेण बाल-गजल विशेषांक अछि आ अङ्क 126 भक्ति गजल विशेषांक।
5) बर्ख 2008 आ 2015 माँझ करीब 30टासँ बेसी गजलकार मैथिली गजलमे एलाह। ई गजलकार सभ पहिनेसँ गजल नै लिखै छलाह। सङ्गे-सङ्ग करीब 5टा समीक्षक-आलोचक सेहो एलाह।
6) पहिल बेर मैथिली गजलक क्षेत्रमे एकै बेर करीब 16-17 टा आलोचना लिखाएल। एकरा ऐ लिंकपर देखि सकै छी---http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page_8403.html

7) अ-आ मैथिली गजलकँ विश्वविद्यालय ओ यू.पी.एस.सी एवं बी.पी.एस.सीमे स्थान दिएबाक अभियान चलौने अछि आ एकटा माडल सिलेबस सेहो बना क' प्रस्तुत केने अछि।
8) अ-आ प. जीवन झा जीक मृत्यु केर अंग्रेजी तारीख पता लगा ओकरा गजल दिवस मनेबाक अभियान चलौने

अछि।

9) अ-आ 1905सँ ल' क' 2013 धरिक गजल सङ्ग्रहक सूची एकट्ठा ओ प्रकाशित केलक (व्याकरणयुक्त एवं व्याकरणहीन दूनू)। एकरा ऐ लिंकपर देखि सकै छी--
http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2012/02/blog-post_01.html

10) अ-आ अधिकांश गजलकारक (व्याकरण युक्त एवं व्याकरणहीन दूनू) संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत केलक। एकरा ऐ लिंकपर देखि सकै छी---http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page_632.html

11) अ-आ 62 खण्डमे गजलक इस्कूल नामक श्रृखंला चलौलक जे की समान्य पाठकसँ ल' क' गजलकार धरि लेल समान रूपसँ उपयोगी अछि। एकरा ऐ लिंकपर देखि सकै छी---
http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page_1080.html

12) अ-आ मैथिलीमे पहिल बेर आन-लाइन मोशयाराक आरम्भ केलक आ ई बेस लोकप्रिय भेल। एकरा ऐ लिंकपर देखि सकै छी---http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page_13.html

13) मैथिली गजल आ अन्य भारतीय भाषाक गजल बीच संबंध बनेबाक लेल "विश्व गजलकार परिचय शृखंला" शुरू कएल गेल जकरा अइ लिंकपर देखि सकै छी--
https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page_21.html

14) एखन धरि अ.आ केर माध्यमें मैथिली गजलमे गजल-1386, रुबाइ-417, बाल गजल 207, बाल रुबाइ-47, भक्ति गजल-47, हजल-21, आलोचना-28, कसीदा-3, नात-2, बंद-4,भक्ति रुबाइ-1, माहिया-2, देल जा चुकल अछि। जतेक गजलकार अ.आ केर माध्यमें आएल छथि हुनका सभ द्वारा रचित गजलक संख्या जोड़ल जाए तँ लगभग 3000 गजलक संख्या पहुँचत।

आब कने देखी अ-आक क्रियाकलापकेँ विस्तृत रूपमे---

अप्रैल 2008(11/4/2008) मे अनचिन्हार आखरक जन्म भेल आ एहि बर्ख कुल तीन टा पोस्ट भेल। तीनू पोस्ट आशीष अनचिन्हार द्वारा भेल जाहिमे हुनक कुल तीन टा गजल आएल।
बर्ख 2009मे कुल 36टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि------------
आशीष अनचिन्हार द्वारा कुल 19टा पोस्ट भेल। 18टा पोस्टमे हुनक 18टा गजल आएल आ 1टा पोस्टमे भिन्न-भिन्न शेर अछि। गजेन्द्र ठाकुर द्वारा कुल 9टा पोस्ट भेल जाहिमे---1टा पोस्टमे हुनक 1टा गजल, 2टा पोस्टमे

धीरेन्द्र प्रेमर्षिक 1टा आलेख एवं 11टा गजल, आ 1टा पोस्टमे गंगेश गुंजन, रामलोचन ठाकुर, राजेन्द्र विमल, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, बृखेष चंद्र लाल आ रोशन जनकपुरी 1-1टा गजल प्रस्तुत कएल गेल अछि। देव शंकर नवीन द्वारा कुल 4टा पोस्ट भेल जाहिमे हुनक कुल 4टा गजल आएल। शेफालिका वर्माजीक कुल 2टा पोस्टमे हुनक कुल 4टा गजल आएल। अरविन्द ठाकुरक कुल 2टा पोस्टमे हुनक 2टा गजल आएल।

बर्ख 2010मे कुल 62टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि---

मिथिलेश झा द्वारा कुल 2 टा पोस्ट भेल जाहिमे नरेन्द्र आ अरविन्द ठाकुरक 1-1टा गजल अछि। आशीष अनचिन्हार द्वारा कुल 27टा पोस्ट भेल जाहिमे हुनक कुल 26टा आ अरविन्द ठाकुरक 1टा गजल आएल। गजेन्द्र ठाकुर द्वारा कुल 17टा पोस्ट आएल। 12 टा पोस्टमे 12 खंडमे मैथिली गजल शास्त्र आएल। एकटा पोस्टमे आशीष अनचिन्हारक 1टा गजल आएल। आ 4टा पोस्टमे हुनक 21 एवं गंगेश गुंजनक 1टा गजल आएल। त्रिपुरारी कुमार शर्माक 1टा पोस्टमे हुनक 1टा गजल आएल। प्रेमचंदक 1टा पोस्टमे 2टा गजल आएल। शिव कुमार झा टिल्लु द्वारा कुल 8टा पोस्ट आएल जाहिमे काली कांत झा बुच जीक 6टा आ नरेश विकल जीक 2टा गजल आएल। तारानंद वियोगी जीक 5टा पोस्टमे हुनक 5टा गजल अछि। मनोज द्वारा 1टा पोस्टमे हुनक 3टा गजल अछि।

बर्ख 2011मे जे अनचिन्हार आखरमे जतेक पोस्ट भेल तकर विवरण मासिक रुपें देल जा रहल अछि----

मास जनवरी 2011मे कुल सातटा पोस्ट भेल जाहिमे शिव कुमार झा “टिल्लु” द्वारा चारिटा पोस्ट भेल जाहिमे कालीकांत झा” बुच” जीक एकटा गजल, नरेश कुमार विकलक दू टा, आरसी प्रसाद सिंहक एकटा गजल प्रस्तुत भेल। आशीष अनचिन्हारक दू टा पोस्टमे दूटा गजल आएल। त्रिपुरारी कुमार शर्माक एकटा पोस्टमे एकटा गजल आएल। जनवरी मासमे अनचिन्हार आखरक दुराग्रहक कारणें त्रिपुरारी कुमार शर्मा जी मैथिली गजलमे एलाह।

मास फरवरी 2011मे कुल आठटा पोस्ट भेल जाहिमे आशीष अनचिन्हारक सातटा पोस्टमे एकटा आलेख आ छहटा गजल आएल। डा. शेफालिका वर्माक एकटा पोस्टमे एकटा गजल आएल।

मास मार्च 2011मे कुल अठारहटा पोस्ट भेल जाहिमे आशीष अनचिन्हारक छहटा पोस्टमे छहटा गजल। गजेन्द्र ठाकुरक छहटा पोस्टमे छह टा गजल। सुनील कुमार झाक दूटा पोस्टमे दूटा गजल।

अभय दीपराजक दूटा पोस्टमे दूटा गजल। तारानंद वियोगी जीक एकटा पोस्टमे चंद्रभानु सिंह द्वारा गीत-गायनक विडीयो प्रस्तुति। सदरे आलम गौहरक एकटा पोस्टमे एकटा गजल आएल।

मार्च मासमे सुनील कुमार झा अनचिन्हार आखरक माध्यमें मैथिली गजलमे एलाह।

मास अप्रिल 2011मे कुल पचासटा पोस्ट भेल जाहिमे आशीष अनचिन्हारक एकतीसटा पोस्टमेसँ पच्चीसटा रुबाइ, दूटा कता, तीन टा गजल आ एकटा पुरस्कार संबंधी घोषणा अछि। सुनील कुमार झाक चौदह टा पोस्टमेसँ तेरहटा रुबाइ आ एकटा गजल अछि। विकास झा “रंजन” केर दू टा पोस्टमे दूटा गजल। रोशन केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल। गजेन्द्र ठाकुरक दूटा पोस्टमे दूटा गजल आएल।

मास अप्रिलमे विकाश झा रंजन आ रोशन जी अनचिन्हार आखरक माध्यमे मैथिली गजलमे एलाह

मास मइ 2011मे कुल बासठि टा पोस्ट भेल जाहिमे आशीष अनचिन्हारक सत्ताइसटा पोस्टमे बाइसटा रुबाइ,तीनटा गजल, एकटा कता आ एकटा पुरस्कार संबंधी घोषणा अछि। सुनील कुमार झाक तैस (23)टा पोस्टमे छहटा गजल,सोलहटा रुबाइ आ एकटा कता अछि। किशन कारीगर जीक एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। गजेन्द्र ठाकुरक दूटा पोस्टमे एकटा गजल आ एकटा मैथिली गजल शास्त्र आलेख आएल। विकास झा “रंजन” केर नौटा पोस्टमे सातटा रुबाइ आ दूटा रुबाइ अछि।

मास जून 2011मे कुल बत्तीसटा पोस्ट भेल जाहिमे आशीष अनचिन्हारक बीसटा पोस्टमे तीनटा गजल, नौटा रुबाइ, सातटा कता आ एकटा पुरस्कार संबंधी घोषणा अछि। सुनील कुमार झाक छहटा पोस्टमे तीनटा गजल आ तीन टा रुबाइ अछि। दीपनारायण “विद्यार्थी” क दूटा पोस्टमे दूटा गजल अछि। अरविन्द ठाकुरक एकटा पोस्टमे एकटा गजल आएल। गजेन्द्र ठाकुरक तीनटा पोस्टमे तीनटा गजल आएल। मास जूनमे ऋषि वशिष्ठ आ अनचिन्हार आखरक माध्यमें दीप नारायण विद्यार्थी जी मैथिली गजलमे एलाह।

मास जुलाइ 2011मे कुल पैंतीसटा पोस्ट भेल जाहिमे आशीष अनचिन्हारक उनतीसटा पोस्टमे सोलहटा गजल,आठटा रुबाइ, एकटा कता, मैथिली गजलक संक्षिप्त नामक आलेखक दू भाग, छंदक जरुरति नामक एकटा आलेख, आ पुरस्कार संबंधी घोषणा अछि। गजेन्द्र ठाकुरक चारिटा पोस्टमे तीनटा गजल आ एकटा पोस्टमे एकटा कुंडलिया अछि।अरविन्द ठाकुरक एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। रोशन केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि।

मास अगस्त 2011मे कुल तैंआलीसटा पोस्ट भेल जाहिमे रोशन केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। सुनील कुमार झा केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। अरविन्द ठाकुर केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। सदरे आलम गौहर केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। प्रवीन चौधरी “प्रतीक” केर चारिटा पोस्टमे चारिटा गजल अछि। दीप नारायण “विद्यार्थी” केर दूटा पोस्टमे दूटा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक तैंतीसटा पोस्टमे एकैसटा गजल, दूटा रुबाइ, गजलक संक्षिप्त परिचय नामक आलेखक सात भाग, एकटा पोस्टमे विदेह भाषा पाक रचना आ दूटा पोस्टमे पुरस्कार संबंधी घोषणा अछि। मास अगस्तमे प्रवीन चौधरी प्रतीक जी अनचिन्हार आखरक माध्यमें मैथिली गजलमे एलाह।

मास सेप्टेम्बर 2011मे कुल चौसठिटा पोस्ट भेल जाहिमे उमेश मंडल केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। संजीव केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। विकास झा “रंजन” केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। सुनील कुमार झा केर एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। मिहिर झाक सातटा पोस्टमे सातटा गजल अछि। ओमप्रकाश केर एगारहटा पोस्टमे एगारह टा गजल अछि। गजेन्द्र ठाकुरक आठटा पोस्टमे चारिटा गजल, कुंडलिया दूटा, राजेन्द्र विमलक साक्षात्कारक एकटा विडीयो आ एकटा पोस्टमे आशीष अनचिन्हारक पोथी केर डाउनलोड लिंक देल गेल अछि।दीपनारायण “विद्यार्थी” केर दूटा पोस्टमे दूटा गजल अछि। सदरे आलम गौहरक तीनटा पोस्टमे तीनटा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक उनतीसटा पोस्टमे दसटा गजल, गजलक संक्षिप्त परिचय नामक आलेख सतरह भागमे, रुबाइ एकटा आ पुरस्कार संबंधी घोषणा एकटा अछि। मास सेप्टेम्बरमे डबल

धमाका। मिहिर झा एवं ओमप्रकाश जी अनचिन्हार आखरक माध्यमें मैथिली गजलमे एलाह।
मास अक्टूबर 2011मे कुल पचपनटा पोस्ट भेल जाहिमे ओमप्रकाश जीक एगारहटा पोस्टमे एगारहटा गजल अछि। सुनील कुमार झाक एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। विकास झा “रंजन” क एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। अभय दीपराज जीक एकटा पोस्टमे एकटा गजल अछि। समयलाइ सलाम केर नामसँ धीरेन्द्र प्रेमर्षि जीक दूटा पोस्टमे राजेन्द्र विमलक साक्षात्कार विडीयो आ एकटा गजल “एक मिसिया” क विडीयो अछि। गजेन्द्र ठाकुरक तीनटा पोस्टमे मैथिली गजल शास्त्र केर एकटा भाग आ तीन टा गजल अछि। मिहिर झाक एग्यारहटा पोस्टमे दसटा गजल आ एकटा गजल पर कविता अछि (इ कविता अपवाद स्वरुप अछि) शांतिलक्ष्मी चौधरीक सातटा पोस्टमे सातटा गजल अछि। सदरे आलम गौहर केर दूटा पोस्टमे दूटा गजल अछि। आशीष अनचिन्हार केर सोलहटा पोस्टमे चौदहटा गजल, एकटा आलेख आ एकटा पुरस्कार संबंधी घोषणा अछि। मास अक्टूबर अनचिन्हार आखर लेल गौरवक दिन रहल। कारण ऐ मासमे शांतिलक्ष्मी चौधरी जी अनचिन्हार आखरक माध्यमसँ मैथिली गजलमे एलीह आ ऐ तरहें शेफालिका वर्मा जीक बाद शांति जी मैथिली दोसर महिला गजलकार बनि गेलीह।
मास नवम्बर 2011मे कुल सनतावनटा पोस्ट भेल जाहिमे ओमप्रकाशक उन्नीस पोस्टमे उन्नीसटा गजल, शांतिलक्ष्मी चौधरीक तीनटा पोस्टमे तीनटा गजल, मिहिर झाक आठटा पोस्टमे आठटा गजल,विकास झा “रंजनक” दूटा पोस्टमे दूटा गजल, त्रिपुरारी कुमार शर्माक एकटा पोस्टमे एकटा गजल, विनीत उत्पलक दूटा पोस्टमे दूटा गजल, भावना नवीनक चारिटा पोस्टमे चारिटा गजल, भाष्कर झाक एकटा पोस्टमे एकटा गजल, जगदीश चंद्र “अनिल” जीक छहटा पोस्टमे छहटा गजल, रवि मिश्रा “भारद्वाज” क दूटा गजल, जगदानंद झा “मनु” क तीनटा पोस्टमे तीनटा गजल, अजय ठाकुर” मोहन” जीक तीनटा पोस्टमे तीनटा गजल, सदरे आलम गौहरक एकटा पोस्टमे एकटा गजल आ आशीष अनचिन्हारक एकटा पोस्टमे पुरस्कार संबंधी घोषणा अछि। मास नवम्बरमे जे सभ अनचिन्हार आखरक माध्यमसँ मैथिली गजलमे एलाह तिनक नाम अछि---विनीत उत्पल, श्रीमती भावना नवीन, भाष्कर झा, रवि मिश्रा “भारद्वाज”, जगदानंद झा “मनु”, अजय ठाकुर” मोहन” । मने सिक्सर धमाका।
दिसम्बर मास 2011मे कुल पचहत्तर टा पोस्ट भेल जाहिमे श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरीक एगारहटा पोस्टमे एगारहटा गजल अछि। जगदानंद झा “मनु” केर चारिटा पोस्टमे चारिटा गजल अछि। ओमप्रकाश जीक अट्ठारहटा पोस्टमे सोलहटा गजल आ दूटा रुबाइ अछि। प्रभात राय “भट्ट” केर नौटा पोस्टमे आठटा गजल आ एकटा रुबाइ अछि। अजय ठाकुर मोहन केर आठ टा पोस्टमे आठ टा गजल अछि। अनिल जीक तीन टा पोस्टमे तीन टा गजल अछि। रवि मिश्रा “भारद्वाज” केर तीन टा पोस्टमे तीन टा गजल अछि। मिहिर झाक आठ टा पोस्टमे आठ टा गजल अछि।
आशीष अनचिन्हार केर एगारहटा पोस्टमे रुबाइ दूटा, पुरस्कार संबंधी घोषणा दूटा, एकटा गजल अछि। संगहि संग श्रीमती इरा मल्लिक आ मनोहर कुमार झा एक-एकटा गजल, प्रवीन नारायण चौधरीक एकटा रुबाइ

प्रस्तुत कएल गेल अछि। दूटा पोस्ट अपने एना अपने मूँहसँ अछि। आ एकटा पोस्टमे विदेह द्वारा चलाओल परिचर्चा अछि। मास दिसम्बरमे अनचि्हार आखरक माध्यमसँ जे मैथिली गजलमे एलाह तिनक नाम छन्हि--- प्रभात राय "भट्ट", अनिल, श्रीमती इरा मल्लिक आ मनोहर कुमार झा। मने चारि गोटा (श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि)।
2012 केर मास जनवरीमे कुल 66टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि आशीष अनचिन्हारक कुल 18टा पोस्ट अछि। जाहिमे पुरस्कार संबंधी 3टा, नात 1टा, कता 1टा, रुबाइ 4टा, गजल 4टा, बन्द 1टा, अपने एना अपने अपने मूँहक 1टा पोस्ट अछि। संगहि-संग 3टा पोस्टमे रुबी झाक 1टा, स्वाती लालक 1टा, आ इरा मल्लिक जीक 1टा गजल प्रस्तुत कएल गेल अछि। मनीष झा "बौआ भाइ" केर 2टा पोस्टमे 2टा गजल, नितेश झा "रौशन" केर 3टा पोस्टमे 3टा गजल, ओम प्रकाशक 11टा पोस्टमे 11टा गजल, प्रभात राय भट्ट केर 7टा पोस्टमे 7टा गजल,अजय ठाकुर "मोहन जी" क 1टा पोस्टमे 1टा गजल, अमित मिश्रक 1टा पोस्टमे 1टा गजल,

जगदानंद झा "मनु" क 8टा पोस्टमे 8टा गजल,गजदीश चंद्र ठाकुर "अनिल" जीक 3टा पोस्टमे 3टा गजल, भाष्कर झाक 1टा पोस्टमे 1टा गजल आ अनिल जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। मिहिर झाक 4टा पोस्टमे 3टा गजल आ 1टा बन्द अछि। गजेन्द्र ठाकुरक 6टा पोस्टमे 4टा दीक्षा भारती द्वारा गजेन्द्र ठाकुरक 4टा गजलक गायन प्रस्तुत कएल गेल अछि। 1टा पोस्टमे सियाराम झा "सरस" जीक अंतर्वाता अछि जे प्रेमर्षि जी द्वारा लेल गेल अछि। 1टा पोस्टमे अजहर इमामक मृत्यु सूचना देल गेल अछि।मास जनवरी 2012मे श्रीमती रूबी झा, स्वाती लाल, मनीष झा "बौआ भाइ", नितेश झा रौशन, अमित मिश्र मने पाँचटा गजलकार अनचिन्हार आखरक माध्यमें मैथिली गजलमे एलथि। जाहिमे 2टा महिला छथि।
(श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि।)
मास फरवरी 2012मे कुल 79टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि अमित मिश्र जीक 19टा पोस्टमे 19टा गजल आएल। शांतिलक्ष्मी चौधरी जीक 5टा पोस्टमे 5टा गजल आएल। जगदानंद झा मनु जीक 10टा पोस्टमे 10टा गजल आएल। ओमप्रकाश जीक 11टा पोस्टमे एकटा रुबाइ आ 10टा गजल आएल। प्रभात राय भट्ट जीक 7टा पोस्टमे 7टा गजल आएल। कुमार पंकज झा, भाष्कर झा, स्वाती लाल, आ निशांत झाक 1-1टा पोस्टमे कुल 4टा गजल आएल। जगदीश चंद्र झा "अनिल" जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल आएल। मिहिर झा जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल आएल। आशीष अनचिन्हारक 19टा पोस्टमे मुन्ना जीक 12टा गजल आ 1टा रुबाइ प्रस्तुत कएल गेल। संगहि संग 1टा पोस्टमे मैथिली गजलक सूची देल गेल। 1टा पोस्टमे पुरस्कार संबंधी घोषणा अछि। 1टा पोस्टमे अपने एना अपने मूँह अछि। 1टा पोस्टमे सरसजीक अंतरवार्ता देल गेल अछि। आ दूटा पोस्टमे 1टा

गजल आ 1टा रुबाइ अछि। मास जनवरी 2012मे कुमार पंकज झा अनचिन्हार आखरक माध्यमें मैथिली गजलमे एलथि(श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि)|
हमरा ई कहैत बहुत हर्ख भए रहल अछि जे अनचिन्हार आखर द्वारा मात्र गजलक बढ़ोत्तरी नै कएल गेल बल्कि गजलकारक संख्यामे सेहो बढ़ेबामे अपन योगदान केलक। एहिठाम हम एकटा संक्षिप्त रुपरेखा प्रस्तुत कए रहल छी जे कतेक गोटा एहि चारि सालमे मैथिली गजलमे एलाह बर्ख 2010मे त्रिपुरारी कुमार शर्मा जी मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे एलाह। ओना शर्मा जी हिन्दीमे पहिनेसँ गजल लिखैत छलाह। बर्ख 2011 केर मार्च मासमे सुनील कुमार झा मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह। बर्ख 2011 केर अप्रैल मासमे विकास झा रंजन आ रोशन मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह। बर्ख 2011 केर जून मासमे ॠषि वशिष्ठ जीक सहायतासँ दीप नारायण विद्यार्थी मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह। बर्ख 2011 केर अगस्त मासमे प्रवीन नारायण चौधरी प्रतीक मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह। बर्ख 2011 केर सेप्टेम्बर मासमे मिहिर झा एवं ओमप्रकाश जी मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह।बर्ख 2011 केर अक्टूबर मासमे श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी जी मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलीह। बर्ख 2011 केर नवम्बर मासमे विनीत उत्पल, भावना नवीन, भाष्कर झा, रवि मिश्रा भारद्वाज, जगदानंद झा मनु, आ अजय ठाकुर मोहन मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह/ एलीह।बर्ख 2011 केर दिसम्बर मासमे प्रभात राय भट्ट, अनिल जी, श्रीमती इरा मल्लिक, मनोहर कुमार झा, आ प्रवीन नारायण चौधरी जी मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह।बर्ख 2012 केर जनवरी मासमे रूबी झा, स्वाती लाल, नितेश झा रौशन आ अमित मिश्र मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह।बर्ख 2012 केर फरवरी मासमे कुमार पंकज झा आ निशांत झा मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह। आ बर्ख 2012 केर मार्च 20 धरि चंदन झा मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रुपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह। एहि आलावे आरो गजलकार सभ छथि मुदा ओ लोकनि पहिनेसँ रचनारत छलाह। (श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि।)
मार्च मास 2012मे कुल 132टा पोस्ट आएल जकर विवरण एना अछि कुंदन कुमार कर्ण, सुनील कुमार झा, मुकुंद मयंक, त्रिपुरारी कुमार शर्मा, कुमार पंकज झा,नितेश झा "रौशन", निशांत झा, भाष्कर झा आ रुबी झाक 1-1टा पोस्टमे 1-1टा गजल आएल (मने 9टा गजलकारक 9टा गजल) अनिल जीक 2टा गजल आएल। मिहिर झाक 8टा पोस्टमे 3टा गजल, 2टा कसीदा, 2टा रुबाइ आ 1टा बाल गजल आएल। प्रभात राय भट्टक 6टा पोस्टमे 6टा गजल आएल। ओमप्रकाश जीक 6टा पोस्टमे 4टा गजल आ 2टा आलोचना आएल। चंदन झाक

22टा पोस्टमे 19टा गजल, आ 3टा बाल गजल आएल। अमित मिश्राक 30टा पोस्टमे 24टा गजल, 3टा हजल आ 3टा बाल गजल आएल। जगदानंद झा 'मनु" जीक 18टा पोस्टमे रूबी झा जीक 6टा गजल आ आ 1टा बाल गजल प्रस्तुत केलाह संगहि संग ओ अपन 10टा गजल आ 1टा बाल गजल देलाह। आशीष अनचिन्हारक 31टा पोस्टमे 22 खंडमे गजलक इस्कूल, 2टा अपने एना अपने मूँह, 1टा पुरस्कार संबंधी घोषणा, 1टा परिचर्चा, 2टा गजल, 1टा रुबाइ आ संगहि-संग 2टा पोस्टमे कमलमोहन चुन्नूक 2टा गजल प्रस्तुत कएल गेल। एहि मासक दूटा मुख्य विशेषता अछि पहिल जे 24मार्चकेँ पहिल बेर हमरा द्वारा बाल गजलक परिकल्पना देल गेलै। आ मात्र 7 दिनक भीतर ई अपन अलग स्थान बनेलक मैथिली गजलमे। दोसर विशेषता ई जे ऋषि वशिष्ठ केर सहायतासँ मुकुंद मयंक जी नव गजलकारक रूपमे एलाह संगे-संग कुंदन कुमार कर्ण सेहो गजलकारक रूपमे अनचिन्हार आखर द्वारा एलाह। एहिसँ पहिने ऋषि वशिष्ठ केर सहायतासँ दीप नारायण विद्यार्थी आ सदरे आलम गौहर जी भेटल छलाह। मैथिली गजल ऋषि वशिष्ठ जीक ऋणी रहत। (श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि।)

मास अप्रैल 2012मे कुल 135टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि अभय दीपराज, अविनाश झा अंशु, कुंदन कुमार कर्ण, अनिल जी, मिहिर झा आ सदरे आलम गौहरक 1-1टा पोस्ट भेल। मतलब 6टा पोस्टमे 6टा गजल। मुकुंद मयंक जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल आएल। नवल श्री जीक 4टा पोस्टमे 1टा गजल आ 3टा बाल गजल आएल। ओमप्रकाश जीक 4टा पोस्टमे 3टा गजल आ 1टा आलोचना आएल। रूबी झाक 7टा पोस्टमे 6टा गजल आ 1टा बाल गजल आएल। प्रभात राय भट्ट जीक 14टा पोस्ट आएल जाहिमे हुनक 13टा गजल आ 1टा रुबाइ अछि।

अमित मिश्रा जीक कुल 36टा पोस्ट आएल जाहिमे 21टा गजल, 11टा बाल गजल, 3टा हजल आ 1टा पोस्टम मे 3टा रुबाइ अछि। जगदानंद झा मनु द्वारा कुल 16टा पोस्ट भेल जाहिमे ओ रूबी झाक 7टा गजल आ 1टा बाल गजल प्रस्तुत केलाह। संगे संग ओ अपन 6टा गजल आ 2टा बाल गजल देलाह। चंदन झाक कुल 16टा पोस्ट आएल जाहिमे हुनक 10टा गजल आ 6टा बाल गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 30टा पोस्ट आएल जाहिमे अपने एना अपने मूँह-1टा, सम्मान संबंधी घोषणा-4टा, गजलक इस्कूल-15टा, परिचर्चा-6टा, 1टा गजल आ 3टा रुबाइ देल गेल।

ऐ मासमे अविनाश झा अंशु आ नवल श्री (पंकज चौधरी “नवल श्री”) जी अनचिन्हार द्वारा नव गजलकारक रूपमे चिन्हित कएल गेलाह। (श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि।)

मास मइ 2012मे अनचिन्हार आखरमे कुल 212टा रचना प्रस्तुत भेल जकर विवरण एना अछि मुकुंद मयंक जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि| रूबी झाक 16टा पोस्टमे 15टा गजल आ 1टा बाल गजल अछि| मिहिर झा

जीक 16टा पोस्टमे 11टा रुबाइ आ 5टा गजल अछि| जगदानंद झा मनु जीक 16टा पोस्टमे कुल 9टा गजल आ 7टा रुबाइ अछि| ओमप्रकाश जीक 2टा पोस्टमे 1टा रुबाइ आ 1टा गजल अछि| अनिल जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल अछि| गजेन्द्र ठाकुर जीक 2टा पोस्टमे 1टा आलोचना आ 1टा नंद कुमार मिश्र जीक गजल पाठक भिडियो अछि| प्रभात राय भट्ट केर 9टा पोस्टमे 7टा गजल आ 2टा रुबाइ अछि, अमित मिश्राक 41टा पोस्टमे 16टा गजल, 21टा रुबाइ, 1टा आलेख, 2टा बाल गजल, 1टा हजल अछि। चंदन झाक 38टा पोस्टमे 1टा बाल गजल,19टा गजल,2टा हजल,15टा रुबाइ, 1टा कता अछि। आशीष अनचिन्हारक 69टा पोस्टमे 2टा आलोचना,21टा गजलकार परिचय श्रृखंला, 2टा सम्मान संबंधी घोषणा, 1टा अपने एना अपने मूँह, 7टा रुबाइ, 12टा गजलक इस्कूल, 1टा आलेख,1टा बन्द देल गेल संगहि-संग मुन्ना जीक 17टा गजल प्रस्तुत कएल गेल, रामलोचन ठाकुर जीक 2टा गजल प्रस्तुत कएल गेल, स्वाती लालक 2टा गजल प्रस्तुत कएल गेल आ अविनाश झा अंशु जीक 1टा गजल प्रस्तुत कएल गेल। (श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि।)

मास जून 2012मे अनचिन्हार आखरमे कुल 202टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि अमित मिश्र जीक कुल 98टा पोस्ट भेल जाहिमेसँ 87टा रुबाइ, 8टा गजल, 2टा बाल गजल आ 1टा आलोचना अछि। चंदन झा जीक कुल 13टा पोस्ट भेल जाहिमे 10टा गजल, 1टा बाल गजल, आ 2टा रुबाइ अछि। प्रभात राय भट्ट जीक 14टा पोस्टमे 14टा गजल अछि। पंकज चौधरी नवल श्री जीक 13टा पोस्टमे 10टा गजल आ 3टा बाल गजल अछि। कुंदन कुमार कर्ण जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। श्रीमती रुबी झा जीक 5टा पोस्टमे 4टा गजल आ 1टा रुबाइ अछि। मिहिर झा जीक 2टा पोस्टमे 1टा रुबाइ आ 1टा गजल अछि। जगदानंद झा मनु जीक 10टा पोस्टमे 8टा गजल आ 2टा रुबाइ अछि। आशीष अनचिन्हारक 46टा पोस्टमे 15टा गजलकार परिचय शृंखला, 2टा सम्मान संबंधी घोषणा, 1टा मोशायरा, 7टा गजलक इस्कूल, 1टा अपने एना अपने मूँह अछि संगे-संग 20टा मुन्ना जीक गजल प्रस्तुत कएल गेल।

(श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि।)

मास जुलाई 2012मे कुल 110टा पोस्ट अनचिन्हार आखर पर आएल जकर विवरण एना अछि--------

अमित मिश्र जीक कुल 37टा पोस्टमेसँ 18टा बाल गजल, 11टा रुबाइ आ 8टा गजल अछि। जगदानंद झा मनु जीक कुल 8टा पोस्टमेसँ 4टा बाल गजल, 1टा हजल आ 3टा गजल अछि| चंदन झा जीक कुल 8पोस्टमे 3टा गजल आ 5टा बाल गजल अछि। ओमप्रकाश जीक कुल 5टा पोस्टमे 1टा आलोचना, 1टा बाल गजल, 2टा गजल आ 1टा रुबाइ अछि।

पंकज चौधरी (नवल श्री) जीक कुल 9टा पोस्टमे 5टा गजल आ 4टा बाल गजल अछि। रुबी झा जीक कुल 12टा पोस्टमे 5टा गजल आ 7टा बाल गजल अछि। राजीव रंजन मिश्र जीक कुल 4टा पोस्टमे 3टा गजल आ 1टा बाल

गजल अछि। मिहिर झा जीक 1टा बाल गजल अछि। कुंदन कुमार कर्ण जीक 1टा गजल अछि। प्रभात राय भट्ट जीक कुल 4टा पोस्टमे 4टा गजल अछि।
आशीष अनचिन्हारक कुल 21टा पोस्टमे 2टा सम्मानक घोषणा, 1टा अपने एना अपने मूँह, 1टा बाल गजल अछि संगे संग 11टा मुन्ना जीक रुबाइ, श्रीमती इरा मल्लिक जीक 2टा बाल गजल एवं जवाहर लाल काश्यप, शिव कुमार यादव, क्रांति कुमार सुदर्शन ओ प्रशांत मैथिल जीक 1-1टा बाल गजल प्रस्तुत कएल गेल। ऐ मासमे राजीव रंजन मिश्र जी,क्रांति कुमार सुदर्शन, शिव कुमार यादव आ जवाहर लाल काश्यप मैथिली गजलक नव हस्ताक्षरक रूपमे एलाह।
(श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि।
मास अगस्त 2012मे अनचिन्हार आखरपर कुल 101टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि जगदानंद झा मनु जीक कुल 14टा पोस्टमे 9टा गजल, 4टा रुबाइ आ 1टा हजल अछि। श्रीमती रूबी झा जीक कुल 15टा पोस्टमे 13टा गजल, 1टा बाल गजल आ 1टा हजल अछि। गुंजन श्री आ ओमप्रकाश जीक 1-1टा पोस्टमे 1-1टा गजल अछि। कुंदन कुमार कर्ण जीक 3टा पोस्टमे 2टा शेर आ 1टा गजल अछि। गजेन्द्र ठाकुर जीक 1टा पोस्टमे आन-लाइन मोशायरा भाग-2 प्रस्तुत कएल गेल। पंकज चौधरी (नवल श्री) जीक 4टा पोस्टमे 4टा बाल गजल अछि। राजीव रंजन मिश्र जीक कुल 18टा पोस्टमे 15टा गजल आ 3टा बाल गजल अछि। अमित मिश्र जीक 27टा पोस्टमे 4टा गजल, 9टा बाल गजल, 13टा रुबाइ आ 1टा आलोचना अछि (मुन्ना जीक गजल संग्रह---माँझ आंगनमे कतिआएल छी) आशीष अनचिन्हारक कुल 17टा पोस्टमे 2टा गजल, 3टा सम्मानक घोषणा, 6टा गजलक इस्कूल, 1टा रुबाइ, 2टा अपने एना अपने मूँह आ संगे-संग मुन्ना जीक 3टा बाल गजल सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि।
(श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि।)
मास सितम्बर 2012मे अनचिन्हार आखरपर कुल 103टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि उमेश मंडल जीक 2टा पोस्टमे जगदीश प्रसाद मंडल जीक 2टा गजल प्रस्तुत कएल गेल। गजेन्द्र ठाकुर जीक 2टा पोस्टमे मुन्नी कामत जीक 2टा गजल प्रस्तुत कएल गेल। ओमप्रकाश जीक 3टा पोस्टमे एकटा आलोचना आ 2टा गजल अछि। रूबी झा जीक 8टा पोस्टमे 7टा गजल आ 1टा बाल गजल अछि। अविनाश झा अंशु जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल अछि। पंकज चौधरी नवल श्री जीक 31टा पोस्टमे 11टा गजल, 9टा बाल रुबाइ, 3टा हजल, 5टा बाल गजल, 2टा रुबाइ, आ 1टा भक्ति रुबाइ अछि। अनिल जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल अछि। कुंदन कुमार कर्ण जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। विनीत उत्पल जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। मनीष झा बौआभाइ जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। चंदन झा जीक 4टा पोस्टमे 4टा विडियो पोस्ट कएल गेल अछि जाहिमे हुनक अपने स्वरमे हुनक गजल अछि। जगदानंद झा मनु जीक 9टा पोस्टमे 8टा गजल आ 1टा बाल गजल अछि।

अमित मिश्र जीक कुल 33टा पोस्टमे 12टा बाल गजल, 6टा गजल, बाल रुबाइ 12 आ 3टा रुबाइ अछि। आशीष अनचिन्हारक 4टा पोस्टमे 1टा परिचय श्रृखंला, 1टा अपने एना अपने मूँह आ 2टा सम्मान संबंधी घोषणा अछि। ऐमासमे अनचिन्हार आखर द्वारा मुन्नी कामत जी मैथिली गजलमे एलीह।

(श्रीमती रुबी झा जीक सभ पोस्ट हटा देल गेल अछि। हुनक रचना अ-मौलिक सिद्ध भेल अछि। हमर ई कहब नै जे हुनक सभ रचना एहने सन हेतन्हि मुदा ई हुनक अधिकांश रचना लेल अछि।)

मास अक्टूबर 2012मे अनचिन्हार आखरपर कुल 53टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि अमित मिश्रा जीक कुल 32 टा पोस्टमे 2टा रुबाइ, 8टा गजल, 9टा बाल गजल, 12टा बाल रुबाइ आ 1टा आलोचना अछि। जगदानंद झा मनु जीक 6टा पोस्टमे 3टा रुबाइ आ 3टा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक 4टा पोस्टमे 1टा गजल आ 3टा सम्मान संबंधी घोषणा अछि। बाल मुकुन्द पाठक जीक 8टा पोस्टमे 8टा गजल अछि। विनीत उत्पल जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। गुंजन श्रीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। ओम प्रकाश जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि।

ऐ मासमे बालमुकुन्द पाठक जी अनचिन्हार आखरक माध्यमें मैथिली गजलमे एलाह

मास नवम्बर 2012मे कुल 22टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि---गजेन्द्र ठाकुर जीक 1टा पोस्टमे संपूर्ण विदेह पद्य देल गेल। आशीष अनचिन्हारक 8टा पोस्टमे 2टा अपने एना अपने मूँह, 2टा सिलेबस सम्बन्धी पोस्ट, 2टा सम्मान सम्बन्धी पोस्ट, 1टा गजलकार परिचय शृंखला आ 1टा पोस्टमे आनलाइन मोशायरा देल गेल। ओम प्रकाश जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। जगदानंद झा मनु जीक 6टा पोस्टमे 6टा गजल अछि। बाल मुकुन्द पाठक जीक 6टा पोस्टमे 4टा गजल आ 2टा बाल गजल अछि।

मास दिसम्बर 2012मे कुल 62 टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि गजेन्द्र ठाकुर जीक कुल 9टा पोस्टमे 9टा पोथीक पी.डी.एफ फाइल देल गेल। पंकज चौधरी नवल श्री जीक कुल 10टा पोस्टमे कुल 10टा गजल आएल। बाल मुकुन्द पाठक जीक कुल 5टा पोस्टमे 1टा हजल आ 4टा गजल आएल। अमित मिश्रा जीक कुल 28टा पोस्टमे 8टा रुबाइ, 9टा बाल गजल, 3टा गजल, 1टा कता आ 7टा बाल रुबाइ आएल। जगदानंद झा मनु जीक कुल 6टा पोस्टमे 3टा रुबाइ आ 3टा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 4टा पोस्टमे 2टा सम्मान सम्बन्धी घोषणा, 1टा अपने एना अपने मूँह, आ 1टा पोस्टमे इरा मल्लिक जीक 1टा बाल गजल आएल।

जनवरी 2013मे अनचिन्हार आखरपर कुल 117टा पोस्ट प्रकाशित भेल जकर विवरण एना अछि अमित मिश्र जीक कुल 79टा पोस्ट भेल जाहिमे 18 पोस्टमे 18टा गजल, 27टा पोस्टमे 27टा बाल गजल, 23टा पोस्टमे 23टा रुबाइ, 7टा पोस्टमे 7टा बाल रुबाइ, 1टा पोस्टमे किछु माहिया आ 3टा पोस्टमे 3टा कता अछि। सुमित मिश्रा जीक 3टा पोस्टमे 3टा गजल अछि। बालमुकुन्द पाठक जीक 3टा पोस्टमे 3टा गजल अछि। गजेन्द्र ठाकुर जीक 3टा पोस्टमे 2टामे पुरस्कार समबन्धी सूची, आ 1टा पोस्टमे विदेह पद्य देल गेल अछि। जगदानन्द झा मनु जीक कुल 7टा पोस्टमेसँ 3टा पस्टमे 3टा गजल, 1टा पोस्टमे 1टा बाल रुबाइ, 1टा पोस्टमे 1टा भक्ति गजल, 1टा पोस्टमे 1टा बाल गजल, आ 1टा पोस्टमे 1टा रुबाइ अछि। पंकज चौधरी (नवल श्री) क 11टा पोस्टमे 6टा

गजल आ 5टा बाल गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 11टा पोस्टमे 2टा गजल, 7टा सम्मान सम्बन्धी घोषणा, 1टा आलेख आ 1टा अपने एना अपने मूँह अछि। ऐ मासमे सुमित मिश्र जी नव गजलकारक रूपमे एलाह।

मास फरवरी 2013मे कुल 55टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि ओमप्रकाश जीक 2टा गजल आ एकटा आलोचना आएल। अमित मिश्र जीक कुल 33टा पोस्टमे--14 टा हुनक अपने अवाजमे गाएल गजलक वीडियो अछि। 4टा रुबाइ अछि आ 15टा गजल अछि। सुमित मिश्र जीक 8टा पस्टमे--7टा गजल आ 1टा बाल गजल अछि। जगदानंद झा मनु जीक 1टा बाल गजल, 1टा गजल आ आ 1टा रुबाइ अछि। प्रदीप पुष्प आ बालमुकुन्द पाठक जीक 1-1टा गजल आएल। आशीष अनचिन्हारक 6टा पोस्टमे--2टा गजल, 3टा सम्मान सम्बन्धी घोषणा आ 1टा अपने एना अपने मूँहसँ सम्बन्धित पोस्ट अछि। ऐ मासमे प्रदीप पुष्प जी बहर युक्त गजलकारक रूपमे चिन्हित कएल गेलाह।

मार्च 2013मे कुल 51टा पोस्ट भेल जाहिमे 21टा पोस्टमे 21टा विडियो अछि जैमे शाइरक अपन अवाजमे अपने गजल गाएल अछि। जगदानंद झा मनु जीक 5टा पोस्टमे 4टा गजल आ 1टा भक्ति गजल अछि। सुमित मिश्र जीक 5टा पोस्टमे 4टा गजल आ 1टा भक्ति गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक 3टा पोस्टमे 2टा सम्मान सम्बन्धी घोषणा आ 1टा गजल अछि।

अप्रिल मास 2013मे कुल 8टा पोस्ट भेल जैमे अमित मिश्र केर 4टा पोस्टमे 4टा गजल आ 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। जगदानंद झा मनु के 2टा पोस्टमे 1-1टा गजल आ भक्ति गजल अछि। सुमित मिश्र केर 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि।

मइ मास 2013मे कुल 9टा पोस्ट भेल जैमे जगदानंद झा मनुक जीक 3टा पोस्टमे 2टा बक्ति गजल आ 1टा गजल आएल। कुन्दन कुमार कर्ण केर 2टा पोस्टमे 2टा गजल अछि। बालमुकुन्द पाठक केर 2टा पोस्टमे 2टा गजल अछि। अमित मिश्र केर 2टा पोस्टमे 2टा रुबाइ अछि।

मास जून 2013मे कुल 24टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि पंकज चौधरी नवल श्री जीक 17टा पोस्ट भेल जाहिमे 15टा गजल आ 2टा बाल गजल अछि। कुन्दन कुमार कर्ण, अमित मिश्र आ बालमुकुन्द पाठकक 2-2टा गजल अछि। जगदानंद झा मनु जीक 1टा गजल अछि।

जुलाइ मास 2013मे कुल 6टा पोस्ट भेल जाहिमे कुन्दन कुमार कर्ण जीक 2टा गजल अछि आ आशीष अनचिन्हारक 4टा पोस्टमे 2टा गजलकार परिचय शृंखला आ 2टा गजल अछि।

अगस्त मास 2013मे मात्र 1टा पोस्ट भेल जे की अमित मिश्र द्वारा भेल आ जैमे 1टा गजल अछि।

सितम्बर मास 2013मे कुल 8टा पोस्ट भेल जैमे--

अमित मिश्र जीक 3टा पोस्टमे 3टा गजल, ओमप्रकाश जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल, आ राम कुमार मिश्र, जगदानंद झा मनु, एवं कुन्दन कुमार कर्ण जीक 1-1टा पोस्टमे 1-1टा गजल अछि।

ऐ मासमे रामकुमार मिश्र जी नव गजलकारक रूपनमे चिन्हित भेलाह।

मास अक्टूबर 2013मे कुल 11 टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि राम कुमार मिश्र जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल आएल। कुंदन कुमार कर्ण जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल आएल। जगदानंद झा मनु जीक 3टा पोस्टमे 2टा गजल आ 1टा आलोचना आएल। आशीष अनचिन्हारक 4टा पोस्टमे 2टा गजल आ 2टा आलोचना आएल।
नवम्बर 2013मे अनचिन्हार आखरपर कुल 9टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि अमित मिश्राक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 6टा पोस्टमे---तीन टा गजल, एकटा पोस्टमे योगानंद हीरा जीक गजल प्रस्तुत भेल, एकटा पोस्टमे चंदन झा जीक 1टा आलोचना प्रस्तुत भेल। 1टा पोस्टमे अपने एना अपने मूँह आएल।
जगदानंद झा मनु जीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल अछि।
मास दिसम्बर 2013मे कुल 20टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि जगदानंद झा मनु जीक कुल 4टा पोस्टमे 4टा गजल आएल। कुंदन कुमार कर्णजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल आएल। अमित मिश्र जीक 6टा पोस्टमे 6टा गजल आएल। आशीष अनचिन्हारक 10टा पोस्टमे---4टा गजल, 2टा भक्ति गजल, 1टा अपने एना अपने मूँह आ 2टा पोस्टमे जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीक 2टा आलोचना प्रस्तुत कएल गेल।
मास जनवरी 2014मे कुल 38टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि राम कुमार मिश्रजीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल, राजीव रंजन मिश्रजीक 11टा पोस्टमे 11टा गजल, अमित मिश्रजीक 6टा पोस्टमे 6टा गजल, ओमप्रकाशजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल, कुंदन कुमार कर्णजीक 3टा पोस्टमे 2टा गजल आ 1टा भक्ति गजल, जगदानंद झा मनु जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल, मिहिर झाजीक 1टा पोस्टमे 1टा रुबाइ, आ आशीष अनचिन्हारक 13टा पोस्टमे 1टा आलोचना, 3टा सम्मान संबंधी, 2टा गजलकार परिचय,1टा अपने एना अपने मूँह एवं 6टा गजल आएल।
मास फरवरी-2014मे अनचिन्हार आखरपर कुल 20टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि मिहिर झाजीक कुल 9टा पोस्टमे-2टा रुबाइ,5टा गजल,1टा भक्ति गजल ओ 1टा बाल गजल अछि। राम कुमार मिश्रजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। राजीव रंजन मिश्रजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। ओमप्रकाशजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 8टा पोस्टमे--3टा बाल गजल, 4टा गजल ओ 1टा अपने एना अपने मूँह अछि।
मार्च 2014मे कुल 26 टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि मिहिर झा जीक कुल 6टा पोस्टमे 6टा गजल आएल। ओमप्रकाशजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल आएल। जगदानंद झा मनुजीक 2टा पोस्टमे 1टा गजल आ 1टा भक्ति गजल आएल। गजेन्द्र ठाकुर जीक 1टा पोस्टमे "कथा गोष्ठीमे गजलक लोकप्रियता" बला लेख आएल। आशीष अनचिन्हारक कुल 16टा पोस्टमे 8टा गजल, 1टा अपने एना अपने मूँह, 1टा आलोचना, 1टा सम्मान सम्बन्धी, 1टा छंद सम्बन्धी आलेख आएल संगे संग योगानंद हीराजीक 3टा आ जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीक 1टा गजल प्रस्तुत कएल गेल।
अप्रैल 2014मे अनचिन्हार आखरपर कुल 17टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि जगदानंद झा मनु, अमित

मिश्रक 1-1टा पोस्टमे 1-1टा गजल आएल। कुंदन कुमार कर्णजीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल आएल। आशीष अनचिन्हारक 13टा पोस्टमे 6टा गजल, 2टा भक्ति गजल,3टा बाल गजल,1टा अपने एना अपने मूँह आ 1टा पोस्टमे गजलकार परिचय अछि
मइ 2014मे अनचिन्हार आखरपर कुल 4टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि जगदानंद झा मनु जीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 3टा पोस्टमे 2टा गजल आ 1टा भक्ति गजल अछि।
जून 2014मे कुल 17टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि जगदानंद झा मनु जीक कुल 3टा पोस्टमे--1टा गजल, 1टा भक्ति गजल आ 1टा रुबाइ अछि। कुंदन कुमार कर्ण आ अमित मिश्रक 1-1टा पोस्टमे 1-1टा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 12टा पोस्टमे--6टा गजल, 4टा बाल गजल. 1टा भक्ति गजल आ 1टा अपने एना अपने मूँह अछि।
मास जुलाइ 2014मे अनचिन्हार आखरपर कुल 13टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि राम कुमार मिश्रजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। कुंदन कुमार कर्णजीक 2टा पोस्टमे 1टा गजल आ 1टा हजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 9टा पोस्टमे 5टा गजल, 1टा बाल गजल, 2 टा आलोचना, 1टा अपने एना अपने मूँह।
मास अगस्त-2014मे अनचिन्हार आखरपर कुल 13 टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि कुन्दन कुमार कर्णजीक 3टा पोस्टमे 2टा गजल आ एकटा हुनक अपने स्वरमे गाएल गजलक विडीयो अछि। जगदानंद झा मनुजीक 2टा पोस्टमे 1टा गजल आ 1टा भक्ति गजल अछि। अमित मिश्र आ रामकुमार मिश्रजीक 1-1टा पोस्टमे 1-1टा गजल अछि। गजेन्द्र ठाकुरजीक 1टा पोस्टमे विदेह भाषा सम्मान संबंधी विवरण अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 5टा पोस्टमे 3टा गजल, 1टा भक्ति गजल आ 1टा अपने एना अपने मूँह अछि
सितम्बर 2014मे अनचिन्हार आखरपर कुल 11टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि। अमित कुमार मिश्र ओ राम कुमार मिश्रजीक 1-1टा पोस्टमे 1-1टा गजल आएल। कुंदन कुमार कर्णजीक 3टा पोस्टमे 2टा गजल आ 1टा बाल गजल आएल। आशीष अनचिन्हारक 6टा पोस्टमे- 1टा भक्ति गजल, 4 टा गजल आ 1टा अपने एना अपने मूँह अछि।
अक्टूबर 2014मे कुल 18 टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि कुन्दन कुमारक कर्णजीक कुल 4टा पोस्टमे 3टा गजल ओ 1टा भक्ति गजल अछि। अमित मिश्र ओ जगदानंद झा मनुजीक 2-2टा पोस्टमे 2--2टा गजल आएल। आशीष अनचिन्हारक कुल 10 टा पोस्टमे 6टा गजल, 1टा अपने एना अपने मूँह, 1टा हजल, 1-1टा बाल ओ भक्ति गजल अछि।
नवम्बर 2014मे कुल 19 टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि कुंदन कुमार कर्णजीक 5टा पोस्टमे कुल 5टा गजल अछि। जगदानंद झा मनुजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। ओमप्रकाशजीक 2टा पोस्टमे 2टा गजल अछि। अमित मिश्रजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 10टा पोस्टमे 7टा गजल, 1टा दू गजला, 1टा बाल गजल, 1टा अपने एना अपने मूँह, अछि।

दिसम्बर 2014मे "अ.आ" पर कुल 15 टा पोस्ट भेल जकर विवरण एना अछि जगदानंद झा मनुजीक कुल 4टा पोस्टमे 2टा गजल आ 1-1टा बाल ओ भक्ति गजल अछि। कुंदन कुमार कर्णजीक कुल 3टा पोस्टमे 2टा गजल आ 1टा बाल गजल अछि। अमित मिश्रजीक 2टा पोस्टमे 1टा गजल अछि आ 1टा पोस्टमे शिव कुमारजी द्वारा लिखल आलोचना प्रस्तुत केने छथि।

रामकुमार मिश्रजीक 1टा पोस्टमे 1टा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक कुल 5टा पोस्टमे 2टा गजल, 2टा बाल गजल आ 1टा पोस्टमे अपने एना अपने मूँह अछि।

जनवरी 2015मे कुल बारह टा पोस्ट भेल जैमे कुंदन कुमार कर्णजीक तीनटा गजल, एकटा भक्ति गजल अछि। जगदानंद झा मनु जीक एकटा बाल गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक एकटा अपने एना अपने मूँह, दूट बाल गजल, दूटा गजल, एकटा रुबाइ आ एकटा भक्ति गजल अछि।

फरवरी 2015मे कुल 9टा पोस्ट अछि जैमे कुंदन कुमार कर्णजीक एकटा गजल, एकटा इंटरव्यू आ एकटा सम्मानक विवरण अछि। जगदानंद झा मनु आ राम कुमार मिश्रजीक एक-एकटा गजल अछि।आशीष अनचिन्हारक तीन टा गजल आ एकटा बाल गजल अछि।

मार्च 2015मे कुल तीन टा पोस्ट अछि जैमे कुंदन कुमार कर्णजीक दूटा गजल आ आशीष अनचिन्हारक एकटा गजल अछि।

अप्रैल 2015मे कुल एकटा पोस्टमे आशीष अनचिन्हारक एकटा गजल अछि।

मइ 2015मे कुल तीन टा पोस्ट भेल जैमे कुंदन कुमार कर्णजीक दूटा गजल आ आशीष अनचिन्हारक एकटा गजल अछि।

जून 2015मे कुल आठ टा पोस्ट अछि जैमे बाल मुकुंद पाठकजीक पाँच टा गजल, कुंदन कुमार कर्णजीक एकटा वीडियो आ एकटा गजल अछि। आशीष अनचिन्हारक एकटा गजल अछि।

जुलाइ 2015मे कुल चारि टा पोस्ट अछि जैमे बालमुकुंद पाठक जीक दूटा गजल आ आशीष अनचिन्हारक एकटा गजल अछि। एकटा गजलकराक परिचय अछि

अगस्त 2015मे कुल आठ टा पोस्ट भेल जैमे कुंदन कुमार कर्णजीक चारिटा ओ आशीष अनचिन्हारक चारि टा गजल अछि।

विश्वविद्यालय लेल गजलक सिलेबस

सभसँ पहिने हमरा द्वारा फेसबुकपर 1 मार्च 2012 कँ गजल मैथिली भाषा साहित्य पाठ्यक्रममे किएक नै अछि ताहिपर नोट लिखल गेल (भूतमे भऽ सकैए जे केओ गजलकार एहन काज केने होथि मुदा ओकर सूचना नै अछि आ ने हुनक एहन काज केर कोनो चर्च भेल तँए आधिकारिक रूपसँ अनचिन्हार आखर आ विदेहकँ ऐ प्रकियामे पहिल मानल जा सकैए) ई नोट आ ऐपर आएल टिप्पणी एहि लिंकपर देखल जा सकैए—

https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2012/03/like-unfollow-post-share-delete-

prabin.html आ https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2012/11/1-2012-by-ashish-anchinhar-thursday-1.html एहि मंथनसँ एकटा माडल सिलेबस बनाएल गेल जे एना अछि--
प्रस्तुत अछि एकटा सिलेबसक प्रारूप जे की गजल लेल अछि। ऐ सिलेबसक प्रारूपकैं कोनो विश्वविद्यालय लए सकैत छथि। तँ गजलक ई सिलेबस दू खण्डमे अछि--

खण्ड -क

1) गजलक इतिहास उत्पत्ति, विकास, अरबसँ फारस आ भारतक यात्रा (भारतमे केवल उर्दू मने अरबीसँ फारसी, फारसीसँ उर्दू आ उर्दूसँ मैथिली)
2) मैथिली आ उर्दूक माँझ समानता एवं असमानता भाषिक, स्थानिक, आर्थिक, राजनैतिक आ धार्मिक दृष्टिकोणसँ।
3) 1905 इ.मे मैथिली गजल लेल उत्प्रेरक तत्व (भारत आ नेपाल दूनू मिला कऽ)
4) मैथिली गजलक इतिहास उत्पत्ति, विकास, मैथिली गजलक अवरोधक तत्व (भारत आ नेपाल दूनू मिला कऽ)
5) गजलक व्याकरण गजलक परिभाषा, गजलक प्रकार, गजलक गुण ओ दोष, शेर, शेरक परिभाषा, प्रकार एवं गुण ओ दोष, रदीफ, रदीफक परिभाषा, प्रकार एवं गुण ओ दोष, काफिया, काफियाक परिभाषा, प्रकार एवं गुण ओ दोष, काफिया सम्बन्धी नियम (मैथिली भाषानुसार), बहर, बहरक परिभाषा, प्रकार एवं गुण ओ दोष, गजलक अलावा शेरो शाइरीक आन विधा इत्यादि-इत्यादि।
6) अनचिन्हार आखर आ मैथिली गजल
7) मैथिली गजलक काल निर्धारण (जीवन युग एवं अनचिन्हार युग)
8) मैथिलीमे बाल गजल
9) मैथिलीमे भक्ति गजल

खण्ड-ख

ऐ खण्डमे हिनकर सभहँक बेसीसँ बेसी दू दूटा गजल पढ़ाओल जाए
1) पं. जीवन झा, 2) यदुनाथ झा "यदुवर ", 3) कविवर सीताराम झा, 4) काशीकान्त मिश्र (मधुप), 5) आनंद झा न्यायाचार्य, 6) योगानंद हीरा, 7) विजयनाथ झा, 8) गजेन्द्र ठाकुर, 9) ओमप्रकाश, 10) जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल 11) श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी 12) राजीव रंजन मिश्र,13) अमित मिश्र
हमरा हिसाबें जँ कोनो विश्वविद्यालयक पहिल सत्रमे मने पहिल सालमे पहिल खण्ड मने (क) रहए आ दोसर सत्र मने दोसर सालमे दोसर खण्ड मने (ख) रहए।
ई छल एकटा गजलक उपर सिलेबसक प्रारूप। जिनका कोनो सुझाव देबाक छनि से देथु हुनकर स्वागत छनि।

गजल दिवस मनेबाक सम्बन्धमे भेल कार्यवाही सेहो देखू—

अनिचन्हार आखर गजल दिवस मनेबाक लेल प्रयासरत अछि आ ताहि लेल जीवन झाजीक नाम कोना प्रस्तावित भेल तकर विवरण एहि तीन टा लिंकपर देखू-
https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2012/04/ashish-anchinhar-10.html
https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2012/04/jan-anand-mishra-10-marchke-maithili.html
https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2012/04/as-hish-anchinhar.html

आ मंथनक बाद निर्धारित भेल जे पं.जीवन झा जीक बर्खीकेँ गजल दिवस रूपमे मनाएल जाए।

गजलकार परिचय शृंखला

अनचिन्हार आखर मैथिलीक सभ प्रमुख गजलकार (बहरयुक्त आ बिना बहर बला) सभहँक परिचय शृंखला निकालक जकरा ऐ लिंकपर देखल जा सकैए---http://anchinharakharkolkata.blogspot.in/p/blog-page_632.html (जेना जेना हमरा परिचय भेटैत गेल तेना तेना हम दैत गेलहुँ। ऐ लेल कोनो वरिष्ठता आ कनिष्ठताक प्रश्न नै हेबाक चाही)

1

जीवन झा

हिनक फोटो हमरा लग एखन उपल्बध नै भेल अछि

आधुनिक मैथिलीक पहिल गजलकार।
परिचय----स्व.जीवन झा जन्म हरिपुर (हरिपुरबा??) गाम (प्रखंड-सरायरंजन, समस्तीपुर) मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित कविवर जीवन झा रचनावलीक जन्म आ मृत्यु 1848-1912 छनि, काशीराजक दानाध्यक्ष पदपर बहुत दिन रहथि, हिनक चारिटा नाटक सुन्दर संयोग, नर्मदा सट्टक, मैथिली सट्टक आ सामवती पुनर्जन्म।सामाजिक विषयपर मैथिली नाटक लिखबाक प्रारम्भ ईएह केलनि, संस्कृत परम्परा रखैत फारसीसँ प्रभावित हिनकर नाटक अछि, नाटकक बीचमे ई गीत-गजल दै छला।
जन्मक कोनो तिथि नै अछि। हिनक मृत्यु इ.1912 केर बैशाख शुक्ल सप्तमीकेँ अंग्रेजी तिथि-23-4-1912 (मंगल दिन) भेलन्हि। अइ तिथि लेल एकेडमिक (जे कि बिना पाइ देने अनुसंधानमे रूचि रखैत होथि) लोकनिसँ निवेदन जे ओ सत्यापित करथि।

2

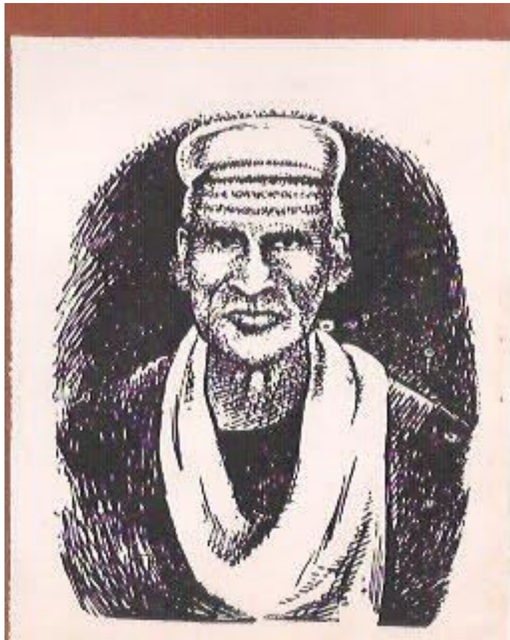
यदुनाथ झा यदुवर

1887-1935

यदुनाथ झा “यदुवर
मुरहो, मधेपुरा

मैथिलीमे हिनक 2टा गजल आ 1टा कौआली उपल्बध अछि।यदुवरजीक सभ गजल “यदुवर रचनावली” (संपादक रमानंद झा रमण)पर अधारित अछि। यदुवर रचनावलीकँ गौरसँ देखलापर पता चलैए जे यदुवर जी भारतीय शास्त्रीय संगीत ओ लोकगीत दूनू अधारपर अपन रचना केलनि आ संभवतः वएह अधार ओ गजल लेल सेहो लेलनि जे की गलत अछि। 3

3
सीताराम झा 1891-1975

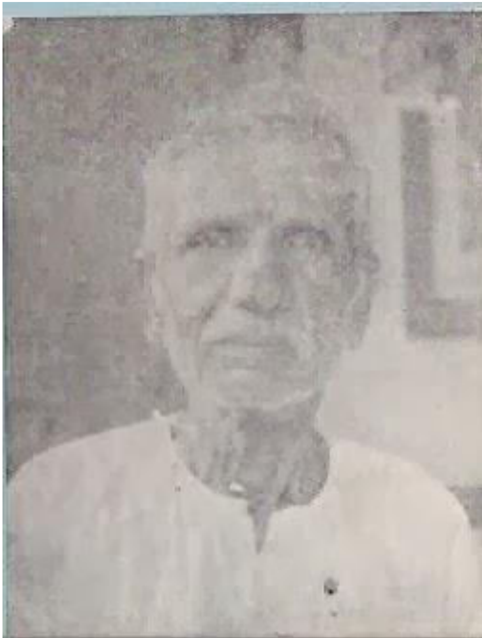


जन्म चौगामा ग्राममे 1891 ई.मे तथा निधन 1975 ई. मे भेलन्हि। संस्कृतमे ज्योतिष शास्त्रक अनेक रचनाक .अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक 'अम्ब चरित' (महाकाव्य), 'सूक्ति सुधा,' लोक लक्षण,' 'पद्धुआचरित,' 'पूर्वापर व्यवहार,' उनटा बसात,' 'अलंकार दर्पण', 'भूकम्प वर्णन', 'काव्य षट-रस', 'मैथिली काव्योपवन', आदि ग्रन्थ उपलब्ध अछि। हिनक गीताक मैथिली अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि। मिथिला मोदक सम्पादन 1920 ई.सँ 1927 ई. धरि ई कएल।

हिनक कुल मिला कए 4-5 टा गजल उपलब्ध अछि जे की शुद्ध अरबी बहरपर अछि

4

काशीकान्त मिश्र "मधुप"



काशीकान्त मिश्र "मधुप" जीकैँ 1970मे (राधा विरह, महाकाव्य) पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक भेटलनि। प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता 'झंकार' कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि। प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि। 'घसल अठन्नी कविताक लेल कथ्य आ शिल्प-संवेदना दुहू स्तर पर चरम लोकप्रियता भेटलनि। ई आधुनिक मैथिलीक प्राय; पहिल एहन साहित्यकार छथि जे की गद्य नै लिखलनि।

मैथिलीमे हिनक एक गोट गजल उपल्बध अछि जे की पूरा-पूरी अरबी बहरपर अछि।

5

योगानंद हीरा



ई 1950क बाद पहिल गजलकार छथि जे मैथिलीमे पूर्ण रूपेण अरबी बहरक पालन केलथि। मुदा एही कारणे मैथिली संपादक सभ हिनका कात कए देलकन्हि

मूल नाम---योगानंद दास हीरा

जन्म-30-1-1940

गाम--डुमरी, पत्रालय-गणपतगंज, थाना-राघोपुर, जिला सुपौल

शिक्षा--हिन्दी भाषामे मास्टर डिग्री

लेखन---मैथिली आ हिन्दी दूनूमे

प्रकाशित पोथी---नीड़ की तलाश, भले आदमी की तलाश (उपन्यासिका), सिमटती छाया (कहानी संग्रह), एक अच्छा मैं (एकांकी संग्रह), आज की कहानी (नाटक)। सभ प्रकाशित पोथी हिन्दीमे। मैथिलीमे जल्दिये हिनक पोथी आएत।

6

जगदीश चन्द्र ठाकुर “अनिल”



विशेष----अनचिन्हार आखर द्वारा प्रयोजित मैथिली गजल लेल देल जाए बला ” गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान” लेल हिनका साल 2012 लेल मुख्य चयन कर्ता बनाएल गेल अछि।
मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950,शंभुआर, मधुबनी । सेवा निवृत बैंक अधिकारी। मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-1. तोरा अडनामे -गीत संग्रह-1978; 2. धारक ओइ पार-दीर्घ कविता-1999
संप्रति- धुरझार गजल लीखि रहल छथि।

7

विजय नाथ झा



प्रकाशित गीत-गजल संग्रह----अहींक लेल (प्रकाशन साल 2008, प्रकाशक -शेखर प्रकाशन)

पिता-प. रतिनाथ झा (पूर्व विभागाध्यक्ष प्राच्य दर्शन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)
गाम---ग्रम-पोस्ट---तलपुरवा, बाँसी, सिद्यार्थनगर,(उत्तर प्रदेश)
शिक्षा---विज्ञान स्नातक (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)
वृति---पत्रकारिता आ स्वतंत्र लेखन, आर्यावर्तक संपादकीय विभागमे विविध सेवा, चुटकुलानंदक चिट्ठी केर लेखन, आकाशवाणी आ दूरदर्शन पटनामे कविता पाठ आ अन्यान्य तरहँक प्रसारण

8
गजेन्द्र ठाकुर,



पिता-स्वर्गीय कृपानन्द ठाकुर, माता-श्रीमती लक्ष्मी ठाकुर,जन्म-स्थान-भागलपुर 30 मार्च 1971 ई., मूल-गाम-मेंहथ, भाया-झंझारपुर,जिला-मधुबनी (बिहार)।
शिक्षा: एम.बी.ए. (फाइनेन्स), सी.आइ.सी., सी.एल.डी., कोविद।

विदेहक http://www.videha.co.in प्रधान संपादक सहित अनेको वेबसाइटक संचालक आ पथप्रदर्शक।

प्रकाशित गजल संग्रह----धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

विशेष------हिनक पाँचटा मुख्य विशेषता अछि---
1) ई मैथिलीक पहिल अरूजी छथि, आ
2) हिनका माध्यमे मात्र बारह सालमे कुल 350-400टा नवलेखक आ कतिआएल लेखक सामने अएलाह।
3) अन्तर-महाविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगितामे “मैन ऑफ द सीरीज” (1991), सम्प्रति अमेच्योर गोल्फर|

4) पंजी केर वृहत रूपसँ प्रकाशन

5) अंतर्जाल लेल तिरहुता आ कैथी यूनीकोडक विकासमे योगदान आ मैथिलीभाषामे अंतर्जाल आ संगणकक शब्दावलीक विकास, मैथिली विकीपीडियाक संस्थापक। गूगल मैथिली ट्रान्सलेटमे योगदान आ शब्दकोषक वृहत संकलन ओ प्रकाशन। संस्कृत वीथी नाटकक निर्देशन आ ओइमे अभिनय।

लेखन:

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-1, सहस्रबाढ़नि (उपन्यास), सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह) गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह), संकर्षण (नाटक), त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध), बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, कथा, कविता आदि), उल्कामुख (नाटक), सहस्रशीर्षा (उपन्यास), प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक-2), धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (गजल संग्रह), शब्दशास्त्रम (कथा संग्रह), जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह), Learn_Mithilakshara_GajendraThakur.pdf, Learn Braille through Mithilakshar script ब्रेल सीखू, Learn International Phonetic script through Mithilakshar script अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला सीखू।

सह-लेखन:

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili_English_Dictionary_Vol.I.pdf

Maithili English Dictionary_Vol.II_GajendraThakur.pdf

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

VIDEHA ENGLISH MAITHILI DICTIONARY

English Maithili Dictionary_Vol.I_GajendraThakur.pdf

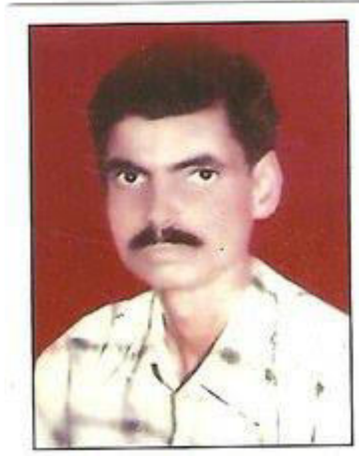
जीनोम मैपिंग (450 ए.डी.सँ 2009 ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध,पंजी (मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र),दूषण पंजी,मोदानन्द झा शाखा पंजी, मंडार- मरड़े कश्यप-प्राचीन, प्राचीन पंजी (लेमीनेट कएल), उतेढ़ पंजी, पनिचोभे बीरपुर, दरभंगा राज आदेश उतेढ आदि, छोटी झा पुस्तक निर्देशिका, पत्र पंजी, मूलग्राम पंजी, मूलग्राम परगना हिसाबे पंजी, मूल पंजी-2, मूल पंजी-3, मूल पंजी-4, मूल पंजी-5, मूल पंजी-6, मूल पंजी-7

शीघ्र प्रकाश्य--

A Survey of Maithili Literature- Vol.II- GAJENDRA THAKUR (Soon)

9

मुन्ना जी



प्रकाशित गजल संग्रह----माँझ आँगनमे कतिआएल छी।

अन्य प्रकाशित पोथी----प्रतीक (विहनि कथा), हम पुछैत छी (साक्षात्कार)
शीघ्र प्रकाश्य पोथी----भैया जी (उपन्यास) आ एकटा हाइकू संग्रह
हिनक अन्य विवरण एना अछि------मूलनाम- मनोज कुमार कर्ण, जन्म–27 जनवरी 1971 (हटाढ़ रूपौली, मधुबनी), शिक्षा–स्नातक प्रतिष्ठा, मैथिली साहित्य। वृत–अभिकर्त्ता, भारतीय जीवन बीमा निगम। पहिल विहनि कथा–'काँट' भारती मण्डनमे 1995 पकाशित। पहिल कथा–कुकुर आ हम, 'भरि रात भोर'मे 1997मे प्रकाशित। एखन धरि दर्जनो विहनि कथा, लघु कथा, क्षणिका, गजल आ विहनि कथा सम्बन्धी आलेख प्रकाशित। मुख्यतः मैथिली विहनि कथाकेँ स्वतंत्र विधा रूपेँ स्थापित करबाक दिशामे संघर्षरत।

10
सुनील कुमार झा



पिता : श्री शंकर झा

माता : इंदिरा देवी

जन्म : 4/5/1988, सोनबरसा राज, सहरसा, बिहार

स्थायी पता - ग्राम पोस्ट : सोनबरसा राज, जिला - सहरसा, बिहार - 852129

ई मेल - njha61@gmail.com

शिक्षा : नैनपन केर शिक्षा अपन गाम स शुरू केलोंउ आ हाई स्कूल केर बाद कोनो नीक साधन नई हैबाक कारण ए. एन इंटर कॉलेज, दुमका स इंटर केर पढाई विज्ञान विषयक संग पूरा केलों। फेर शिक्षा लेल दिल्ली एलोऊ मुदा एतोका रंग में रंगी क नौकरी पकैड़ लेलोंउ, अखन McCann World Group में सहायक छी, आ इग्नू स पर्यटन म स्नातक कए रहल छी।

साहित्य : विद्यार्थी जीवन से कविता लेखन मे बड़ रूचि छल, स्कूल आ कॉलेज के कैकटा मंच पर अपन कविता पाठ कए चुकल छी। 2010 स अंतरजाल पर विदेह स जुड्बाक मौका भेटल, किछु गजेन्द्र जीक मार्गदर्शन स किछु लिखय लेल प्रेरित भेलोंउ, इ हमर सौभग्य अछि जे विदेह पर हमर किछु रचना क चुनल गेल, हालाकिं ओतेक नीक नै मुदा साहित्यिक जीवन केर सुरुआत एतेय स पूर्ण रुपें भेल। फेर फेसबुक केर विदेह ग्रुप पर आशीष जी भेट भेल आ अनचिन्हार आखर हमरा आकर्षित केलक, आ आशीष जीक मार्गदर्शन स अनचिन्हार आखर पर अपन गजल, रुबाई लिख लागलहूँ, अखन किछु दिन स ग़ज़ल स दूर भए गेल छी, अर्थक पाछू बेकल रहैत छी त समय के सेहो आभाव लगैत अछि, ओना नीक शुरुवात के लेल अनचिन्हार आखर पर गज़लक स्कूल केर संगोपान्गाय अध्यन म लागल छी, गुरुदेव क आशीर्वाद स फेर एही विधा आ आयब। साहित्य केर एकटा नव आवाम देबय लेल हम सदिखन आभारी रहब श्री गजेन्द्र ठाकुर जी आ आशीष जीकँ।

सुनीलजी विदेह आ अनचिन्हार आखरसँ जुड़ल पुरान गजलकार, हाइकूकार ओ मुकरीकार छथि (संपादक)।

11

शान्तिलक्ष्मी चौधरी



शांतिलक्ष्मीजी मैथिलीक एहन पहिल विदुषी (शाइरा) छथि जे बहरयुक्त गजल लिखली। सभसँ पहिने अनचिन्हार आखर द्वारा हिनका गजल लिखबाक लेल प्रेरित कएल गेल। ई गजलक मामिलामे अनचिन्हार आखरक खोज छथि।

कुमारी शांतिलक्ष्मी चौधरी

परिचय: श्रीमति कुमारी शांतिलक्ष्मी चौधरी (विवाहपुर्व- सुश्री कुमारी शांति), ग्राम गोविन्दपुर, जिला सुपौल निवासी आ राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय सहरसामे कार्यरत पुस्तकालायाध्यक्ष श्री श्यामानन्द झा केर जेष्ठ सुपुत्री छथिl पुज्यनिया माताक नाम श्रीमति गंभीरा झाl जन्म वर्ष 1984 मे भेलन्हिl पितामह मूल रूपसँ सुपौल जिलान्तर्गत कोसीदियरा प्रदेसक बनैनिया गामक निवासी छलाह् मुदा कोसीक बाढ़ि मे घरद्वार आ खेत-खरिहान कटि गेलाक बाद ई लोकनि ओहीठामसँ उपटि अपन कामत गोविन्दपुर (गोविन्दपुर-श्रीपुर) मे आबि स्थायी रूपसँ बसि गेलाहl ओना तँ गाम मे हिनक पितामहेगण लोकनि लगसँ एक्के चुल्हाक आदर्श संयुक्त परिवार एखनहु अछि तथापि पिता अपन सरकारी नौकरीक चलितवे बेसीकाल सपरिवार कायस्थ टोला, सहरसा रहलाह जतयसँ शांतिलक्ष्मी अपन विद्यालयी आ विश्वविद्यालयी शिक्षादीक्षा पूर्ण केलीह. हिनक शुभविवाह सहरसा जिलान्तर्गत महिषी/आरापट्टी गामक निवासी श्री राजनारायण चौधरी आओर श्रीमति निभादेवतादेवीक जेष्ठ सुपुत्र श्री अक्षय कुमार चौधरीसँ 4 मई 2009 कँ भेलन्हिl श्री चौधरी दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्ससँ जुड़ल अन्वेषक आओर समाजिक मानवशास्त्री छथिl श्रीमति शांतिलक्ष्मीक सासुरपक्षक संयुक्त परिवार आओर दिआदबाद लोकनिक दोहटवाड़ी घर-आँगन सहरसा जिलाक महिषी आओर आरापट्टी दुहु

गाममे पसरल अछि आओर ई लोकनि समवेत रूपसँ एहि दुहु गामकैँ अपन मातृभुमि मानैत रहल छथि। सन् 2009मे एम.एल.टी. कॉलेज सहरसा (बीएनएमयू)सँ प्राणीविज्ञानमे स्नाकोत्तरक उपाधि ग्रहण कयलाक बाद, श्रीमति चौधरी सन् 2010मे महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतकसँ बी. एड. केर उपाधि ग्रहण केलीह। सम्प्रति बीएनएमयूसँ प्राणीविज्ञानमे 'डॉकट्रेट इन फिलॉसफी' (Ph. D.) केर शोधकार्यसँ जुड़ल छथि। प्राकृतिक विज्ञानसँ स्नातकोत्तर आ शिक्षाशास्त्री स्नातक रहितहुँ एकटा समाजिक मानवशास्त्रीसँ परिणय-सुत्रमे बन्हलाक उपरान्त हिनके सानिध्यसँ आम जीवन केर सामाजिक बिषय-वोस्तु आ विशेष कऽ महिलाजन्य सामाजिक समस्या आओर प्रघटनाकैँ बुझवा-समझवा व ओहिपर विमर्श करवामे शांतिलक्ष्मीक अभिरूचि बेशी बढ़लन्हि। सामाजिक प्रघटनाक अंतर्वस्तुपर हिनक लिखल बहुतो रास मैथिली कविता, मैथिली गजल, आओर सामाजिक विषयक आलेख मैथिली ई-पत्रिका "'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका" क वर्ष 2010-12 केर अनेको अंक आओर मैथिली ब्लॉग "अनचिन्हार आखर" पर प्रकाशित भेल अछि। शांतिलक्ष्मी "विदेह" आओर "अनचिन्हार आखर" परिवार कैँ अपन "साहित्यिक बाल्यकालक मातृत्व आँचर" मानैत छथि जकर छाँव मे हिनकर साहित्यिक संस्कार पलिपोइसकैँ पैघ भेल अछि। हिनक लेखन काज एखनहु अनवरत अछि। कलकत्तासँ छपय वाली मैथिली पत्रिका "मिथिला दर्शन" क मई-जून 2012 केर अंक (पृष्ठ 39) मे प्रकाशित हिनक दुई गोट मैथिली गजल सेहो नारी जीवनक अंतर्वस्तुपर लिखल गेल अछि। जूलाई 2012 मे राजेन्द्र मिश्र कॉलेज सहरसामे "Maoist Naxal Menace: Its Solution" विषयपर आयोजित आओर यु.जी.सी. संपोषित राष्ट्रिय सेमिनारमे शांतिलक्ष्मी द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान केर शीर्षक छल "Maoist Naxalism: A National Threat and Holistic solution" . अक्टूबर 17-18, 2012 कैँ महिषी गाममे बिहार सरकार पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित "उग्रतारा सांस्कृतिक महोत्सव" केर स्मारिका (पृष्ठ 96-98) मे प्रकाशित हिनक एकटा हिन्दी आलेखक शीर्षक अछि "माहिष्मति में मैथिल नारी के प्रतिमान" I अंतिका प्रकाशन गाजियावादसँ प्रकाशित होयवाली मैथिली पत्रिका "अंतिका" केर जून-दिसम्बर 2012 केर अंक मे प्रकाशित हिनक तीन गोट मैथिली कविता दिल्ली गेंगरेप प्रकरण आओर अन्य सामाजिक व्याधिकी विषयक अंतर्वस्तुसँ सम्बन्धित अछि.

12

अनिल कुमार मल्लिक (अनचिन्हार आखर पर "अनिल "नामसँ उपस्थित)



हिनक परिचय हिनक अपने शब्दमे-------

हम अनिल कुमार मल्लिक पिता श्री सुरेन्द्र लाल मल्लिक माता श्रीमती सुशिला देबी मल्लिक। हमर जन्म 22 दिसम्बर 1962 मे झापा जिला, मेची अंचल, नेपाल मे भेल। हमर पुर्खा ग्राम महिशारि, थाना सिंघबारा, जिला दरिभंगा सॉ छलाह, करिब 110 साल पहिने राणा शासन के समय हमर बाबा स्व. जिवनाथ मल्लिक नेपाल अयलाह, सरकारी नोकरी गोश्वारा मे भेटलन्हि आ बाद मे पटवरिका भेटलन्हि त नेपाल के भऽ क' रहि गेलहूँ हम सभ। हमर 10 कक्षा तक के शिक्षा झापा के इस्कुल मे भेल, स्नातक तक के शिक्षा हमरा बिरगंज आ काठमाण्डु मे भेटल, जन प्रशासन बिषय मे स्नातकोत्तर के अन्तिम बरख छल मुदा कारण बस पुरा नहि क' सकलहूँ। 2 भाई छी, 4 बहिन... हम सभ सॉ जेठ छी भाई के बिबाह बिदेह ग्रुप मे सदस्य छथि श्री बृषेश चन्द्र लाल, हुनकर जेष्ठ कन्या सॉ भेल। हमर मातृक समैला, ग्राम पोष्ट पचाढी, जिला दरिभंगा भेल। हमरा मैथिली भाषा आ अपन संस्कृती प्रति के प्रेम हमरा अपन दादी स्व.जोगमाया देबी सॉ भेटल ओ हमर आदर्श छथि। हम कओलेज के समय मे नाटक सभ लिखैत छलहूँ, गीत इ सभ गबैत छलहूँ सांस्कृतीक कार्यक्रम सभ मे नेपाली, हिन्दी, बाङ्ला या त फेर राजबंशी भाषा मे। मैथिली मे लिखनाई बुझू विदेह सॉ जुडला'क बाद मात्र सुरु भेल। मास साइत अक्टूबर 2011 मे पहिल पोष्ट छल “आखर आखर शब्द लिखै छी”। 2 पुत्र'क पिता छी, पत्नी संगीता कुमारी कर्ण छथि। आशिष जी'क बताओल बेसीक कॉन्सेप्ट पर सरल बर्ण पर गजल लिखैत छी, एकटा दबाई के कम्पनि मे ब्यवस्थापक छी आ अपनो नीजी ब्यवसाय अछि त समय के कने कमी रहैत अछि। अन्चिन्हार आखर त कय बेर इ सोचि भिजिट करैत रहलौं की संभवतः हमहूँ सिख जायब मुदा नै सिख सकलहूँ अखनि धरि। हमरा नेपाल मे लोक मैथिली मे लिखैथ, पढैथ, भाषा के सम्मान भेटै से नीक लगैत अछि त जे समय भेटैत अछि कोशिष करैत छी, एकर अलावा अपन जन्म स्थान के बच्चा सभऽक शिक्षा प्रति सचेत छी आ जे संभव होइत अछि करवा'क चेष्टा करैत छी

13

मिहिर झा



विशेष----मिहिर जी “अनचिन्हार आखर “द्वारा आयोजित पहिल आन-लाइन मोशायराक विजेता छथि।

हिनक परिचय हिनक अपने शब्दमे-------

गाम - लखनौर (झंझारपुर)

जन्म - 2 जून 1963

शिक्षा - स्नातक (विज्ञान), स्नातकोत्तर (प्रबंधन)

संप्रति - जे. आई. आई. टी विश्वविद्यालय. नोएडा मे डिप्टी रजिस्ट्रार

परिवार - पत्नी - श्रीमती वंदना झा, पुत्री - श्रुति आ श्रिया, पुत्र - आशीष

अभिरुचि - साहित्य (पद्य), “अनचिन्हार आखर” के प्रेरणा सों गजल विधा मे प्रारंभिक प्रयास

आकांक्षा - विश्व स्तरीय साहित्य मे मैथिली साहित्य के शीर्षस्थ देखब

14

ओमप्रकाश



हिनक परिचय हिनक अपने शब्दमे-------

हमर नाम ओम प्रकाश झा अछि। हम ओम प्रकाश नामसँ गजल लिखैत छी। हमर बाबूजीक नाम श्री पीताम्बर झा आ माताजीक नाम श्रीमती रामकुमारी झा अछि। हमर जन्म 05 दिसम्बर 1969 ईस्वी मे हमर नानीगाम चुन्नी, पत्रालय मधेपुर, जिला मधुबनी मे भेल अछि। हमर पैतृक गाम ड्योढ, पत्रालय घोगरडीहा, जिला मधुबनी अछि। हम छह भाई बहिन मे सबसँ जेठ छी। दसवींक इम्तहान 1984 मे बीरपुर, जिला सुपौलसँ पास केने छी। अन्तरस्नातक 1986 मे सी. एम. साइंस कओलेज, दरिभंगासँ आ स्नातक 1990 मे लंगट सिंह कओलेज, मुजफ्फरपुरसँ पास केलहुँ। सरकारी सेवा मे 1992 मे अयलहुँ। 2001 मे प्रोन्नति भेंटला पर आयकर अधिकारी भेलहुँ आ विभिन्न स्थानसँ होइत एखन भागलपुर मे पदस्थापित छी।

साहित्यक प्रति प्रेम पितासँ भेंटल अछि। ओहो साहित्य अध्ययन मे बहुत रूचि राखै छथि आ गोट आध रचना सेहो करैत रहै छथि। हमर पढाई केर विषय विज्ञान रहल मुदा साहित्यक प्रति प्रेम ओहो समय उत्कट छल आ अपन डायरी मे किछु किछु लिखैत रहै छलौं। मुदा नै ककरो ओ रचना देखेलियै आ नै सुनेलियै। हम 2010सँ फेसबुक पर सक्रिय भेलौं आ 2011 मे विदेह ग्रुप मे शामिल कएल गेलौं। इ घटना हमरा लेल परिवर्तनक घटना छल। विदेह पर आदरणीय गजेन्द्र भाई आ अनुज आशीष भाई (हमरा सदिखन लागैए जे इ हमर हराएल अनुज छथि, जे एकाएक भेंटला)सँ सम्पर्क भेल। इ दुनू गोटे हमर भीतर मे नुकाएल गजलकार कैँ बाहर आनि दुनियाक सामने ठाढ कऽ देलखिन्ह। ओहि समय आशीष भाई हमरा अनचिन्हार आखर मे योगदान लेल आमन्त्रित केलथि। अनचिन्हार आखर पर हमरा गजलशास्त्रक नियम सब पढबाक अवसर भेंटल, जे हमरा लेल बहुत उपयोगी सिद्ध भेल। आशीष भाईक प्रेरणा पर हम अरबी बहर मे गजल लिखनाई शुरू कएलौं। हमर लिखल गजल अनचिन्हार आखर ब्लाग पर पढल जा सकैए। हम गजलक अलावे कथा, पद्य आ समीक्षा सेहो लिखै छी, मुदा मुख्य रूपसँ हम गजलकार छी।

15

अमित मिश्र



हिनक परिचय हिनकैं शब्दमे----

बाबू जी-श्री नविन कुमार मिश्र

माँ- श्रीमती विभा देवी हम सम्तीपुर जिलाक रोसड़ा थाना अंतर्गत करियन नाम क गाम के रहनिहार छी ।हमर जन्म 11 / 1/1993 मे भेल। बाबू जी एकटा किसान छथि तैँए हमर प्रारंभीक पढ़ाइ गामक इस्कूल मे भेल आ हाइ इस्कूल बैद्यनाथ पूरसँ 2008 मे मैट्रीक केलौँ । इंटर सी .एम .साइंस काँलेज दरभंगासँ भेल आ एतैसँ गणीतसँ स्नातक क रहल छी । हमरा भाषासँ कोनो विषेश प्रेम नै रहल । आ मैथिली आफसनल रहबाक कारण कहियो नै पढ़लौँ मुदा हमर बाबा स्बर्गीय भोला ईसर {हमर बाबा तक ईसर लिखाइ छल मुदा बाबू जीसँ मिश्र भ गेल जे की हमर फरीकक आनो चाचा सब लिखै छथि } शिक्षक छलथिन तैँए हम भाषासँ बेसी दूरो नै छलौं । 2008 मे हम पहिल बेर लिखलौँ जे की एकटा मैथिली मे भगवती गीत छल आ तेकर बाद प्राय: मैथिली, हिन्दी, भोजपुरी मे गीत आ बाद मे मैथिली मे किछु कविता लिखलौं । हमर किछु मित्र किछु गीत सब सुनने छलथि आ किछु गामक किर्तन मे गेने छलौँ बाद बाँकी सब डायरीये मे समेटल छल मुदा 2012 के जनवरी मे विदेहसँ जुड़ला के बाद हमर रचना अपने सबहक संग भेटल । जनवरीक अन्त मे श्री आशीष अनचिन्हार जीक आशीर्वाद भेटल आ अनचिन्हार आखरसँ भैँट भेल ।

16

चंदन कुमार झा



हिनक परिचय हिनकहि शब्दमे----

पिता-श्री अरूण झा

माता-मीना देवी

जन्म-05-02-1985

ग्राम-सड़रा,मदनेश्वर स्थान

पोस्ट-मदना

थाना-बाबूबरही

जिला-मधुबनी

जन्म-स्थान-सिसवार (मामा गाम मे)

नाना-स्व0 सुशील झा (राजाजी)

आरंभिक शिक्षा-मामा गाम मे (10वाँ धरि)

आँगाक शिक्षा- अन्तर-स्नातक (वाणिज्य) एवं स्नातक (वाणिज्य) दरिभंगासँ, चंद्रधारी महाविद्यालय.,वित्तीय-प्रबंधन मे डिप्लोमा (वेलिंगकर इन्सटीच्युट आफ मैनेजमेन्ट,मुम्बई)

व्यवसायिक जीवन- एकटा बहुराष्ट्रीय कंपनी मे लेखा-विभाग मे कार्यरत

परिवार-निम्न मध्यम वर्गीय कृषक परिवार

रुचि-अध्ययन-अध्यापन,नाटक-संगीत,सामाजिक सरोकारसँ जुड़ब आ' साहित्यिक गतिविधि.

साहित्य लेखन-2000 ईस्वीसँ.कएक गोट कविता,लेख ईत्यादि दरभंगा रेडियो स्टेशन एवं विभिन्न पत्र-पत्रिका सभसँ प्रकाशित-प्रसारित.

किछु व्यक्ति जिनकर अनुकंपासँ कहियो उॠण नहि होयब- श्री विजयकांत मिश्र (अध्यापक)-कन्हई,श्री शंभूनाथ झा-सुसारी,श्री ताराकांत झा (संपादक,मिथिला समाद),डा0 धिरेन्द्र नाथ मिश्र (मैथिली विभागाध्यक्ष,सी.एम.कालेज)

(हम ई त' नहि कहि सकब जे मैथिलीसँ हमरा कहियो भैँट नहि छल किएक त' हम मैट्रिकसँ स्नातक धरि सभ दिन एच्छिक विषय के रूप मे एकरा पढलहु.हाँ तखन मैथिली व्याकरणसँ कहियो भैँट नहि भेल अवश्य. हमरा कहियो मैथिली पढब आ'कि लिखबा मे बेशी दिक्कत नहि भेल किएक तए जहिना बजैत-सुनैत छी ओहिना लिखैत छी आ' सभ दिन मैथिली साहित्य रुचिकर लगैत रहल अछि...मुदा, मैथिली मे कविता ईत्यादि हम लिखनाय चालू कएलहुँ एकरा पाँछा हमर पारिवारिक आर्थिक विपन्नता छल..एकटा एहन समय आयल जखन लगैत रहय जे पढाइ बिचहि मे छोड़य पड़त किएक त' अभिभावक पढौनिक खर्चा देबय मे असमर्थ भऽ गेल रहथि ..खोलि कय कहियो नहि कहलथि..सभदिन उत्साहित करैत रहलथि..मुदा जहिया दरभंगासँ गाम जाइत छलौ मासक खर्च अनबा लेल माँ-बाबूजीक चिन्ता स्पष्टतः दृष्टिगोचर होइत छल..लोकक धिया-पुता गाम अबैछ त' माय-बाप हर्षित होइत छैक...हमर माय कनैत छल...मुदा, खून बेचि पढेबाक जिद्द आ तइँ पढाइ नहि छोडल भेल...एहि समय मे परमादरणीय श्री ताराकांत झा जी (संपादक-मिथिला समाद) एकटा सुझाव देलनि जे दरभंगा रेडियो-स्टेशन मे हरेक-मास किछु कार्यक्रम कऽ किछु धनार्जन कयल जा सकैत अछि आ' मासक खर्छ निकालल जा सकैत अछि. हमरा ई सुझाव सूट कयलक आ' फेरसँ नव-उत्साहक संग अपने धनार्जन कय पढबाक विचार ठनलहु. तत्काल एकटा प्राइवेट स्कूल मे मास्टरी पकडि लेलहु...फेर डा. धीरेन्द्रनाथ मिश्र (तत्काळीन बिभागाध्यक्ष-मैथिली, सी.एम.कालेज) के मार्गदर्शन भेटल..केन्द्रिय पुस्तकालय, दरभंगा मे भरि दुपहरिया अगबे मैथिली के पोथी पढी
....जे मोन मे अबैत गेल लिखैत गेलहु आ' एक साल मे पचास टासँ बेशी कविता लिखलहु....आब मोनो लागय लागल..नित नव उल्लास ......रेडियो स्टेशन सेहो 3-4 टा कार्यक्रम करबाक अवसर देलक...स्नातक खतम भेल..आगाँ पढबाक मोन छल दू टा छोट भाइक भविष्य सोचि अपन भविष्य दाँव पर लगा देलियैक...रोजी-रोजगारक अवसर मे मुम्बई चलि गेलहु..क्रमशः दिन घुरल ..फेर अपनो जहाँ धरि सकलहु आगाँ पढलहु..(फाइनान्ससँ डिप्लोमा कयलहु).....एखनहु पढतहि छी...मझिला स्नातक कयलक..छोटका भाइ एखन इंजिनीयरिंग कय रहल अछि...आब संतोष अछि....त्यागक फल भेटल...हाँ एहि झमेला मे पछिला छह बरख मे साहित्यिक रचनात्मका जेना हेराय गेल छल..मुदा संजोग जे कलकत्ता स्थान्तरित भेलहुँ..फेर ताराकांजी भेटलाह आ' नवउत्साह पाबि किछु लिखबाक प्रयास शुरू कयलहु..किछु सफलता सेहो भेटल..आ' फेर विदेह भेटल..एकर सुधि पाठक भेटल..गुरूरूप मित्र भेटल ......आ' सभटा हेरायल सपना जेना भेट गेल...अरे बाप रे ई कथा त' अनावश्यक नमहर भेल जा रल अछि..एकरा एतहि खतम करू...अहाँ सभक स्नेह बेर-बेर किछु नव लिखबाक...जिनगीक गुनबाक लेल प्रेरित करैत रहैत अछि ...एहने स्नेह सभ दिन बनल रहय एतबहि भगवती “वैदेही”सँ कामना.)

17

जगदानन्द झा 'मनु'



हिनक परिचय हिनकैं शब्दमे----

हमर गप्प----------

नाम : जगदानन्द झा 'मनु'

पिता : श्री राजकुमार झा

माता : मन्जु देवी

जन्म : 13/11/1973, हरिपुर डीहटोलमे

ग्राम पोस्ट : हरिपुर डीहटोल, मधुबनी

वर्तमान निवास : पूर्वी विनोद नगर, दिल्ली

मो.नो : 09212461006

ई मेल - jagdanandjha@gmail.com

शिक्षा : प्राथमिक- ग्राम हरिपुर डीहटोलमे, आँगाक सबटा सीबीएसई दिल्लीसँ, देशबन्धु कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालयसँ 1994 मे बिसनेसमे स्नातक, इलेक्ट्रोनिक्समे डिप्लोमा, कम्पूटर हार्डवेयरमे डिप्लोमा |व्यबसाय : 1994सँ 2011 तक करीब 18 बर्ख तक इलेक्ट्रोनिक्स फील्डमे अपन बेपार | तीन बर्ख तक पार्ट टाइम एमएलएम व्यबसाय केला बाद अप्रैल 2011सँ फूल टाइम एमएलएम व्यबसायमे एखन तक |

साहित्य : विद्यार्थी जीवनमे कविता लेखनमे रूचि मुदा गृहस्थ जीवनमे सबटा बिसरा गेल | अक्टूबर 2011, श्री गजेन्द्र ठाकुर जी विदेह ग्रुपसँ जोरलाह, आ ओतएसँ हमर साहित्यक जीवन शुरू भेल | विदेह पर सभकैं नीक-नीक लिखैत देखि हमरो भितरक मरल साहित्यिक स्नेह बाहर निकलल, दू-तीन टा कविता लिख विदेहक देबाल पर देलियै | पाठकक वाह-वाही पढि नीक लागल | आगु लिखैक प्रेरणा भेटल | संगे अपन कविताकैं विदेह ई पत्र पर छपल देख आओर खुशी भेटल | मुदा हमर मैथिली भाषाक पक्ष बड्ड कमजोर छल, एखनो अछिए | नम्बर 2011 मे गुरुबर आशीष अनचिन्हारजी विदेह ग्रुपकैं आशिर्वादे भेट भेलाह आ ओहिठामसँ हुनक मार्गदर्शनमे शुरू भेल हमर गजल आ मैथिली लिखैक यात्रा | ओकर बादक सभ किछ अपने लोकिनकैं सामने अछि | हमर जीवनमे साहित्यक कोनो जगह अछि तँ ओहि लेल हम आभारी छी मार्गदर्शक श्री गजेन्द्र ठाकुर जीकँ आ गुरुबर श्रीआशीष जीकँ |

18

पंकज चौधरी “नवलश्री”



प्रस्तुत अछि हिनक परिचय हिनकहि शब्दमे---

माएक नाउ : श्रीमती वन्दना देवी [गृहणी]

बाबूजीक नाउ : श्री भागेश्वर चौधरी [लोक स्वास्थ्य अभियंत्रणा विभाग (बिहार सरकार)मे कार्यरत]

जीवनसंगिनी : मनीषा चौधरी [स्नातक (प्रतिष्ठा), बी.एड.]

जन्मतिथि : 11-09-1980

जन्मस्थान : राजनगर (मधुबनी, मिथिला)

निवासी : गाम एवं पत्रालय- सुगौना (चौधरी पट्टी)

प्रखण्ड - राजनगर,

जिला-मधुबनी, मिथिला

शिक्षा :

प्रारंभिक : सेंट एंड्र्यूज स्कूल, भागलपुरसँ

माध्यमिक : अनूप उच्च विद्यालय, भटसिमरीसँ

अंतर-स्नातक : यू पी वर्मा महाविद्यालय, मुंगेरसँ (विज्ञान विषयक संग)

स्नातक : रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीसँ (वाणिज्य विषयमे प्रतिष्ठा)

सम्प्रति आइ. सी. ए. आइ. (नव दिल्लीसँ) सी. ए. (फाइनल) आ आइ. सी. एस. आइ. (नव दिल्लीसँ) सी. एस. (फाइनल)मे अध्ययनरत। संगहिं एकटा निजी कम्पनीमे प्रबंधक (वित्त एवं कर) पदपर कार्यरत।

रुचि :

साहित्यिक गतिविधि, संगीत, अध्ययन-अध्यापन

साहित्यक क्षेत्रमे पहिल डेग :

पारिवारिक पृष्ठभूमिमे साहित्य कतहु नै छल। अंतर-स्नातक विज्ञानसँ आ स्नातक वाणिज्यसँ रहल मुदा तइयो साहित्य आ संगीत प्रति अनुराग सभदिन बनल रहल। चिट्ठी लिखबाक स'ख शुरुएसँ रहल। चिट्ठी सभके आकर्षक बनेबाक उद्देश्ये ओहिमे तुकबन्दीक किछु पांति सभ सेहो जोड़य लगलहुँ। आरम्भमे कविता, शायरी, कथा आ गीत प्रति प्रमुख आकर्षण रहल। अन्तर-स्नातकमे रही त' पहिल (हिन्दी भाषामे) कविता लिखने रही। तदुपरान्त निरंतर किछु-किछु लिखबाक प्रयास करैत रहलहुँ। कॉपीक आगाँक पन्ना दिससँ शैक्षणिक आ पाछाँ दिससँ साहित्यिक गतिविधि निरंतर चलैत रहल। ओहि समयावधिमे भरिसके कोनो एहन कॉपी छल होएत जाहिमे पाछाँ दिससँ किछु पन्ना पर तुकबन्दीक मोसि नहि टघरेने होए।

मैथिलीमे रचनाक आरम्भ :

आरंभिक शिक्षा भागलपुरसँ भेल मुदा घ'रक वातावरण सभदिन मैथिलीमयी रहल। धिया-पुतामे मैथिली-संस्कारक संचरण होइत रहए, एहि कारणें माए-बाबूजी शहरमे रहितो परिवारमे संवादक माध्यम मैथिलीए बनने रहलनि। नेनपनेसँ मैथिली प्रति हमरा बड्ड स्नेह रहल मुदा अंतर-स्नातक पूरा होए धरि रचनाक मादे मैथिलीमे किछु विशेष नै केलहुँ। स्नातक-अवधिमे मैथिली प्रति प्रेम जागल। आ से एना जागल जे हिन्दीमे लिखब बन्न भऽ गेल। वर्ष 2001मे पहिल मैथिली कविता “माए मैथिली छथि आह्वान करैत” लिखलहुँ जे वर्ष 2012मे “मिथिमीडिया” आ “मैथिली दर्पण”सँ प्रकाशित सेहो भेल।

गजलकार रूपमे स्थान आ सम्मान :

वर्ष 2012 हमर लेखनी लेल विशिष्ट रहल। वर्षारंभमे मुखपोथीसँ जुड़लहुँ। मार्चमे आदरणीय गजेन्द्र ठाकुरजी जहन “विदेह” समूहसँ जोड़लन्हि त' साहित्यक कएक टा अमूल्य रत्न सभसँ भेंट भेल। तदुपरान्त आशीष अनचिन्हार जी “अनचिन्हार आखर”सँ जुड़बा लेल हकारलन्हि। ओना त' रचना हम मुखपोथी, विदेह आ अनचिन्हार आखरसँ जुड़बासँ पहिलेहो करैत रही मुदा जँ “गजलकार” रूपमे हमरा स्थान आ सम्मान भेटल अछि त' श्रेय हम निःसंकोच “विदेह” आ “अनचिन्हार आखर” कें देब। अनचिन्हार आखर आ आशीष

अनचिन्हारजीसँ गजलक मादे बहुत किछु सिखबाक-बुझबाक लेल भेटल। विशेष क' गजलक व्याकरण पक्षमे। मार्च 2012सँ निरन्तर लिखैत रहलहुँ आ पाठकवर्गसँ सुझाव आ सहयोगक अपेक्षे "मुखपोथी" आ "अनचिन्हार आखर" पर परसैत रहलहुँ। रचनाकार आ पाठक लोकनिक अपूर्व सहयोग आ समर्थन भेटल। प्रोत्साहनसँ आर मेहनति करबाक लेल मनोबल भेटैत रहल।

विदेह आ अनचिन्हार आखरसँ जुड़लाक एक्के मास बाद अनचिन्हार आखर द्वारा प्रायोजित "गजल कमला-कोशी-बागमती-महानंदा" (बाल-गजल श्रेणी) सम्मानक पहिल चरण (मास अप्रैल 2012) लेल हमर एकटा बाल-गजल चयनित भेल। तदुपरान्त मास दिसंबर 2012 (पहिल चरण) लेल हमर एकटा गजल सेहो चुनल गेल। वर्ष-2012 लेल "गजल कमला-कोशी-बागमती-महानंदा" (गजल श्रेणीमे) सम्मान सेहो भेटल। मुख्य चयनकर्ता श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" जीक प्रोत्साहन आ आशीष भेटल। संगहि एहि सम्मानक बाल-गजल श्रेणीमे श्रीमती प्रीती ठाकुरजी हमर बाल-गजलकें सराहलन्हि आ एकरा "तेसर स्थान" पर रखलन्हि।

"विदेह" आ "अनचिन्हार आखरसँ" जुडलाक बाद पहिने "सरल-वार्णिक बहर" आ तदुपरांत "अरबी बहर" मे सेहो बहुत रास गजल कहलहुँ। आइ धरि लगभग सवा-सए गजल (गजल, बाल-गजल, भक्ति-गजल आ हजल मिला कँ) कहि चुकल छी आ लगभग 10-12 टा गजलकें पूर्ण रूप देब शेष अछि। एहि पाछाँ हमर मेहनति जे हो मुदा साहित्यिक संगी आ मार्गदर्शक लोकनिक सहयोग आ सुझाव सेहो महत्वपूर्ण अछि। एहि सहयोगक बिना एतेक आगाँ बढ़ब सहज नै।

रचनाक प्रकाशन/प्रसारण/संकलन :

गजलक अलावा कविता, गीत, कथा, आलेख, रुबाई, हाइकू आदि सेहो लिखैत रहलहुँ अछि मुदा रचनामे गजलक बहुलता रहल अछि। मुखपोथीक अलावा बहुत रास गजल, कविता, गीत, कथा, आलेख पत्र-पत्रिका (विदेह-इ पत्रिका, मिथिमीडिया, श्री-मिथिला, मैथिली दर्पण, मिथिलांचल-टुडे, स्मारिका आदि)मे सेहो छपैत रहल अछि। अगस्त 2012मे हमर एकटा हजल "हौ दैव किएक विआह केलहुँ ..." जनकपुर (नेपाल) एफ.एम. (रेडियो)सँ प्रसारित सेहो भेल। कार्यक्रमक संचालक आदरणीय धीरेन्द्र प्रेमर्षि जीक बड्ड प्रोत्साहन भेटल। आदरणीय "तारानन्द वियोगी" जीक सुझाव आ भाइ "रौशन चौधरी" जीक सहयोगसँ अपन रचना सभके एकठाम समेटबा आ सरियेबाक उद्देश्यसँ नवम्बर 2012मे " www.aanjur.in" नाउसँ एकगोट जालवृत सेहो बनवेलहुँ। जालवृतक माध्यमे सेहो बहुत रास प्रोत्साहन भेटल।

धन्यवाद ज्ञापन :

साहित्य आ संस्कार दुनु क्षेत्रमे हमर जे अर्जन अछि तकर पूर्ण श्रेय हम अपन माए-बाबूजी-भाए-बहिनकें देबए

चाहब। संगहि गुरु श्री मुनीन्द्र नाथ मिश्र आ श्री जीवेश्वर चौधरी सदिखन पथप्रदर्शक रूपमे आशीष दैत रहलनि अछि। साहित्यिक बाटमे सेहो किछु एहन सखा आ मार्गदर्शक (गजेन्द्र ठाकुर, आशीष अनचिन्हार, चन्दन झा, राजीव रंजन मिश्र, अमित मिश्र, मनु भाइ, ओम प्रकाश झा, मिहिर झा, गुंजनश्री, आदि) सभ भेटलन्हि जनिका बिनु सभ बेमानी, सभकिछु सुन्ना। ऋणी छी पाठक लोकनिक जे अपन व्यस्त जीवन-शैलीसँ समय निकालि हमर रचना सभ पढ़लनि आ समुचित प्रोत्साहन आ मार्गदर्शन केलन्हि। संगहि आभार ओहि सभ व्यक्ति/संस्था प्रति जे हमर रचना सभके प्रकाशन/प्रसारण योग्य बुझलन्हि।

19

कुन्दन कुमार कर्ण:



जहाँ धरि हमर जानकारी अछि कुंदन कुमार कर्ण नेपालक पहिल शाइर छथि जे की अरबी बहरमे गजल कहि रहल छथि। (संपादक -अनचिन्हार आखर)

नाम : कुन्दन कुमार कर्ण

पिता : श्री शुशिल लाल कर्ण

माता : भारती कर्ण

जन्मतिथि : 23 Dec, 1988

जन्मस्थान : गा.वि.स. जमुनीमधेपुरा, वार्ड नं.-8, पोस्ट : राजविराज, जिला- सप्तरी, नेपाल

मूल वृति : नेपाल सरकारक नोकरीहारा (गृह-मन्त्रालय अन्तर्गत)

शिक्षा :

स्नातक (ब्यवस्थापन) : त्रिभुवन विश्वविद्यालय, श्री महेन्द्र बिन्देश्वरी बहुमुखी क्याम्पस, राजविराज

स्नातकोत्तर (ब्यवस्थापन) : इन्दिरा गान्धी खुला विश्वविद्यालय, नव दिल्ली (अध्ययनरत)
रूचिक क्षेत्र : साहित्य, गीत, संगीत, अध्ययन, उदघोषण
हिनक किछु शब्दह हिनकहि शब्दमे---
हम एकटा सामान्य मध्यम वर्ग परिवारसँ छी। परिवारमें बाबू जी आ माय सहित हमरासँ छोट दू भाइ छैक। कनियेटासँ साहित्य, गीत, संगीतमें हमर रूचि रहि आएल छैक। हमर पहिल मैथिली कविता 'अभिनव' नामक मैथिली साहित्यिक द्वैमासिक पत्रिकामें अक्टुबर, 2003 में प्रकाशित भेलए। हम मैथिली गजल 2005सँ लिखकें प्रारम्भ केलौं मुदा आधिकारिक रूपसँ पहिलबेर नेपालक पहिल पत्रिका(सरकारी पत्रिका) 'गोरखापत्र'में 18 सितम्बर, 2012 में प्रकाशित भेलए। अभिनयकें क्रममें मैथिली कवि परिषद, राजविराजद्वारा सञ्चालित एकटा कार्यक्रम अन्तर्गत नेपालक सात जिला : मोरंग, सुनसरी, सप्तरी, सिराहा, धनुषा, महोत्तरी आ सर्लाहीकऽ विभिन्न ठाममें सडक नाटकमें सहभागी भऽ अभिनय केलौं। वर्तमान समयमें कार्यव्यस्तता रहितौ समय निकालिकऽ गजल रचना करैत छी। मैथिली गजलकें लोप्रियताके लेल गजलप्रित पूर्ण रूपेन समर्पित फेसबुकपर मैथिली गजल एवं शेर-ओ-शायरी सम्बन्धि 'मैथिली गजल भंडार' नामक एकटा समूह आ ओहि नामसँ एकटा पेज संचालनकऽ मैथिली गजलसँ सम्बन्धित विभिन्न काममें लागल रहैत छी। एहि क्रममें फेसबुकपर आशिष अनचिन्हार जीसँ भेट भेलए। ओ हमरा अनचिन्हार आखरसँ जोडलखिन जाहिसँ हमरा गजल रचना सम्बन्धी आर ज्ञान भेटलए तैँ हम हुनक आभारी छी। संगे आशिष जीसँ जानकारी भेटल जे अरबी बहरमें गजल रचना कयनिहार हम नेपाल पहिल मैथिल गजलकार छी। ई सुनि कऽ हम बहुत खुशी भेलौं आ गजल रचना करऽ लेल हमरा एकटा नव उमंग आ उत्प्रेरणाके प्राप्ति भेलए।

20

प्रस्तुत अछि समवेत गजलकार परिचय। किछु गजलकारक विस्तृत परिचय देबाक इच्छा छल, मुदा बेर-बेर आग्रहक बाबजूद ओ लोकनि नेट पर उपल्बध रहितो अपन परिचय नै पठा सकलाह तँए मात्र हुनक नामोल्लेखसँ काज चला रहल छी---

त्रिपुरारी कुमार शर्मा, विकास झा रंजन,रोशन, दीप नारायण विद्यार्थी,प्रवीन नारायण चौधरी प्रतीक, विनीत उत्पल, भावना नवीन, भाष्कर झा, रवि मिश्रा भारद्वाज, अजय ठाकुर मोहन, प्रभात राय भट्ट, श्रीमती इरा मल्लिक, मनोहर कुमार झा, प्रवीन नारायण चौधरी, स्वाती लाल, नितेश झा रौशन,कुमार पंकज झा, उमेश मंडल, मनीष झा बौआ भाइ, अभय दीपराज, मनोज, मुकुंद मयंक, अविनाश झा अंशु| राजीव रंजन मिश्रा, राम कुमार मिश्र, नीरज कर्ण आदि। ऐठाम ई विशेष उल्लेखनीय जे वर्तमानमे राजीवरंजन मिश्रजी करीब 800सँ उपर बहर युक्त गजल लीखि चुकल छथि।

मैथिलीक बहर युक्त पोथीक सूची--

चूँकि प्राचीन गजलकार सभहँक गजल संपादित पोथी सभमे अछि आ उपरमे ओकर चर्च भऽ चुकल अछि तँए ऐठाम हम तकर बादक बला पोथीक सभहँक विवरण दऽ रहल छी।

1) अहींक लेल --वर्णवृतपर आधारित अछि। शाइर विजय नाथ झा (ऐमे कुल 78 टा गजल आ 43 टा कविता अछि)

2) अनचिन्हार आखर---सरल वार्णिक बहरपर आधारित अछि। शाइर आशीष अनचिन्हार (प्रकाशन वर्ष-2011, ऐमे कुल 30 पृष्ठक गजलक संक्षिप्त परिचय, 78 टा गजल, 32 टा रुबाइ, आ 2 टा कता अछि। ई श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित अछि। मूल्य 200 टका)

3) धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ --सरल वार्णिक बहर आ वर्णवृतपर आधारित अछि। शाइर गजेन्द्र ठाकुर (प्रकाशन वर्ष 2012, ऐमे कुल 58 पृष्ठक गजल शास्त्र आलेख, 1 टा रुबाइ, 2 टा कता आ 37 टा गजल अछि। ई श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित अछि।)

4) माँझ आँगनमे कतिआएल छी--सरल वार्णिक बहरपर आधारित अछि। शाइर मुन्ना जी (प्रकाशन वर्ष 2012, ऐमे कुल 50टा गजल आ 11 टा रुबाइ अछि। ई श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित अछि।)

5) नव अंशु--सरल वार्णिक बहर आ वर्णवृतपर आधारित अछि। शाइर अमित मिश्र (प्रकाशन वर्ष 2012, ऐमे कुल 90टा गजल, 6 टा हजल आ 16 टा रुबाइ अछि। ई श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित अछि।)

6) मोनक बात--सरल वार्णिक बहर आ वर्णवृतपर आधारित अछि। शाइर चंदन झा (प्रकाशन वर्ष 2012, ऐमे कुल 66 टा गजल, 2 टा हजल, 33 टा रुबाइ, 15 टा बाल गजल आ 1 टा कता । ई श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित अछि।)

7) कियो बूझि नै सकल हमरा--सरल वार्णिक बहर आ वर्णवृतपर आधारित अछि। शाइर ओम प्रकाश (प्रकाशन वर्ष 2012, ऐमे कुल 87 टा गजल, 8 टा रुबाइ आ 1 टा कता । ई श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित अछि)

8) नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर---सरल वार्णिक बहर आ वर्णवृतपर आधारित अछि। शाइर जगदानंद झा मनु। प्रकाशक श्रुति प्रकाशन। प्रकाशन वर्ष 2014, विदेहक पोथी डाउनलोडपर ई-वर्सन प्रकाशित

9) निश्तुकी--सरल वार्णिक बहरपर आधारित अछि। शाइर उमेश मंडल (ऐमे 2 टा गजल अछि)

10) क्षणप्रभा--सरल वार्णिक बहरपर आधारित अछि। शाइर शिव कुमार झा टिल्लु (ऐमे 2 टा गजल अछि)

11) गजल गंगा (शाइर जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल, 2015, विदेहक पोथी डाउनलोडपर ई-वर्सन प्रकाशित)

12) नेपालक नोर मरुभूमिमे---(शाइर बिंदेश्वर ठाकुर ऐमे 12टा गजल आ 28टा रुबाइ, कता समेत किछु स्वतंत्र शेर, लघुकथा, विहनिकथा आ कविता अछि, प्रकाशक श्रुति प्रकाशन, वर्ष 2014)

13) जे कहि नञि सकलहुँ ---शाइर दीप नारायण विद्यार्थी

“अनचिन्हार आखर” मैथिलीक पहिल आ एखन धरिक एकमात्र गजल केन्द्रित पत्रिका अछि। ई सूची अपना आपमे अपूर्ण अछि समय-समय पर अपेक्षित सुधार होइत रहत। अहूँ सभहँक सहयोग अपेक्षित अछि।

अनचिन्हार आखर आ मैथिली गजलक आलोचना

आधुनिक व्याकरणयुक्त गजल आलोचनाक बात करी तँ सभसँ पहिने रामदेव झा जी द्वारा लिखल ओ रचना पत्रिकाक जून 1984मे प्रकाशित ओहि लेख केर चर्चा करए पड़त जकर शीर्षक "मैथिलीमे गजल" छल। हमरा जनैत ई लेख ओहि समयक हिसाबें मैथिली गजल आलोचनाक सभ मापडंद पूरा करैत अछि (वर्तमान समयमे रामदेव झाक जीक पुत्र सभ एही आलेखसँ वर्तमान गजलकैं मापै छथि आ ई हुनकर सीमा छनि। ईहो कहब उचित जे वर्तमान समयक हिसाबें ओ आलेख औसत स्तरक अछि मुदा एही कारणसँ एकर महत्व कम नै भऽ जेतै)। ओना ई उल्लेखनीय जे ईहो आलेख गजलक विधानकैं ओझरा कऽ राखि देने अछि कारण एहि लेखमे गजलक बहरकैं मात्रिक जकाँ मानल गेल छै जे कि वस्तुतः लेखक महोदय केर सीमा छनि। वर्णवृत छंदमे हरेक पाँतिक मात्राक जोड़ एकै अबै छै आ मात्रिक छंदमे सहो। हमरा जनैत रामदेव झा जी एहीठाम भ्रममे फँसि गेलाह। वर्णवृतमे लघु-गुरू केर नियत स्थान होइत छै मुदा मात्रिक छंदमे लघुक स्थानपर दीर्घ सेहो आबि सकैए आ दीर्घक स्थानपर लघु सेहो। मुदा गजलक बहर वर्णवृत छै। तथापि कमसँ कम ओहि समयमे ई कहए बला कियो सेहो भेलै जे गजलमे विधान होइत छै आ सएह एहि आलेखक पहिल विशेषता अछि। एहि आलेखक दोसर विशेषता ई जे रामदेव झाजी प्राचीन मैथिली गजलकार सभहँक नाम देने छथि जे कि सभ गजलक इतिहासकार ओ पाठक लेल उपयोगी अछि। एहि आलेखक तेसर विशेषता अछि जे रामदेव झाजी स्पष्ट स्वरमे ओहि समयक बहुत रास कथित क्रांतिकारी गजलकार सभहँक गजलकैं खारिज करै छथि जे कि ओहि समयक हिसाबसँ बड़का विस्फोट छल। ई आलेख ततेक प्रभावकारी भेल जे ओ समयक बिना व्याकरण बला गजलकार सभ छिलमिला गेलाह आ एहि आलेखक विरोधमे विभिन्न वक्तव्य सभ देबए लगलाह। उदाहरण लेल सियाराम झा सरस, तारानंद वियोगी, रमेश ओ देवशंकर नवीनजीक संपादनमे प्रकाशित साझी गजल संकलन "लोकवेद आ लालकिला" (वर्ष 1990) केर कतिपय लेख सभ देखल जा सकैए जाहिमे रामदेव झाजी ओ हुनक स्थापनाकैं जमि कऽ आरोपित कएल गेल अछि। ओही संकलनमे देवशंकर नवीन अपन आलेख "मैथिली गजलःस्वरूप आ संभावना"मे लिखै छथि जे "............पुनः डा. रामदेव झाक आलेख आएल। एहि निबन्ध मे दू टा बात अनर्गल ई भेल जे गजलक पंक्ति लेल छंद जकाँ मात्रा निर्धारित करए लगलाह आ किछु एहेन व्यक्तिक नाम मैथिली गजल मे जोड़ि देलनि जे कहियो गजल नै लिखलनि"

आन लेख सभमे एहने बात सभ आन आन तरीकासँ कहल गेल अछि। रामदेव झाजीक आलेखक बाद एहन आलेख नै आएल जाहिमे गजलकैं व्याकरण दृष्टिसँ देखल गेल हो कारण ताहि समयक गजलपर कथित क्रांतिकारी गजलकार सभहँक कब्जा भऽ गेल छल। कोनो विधा लेल आलोचना प्राण होइत छै तँइ "अनचिन्हार आखर" अपन शुरूआतेसँ आन काजक अतिरिक्त गजल आलोचनापर सेहो ध्यान केंद्रित केलक आ मैथिली गजलक अपन आलोचक सभकैं चिह्नित कऽ बेसी आलोचना लिखबेलक। आ एही कारणसँ मैथिली गजल आब

ओहन आलोचक सभसँ मुक्त अछि जे कि मूलतः साहित्य केर आन विधाक आलोचक छथि आ कहियो काल गजलक आलोचना कऽ गजलपर एहसान करै छथि। ई पाँति लिखैत हमरा गर्व अछि जे मैथिली गजलकेँ आब छह-सात टासँ बेसी अपन आलोचक छै। अनचिन्हार आखर जे-जे गजल आलोचना लिखबा कऽ प्रकाशित करबेलक तकर विवरण एना अछि----

1) गजलक साक्ष्य (तारानंद वियोगी जीक गजल संग्रह केर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल गेल आलोचना)
2) बहुरुपिया रचनामे (अरविन्द ठकुर जीक गजल संग्रह केर ओमप्रकाश जी द्वारा कएल गेल आलोचना)
3) घोघ उठबैत गजल (विभूति आनंद जीक गजल संग्रह केर ओम प्रकाश जी द्वारा कएल गेल आलोचना)
4) विदेहक 103म अंकमे प्रकाशित प्रेमचंद पंकजक दूटा गजलक समीक्षा जे की ओमप्रकाश जी केने छथि
5) मुन्नाजीक गजल संग्रह "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"- समीक्षक गजेन्द्र ठाकुर
6) मैथिली गजल आ अभट्ठाकारी
7) अज्ञानी संपादकक फेरमे मरैत गजल (घर-बाहर पत्रिकाक अप्रैल-जून 2012 अंकमे प्रकाशित गजलक समीक्षा)
8) मैथिली बाल गजलक अवधारणा
9) कतिआएल आखर (मुन्ना जीक गजल संग्रह केर अमित मिश्र जी द्वारा कएल गेल आलोचना)
10) गजलक लेल (विजयनाथ झा जीक गजल ओ गीत संग्रह- अहीँक लेल के ओमप्रकाश जी द्वारा कएल समीक्षा)
11) भोथ हथियार (श्री सुरेन्द्र नाथ जीक गजल संग्रह केर ओमप्रकाश जी द्वारा कएल गेल आलोचना)
12) पहरा अधपहरा (बाबा बैद्यानथ जीक गजल संग्रह केर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल गेल आलोचना)
13) गजलक लहास (स्व. कलानन्द भट्टजीक गजल संग्रह केरजगदानन्द झा मनु द्वारा कएल गेल आलोचना)
14) सूर्योदयसँ पहिने सूर्यास्त (राजेन्द्र विमल जीक गजल संग्रहक आशीष अनचिन्हार कएल गेल आलोचना)
15) बहुत किछु बुझबैएः कियो बूझि ने सकल हमरा (ओमप्रकाशजीक गजल संग्रहपर चंदन कुमार झाजीक आलोचना)
16) प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल (सियाराम झा सरसजीक गजल संग्रहपर जगदीश चंद्र ठाकुर अनिलजीक आलोचना)
17) अरविन्दजीक आजाद गजल (अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रहपर जगदीश चंद्र ठाकुर अनिलजीक आलोचना)
18) छद्म गजल (गंगेश गुंजनजीक गजल सन किछुपर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल आलोचना)
19) कलंकित चान (राम भरोस कापड़ि भ्रमरजीक गजल संग्रहक आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल आलोचना)
20) मैथिली गजल व्याकरणक शुरूआती प्रयोग (गजेन्द्र ठाकुरजीक गजल संग्रह "धांगि बाट बनेबाक दाम

अगूबार पेने छँ" केर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल आलोचना)
21) चिकनी माटिमे उपजल नागफेनी (रमेशजीक गजल संग्रह "नागफेनी" केर आशीष अनचिन्हार द्वारा कएल आलोचना)
22) नवगछुलीक प्रांजल सरस रसाल: नव अंशु (अमित मिश्र केर गजल संग्रह "नव-अंशु" केर शिव कुमार झा"टिल्लू" द्वारा कएल गेल समीक्षा)
23) सियाराम जा सरस जीक गजल संग्रह "शोणिताएल पैरक निशान"पर कुंदन कुमार कर्णजीक टिप्पणी
24) श्री जगदीश चन्द ठाकुर ऽअनिलऽ जीक लिखल गजल संग्रह "गजल गंगा" केर जगदानंद झा"मनु" द्वारा कएल समीक्षा
25) मैथिली गजलक संसारमे अनचिन्हार आखर (आशीष अनचिन्हारक गजल संग्रहक जगदीश चंद्र ठाकुर अनिलजी द्वारा कएल आलोचना)
26) थोड़े माटि बेसी पानि (सियाराम झा सरसजीक गजल संग्रहपर कुंदन कुमार कर्णजीक आलोचना)

अनचिन्हार आखरक काजक संक्षिप्त वर्णन श्री गजेन्द्र ठाकुर अपन “गजल शास्त्र 14 “मे एना लिखै छथि (बादमे ई आलेख (1सँ 14 धरि) हुनक गजल संग्रह “धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ” मे सेहो आएल) ---
“जँ वर्तमानमे गजलक परिदृश्यकेँ देखी तँ मोटा-मोटी दूटा रेखा बनैत अछि (जकरा हम दू युगक नाम देने छी) पहिल भेल “जीवन युग” आ दोसर भेल “अनचिन्हार युग” । आब कने दूनू युग पर नजरि फेरल जाए--
1) जीवन युग ऐ युगक प्रारंभ हम जीवन झासँ केने छी जे आधुनिक मैथिली गजलक पिता मानल जाइ छथि मुदा ओ कम्मे गजल लीख सकला। मुदा हुनका बाद मायानंद, इन्दु, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विभूति आनंद,सरस, रमेश, नरेन्द्र, राजेन्द्र विमल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रौशन जनकपुरी, अरविन्द ठाकुर, सुरेन्द्र नाथ, तारानंद वियोगी आदि गजलगो सभ भेलाह। रामलोचन ठाकुर जीक बहुत रचना गजल अछि मुदा ओ अपने ओकर क्रमविन्यास कवितागीत जकाँ बना देने छथिन्ह मुदा किछु गजलक श्रेणीमे सेहो अबैए। ऐ “जीवन युग” क गजलक प्रमुख विशेषता अछि बेबहर अर्थात बिन छंदक गजल। ओना बहरकेँ के पूछैए जखन सुरेन्द्रनाथ जी काफियाक ओझरीमे फँसल रहि जाइ छथि। एकर अतिरिक्त आर सभ विशेषता अछि ऐ युगक। आ जँ एकै पाँतिमे हम कहए चाही तँ पाँति बनत” गजल थिक, ई गजल थिक, आ इएह टा गजल थिक” ।

2) आब कने आबी “अनचिन्हार युग” पर। ऐ युगक प्रारंभ तखन भेल जखन इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल गजल आ शेरो-शाइरीकेँ समर्पित ब्लाग “अनचिन्हार आखर” (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) क जन्म भेल। आ ऐ अन्तर्जालक “अनचिन्हार आखर” जालवृत्तक नामपर हम ऐ युगक नाम “अनचिन्हार युग” रखलहुँ अछि। ऐ युगक किछु विशेषता देखल जाए--

• गजलक परिभाषिक शब्द आ बहरक निर्धारण--ई सौभाग्य एकमात्र “अनचिन्हारे आखर” कैँ छैक जे ओ हमरासँ 14 खंडमे (एखन धरि 14 खण्ड) “मैथिली गजल शास्त्र” लिखेलक। आ ई मैथिलीक पहिल एहन शास्त्र भेल जइमे गजलक विवेचन मैथिली भाषाक तत्वपर कएल गेलै। तकरा बाद आशीष अनचिन्हार सेहो “गजलक संक्षिप्त परिचय” लीख ऐ परंपराकैँ पुष्ट केलथि। आ एकरे फल थिक जे सभ नव-गजलकार बहरमे गजल कहि रहल छथि।

• स्कूलिंग--” अनचिन्हार आखर” गजल कहेबाक परंपरा शुरू केलक आ तइमे सुनील कुमार झा, दीप नारायण “विद्यार्थी”, रोशन झा, प्रवीन चौधरी “प्रतीक”, त्रिपुरारी कुमार शर्मा, विकास झा “रंजन”, सद्रे आलम गौहर, ओमप्रकाश झा, मिहिर झा, उमेश मंडल आदि गजलकार उभरि कए अएलाह।

• गजलमे मैथिलीक प्रधानता--” अनचिन्हार युग”सँ पहिने गजलमे उर्दू-हिन्दी शब्दक भरमार छल आ मान्यता छल जे बिना उर्दू-हिन्दी शब्दक गजल कहले नै जा सकैए। मुदा “अनचिन्हार आखर” ऐ कुतर्ककैँ धवस्त केलक आ गजलमे 100% मैथिली शब्दक प्रयोगकैँ सार्वजनिक केलक।

• गजलक लेल पुरस्कार योजना--” अनचिन्हार आखर” मैथिली साहित्य केर इतिहासमे पहिल बेर गजल लेल अलगसँ पुरस्कार देबाक घोषणा केलक। ऐ पुरस्कारक नाम “गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा” पुरस्कार अछि।”

आब जखन की पाठक ऐ पाँति धरि आबि चुकल छथि हुनका मैथिली गजलक इतिहासक सम्बन्धमे बहुत रास तथ्य सोंझा आबि गेल हेतन्हि। तँए बेसी लिखब उचित नै तथापि शुरूसँ अन्त धरिक महत्वपूर्ण बिंदु देल जा रहल अछि आ मात्र ओहने बिंदु देल जा रहल अछि जे की व्याकरणयुक्त अछि—

1) प. जीवन झा 1905मे नाटक सभमे खास कऽ सुन्दर संयोगमे गीतक बदला गजलक प्रयोग केला। ई गजल लिखित रूपमे आधुनिक मैथिली गजलक आदि गजल सभ अछि (एखन धरिक खोजकक अधारपर)। खोजक अधारपर जीवन जीक मृत्य 23-4-1912कैँ भेलन्हि।

2) 1912सँ 1970 धरिक मध्य कविवर सीताराम झा, आनन्द झा न्यायाचार्य, मधुपजी, यदुवर जी आदि छिटपुट रूपैँ गजल लिखैत रहलाह। मुदा छिटपुट रूपमे रहितहुँ ई गजल सभ व्याकरणक मापदंडपर साधल अछि।

3) 1970सँ 2008क मध्य योगानन्द हीरा, विजयनाथ झा, जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, गजेन्द्र ठाकुर आदि व्याकरणयुक्त गजल लिखैत रहलाह आ एखनो लिखैत छथि। हमर गजलक जात्रा एही कालमे भेल (2001सँ)

4) 2008सँ लऽ कऽ एखन धरि बहुत रास गजलकार सभ एला जे की मैथिली गजल लेल एकटा अभूतपूर्व घटना अछि। ऐ कालक आ एखन धरिक मुख्य गजलकार ई सभ छथि ओमप्रकाश, अमित मिश्र, श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी, जगदानंद झा मनु, राजीव रंजन मिश्रा, अनिल जी, सुमित मिश्रा, श्रीमती इरा मल्लिक, चंदन झा, कुंदन कुमार कर्ण, मिहिर झा, उमेश मंडल, प्रदीप पुष्प, आदि छथि। ऐके अलावे आर बहुत रास नाम छथि जे की अनचिन्हार आखरपर देखल जा सकैए।

5) मैथिली गजलक पहिल अरूजी गजेन्द्र ठाकुर अनचिन्हार आखरक एही काज सभकैं देखैत 2008क बाद सँ लऽ कऽ वर्तमान कालखंडकैं "अनचिन्हार युग" केर नाम देलाह (1905सँ लऽ कऽ 2007 धरिक कालखंडकैं गजेन्द्रजी आधुनिक मैथिलीक पहिल गजलकार जीवन झाजीक नामपर "जीवन युग" नाम देलाह)।

मैथिली गजलमे विदेहक (www.videha.co.in) योगदान

जखन कोनो विधा विशेष अपन चरमपर पहुँचै छै ताहिसँ पहिने ओकरा पाछाँ कोनो ने कोनो एकटा पत्र-पत्रिकाक सोङर लागल रहै छै। जँ 2008क बाद बला गजलकैं देखी तँ निश्चित रूपसँ विदेह (पहिल ई पाक्षिक पत्रिका)क खुलल समर्थन देलक आ समय-समयपर गजलसँ सम्बन्धित विशेषांक निकालि गजलकैं आगू बढ़ेलक। ओना ई कहब कोनो बेजाए नै जे उपरमे जतेक काज अनचिन्हार आखर द्वारा देखाएल गेल अछि तकर पृष्ठभूमि विदेह छल आ अछि। तँ आउ देखी विदेहक किछु एहन काज जै बिना गजलक उत्थान सम्भव नै छल--

1) विदेहक 21म अंक (1 नवम्बर 2008) मे राजेन्द्र विमल जीक 2 टा गजल अछि। राम भरोस कापड़ि भ्रमर आ रोशन जनकपुरी जीक 11 टा गजल अछि। संगे-संग धीरेन्द्र प्रेमर्षि जीक 1 टा आलेख मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना। अछि संगे-संग ऐ आलेखक संग 1 टा गजल सेहो अछि प्रेमर्षि जीक। विदेहक ऐ अंकमे कतहुँ ई नै फड़िछाएल अछि जे ई गजल विशेषांक थिक मुदा विदेहक ऐसँ पहिनुक अंक सभमे गजलक मादें हम कोनो तेहन विस्तार नै पबै छी तँए हम एही अंककैं विदेहक गजल विशेषांक मानलहुँ अछि।
2) विदेहक अंक 96 (15 दिसम्बर 2011) मे मुन्नाजी द्वारा गजल पर पहिल परिचर्चा भेल। ऐ परिचर्चाक शीर्षक छल मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)। ऐमे भाग लेलथि सियाराम झा सरस, गंगेश गुंजन, प्रेमचंद पंकज, शेफालिका वर्मा, मिहिर झा ओमप्रकाश झा, आशीष अनचिन्हार आ गजेन्द्र ठाकुर भाग लेलथि। ऐकैं अतिरिक्त राजेन्द्र विमल, मंजर सुलेमान ऐ दूनू गोटाक पूर्वप्रकाशित लेखक भाग, धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक पूर्व प्रकाशित लेख) सेहो अछि।
3) विदेहक अंक 111 (1/8/2012) जे की बाल गजल विशेषांक अछि जाहिमे कुल 16 टा गजलकारक कुल 93

टा बाल गजल आएल। संक्षिप्त विवरण एना अछि--

रूबी झा जीक 13 टा बाल गजल, इरा मल्लिक जीक 2 टा, मुन्ना जीक 3 टा, प्रशांत मैथिल जीक 1 टा, पंकज चौधरी (नवल श्री) जीक 8 टा, जवाहर लाल काश्यप जीक 1 टा, क्रांति कुमार सुदर्शन जीक 1 टा, जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीक 1 टा, अमित मिश्रा जीक 30टा, ओमप्रकाश जीक 1 टा, शिव कुमार यादव जीक 1 टा, चंदन झा जीक 14 टा, जगदानंद झा मनु जीक 6 टा, राजीव रंजन मिश्रा जीक 4 टा, मिहिर झा जीक 4 टा, गजेन्द्र ठाकुर जीक 1 टा आ ताहि संगे आशीष अनचिन्हारक 2 टा बाल गजल आएल।

बाल गजलक आलावे 7 टा बाल गजल पर आलेख आएल। आलेख कारसँ छथि मुन्ना जी, ओमप्रकाश, चंदन झा, जगदानंद झा मनु, अमित मिश्र आ आशीष अनचिन्हार आ मिहिर झा।बाल गजल आ बाल गजल आलेख छोड़ि ऐ अंकमे योगेन्द्र पाठक वियोगी जीक 1 टा लघुकथा, श्री राजक 1 टा आलोचना, मुन्ना जीक 1 टा आलोचना, आशीष अनचिन्हार द्वारा जगदीश प्रसाद मंडल जीक साक्षात्कार, जगदानंद झा मनु आ जवाहर लाल काश्यपक 11 टा विहनि कथा, सुजीत झाक 1 टा रिपोर्ट, जगदीश प्रसाद मंडल जीक 1 टा लघुकथा, मुन्नी कामति जीक 8 टा कविता, जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीक 1 टा गीतक अगिला भाग, किशन कारीगरक 1 टा कविता, राजेश झाक 2 टा कविता, पंकज चौधरी नवल श्रीक 1 टा कविता आ संगे संग पुनः जगदीश प्रसाद मंडल जीक 5 टा गीत अछि।

4) विदेहक 15 मार्च 2013 बला 126म अंक भक्ति गजल विशेषांक छै। ऐमे आएल रचना सभहँक विवेचन एना अछि--

अमित मिश्र जीक 6 टा भक्ति गजल अछि। श्रीमती इरा मल्लिक जीक 4 टा भक्ति गजल अछि। जगदानंद झा मनु जीक 5 टा भक्ति गजल अछि। पंकज चौधरी नवल श्री जीक 3 टा भक्ति गजल अछि। जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल, मिहिर झा आ विंदेश्वर ठाकुर जीक 11 टा भक्ति गजल अछि। आशीष अनचिन्हार द्वारा लिखल एक गोट आलेख भक्ति गजल अछि जैमे कविवर सीताराम झा जीक एकटा भक्ति गजल सेहो अछि।

5) 15 नवम्बर 2013कँ विदेहक 142म अंक “गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा” विशेषांक छल। ऐ विशेषांकमे आन विधाक रचना ओ स्थायी स्तंभ छोड़ि गजलक आलोचना एना आएल--

1) अमित मिश्रा जीक 2 आलेख अछि।

2) आशीष अनचिन्हारक 10 टा आलेख अछि।

3) ओमप्रकाश जीक 6 टा आलेख अछि।

4) गजेन्द्र ठाकुर जीक 4 टा आलेख अछि (संपादकीय सहित)

5) चंदन झा जीक 1 टा आलेख अछि।

6) जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीक 2 टा आलेख अछि।

7) जगदानंद झा मनु जीक 1 टा आलेख अछि।

8) धीरेन्द्र प्रेमर्षि जीक 1 टा आलेख अछि।
9) मुन्ना जीक 1 टा आलेख अछि।
ऐ रचना सभहँक अलावा विदेहक अन्य स्थायी स्तम्भक रचना सभ सेहो अछि। विदेह द्वारा गजल परहँक कएल गेल ई काज मात्र प्रारम्भ अछि आ हम सभ आशा करै छी जे ई काज आर बहुत आगू धरि जाएत। ऐ विशेषांक सभहँक अलावे विदेहक हरेक अंकमे करीब-करीब 10-12 टा गजल देल गेल अछि जे की कोनो आन विधासँ कम नै तँ बेसियो नै अछि।
आब किछु गप्प विदेहक फेसबुक वर्सन लेल। मात्र एतबे कहऽ चाहब जे विदेहक फेसबुक वर्सन फैक्ट्री अछि गजलक आ विदेह पत्रिका वेयरहाउस अछि। फैक्ट्रीमे रचना रचल गेलै आ वेयरहाउसमे जा कऽ पाठक लग पहुँचि गेलै।

मैथिली गजलमे श्रुति प्रकाशनक योगदान

कोनो विधा लेल जेना कोनो पत्रिका सहारा होइ छै तेनाहिते कोनो विधा लेल कोनो प्रकाशक सेहो महत्वपूर्ण होइ छै। जँ मैथिली गजलक इतिहास देखल जाए तँ श्रुति प्रकाशन एहन पहिल प्रकाशक अछि जे की मैथिलीमे सभसँ बेसी गजल संग्रह प्रकाशित केलक अछि। कुल मिला कऽ एखन धरि ई प्रकाशन 7 टा गजल संग्रह प्रकाशित केलक अछि(उपरमे सूचीसँ पाठक सहायता लऽ सकै छथि) जे की संपूर्ण मिथिला (नेपाल-भारत) मिला कऽ सभसँ बेसी अछि। पूर्ण गजल संग्रहक अतिरिक्त गीत गजल-कविताक बहुत रास पोथी श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित छै। ऐ के आलावा प्रस्तुत पोथी सेहो श्रुति प्रकाशनक देन अछि। गजल संग्रह अलावे “मैथिलीक प्रतिनिधि गजल :1905सँ 2014 धरि” नामक संपादित पोथी एवं “मैथिली गजलक आगमन ओ प्रस्थान बिंदु” नामक संपादित आलोचनाक पोथी सेहो श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित अछि।
आजाद गजलपर किछु कहबासँ पहिने मैथिली गजलमे स्त्री आ मुसलमान शाइरक योगदानकेँ देखी-

मैथिली गजलमे महिलाक योगदान

मैथिली गजलकेँ बहुत रास महिला गजलकार (महिला गजलकारकेँ समान्यतः विदुषी शब्दक प्रयोगकक परम्परा शुरू केने छी हम सभ) नै भेटलै। ई गजलक दुर्भाग्य छै। 2008सँ पहिने व्याकरणहीन गजलमे पहिल महिला गजलकार हेबाक उपल्बधि श्रीमती शेफालिका वर्माजीकेँ छन्हि अर्थात हम कहि सकै छी जे गीतल वा कथित गजल लेल श्रीमती शेफालिका वर्माजी पहिल महिला गजलकार छथि। जहाँ धरि व्याकरणयुक्त गजलक प्रश्न अछि तँ श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी जी पहिल महिला गजलकार छथि वा विदुषी छथि जे की व्याकरणयुक्त गजल लिखलीह। तकरा बाद श्रीमती इरा मल्लिक, स्वाती लाल आदि-आदि छथि आ गजल विकासक योगदानमे

ओस्ताद लोकनिक बराबरी कऽ रहल छथि।

मैथिलीमे मुस्लिम गजलकार

ई बड़का छगुन्ताक विषय नै थिक जे मैथिली गजलमे मुस्लिम गजलकार कम किए छथि कारण पूरा मैथिलिए साहित्यमे मुस्लिम रचनाकार एकातमे छथि। हमरा बुझने जियाउर रहमान जाफरी आ सदरे आलम गौहर सेहो मैथिली गजल लिखै छथि बहुत पहिनेसँ। मुदा ई बहुत दुखद गप्प जे ई सभ उर्दूक अरूजी रहितो मैथिली गजलमे एकर प्रयोग नै केला। की कारण? ओना हिनका सभहँक अतिरिक्त हमरा आन कोनो मुस्लिम गजलकारक नाम नै बूझल अछि जे की मैथिलीमे गजल लिखने होथि। ई हमर सीमा सेहो अछि। एकटा बड़का मिथक जे कि मैथिलीक मुसलमान शाइरक सभहँक संग जुड़ल अछि से ई अछि जे हिंदू गजलकार सभ ई मानि लै छथि जे ई मुसलमान शाइर छथि तँ हिनका बहरक ज्ञान अनिवार्य रूपें हेतनि मुदा ई मिथके अछि। जेना केकरो हिंदू भेलासँ ई साबित नै होइ छै जे हिनका छंदक ज्ञान हेबे करतनि तेनाहिते ईहो नै मानल जा सकैए जे मुसलमान भेलेसँ बहरक ज्ञान हेतै। ने सभ हिंदू संस्कृतक जानकार अछि आ ने सभ मुसलान अरबी-फारसीक। एहि मिथक केर दुखद हिस्सा ई जे मैथिलीक मुसलमान शाइर मैथिलीक हिंदू गजलकारक एहि अज्ञानताक खूब फैदा उठा रहल छथि आ बिना बहरक गजल लिखितो अपनाकेँ महान गजलकार मनबा रहल छथि।
मैथिली गजलमे स्त्री आ मुसलमान शाइरक अभाव किएक तकर उत्तर मैथिलीक आजाद गजल बला खंडमे भेटत।

मैथिलीक बिना बहर बला (अजाद) गजलक इतिहास

(ई आलेख दरभंगासँ प्रकाशित दैनिक मिथिला आवाजमे 9 फरवरी 2014केँ “मैथिली गजलमे लोथ गजलकारक योगदान” नामसँ प्रकाशित भेल छल जकर पूरा श्रेय तात्कालीन संपादक स्व. कुमार शैलेन्द्रजीकेँ जाइत छनि तकर संशोधित रूप अछि। जँ ओ संपादक नै रहतथि तँ कमसँ कम ई आलेख ओइ दैनिकमे नहिए टा प्रकाशित होइत। हमर ऐ आलेखक विरोध स्वरूप सुरेन्द्रनाथजी एकटा आलेख लिखला जे कलकत्तासँ प्रकाशित कर्णामृत केर अप्रैल-जून 2015मे “मैथिली गजलक पूंषत्वहीन आलोचना” केर नामसँ प्रकाशित भेल)
चूँकि मैथिली विश्वक एकमात्र भाषा अछि जे की हिन्दीक नकल करैए। जँ हिन्दी बला सभ मैथिली रचनाकार सभकेँ दिन रहितो राति कहतै तँ मैथिली रचनाकार सेहो दिनक बदला राति कहतै कारण मैथिलीक रचनाकार विशुद्ध रूपें मानसिक गुलाम छथि हिन्दीक। प. जीवन झा, आनन्द झा न्यायाचार्य, कविवर सीताराम झा, मधुप जी जाहि मैथिली गजल के नीक जकाँ विस्तृत केलथि तकरा मात्र हिन्दी नकलक कारणे 70के दशकमे स्व. मायानन्द मिश्र जी अप्रत्यक्ष रूपसँ कहि देला जे मैथिलीमे गजल लिखब सम्भव नै। ठीक ओहिसँ एक-दू बर्ख पहिने हिन्दीमे नीरज द्वारा ई कथन देल गेल छल जे हिन्दीमे गजलक नाम गीतिका हेबाक चाही। नीरज जी हिन्दीमे गजलक नाम गीतिका देलखिन्ह आ गीतिका केर तर्जपर मैथिलीमे गीतल नाम भेल। ऐठाम हम कहऽ चाहब जे भऽ सकैए हिन्दीमे नीरज जीसँ पहिने गजल नै छल हेतै तँए ओ एहन कथन प्रस्तुत केने हेता मुदा

मैथिलीमे तँ 1905सँ गजल लिखल जाइ छल आ ओहो पूर्ण रूपेण व्याकरण सम्मत। तखन मायानन्द जीक ऐ कथन केर मतलब की? आर किछु चर्च करबासँ पहिने मायानंद जीक पोथी "अवान्तर" भूमिकाक किछु अंश पढ़ू (ई पोथी 1988मे मैथिली चेतना परिषद्, सहरसा द्वारा प्रकाशित भेल)। पृष्ठ 6 पर मायानंदजी लिखै छथि "अवान्तरक आरम्भ अछि गीतलसँ। गीतं लातीति गीतलम्ऽ अर्थात गीत कैँ आनऽ बला भेल गीतल। किन्तु गीतल परम्परागत गीत नहि थिक, एहिमे एकटा सुर गजल केर सेहो लगैत अछि। गीतल गजल केर सब बंधन (सर्त) कैँ स्वीकार नहि करैत अछि। कइयो नहि सकैत अछि। भाषाक अपन-अपन विशेषता होइत अछि जे ओकर संस्कृतिक अनुरूपें निर्मित होइत अछि। हमर उद्येश्य अछि मिश्रणसँ एकटा नवीन प्रयोग। तैं गीतल ने गीते थिक, ने गजले थिक, गीतो थिक आ गजलो थिक। किन्तु गीति तत्वक प्रधानता अभीष्ट, तैं गीतल।"

उपरका उद्घोषणामे अहाँ सभ देखि सकै छिऐ जे कतेक दोखाह स्थापना अछि। प्रयोग हएब नीक गप्प मुदा अपन कमजोरीकैँ भाषाक कमजोरी बना देब कतहुँसँ उचित नै आ हमरा जनैत मायानंद जीक ई बड़का अपराध छनि। जँ ओ अपन कमजोरीकैँ आँकैत गीतल केर आरम्भ करतथि तँ कोनो बेजाए गप्प नै मुदा हुनका अपन कमजोरी नै मैथिलीक कमजोरी सुझा गेलन्हि। एकरे कहै छै आँखि रहैत आन्हर। ई मोन राखब बेसी जरूरी जे 2011मे प्रकाशित कथित गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेश मे "जे की अरविन्द ठाकुर द्वारा लिखित अछि ताहूमे ठीक इएह गप्पकैँ दोहराओल गेलैए।

मायानंद जी अपन कमजोरीकैँ झाँपैत जै गीतल केर आरम्भ केला तै पाँछा हमरा बुझने तीन टा कारण भऽ सकैए

1) स्व.मायानन्द मिश्र जी हिन्दीक अन्ध भक्त छलाह।

2) स्व. मायानन्द जी मैथिली गजलक सम्बन्धमे अज्ञानी छलाह।

3) स्व. मायानन्द चतुराइसँ अपना-आप के मैथिली गजलमे स्थापित करबाक योजना बनेलाह।

कहऽ बला कहै छै आ प्रभाव छोड़ै छै। कथनक विरोध भेनाइ शुरू भेल ऐ आ विरोधक सङ्ग शुरू भेल बड़का मजाक। मजाक ई जे विरोध करऽ बला सभ सेहो व्याकरणहीन गजल लिखै छलाह वा एखनो लिखै छथि। ओहि समयक बिना व्याकरणमे गजल लिखऽ बला सभ (मुदा अपना-आपकैँ गजलकार मानऽ बला सभ) दू भागमे बँटि गेल। गीतल भागमे, मायानन्द, तारानन्द झा तरुण, विलट पासवान विहंगम, आदि एला वा छथि (ऐ सूचीमे आर नाम सभ छथि मुदा अगुआ इएह सभ छलाह/ छथि) तँ कथित गजल बला भागमे सियाराम झा सरस, रमेश, तारानन्द वियोगी, विभूति आनन्द, कलानन्द भट्ट, डा. महेन्द्र, सोमदेव, राम भरोस कापड़ि भ्रमर, देवशंकर नवीन, राम चैतन्य धीरज, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, राजेन्द्र विमल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, अरविन्द ठाकुर आदि आदि सभ रहला वा छथि ।ऐ सूचीमे आर नाम सभ छथि मुदा अगुआ इएह सभ छलाह/ छथि। ऐठाँ हम ई स्पष्ट करऽ चाहब जे नाम भने जे होइ मायानन्द जी बला गुट वा सरसजी बला गुट दूनू गुटमेसँ कोनो गोटा गजल नै लिखै छलाह कारण ओ व्याकरणहीन छल। आ व्याकरणहीन कथित गजलकैँ गजल नै गीतले टा कहल जा सकैए। सरसजी मायानन्द जीक सभसँ बेसी विरोध केलखिन्ह हुनकर कथनक कारणे मुदा सरसजी स्वंय व्याकरणहीन गजल लिखला आ लिखै छथि तखन मात्र कथनीपर केकरो विरोध करबाक की मतलब जखन की करनी दूनू

गोटाक एकै छन्हि।

सरसजीक सङ्ग बहुत कथित गजलकार सभ होहकारी दैत एलाह मुदा ओहो सभ व्याकरणहीन गजल लिखला आ लिखैत छथि। आब हमर प्रश्न जे जखन व्याकरण छैहे नै तखन गीतल आ ओइ कथित गजलमे अन्तर की? हमरा बुझने कोनो अन्तर नै । हम मायानन्द जी गीतल आ सरसजीक कथित गजल दूनूकेँ एकै समान मानै छी। ऐ ठाम ई बेसी मोन राखब जरूरी जे सरस गुट केर महानायक धीरेन्द्र प्रेमर्षि जी गीत आ गजलकेँ सहोदर भाए माननै छथि। तखन सरसजीक नजरिमे मायानंद जी अपराधी भेला आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि जी महानायक। हमरा जनैत ई सरसजीक पक्षपात थिक आ ऐ पक्षपात केर विरोध हेबाक चाही।

बिना व्याकरण बला मैथिली गजलमे भेल काज

बिना व्याकरण बला मैथिली गजलमे एखन धरि कोनो एहन काज नै भेल अछि तँइ एहि आधारपर एकर मूल्याकंन करब असंभव तँ नै मुदा बहुत कठिन अछि। एहि धाराक शाइर सभ बस अपन-अपन गजलक पोथीकेँ प्रकाशित करबा लेबाकेँ काज मानि लेने छथि। आगूसँ हम "बिना व्याकरण बला मैथिली गजल" लेल “अजाद गजल” शब्दक प्रयोग करब। अजाद गजलक इतिहासमे जे पहिल जगजियार काज देखाइए ओ अछि एहि1990मे सियाराम झा सरस, तारानंद वियोगी, रमेश आ देवशंकर नवीनजी द्वारा संकलित ओ संपादित साझी गजल संग्रह "लोकवेद आ लालकिला" केर प्रकाशन। एहि संकलनमे कुल 12 टा गजलकारक 84 टा गजल अछि। भूमिका सभहँक अनुसारे ई संकलन प्रगतिशील गजलक संकलन अछि आ जाहिर अछि जे एहिमे सहभागी गजलकार सभ सेहो प्रगतिशील हेबे करता। बारहो गजलकारक नाम एना अछि कलानंद भट्ट, तारानंद वियोगी, डा.देवशंकर नवीन, नरेनद्र, डा. महेन्द्र, रमेश, रामचैतन्य धीरज, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, विभूति आनंद, सियाराम झा सरस, प्रो. सोमदेव। एहि संकलनक अलावे धीरेन्द्र प्रेमर्षिजी द्वारा संपादित पल्लव केर "गजल अंक" जे कि 2051 चैतमे मैथिली विकास मंच, माठमांडूक मासिक साहित्यिक प्रकाशन अंतर्गत प्रकाशित भेल (वर्ष-2, अंक-6, पूर्णांक-15) सेहो अजाद गजलक धारामे नीक काज अछि। जँ अंग्रेजी तारीखसँ बूझी तँ मार्च,1995 केर लगभगमे पल्लवक "गजल अंक" प्रकाशित भेल अछि (नेपालक तारीख बदलबामे जँ हमरासँ गलती भेल हो तँ ओकरा सुधारल जाए)। आगू बढ़बासँ पहिने पल्लवक गजलक अंकक किछु बानगी देखि लिअ--एहि गजल विशेषांकमे कलानंद भट्ट, फूलचंद्र झा प्रवीण, रमानंद रेणु, सियाराम झा सरस, राजेन्द्र विमल, रामदेव झा, बैकुंठ विदेह, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, रमेश, शेफालिका वर्मा, शीतल झा, गोपाल झाजी गोपेश, प्रेमचंद्र पंकज, पं.नित्यानंद मिश्र, शारदानंद परिमल, रमाकांत राय रमा, महेन्द्रकुमार मिश्र, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, चंद्रेश, विनोदानंद, दिलिप कुमार झा दीवाना, वैद्यनाथ मिश्र बैजू, रोशन जनकपुरी, सारस्वत, कर्ण संजय, श्यामसुंदर शशि, अजित कुमार आजाद, ललन दास, धर्मेन्द्र विह्वल, सुरेन्द्र प्रभात, अतुल कुमार मिश्र, रमेश रंजन, कन्हैयालाल मिश्र, गोविन्द दहाल आदि 34 टा गजलकारक एक एकटा गजल अछि मने 34 टा गजलकारक 34 टा गजल अछि। एहि विशेषांकक संपादकीय अजादक गजलक हिसाबे अछि। ई पत्रिका कुल चारि पन्नाक छपैत छल आ ओहि हिसाबें चौंतीस टा गजल कोनो खराप संख्या नै छै।

नेपालसँ प्रकाशित पल्लवक "गजल अंक" आ भारतसँ प्रकाशित "लोकवेद आ लालकिला" दूनूक समयमे करीब 6-7 बर्खक अंतराल अछि (प्रकाशनसँ पहिनेक तैयारीकेँ सेहो देखैत)। दूनूक संपादको अलग छथि। दूनू काजक स्थान ओ परिस्थितियो अलग अछि मुदा ओहि के अछैत एकटा दुर्योग दूनूमे एक समान रूपसँ विद्यमान अछि। ई दुर्योग अछि ओहि अंक कि संकलनमे पुरान गजलकारकेँ स्थान नै देब। जँ दूनू संपादक चाहतथि तँ ओहि अंक कि संकलनमे पुरान गजलकारकेँ समेटि कऽ एकटा संपूर्ण चित्र आनि सकै छलाह मुदा पता नै कोन परिस्थिति कि तत्व छलै जे दूनू ठाम एहि काजमे बाधक बनल रहल। प्राचीन गजल बेसी अछिए नै तँइ ने बेसी पाइ लगबाक संभवाना छलै आ ने बेसी मेहनतिक जरूरति छलै। भऽ सकैए जे हिनका सभ लेल ई प्रश्न महत्वपूर्ण नै हो मुदा एकटा गजल अध्येताक रूपमे हमरा सभसँ बेसी इएह बात खटकल अछि। किछु एहन तत्व तँ जरूर रहल हेतै जाहिसँ प्रभावित भऽ कऽ दूनू संपादकक एकै रंगक सोच रखने छलाह। खएर सूचना दी जे वर्तमान समयमे हमरा ओ गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा संपादित पोथी "मैथिलीक प्रतिनिधि गजलः1905सँ 2016 धरि" जे कि ई-भर्सन रूपमे प्रकाशित अछि ताहिमे उपरक दुर्योगकेँ दूर कऽ देल गेल अछि। एहि संकलनमे सभ प्राचीन गजलकारकेँ स्थान देल गेल अछि जाहिसँ मैथिली गजलक संपूर्ण छवि पाठक लग आबि जाइत छनि।
उपरक काजक अलावे एक-दू बर्ख पहिने मधुबनीमे सेहो अजाद गजलकार सभ द्वारा गजल कार्यशाला आयोजित भेल रहए मुदा ओकर समुचित तथ्य हमरा लग नै अछि तँइ ओहिपर हम किछु बजबासँ बाँचि रहल छी।

मैथिलीक अजाद गजलमे नै भेल काज

1) गजलक संख्या वृद्धि दिस धेआन नै देब-- गजलक संख्या वृद्धिसँ हमर मतलब अपनो लिखल गजल आ अनको लिखल गजल अछि। कथित क्रांतिकारी सभहँक विचार अछि जे कम्मे लिखू मुदा नीक लिखू। मुदा सवाल ओतत्हि रहि जाइ छै जे नीक रचना निर्धारण केना हो जखन कि लोक लग सीमित संख्यामे रचना रहै। हमरा हिसाबें ई भ्रांति अछि जे कम रचलासँ नीके होइत छै। हमर स्पष्ट विचार अछि जे रचना संख्या बढ़लासँ अपना भीतर प्रतियोगिता बढ़ै छै आ भविष्यमे नीक रचना लिखबाक संभावना बढ़ि जाइत छै। जाहि विधामे बेसी लिखाइत छै ओकर प्रचार-प्रसार ओ लोकप्रियता बेसी जल्दी होइत छै। मुदा अजाद गजलकार सभ एहि मर्मकेँ नै बुझि सकलाह। हमरा बुझाइए जे मैथिलीक अजाद गजलकार सभ प्रतियोगितासँ डेराइत छथि। हुनका बुझाइ छनि जे जँ कादचित् प्रतियोगितामे हारि गेलहुँ तँ हमर की हएत। मुदा हुनका सभकेँ बुझबाक चाही जे साहित्यमे जीत-हारि सन कोनो बात नै होइ छै।

2) गजलकारक संख्या वृद्धि दिस धेआन नै देब--- कोनो विधाक नियम टुटलासँ ओ विधा सरल बनि जाइत छै आ ओहि विधामे बहुत रास रचनाकार आबै छथि जेना कि कविता विधामे भेलै। तखन मैथिलीमे बिना नियम केर गजल रहितों ऐमे शाइरक कमी किएक रहल? मैथिलीक अजाद गजलकार सभ कते नव शाइरकेँ प्रोत्साहित

केलथि। जबाब सुन्ना भेटत। मैथिलीक अजाद गजलकार सभ अपने लीखै छथि आ अपनेसँ शुरू आ अपनेपर खत्म। आखिर गजल विधामे नव शाइर अनबाक जिम्मा केकर छलै? ईहो कहल जा सकैए जे मैथिलीक अजाद गजलकार सभ जानि बूझि कऽ अपन वर्चस्व सुरक्षित रखबाक लेल नव शाइरकेँ प्रोत्साहित नै केलथि। हुनका सभ डर छनि जे कहीं हमरासँ बेसी ओकरे सभहँक नाम नै भऽ जाइ।

3) मैथिली गजलक आलोचना दिस धेआन नै देब-- जेना कि सभ जानै छी जे आलोचना कोनो विधा लेल प्राण होइत छै मुदा आश्चर्य जे मैथिलीक अजाद गजलकार सभ गजल-आलोचनाकेँ हेय दृष्टिसँ देखला। मैथिलीमे अजाद गजलक प्रतिनिधि गजलकार सियाराम झा सरस, तारानंद वियोगी, रमेश, देवशंकर नवीनजीक संपादनमे बर्ख 1990मे " लालकिला आ लोकवेद " नामक एकटा साझी गजल संग्रह आएल। एहि संग्रहमे गजलसँ पहिने तीनटा भाष्यकारक आमुख अछि। पहिल आमुख सरसजीक छन्हि आ ओ तकर शुरुआत एना करै छथि -- " समालोचना आ साहित्यिक इतिहास लेखनक क्षेत्रमे तकरे कलम भँजबाक चाही जकरा ओहि साहित्यिक प्रत्येक सूक्ष्तम स्पंदनक अनुभूति होइ......."। अर्थात सरसजीकेँ हिसाबें कोनो साहित्यिक विधाक आलोचना, समीक्षा, वा ओकर इतिहास लेखन वएह कए सकैए जे की ओहि विधामे रचनारत छथि। जँ हम एकर व्याख्या करी तँ ई नतीजा निकलैए जे गजल विधाक आलोचना वा समीक्षा वा ओकर इतिहास वएह लीखि सकै छथि जे की गजलकार होथि। मुदा हमरा आश्चर्य लगैए जे ने 1990सँ पहिले सरसजी ई काज केलाह आ ने 1990सँ 2008 धरि ई काज कऽ सकलाह (सरसेजी किए आनो सभ एहन काज नै कऽ सकलाह)। 2008केँ एहि दुआरे हम मानक बर्ख लेलहुँ जे कारण 2008मे हिनकर मने सरसजीक एखन धरिक अंतिम कथित गजल संग्रह "थोड़े आगि थोड़े पानि" एलन्हि मुदा ओहूमे ओ एहन काज नै कऽ सकलाह। ई हमरा हिसाबें कोनो गजलकारक सीमा भए सकैत छलै मुदा सरसजी फेर ओही आमुख के तेसर आ चारिम पृष्ठपर लिखै छथि" मैथिली साहित्यमे तँ बंगला जकाँ गीति-साहित्यिक एकटा सुदीर्घ परंपरा रहलैक अछि। गजल अही परंपराक नव्यतम विकास थिक, कोनो प्रतिबद्ध आलोचककेँ से बुझऽ पड़तैक। हँ ई एकटा दीगर आ महत्वपूर्ण बात भए सकैछ जे मैथिलीक समकालीन आलोचकक पास एहि नव्यतम विधाक आलोचना हेतु कोनो मापदंडिके नहि छन्हि। नहि छन्हि तँ तकर जोगार करथु........" आब ई देखल जाए जे एकै आलेखमे कोना दू अलग अलग बात कहि रहल छथि सरसजी । आलेखक शुरुआतमे हुनक भावना छन्हि जे " जे आदमी गजल नै लीखै छथि से एकर समीक्षा वा इतिहास लेखन लेल अयोग्य छथि मुदा फेर ओही आलेखमे ओहन आलोचकसँ गजल लेल मापदंड चाहै छथि जे कहियो गजल नहि लिखला। भए सकैए जे सरसजी ई आरोप सरसजी अपन पूर्ववर्ती विवादास्पद गजलकार मायानंद मिश्र पर लगबथि होथि। जे की सरसजीक हरेक आलेखसँ स्पष्ट होइत अछि। मुदा ऐठाम हमरा सरसजीसँ एकटा प्रश्न जे जँ कोनो कारणवश माया जी ओ काज नै कए सकलाह वा जँ मायानंद जी ई कहिए देलखिन्ह मैथिलीमे गजल नै लिखल जा सकैए तँ ओकरा गलत करबा लेल ओ अपने (सरसजी) की केलखिन्ह। 2008 धरि मैथिलीमे 10-12 टा कथित गजल संग्रह आबि चुकल छल। मुदा अपने सरसजी कहाँ

एकौटा कथित गजल संग्रह समीक्षा वा आलोचना केलखिन्ह। गजलक व्याकरण वा इतिहास लेखन तँ बहुत दूरक बात भए गेल। ऐ आलेखसँ दोसर बात इहो स्पष्ट अछि जे सरसजी कोनो समकालीन आलोचककेँ गजलक समीक्षा लेल मापदंड देबा लेल तैयार नै छथि। जँ कदाचित् कनेकबो सरसजी आलोचक सभकेँ मापदंड दितथिन तँ संभवतः 2008 धरि गजल क्षेत्रमे एहन अकाल नै रहितै।
आब हम आबी विदेहक अंक 96 पर जाहिमे श्री मुन्ना जी द्वारा गजल पर परिचर्चा करबाओल गेल छल। आन-आन प्रतिभागीक संग-संग प्रेमचंद पंकज नामक एकटा प्रतिभागी सेहो छथि। पंकजजी अपन आलेखमे आन बातक संग इहो लिखैत छथि -“ कतिपय व्यक्ति एकटा राग अलापि रहल छथि जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ परम्परा रहितहु एकरा मान्यता नै भेटि रहल छैक। एहन बात प्रायः एहि कारणे उठैत अछि जे मैथिली गजलकेँ कोनो मान्य समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछूत मानिकऽ एम्हर ताकब सेहो अपन मर्यादाक प्रतिकूल बूझैत छथि। एहि सम्बन्धमे हमर व्यक्तिगत विचार ई अछि, जे एकरा ओहने समालोचक-समीक्षक अछूत बुझैत छथि जिनकामे गजलक सूक्ष्मताकेँ बुझबाक अवगतिक सर्वथा अभाव छनि। गजलक संरचना, मिजाज आदिकेँ बुझबाक लेल हुनका लोकनिकेँ स्वयं प्रयास करऽ पड़तनि, कोनो गजलकार बैसि कऽ भट्ठा नहि धरओतनि। हँ, एतबा निश्चय जे गजल धुड़झाड़ लिखल जा रहल अछि आ पसरि रहल अछि आ अपन सामर्थयक बल पर समीक्षक-समालोचक लोकनिकेँ अपना दिस आकर्षित कइए कऽ छोड़त “ अर्थात प्रेमचंद जी सरसे जी जकाँ भट्ठा नै धरेबाक पक्षमे छथि। सरसजी 1990मे कहै छथि मुदा पंकजजी 2011केर अंतमे मतलब 22साल बाद। मतलब बर्ख बदलैत गेलै मुदा मानसिकता नै बदललै। ऐठाम हम ई जरुर कहए चाहब जे भट्ठा धराबए लेल जे ज्ञान आ इच्छा शक्ति होइ छै से बजारमे नै बिकाइत छै। संगे-संग ईहो कहए चाहब जे मायानंद मिश्रजीक बयान आ अज्ञानतासँ मैथिली गजलकेँ जतेक अहित भेलै ताहिसँ बेसी अहित सरसजी वा पंकजजीक सन गजलकारसँ भेलै। ऐठाम ई स्पष्ट करब बेसी जरूरी जे हम ऐ बातसँ बेसी दुखी नै छी जे ई सभ बिना व्याकरणक गजल किए लिखला मुदा ऐ बातसँ बेसी दुखी छी जे ई गजलकार सभ पाठकक संग विश्वासघात केला। जँ ई सभ सोंझ रूपें कहि देने रहितथिन जे गजलक व्याकरण होइ छै आ हम सभ ओकर पालन नै कऽ सकै छी तखन बाते खत्म छलै मुदा अपन कमजोरीकेँ नुकेबाक लेल ई सभ नाना प्रकारक प्रपंच रचला जकर दुष्परिणाम गजल भोगलक। हमरा जहाँ धरि अध्ययन अछि तहाँ धरि लगभग मात्र 4-5 टा गजल आलोचना स्वतंत्र लेखक रूपमे अजाद गजलकार सभ द्वारा लिखल गेल अछि (जँ पोथीक भूमिका सभकेँ सेहो जोड़ी तँ एकर संख्या 8-9 टा भऽ सकैए)। एहि कड़ीमे तारानंद वियोगीजीक "मैथिली गजलः मूल्याकंनक दिशा", देवशंकर नवीनजीक "मैथिली गजलःस्वरूप आ संभावना", धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक "मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना" आदि प्रमुख अछि।
लिखित रूपकेँ छोड़ि मैथिलीमे गेबाक लेल सेहो गायक सभ गजलक नामपर अत्याचार केलाह। किछु लीखि देबै आ गलामे सुर रहत तँ ओकरा गाबि सकै छी तँए की ओकरा गजल मानल जेतै? गायनक ऐ धुरखेलमे बहुत रास गायक छलाह वा छथि जेना चंद्रमणि झा, रामसेवक ठाकुर, कुञ्ज बिहारी मिश्र आदि-आदि। जेना लिखऽ बला सभ मैथिली गजलकेँ भट्ठा बैसेलक तेनाहिते गायक सभ सेहो। गबैया सभ गजलमे मात्रा क्रम सप्तक

(सा,रे,गा,मा,पा,धा,नि,सा) केर हिसाबसँ बैसाबए लागै छथि जे की अवैज्ञानिक तँ अछिए सङ्गे-सङ्ग अनर्थकारी सेहो अछि। काव्यमे रागक हिसाबसँ छन्द नै बनै छै। तँए कोनो एकटा छन्दमे बनल रचनाकेँ बहुतों गायक बहुतों रागमे गाबै छथि / गाबि सकै छथि। राग-रागिनीक मात्राक्रम सङ्गीत लेल छै साहित्य लेल नै। तेनाहिते छन्दक मात्राक्रम काव्य लेल छै सङ्गीत लेल नै। ऐठाँ ई स्पष्ट करब बेसी आवश्यक जे एकटा गायक केर रूपमे कुंजबिहारी जी हमरा लेल आदरणीय छथि तेनाहिते गीतकारक रूपमे चंद्रमणिजी आदरणीय छथि आ ठीक तेनाहिते एकटा उद्घोषक केर रूपमे रामसेवकजी आदरणीय छथि मुदा एकर मतलब ई नै जे ई सभ गजलक नामपर किछु कऽ लेता तँ हिनका सभकेँ इज्जत देल जेतनि। हमर मानब अछि जे अहाँ जै विधामे वा कलामे पारंगत छी तकर हिसाबसँ इज्जत भेटत। नीक गीतकार छी तँए अहाँ गलत गजल लीखि गजलकारो भऽ गेलहुँ से के मानत? तेनाहिते ई सभ लेल अछि, हमरो लेल अछि। (उपरमे जतेक गायक, गीतकार आ उद्घोषक केर नाम अछि से मात्र उदाहरण लेल अछि)

सुधांशु शेखर चौधरी आ बाबा बैद्यनाथ जी गजलमे किछु तत्व तँ अछि। खास कऽ बाबा बैद्यनाथ जीक गजलमे सभ तत्व अछि मुदा वर्णवृत नै अछि। आ तँए हिनको लोकनिकेँ हम कथित गजलकारक श्रणीमे रखैत छी मुदा हमरा ई कहबामे कोनो संकोच नै जे ई दूनू बाद-बाँकी कथित गजलकार सभसँ बेसी बोधगर छथि।

आब ऐठाम एकटा प्रश्न ठाढ़ होइत अछि जे एना अनधुन हिनका सभकेँ (माया गुट एवं सरस गुट) आलोचना किएक कएल जा रहल अछि? जँ हिनकर सभहँक रचना गजल नै अछि तँ की अछि? एना आलोचना करब कतेक उचित? हिनका सभमे प्रतिभा छनि की नै? आदि......निश्चित रूपसँ हमरो नै नीक लागि रहल अछि हिनकर सभहँक आलोचना करैत मुदा हिनकर सभहँक शैलिए तेहन छनि जे आलोचना करहे पड़त। हमहीं मात्र गजलकार छी आ हमरे गजल मात्र गजल थिक ई शैली हिनकर सभहँक पहिचान अछि जखन की लोक आब बुझि रहल अछि जे हिनकर सभहँक गजल, गजल नै छल आ ने अछि। ई लोकनि ने अपने गजलपर काज केलाह आ ने दोसरकेँ करऽ देलखिन। आ जकर परिणाम गजल भोगि रहल अछि। खास कऽ अहाँ सरसजीक गजल पोथीक भूमिका पढ़ू ने गजलपर चर्चा भेटत आ ने गजलक व्याकरणपर मुदा ओइमे ई चर्चा जरूर भेटत जे सभकेँ साहित्य अकादेमी भेटि गेलै हमरा किएक नै भेटि रहल अछि। सरसजीक गजले नै हरेक पोथीक भूमिका ओ लेखमे ई भेटत। तारानंद वियोगी, देवशंकर नवीन, गंगेश गुंजन, रमेश, आ ओइ समयक कथित गजलकार सभ एना एला जेना ओ गजलपर उपकार कऽ रहल होथिन्ह। आ ऐ हेंजमे योगानंद हीरा, विजयनाथ झा, जगदीश चंद्र ठाकुर अनिलजी सभ दबि कऽ रहि गेला। हिनका (कथित गजलकार) सभमे प्रतिभा छनि कारण बिना प्रतिभा रहने केओ साहित्य दिस आबिए नै सकैए (बादमे अध्ययनक जरूरति पड़ै छै) तँए हम ई मानि रहल छी जे ई सभ प्रतिभाशाली छलाह। हँ, इहो मानि रहल छी जे केओ खुरपीक आगूसँ दूभि छीलैए आ ई कथित गजलकार सभ खुरपीक मूठसँ दूभि छिलबाक प्रयास केला। एकर परिणाम ई भेल जे हिनका सभकेँ मेहनति तँ करऽ पड़लनि, पसेना सेहो बहलनि मुदा दूभि छीलि कऽ ई सभ गजल रूपी गाएकेँ भोजन नै दऽ सकलाह। आब ऐ प्रश्नपर आबी जे हिनक सभहँक रचना गजल नै अछि तँ की अछि? निश्चित रूपसँ हिनकर सभहँक रचनामे

सरसता, पदलालित्य ओ गेयता अछि मुदा व्याकरण नै अछि। तँए हम हिनकर सभहँक कथित गजलकेँ हम पद्यक रूपमे मानै छी। आब पद्यमे केहन पद्य से तँ आन आलोचक सभ फड़िछा कऽ कहता मुदा जहाँ धरि हमर अपन विचार अछि तँ ई सभ नीक पद्य अछि आ आन पद्ये जकाँ साहित्यमे समादृत अछि।
ऐ ठाम ई गप्प सार्वजनिक करब अनिवार्य अछि जे अनन्त बिहारी लाल दास "इन्दु "जीक जे दू टा गजल संग्रह छनि (सरसजी द्वारा देल गेल सूचना) तैमेसँ हम एकौटा पोथी नै पढ़ि सकलहुँ अछि। तँए इन्दुजीक गजलपर हम कोनो टिप्पणी नै करब। हँ एतेक हम जरूर कहब जे कर्णामृतक किछु अंकमे हमरा हुनक गजल पढ़बाक अवसर भेटल (Oct-Dec 2007) मुदा तैमे बहरक अभाव अछि। बहुत रास गजलकार लेल ई टिप्पणी हम सुरक्षित राखए चाहब। संगे-संग हम ईहो कहऽ चाहब जे ई एकेडमिक शोध नै थिक तँए बहुत रास गजलकारक पोथी भेटबामे हमरा दिक्कत भेल आ तँए हम आर बहुत रास बहरयुक्त, बिना बहर बला गजलक संधानमे छी। आब किछु बुझाएल हएत जे आखिर मैथिली गजलमे स्त्री आ मुसलमान शाइर किए कम छथि। हिनका सभकेँ छोड़ू सरसजी सहित आन सभ (विचारधाराक आधारपर) समान्य वर्गक लोकोकेँ गजलक भट्ठा धरबऽ नै चाहै छथि तखन स्त्री आ मुसलमान आ दलित केर कोन गनती। ऐठाम एकटा सवाल सभ गोटासँ- कोनो विधाक नियम टुटलासँ ओ विधा सरल बनि जाइत छनि तखन मैथिलीमे बिना नियम केर गजल रहितों ऐमे शाइरक कमी किएक रहल? सरसजी, की सुरेन्द्रनाथ की आन कोनो बिना व्याकरण बला गजलकार सभ कते नव शाइरकेँ प्रोत्साहित केलथि। जबाब सुन्ना भेटत। सरसजी अपने लीखै छथि आ अपनेसँ शुरू आ अपनेपर खत्म। सएह हाल आन सभ आजाद गजलकारक छनि। आखिर गजल विधामे नव शाइर अनबाक जिम्मा केकर छलै?
ओना कहल जा सकैए जे अनकर जिम्मा तकबासँ बेसी नीक जे अपन जिम्मेदारीक निर्वाह कऽ ली तँए आब चली दोसर प्रसंगपर।

आब हम मैथिलीक आजाद गजलक किछु प्रतिनिधि शाइरक परिचय कराबी----

1

रवीन्द्र नाथ ठाकुर



रवीन्द्र-महेन्द्र नामक चर्चित जोड़ीक ई रवीन्द्र छथि। हिनक एकटा गजल संग्रह छन्हि-लेखनी एक रंग अनेक (पूर्वांचल प्रकाशन, पटना, वर्ख 1985)

हिनक अन्य विवरण एना अछि--

जन्म पूर्णिआ जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई.मे भेलन्हि । नेने अवस्थासँ गीत गएबामे एवं कविता लिखबामे विशेष रुचि । कोनो मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रोताकेँ आह्लादित करैत छथि । हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपन्यास, एक नाटक एक राति एवं एक हिन्दी नाटक, आ उपरोक्त गजल संग्रह प्रकाशित भेल छन्हि ।

2

मायानंद मिश्र



मैथिली गजलक चर्चित आ कुख्यात दूनू रूपमे स्थान। मायानंद मिश्रक ई कथन जे मैथिलीमे गजल नै लिखल जा सकैए,अनघोल मचेने रहए। मुदा मैथिली गजलक पहिल अरूजी मने गजल शास्त्रकार श्री गजेन्द्र ठाकुर मतें "मायानंद मिश्र" क मात्र एतबा अभिमत रहन्हि जे वर्तमानमे मैथिलीमे बहरयुक्त गजल नै लिखल जा सकैए। तँए ओ स्वयं अपने गीतल नामसँ गजल रचना केलन्हि (ऐठाम मोन राखू जे माया बाबू मैथिलीमे गजलकेँ नाम

गीतल देने छलखिन्ह जे कि अस्वीकार्य छल) मुदा आन-आन गजलकार सभ एकरा दोसर रूपमे लेलक आ प्रचारित केलक जे मायाबाबूक कथन थिक जे मैथिलीमे गजल लिखले नै जा सकैए। गजेन्द्रजी आगू लिखै छथि जे ई माया बाबूजँ ई कहबो केलखिन्ह जे मैथिलीमे गजल नै लिखल जा सकैए तँ ई कथन हुनकर सीमाक संग-संग ओहि समय सभ गजलकारक सीमा छल। कारण ओहि समय एकौटा गजलकार मैथिलीमे बहरयुक्त गजल नै लीखि सकलाह आ माया बाबूक उक्तिकँ सत्य करैत रहलाह। मुदा बाद मे इ.2008मे अनचिन्हार आखरक आगमन होइते माया बाबूक सभ मत-अभिमत धवस्त भए गेल।

हिनक जन्म 17 अगस्त 1934 ई.कँ सुपौल जिलाक बनैनियाँ गाममे भेलनि। भाङ्क लोटा,आगि, मोम आ पाथर आओर चन्द्रबिन्दु हिनकर कथा संग्रह सभ छन्हि। बिहाड़ि,पात पाथर,मंत्रपुत्र,खोता आ चिडै आ सूर्यास्त हिनकर उपन्यास सभ अछि। दिशांतर हिनकर कविता संग्रह अछि। एकर अतिरिक्त सोने की नैय्या माटी के लोग,प्रथमंशैल पुत्री च,मंत्रपुत्र,पुरोहित आ स्त्रीधन हिनकर हिन्दीक कृति अछि।1988मे हिनका(मंत्रपुत्र,उपन्यास)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेलन्हि।

प्रबोध सम्मान 2007सँ सम्मानित।

3

स्व. कलानंद भट्ट



गाम--उछटी (दरभंगा)

जन्म--15 मइ 1941, मृत्यु-5 अक्टूबर1994

प्रकाशित कृति--कान्ह पर लहास हमर (गजल संग्रह)

अप्रकाशित पांडुलिपि--हिलकोर (रुबाइ संग्रह)

4

सियारामझा" सरस"



10 JULY 1948, जन्म स्थान मेंहथ,मधुबनी बिहार।

गजल संग्रह--

1) शोणिताएल पएरक निशान (प्रकाशक-सरला प्रकाशन, मेहथ, प्रकाशन साल1989)

2)लोकवेद आ लालकिला (संपादित, प्रकाशक-विद्यापति सेवा संस्थान, प्रकाशन साल1990)

3) थोड़े आगि थोड़ पानि (प्रकाशक-नवारम्भ, प्रकाशन साल 2008)

विशेष--श्रीसरसजी अनचिन्हार आखर द्वारा प्रायोजित मैथिलीमे देल जाए बला गजल लेल पहिल सम्मान" गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान" क पहिल मुख्य चयनकर्ता छलाह जे कि ई. 2011मे शुरू भेल छल। हिनक अन्य विवरण एना अछि---

प्रसिद्ध गीतकार-गजलकार, बादमे कथा लेखन प्रारम्भ केलनि ।

अन्य प्रकाशित कृति--आँजुर भरि सिंगरहार (कविता) 1982, गीत रश्मि (गीत) (संपादन)1994, नै भेटतौ खालिस्तान (गीत)1994, आखर आखर गीत (गीत) 1999, चन्नाक पहाड़ (अनूदित उपन्यास, साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित1999),उगैत सूर्यक धम्मक(कथासंग्रह)आ उपरोक्त गजल संग्रह।

5

अरविन्द ठाकुर



प्रकाशित गजल संग्रह--बहुरुपिया प्रदेश मे। (नवारम्भ प्रकाशन, साल नवम्बर2011)

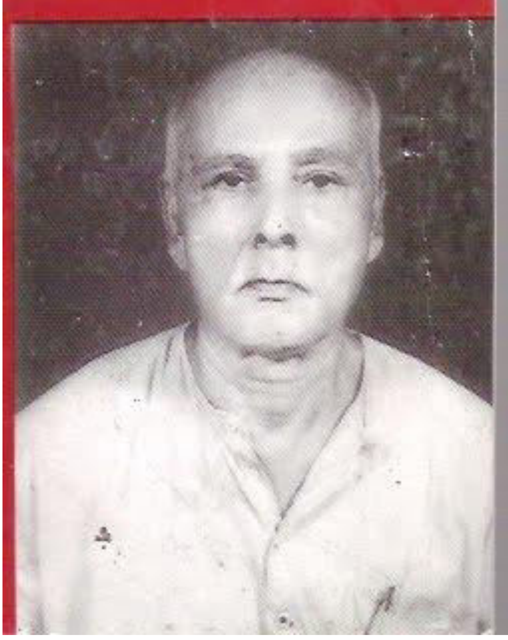
अन्य प्रकाशित कृति--परती टूटि रहल अछि (कविता), अन्हारक विरोधमे (कथा)

जन्म--14 February 1957, सुपौल।

http://1.bp.blogspot.com/-7VNXlpCH0Y0/T8MG4mjRBOI/AAAAAAAAANU/t7oxWSKFprA/s1600/SudhanshuShekhar_Chaudhary_1920_1990.jpg

6

सुधांशु शेखर चौधरी



प्रकाशित गजल संग्रह--गजल ओ गीत (किछु गीत छै ऐमे आ किछु गजल)

जन्म दरभंगाक मिश्रटोलामे 1922 ई. मे भेलन्हि तथा मृत्यु 1990 ई. मे भेलन्हि । किछु दिन विभिन्न जीविकामे रहि पश्चात् साहित्यकारक जीवन प्रारम्भ कएल । किछु दिन बैदेहीक सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1960 ई.सँ 1982 ई. धरि पटनामे मिथिला मिहिरक सफल सम्पादन कएल ।हिनक नाट्यकृति-भफाइत चाहक जिनगी, लेटाइत आँचर, तथा पहिल साँझ हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुभवक परिचायक अछि ।छद्मनामसँ हिनक दू गोट उपन्यास मिहिरमे प्रकाशित भेल अछि । हिनक उपन्यास - ई बतहा संसार जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल आ जाहि पर 1980 क साहित्य अकादमीक पुरस्कार देल गेल ।

7

धीरेन्द्र प्रेमर्षि



(ऐ फोटोमे धीरेन्द्र प्रेमर्षि, हुनक पत्नी रूपा झा आ हुनक दू गोट बालक)

व्यक्तिगत विवरण—

पूर्ण नामः धीरेन्द्र झा

प्रचलित नामः धीरेन्द्र प्रेमर्षि

जन्मस्थानः गोविन्दपुर, गा.वि.स. वार्ड नं.1, बस्तीपुर, जिला सिरहा, नेपाल

जन्मथितिः वि.सं. 2024, भादब 18 गते (3 सितम्बर 1967)

शिक्षाः स्नातक

पिताक नामः पं. कृष्णलाल झा

माताक नामः आनन्दी देवी झा

मूल वृत्तिः नेपाल सरकारक नोकरिहारा (कृषि विभाग अन्तर्गत Plant Protection Officer)

प्रकाशित साहित्यिक कृतिः

समयलाई सलाम (नेपाली गजलसङ्ग्रह)

ऐ के अतिरिक्त हिनक विस्तृत सहभागिता गीतक आडियोविडियोमे अछि। एफ.एम केर नीक उद्घोषक।

सम्पर्क पताः

पोष्ट-हार्भेष्ट व्यवस्थापन निर्देशनालय,

श्रीमहल, पुल्चोक, ललितपुर, नेपाल।

फोन नं.: 97715536994 / 9841280733

ईमेल---dhipre@yahoo.com आ dhipre@gmail.com

नोट: पल्लवमिथिला मैथिलीक दोसर इंटरनेट पत्रिका अछि जखन की वास्तविकता ई थिक जे भालसरिक गाछ जे सन 2000सँ याहूसिटीजपर छल आ अखनो 5 जुलाइ 2004सँ http://www.videha.com/2004/07/bhalऽarik-gachh.html लिंकपर अछि, मैथिलीक पहिल इंटरनेट

पत्रिका थिक जकर नाम बादमे 1 जनवरी 2008सँ" विदेह "पड़लै। ई टिप्पणी मात्र इतिहास शुद्धता लेल अछि। मैथिलीक पहिलसँ लए क' एखन धरिक हरेक इंटरनेट पत्रिकाक नाम, यूआरएल, ओकर पहिल पोस्टक तारीख ऐ ठाम देखल जा सकैए--http://www.videha.co.in/feedback.htm जँ किनको लग 5/7/2004सँ पहिनुक लिंक छन्हि तँ प्रस्तुत कएल जाए।

इएह परिचय हम विदेहक फेसबुक वर्सनपर सेहो देने रही तकर बाद विदेहक फेसबुक भर्सन http://www.facebook.com/groups/videha/ पर धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक संग भेल तर्क / टिप्पणी ऐठाम देल जा रहल अछि ई इतिहास शुद्धता लेल नीक अछि।

- You, Ashutosh Mishra, Prabin Chaudhary Pratik, Rajeev Ranjan Mishra and12 others like this.

o 

http://www.facebook.com/groups/videha/permalink/322432547834880/

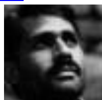
Jan Anand Mishra Premarshiji ekta star bain chukal chhaith

6 hours ago via Mobile · Unlike · 1

o  Submit

Ashish Anchinhar आ हमर कोशिश रहल अछि जे स्टारक स्टार सभ सेहो ऐ फोटोमे आबथि से आबि गेल छथि।.

6 hours ago · Like · 4

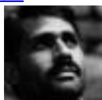
o 

http://www.facebook.com/groups/videha/permalink/322432547834880/

Dhirendra Premarshi

आशिषजी, धन्यवाद परिचय शृङ्खलामे हमरा रखबाक लेल। पल्लवमिथिलाक सन्दर्भमे हम पहिनहु कहने रही जे वर्ष 2003 जनवरीसँ शुरू भेल छल मुदा ओकरा हम निरन्तरता नहि दऽ सकलहुँ। तँ ओइपर हमर कोनो दाबा नहि अछि। हँ ओहिमे वर्तमानधरि सेहो लिखाएल अछि जे सर्वथा गलत अछि। अइ बायोडाटामे कने सम्पादन जरूरी छलै से नहि भऽ पाएल अछि। ओना पल्लवमिथिलाकेँ भाषाविद डा रामावतार यादव सार्वजिनक कएने छलाह से समाचारो छपल छल। मुदा हमरा ओ कटिंग तकबामे सेहो भाङठ हएत। कारण हम व्यवस्थापनक मामलामे बड्ड कमजोर छी।

3 hours ago · Unlike · 3

o 

http://www.facebook.com/groups/videha/permalink/322432547834880/

Dhirendra Premarshi 2059 माघे संक्रान्तिदेखि नेपालको मैथिली भाषाको पहिलो इन्टरनेट पत्रिका पल्लव www.pallavmithila.mainpage.net सुरु गरिएको छ। यो पत्रिका काठमाडौँस्थित मैथिली विकास मंचको तर्फबाट धीरेन्द्र प्रेमर्षीद्वारा सम्पादन तथा

प्रकाशन गरिन्छ। यसमा मैथिली भाषामा विविध साहित्यिक सामग्री राखिएका
छन्। हरेक महिना यसका सामग्रीहरू अद्यावधिक गरिन्छ।
(सम्प्रति नेपालक सूचना आयोगक अध्यक्ष विनय कसजूद्वारा लिखित पुस्तकमे सेहो पल्लवके बात राखल गेल अछि। एकर जे लिंक छै से अस्थायी प्रकृतिक भेलाक कारणे आब नइ भेटैत अछि। डा कसजूक किताबक लिंक अइठाम दऽ रहल छी- http://www.kasajoo.com/itbook_vinaya.pdf)

mainpage.net: The Leading Main Page Site on the Net

www.mainpage.net

2 hours ago · Like · Submit

o  Submit

Ashish Anchinhar

हम http://www.pallavmithila.mainpage.net/ आhttp://www.pallavmithila.net/ दुनू खोलबाक प्रयास केलौं मुदा नै खुजलhttp://pallav.blogsome.com/ खुजल आ ओ 17 मइ 2006 केर अछि आhttp://hellomithila.blogspot.com/ सेहो खुजल जे 3 मइ 2006 केर अछि। भऽ सकैए ओ डोमेन नेम डिलीट भऽ गेल हुअए, मुदा जँ डिलीट भेल डेटा देखी तँ तै हिसाबे सेहो भालसरिक गाछ 2000 ई.सँ yahoogeocities पर निरन्तर छल, मुदा याहू द्वारा geocities सर्विस बन्द भऽ गेलाक बाद ओहो डोमेन नेम बन्द भऽ गेल, आ http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html आ http://www.videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html 5 जुलाइ 2004सँ निरन्तर मैथिलीक सभसँ पुरान स्वरूपमे उपलब्ध अछि, नचिकेताक नाटक विदेहक आठम अंकसँ धारावाहिक प्रकाशित भेलै आ ओ जखन 2008 मे पोथी रूपमे एलै तखन इन्टरनेटपर मैथिलीक प्रारम्भ 2000 ई. मे गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा कएल जेबाक चर्च ओतए छै। (लिंकhttp://sites.google.com/a/shruti-publication.com/shruti-publication/Home/NO_ENTRY_MA_PRAVISH.pdf?attredirects=0) अहाँक दुनू लिंक जे खुजि रहल अछि ओकर चर्च सेहो अंतिकाक इन्टरनेट पत्रिका विशेषांकमे गजेन्द्र ठाकुरजी केने छथि। ओना अहाँक देल सूचना महत्वपूर्ण अछि आ भालसरिक गाछक बाद दोसर इन्टरनेट पत्रिका पल्लवकेँ मानल जा सकैए। तदनुसार अहाँक बायोडाटामे सम्पादन कऽ रहल छी।

mainpage.net: The Leading Main Page Site on the Net

www.mainpage.net

32 minutes ago · Like · Submit

o 

http://www.facebook.com/groups/videha/permalink/322432547834880/

Dhirendra Premarshi अहाँ सही कहै छी आशिषजी। ई बात हम उपरका कमेंटमे सेहो लिखने छी। (एकर जे लिंक छै से अस्थायी प्रकृतिक भेलाक कारणे आब नइ भेटैत अछि।) ओना एकटा बात हम कहि दी जे हमर ई दावा नइ अछि मात्र जानकारीभरि अछि। आब जँ कि ओकर प्रमाणो खतम भेल जा रहल छै तँ भऽ सकैए जे हम ओ विवरणो हटा दी।

22 minutes ago · Unlike · 1

o  Submit

Ashish Anchinhar हँ मेनपेज डॉट नेट डोमेन नेम प्रायः खतम भऽ गेल छै, तकरा बाद कियो दोसर गोटे ओकरा लेने छथि प्रायः। तै दुआरे मेनपेज डॉट नेटक सब डोमेन पल्लव सेहो खतम भऽ गेल हेतै। तै हिसाबे सेहो भालसरिक गाछ आ आर किछु साइट जे याहूसिटीज केर अन्तर्गत 2000मे गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा शुरू भेल सेहो याहू द्वारा जियोसिटीज बन्द कऽ देलाक बाद खतम भऽ गेलै मुदा अखनो एकर सभसँ पुरान लिंक 5 जुलाइ 2004 अखनो अछिये। ओइ हिसाबे सेहो भालसरिक गाछ पहिल आ पल्लव दोसर इन्टरनेट पत्रिका सिद्ध होइए आ तदनुसारे परिवर्तन/ सम्पादन कऽ देने छी.. सादर।

about a minute ago · Like

8

बाबा बैद्यनाथ



पिताक नाम--स्व. सूर्यमणि झा

माताक नाम--स्व. गौरी देवी

जन्म--3 अगस्त 1955 (श्रावण धवल त्रयोदशी)

शिक्षा एम.ए (हिन्दी एवं दर्शन शास्त्र)

पता - कचहरी बलुआ, भाया बनैली, जिला पूर्णिया

प्रकाशित कृति- पहरा इमानपर (गजल संग्रह)

मैथिली आ हिन्दी साहित्यिक विभिन्न विधामे समान रूपें लेखन। अखिल भारतीय त्रिभाषा (हिन्दी, मैथिली, उर्दू) साहित्य एवं कला परिषदक संस्थापक आ महासचिव। मिथिला सौरभ (मैथिली त्रैमासिकी) आ त्रिवेणी (हिन्दी, मैथिली, उर्दूक काव्य संकलन)क संपादन। सुपौलसँ प्रकाशित भारती-मंडन नामक पत्रिकाक प्रधान संपादक।हिन्दी आ मैथिलीमे लिखल कैकटा नाटक, उपन्यास, कथा संग्रह, कविता संग्रह अप्रकाशित। केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद् नई दिल्ली द्वारा आयोजित “हिन्दी प्ररूप एवं टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता “मे अखिल भारतीय स्तरपर प्रथम स्थान प्राप्त, फलतः स्वर्ण पदक, वैजयन्ती (ट्राफी), प्रशस्ति पत्र एवं नगद राशिसँ सम्मानित। जिला साहित्य परिषद्, खगड़िया द्वारा मैथिली साहित्यमे योगदान हेतु “विद्यापति स्मृति सम्मान “सँ सम्मानित। वर्तमानमे यूको बैंक, मुख्य शाखा, बेगूसरायमे सीनीयर मैनेजर

उपरमे देल प्रतिनिधि गजलकारक अतिरिक्त बहुतों एहन शाइर सभ छथि जे की छिटपुट आजाद गजल लिखला आ अन्य विधामे महारत हासिल केलाह। ई सूची शुरूसँ लऽ कऽ एखन धरिक अछि। संगे-संग भारत आ नेपाल दुन्नू मिला कए अछि। जँ ऐमे कोनो नाम छूटि गेल हुअए तँ ओ अहाँ सभ तुरंत सूचित करी से हमर आग्रह-

बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन, रमानंद रेणु, फूल चंद्र झा प्रवीण, वैकुण्ठ विदेह, शीतल झा, प्रेमचंद्र पंकज, प.नित्यानंद मिश्र, शारदानंद दास परिमल, तारानंद झा तरुण, रमाकांत राय रमा, महेन्द्र कुमार मिश्र, विनोदानंद, दिलीप कुमार झा दिवाना, वैद्यनाथ मिश्र बैजू, विलट पासवान विहंगम, सारस्वत, कर्ण संजय, अनिल चंद्र ठाकुर, श्याम सुन्दर शशि, अशोक दत्त, कमल मोहन चुन्नू, रोशन जनकपुरी, जियाउर रहमान जाफरी, धर्मेन्द्र विहवल्, सुरेन्द्र प्रभात, अतुल कुमार मिश्र, रमेश रंजन, कन्हैया लाल मिश्र, गोविन्द दहाल, चंद्रेश, चंद्रमणि झा, फजलुर रहमान हाशमी, रामलोचन ठाकुर, विनयविश्व बंधु, रामदेव भावुक, सोमदेव, रामचैतन्य धीरज, महेन्द्र, केदारनाथ लाभ, गोपाल जी झा गोपेश, नंद कुमार मिश्र,देवशंकर नवीन,मार्कण्डेय प्रवासी,अमरेन्द्र यादव, केदार कानन आदि।
बहुत रास नाम धीरेन्द्र प्रेमर्षि जी द्वारा संपादित गजल विशेषांक पर आधारित अछि।उम्मीद अछि जे हिनकर सभहँक विस्तृत परिचय आगामी समय केर पोथीमे आएत।

मैथिलीक आजाद गजलक पोथीक सूची--

1) उठा रहल घोघ तिमिर---बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर विभूति आनंद (प्रकाशन वर्ष June 1981, ऐमे कुल 34 टा गजल अछि आ ई भारती प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित अछि। मूल्य 3टका साधारण, 6 टका विशेष)
2) कान्ह पर लहास हमर---बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर कलानंद भट्ट (2ep.1983, ई किसुन संकल्प लोक, सुपौलसँ प्रकाशित अछि आ ऐमे कुल 48 टा गजल अछि। मूल्य 4टका)
3) लेखनी एक रंग अनेक ----बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर रवीन्द्रनाथ ठाकुर (15/8/1985, ऐमे कुल 109 टा गजल आ 7 टा कता अछि। ई पूर्वांचल प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित अछि। मूल्य 10 टका)
4) शोणिताएल पएरक निशान--बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर सियाराम झा सरस (1989, ऐमे कुल 48 टा गजल अछि। ई सरला प्रकाशन, मेहथसँ प्रकाशित अछि। मूल्य 12 टका)
5) लोकवेद आ लाल किला--बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। संपादक शाइर सियाराम झा सरस (प्रकाशन वर्ष 1990, ऐमे कुल 12 टा गजलकारक 84 टा गजल अछि। ई विद्यापति सेवा संस्थानसँ प्रकाशित अछि। मूल्य 12टका)
6) पहरा पर इमान--बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर बाबा बैद्यनाथ (1989, ऐमे कुल 30टा गजल अछि)
7) नागफेनी--बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर रमेश (1990, ऐमे कुल 58 टा गजल अछि। मूल्य 10टका समान्य, 15 टका पुस्तकालय)
8) अपन युद्धक साक्ष्य--बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर तारानंद वियोगी (प्रकाशन वर्ष 1991, ऐमे कुल 40टा गजल अछि। ई चतुरंग प्रकाशन, बेगूसरायसँ प्रकाशित अछि। मूल्य 7 टका)।

एही कथित गजल संग्रहक दोसर संस्करण 2016मे आएल जकर प्रकाशक किसुन संकल्प लोक अछि। अइमे कथित पुरना गजलक संग 25 टा नव कथित गजल सहो देल गेल अछि आ संगे-संग बारह टा गीत सेहो जोड़ल गेल अछि।

9) थोड़े आगि थोड़े पानि--बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर सियाराम झा सरस (प्रकाशन वर्ष nov.2008 ऐमे कुल 80टा गजल अछि। ई नवारम्भ प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित अछि। मूल्य 70टका)

10) गजल हमर हथियार थिक--बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर सुरेन्द्रनाथ (2008, ऐमे कुल 68 टा गजल अछि। ई नवारम्भ प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित अछि। मूल्य 70टका)

11) सूर्यास्तसँ पहिने--बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर राजेन्द्र विमल (प्रकाशन वर्ष-साल 2068, 2011, पृथु प्रकाशन, जनकपुर नेपाल, ऐमे कुल 96 टा गजल अछि। मूल्य 100 टका साधारण, 200 टका संस्थागत)

12) नवीन मैथिली गजल--हमरा लग उपल्बध नै अछि। शाइर अनन्त बिहारी लाल दस “इन्दु”

13) मधुर मैथिली गजल--हमरा लग उपल्बध नै अछि। शाइर अनन्त बिहारी लाल दस “इन्दु”

(इन्दु जीक संग्रहक जानकारी हमरा सरसजी द्वारा भेटल अछि हलाकिं हुनको लग दूनू संग्रह नै छन्हि)

14) बहुरुपिया प्रदेश मे ---बिना बहरक गजल संग्रह अछि ई। शाइर अरविन्द ठाकुर (प्रकाशन वर्ष-nov 2011, ऐमे कुल 66 टा गजल अछि। ई नवारम्भ प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित अछि। मूल्य 125 टका सजिल्द, 75 टका अजिल्द)

15) दुखक दुपहरियामे--बिना बहरक गजल सभ अछि ऐमे। गंगेश गुंजन (ऐमे 14 टा गजल सनकँ किछु अछि)

16) संघर्षक पथ पर--अशोक दत्त (हमरा लग उपल्बध नै अछि)

17) चानन-काजर---बिना बहरक गजल सभ अछि ऐमे।। देवशंकर नवीन

18) आखर-आखर गीत----बिना बहरक गजल सभ अछि ऐमे। सियाराम झा सरस (ऐमे कुल 16 टा गजल आ 73 टा गीत अछि। ई सरला प्रकाशन, मेहथसँ प्रकाशित अछि)

19) अपूर्वा---बिना बहरक गजल सभ अछि ऐमे। रामलोचन ठाकुर

20) गीत ओ गजल--बिना बहरक गजल सभ अछि ऐमे। शाइर शुधांसु शेखर चौधरी (ऐमे कुल 31 टा गजल आ 7 टा गीत अछि)

21) सोम पदावली---बिना बहरक गजल सभ अछि ऐमे। शाइर सोमदेव

22) अवान्तर--बिना बहरक गजल सभ अछि ऐमे। शाइर मायानंद मिश्र

23) मोमक पघलैत अधर---शाइर राम भरोस कापड़ि भ्रमर, प्रकाशन वर्ष1983। हमरा लग उपल्बध नै अछि।

24) जे गेल नहि बिसरल--शाइर मोहन यादव, प्रथम संस्करण-जून 2015, प्रकाशक-मैथिली प्रेरणा परिषद, श्रीपुर, सकरी, दरभंगा, कुल 81 टा कथित गजल अछि अइमे।

तथाकथित गजल संग्रहक अतिरिक्त बिलट पासवान बिहंगम, जीक सहो किछु गजल अछि जकरा शाइर द्वारा

गीतल कहल गेल। धीरेन्द्र प्रेमर्षि जीक संपादनमे निकलल "पल्लव" पत्रिकाक गजल विशेषांक मैथिली पत्रिकारितामे पहिल आजाद गजल विशेषांक अछि। अनंत बिहारी लाल दास इन्दु जीक बहुत गजल सभ छन्हि मुदा ओहि संबंधमे कोनो जानकारी नै अछि।
उपरक विवरणक अतिरिक्त प्रस्तुत अछि मैथिलीक व्यंग्य सम्राट प्रो. हरिमोहन झाजीक लिखल ई गजल जे कि हुनक रचनावली (कविता खंड)सँ पृष्ठ-87सँ साभार अछि। तकर बाद हम एकर तक्ती कऽ देखाएब जे ई वास्तवमे गजल थिक की नै थिक--

ने लड़लहुँ फौजदारी जौं
त रुपया केर धाहे की

खसौलक नोर नहि बापक
त ओ कन्याक विवाहे की

ने आधा ऐंठ फेकल गेल
त फेर ओ भोज भाते की

ने बहराएल एको बन्दूक
त ओ थिक बराते की

ने लगला जोंक बनि कय जे
तेहन दुलहाक बापे की

जौं लस्सा बनि कुटुम सटला
त ओहिसँ बढ़ि पापे की

पड़ल नहि खेत सुदभरना
त ओ बापक सराधे की

ने फनकल जौं देयादे सन

त ओ गहुमन दराधे की

1972मे लिखल (प्रकाशित) आब एकर तक्ती देखू--

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि--1222-1222 पहिल शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि--1222-1222

दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि--1222-1222 दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि-1222-11222 जे कि मतलाक हिसाबें नै अछि।

तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि- 1222-12221 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि--12122-1222 जे कि मतलाक हिसाबें नै अछि।

चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि 1222-122221 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि--122-1222 जँ कथित तौरपर “ए” कैँ लघु मानी (जे कि गलत अछि) तखन एहि चारिम शेरक मात्राक्रम एना हएत--पहिल पाँति -1222-12221 दोसर पाँति-122-1222 दूनू व्यवस्थाकमे मात्राक्रम मतलाक हिसाबें नै अछि।

पाँचम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि--1222-1222 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि- 2222-1222 जे कि मतलाक हिसाबें नै अछि।

छठम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि--1222-1222 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि-1222-222 जे कि मतलाक हिसाबें नै अछि।

सातम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि--1222-1222 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि-1222-1222 जे कि मतलाक हिसाबें अछि।

आठम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि- 1222-2222 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि-1222-1222 जे कि मतलाक हिसाबें नै अछि।

उपरक विवेचनासँ स्पष्ट अछि जे ई गजल नै अछि। ओना हरिमोहन झाजी अपन आत्मकथा “जीवन यात्रा” मे लिखै छथि जे ओ पटना आबि मोशायरा सभमे सेहो भाग लेबए लगलाह। भऽ सकैए जे मात्र लौलवश ई कथित गजल हरिमोहनजी लिखने होथि। जे किछु हो मुदा ई गजल गजल इतिहासमे उल्लेख करबा योग्य नै अछि मुदा ओइ बाबजूद मात्र अइ कारणसँ हम विवरण देलहुँ जे काल्हि कियो उठि कऽ कहि सकै छथि जे हरिमोहन झा सन महान हास्य-व्यंग्यकार गजल लिखने छथि आ सही लिखने छथि। बस एही कारणसँ हम एतेक मेहनति केलहुँ अन्यथा एहि गजलमे कोनो एहन बात नै। हरिमोहन झाजी गजलक संबंधमे की सोचैत छलाह तकर बानगी “कहू की औ बाबू” नामक कविताक पहिले खंडमे देने छथि--

बसाते तेहन छै जे गोष्ठी मे कवियो
गजल दादरा आ कव्वाली गबैये
किछु दिन मे एहो देखब औ बाबू

जे कविताक संग-संग तबला बजैए

हरिमोहन झा रचनावली (कविता खंड) पृष्ठ-120 (11-11-1978 मे प्रकाशित)। भऽ सकैए जे हरिमोहनजीकेँ उर्दू शाइर सभहँक संग घनिष्ठता होइन मुदा ओ घनिष्ठता शाइरी ज्ञानमे नै बदलि सकल से उपरक हुनक विचारसँ परिलक्षित भऽ जाइए।

तँ ई छल इतिहास एक नजरिमे। बहुत गोटेँ हँसैत हेता जे एहने इतिहास होइ छै की। हम हुनकर स्वागत करै छी आ आसा करै छी जे ओ ऐसँ नीक इतिहास लीखि पाठकक आगू परसताह। अन्तमे हम मात्र ई कहए चाहब जे ने तँ हमर ई आलेख एकेडमिक अछि आ ने हम एकेडमिक छी तँए बहुत सम्भव जे हमरा नजरिसँ व्याकरणयुक्त गजलकार वा गजल छुटि गेल होएत। पाठकसँ अनुरोध जे हुनकर नाम देल जाए सङ्गे-सङ्ग आन गलत तथ्य सेहो सोझा लाबथि जाहिसँ मैथिली गजल आर मजगूत भऽ सकए। ई पोथी मैथिली गजलक पहिल पोथी छै अंतिम नै। हमर इच्छा जे मैथिली गजलक व्याकरणपर एक नै एक हजार पोथी आबै।

परिशिष्ट-1

“गजल कमला-कोशी-बागमती-महानंदा” सम्मानक सर्टिफिकेट



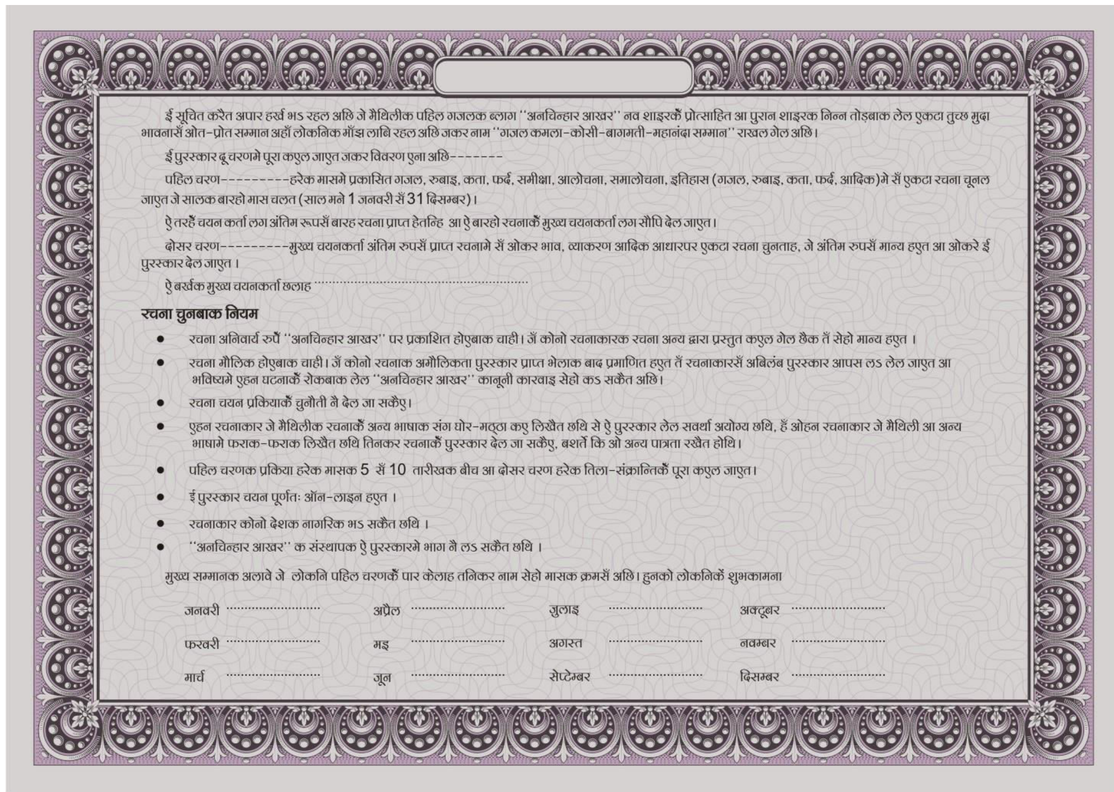
गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान

श्रीमती/सुश्री/श्री ....

कैँ बर्ख.. क ‘‘गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान’’ मास .... मे प्रकाशित हुनक .... लेल देल जा रहल अछि।

अनचिन्हार आखर

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com



ई सूचित करैत अपार हर्ख भऽ रहल अछि जे मैथिलीक पहिल गजलक ब्लाग ''अनचिन्हार आखर'' नव शाइरकेँ प्रोत्साहित आ पुरान शाइरक निन्न तोड़बाक लेल एकटा तुच्छ मुदा भावनासँ ओत-प्रोत सम्मान अहाँ लोकनिक माँझ लाबि रहल अछि जकर नाम ''गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान'' राखल गेल अछि।

ई पुरस्कार दू चरणमे पूरा कएल जाएत जकर विवरण एना अछि-------

पहिल चरण---------हरेक मासमे प्रकासित गजल, रुबाइ, कता, फर्द, समीक्षा, आलोचना, समालोचना, इतिहास (गजल, रुबाइ, कता, फर्द, आदिक)मे सँ एकटा रचना चूनल जाएत जे सालक बारहो मास चलत (साल मने 1 जनवरी सँ 31 दिसम्बर)।

ऐ तरहेँ चयन कर्ता लग अंतिम रूपसँ बारह रचना प्राप्त हेतन्हि आ ऐ बारहो रचनाकेँ मुख्य चयनकर्ता लग सौंपि देल जाएत।

दोसर चरण---------मुख्य चयनकर्ता अंतिम रुपसँ प्राप्त रचनामे सँ ओकर भाव, व्याकरण आदिक आधारपर एकटा रचना चुनताह, जे अंतिम रुपसँ मान्य हएत आ ओकरे ई पुरस्कार देल जाएत ।

ऐ बर्खक मुख्य चयनकर्ता छलाह ....

रचना चुनबाक नियम

- रचना अनिवार्य रुपेँ ''अनचिन्हार आखर'' पर प्रकाशित होएबाक चाही। जँ कोनो रचनाकारक रचना अन्य द्वारा प्रस्तुत कएल गेल छैक तँ सेहो मान्य हएत ।
- रचना मौलिक होएबाक चाही। जँ कोनो रचनाक अमौलिकता पुरस्कार प्राप्त भेलाक बाद प्रमाणित हएत तँ रचनाकारसँ अबिलंब पुरस्कार आपस लऽ लेल जाएत आ भविष्यमे एहन घटनाकेँ रोकबाक लेल ''अनचिन्हार आखर'' कानूनी कारवाइ सेहो कऽ सकैत अछि।
- रचना चयन प्रकियाकेँ चुनौती नै देल जा सकैए।
- एहन रचनाकार जे मैथिलीक रचनाकेँ अन्य भाषाक संग घोर-मठ्ठा कए लिखैत छथि से ऐ पुरस्कार लेल सवर्था अयोग्य छथि, हँ ओहन रचनाकार जे मैथिली आ अन्य भाषामे फराक-फराक लिखैत छथि तिनकर रचनाकेँ पुरस्कार देल जा सकैए, बशर्ते कि ओ अन्य पात्रता रखैत होथि।
- पहिल चरणक प्रकिया हरेक मासक 5 सँ 10 तारीखक बीच आ दोसर चरण हरेक तिला-संक्रान्तिकेँ पूरा कएल जाएत।
- ई पुरस्कार चयन पूर्णतः ऑन-लाइन हएत ।
- रचनाकार कोनो देशक नागरिक भऽ सकैत छथि ।
- ''अनचिन्हार आखर'' क संस्थापक ऐ पुरस्कारमे भाग नै लऽ सकैत छथि ।

मुख्य सम्मानक अलावे जे लोकनि पहिल चरणकेँ पार केलाह तनिकर नाम सेहो मासक क्रमसँ अछि। हुनको लोकनिकेँ शुभकामना

जनवरी	....	अप्रैल	....	जुलाइ	....	अक्टूबर	....
फरवरी	....	मइ	....	अगस्त	....	नवम्बर	....
मार्च	....	जून	....	सेप्टेम्बर	....	दिसम्बर	....

ऐठाम धेआन देबै। मैथिलीमे पहिल बेर महिला लोकनिकेँ सम्मान दैत कोनो सम्मान पत्रक शुरूआत.. "श्रीमती, सुश्री" आदिसँ भेल अछि। ई तथ्य हम फेसबुकपर सेहो देने छी।

परिशिष्ट-2

पं. जीवन झा जीक मृत्यु दिवस जे की मइमे होइ छै तैमे हरेक बर्ख एकटा सम्मान देल जाएत जकर नाम हेतै "पं. जीवन झा Lifetime Achievement गजल सम्मान" । संक्षिप्तमे "पं. जीवन झा गजल सम्मान" ई सम्मान कोनो व्यक्ति वा संस्थाकेँ देल जा सकैए जे अपन जीवनमे गजल लेल काज केने होथि।

ऐ सम्मान लेल व्यवस्था एना रहत--

पाठक, आलोचक, विश्वविद्यालय, मैथिली संस्था आदि एकटा नोमिशेन फार्म अनचिन्हार आखरकेँ पठेता (मात्र इंटरनेटसँ स्वीकार्य)। अनचिन्हार आखरक सेलेक्शन कमीटि ओइ नाम सभपर विचार क' अंतिम निर्णय देता। ई सम्मान मात्र काज अधारित छै तँए विवाद बर्दास्त नै कएल जाएत। ई फार्म ऐ निच्चा उपलब्ध अछि पाठक, आलोचक, विश्वविद्यालय, मैथिली संस्था आदि फार्म भरबा कालमे ई सभ मोन राखथि--

1) एक बेरमे एकै व्यक्ति वा संस्थाकेँ भेटत।

2) जै बर्खमे किनको ई सम्मान भेटि रहल हो तैसँ 30 बर्ख पाछू धरिक हुनक गजलक उपर काजकेँ मूल्यांकन कएल जाएत संगे संग कमसँ कम हुनक 5सँ बेसी गजल संग्रह वा गजल आलोचना, इतिहासपर पोथी प्रकाशित भेल हो

3) जँ संपादक छथि तँ हुनकर पत्रिकामे प्रति बर्ख 30टा गजल प्रकाशित भेल हो। जँ संपादक बदलि गेल छथि तँ ई सम्मान पत्रिकाकेँ देल जाएत।

4) ओ संस्था जे की गजलक 15 टा पोथी प्रकाशित केने हो।

5) ओ संपादक जे की प्राचीन गजलकारक मूल वर्तनीकेँ सुरक्षित राखैत 10 टा गजलक संपादन केने होथि।

6) ओ दानदाता जे की गजलक पोथी प्रकाशित करबाक लेल दान देने होथि (कमसँ कम 20टा)।

7) ई प्रयास रहत जे ई सम्मान हरेक बर्ख देल जाए मुदा उचित प्रतियोगीकेँ अभावमे एकरा ओइ बर्ख लेल स्थगित सेहो कएल जा सकैए।

8) ऐ सम्मानक सभ प्रकिया अनचिन्हार आखर सुरक्षित रखने अछि संगे-संग उतरदायित्व सेहो लैत अछि।

9) जे केओ सम्मान ओ पाइकेँ संग जोड़ि देखै छथि तिनका लेल ई सम्मान अयोग्य अछि। हँ साधनक हिसाबें राशिक व्यवस्था सेहो हेतै मुदा भविष्यमे।

10) जे केओ 30 बर्खमे 30टा वा ओसँ बेसी नव गजलकारकेँ गजल विधासँ जोड़लाह।

11) अनचिन्हार आखरक संस्थापक ऐ सम्मानक हकदार नै हेताह।

12) अनचिन्हार आखरक सेलेक्शन कमीटिक जे केओ मेम्बर हेताह तिनका 2 बर्खक बादें ई सम्मान भेटि सकैए।

हुनक नाम जे की ऐ बर्खक "पं. जीवन झा Lifetime Achievement गजल सम्मान" लेल योग्य छथि----

हुनक वर्तमान आयु (संस्थाक स्थापना दिवस रजिस्ट्रेशनक जेरेक्सक संग)---

जँ व्यक्ति छथि जँ कोन बर्खमे हुनक पहिल रचना प्रकाशित भेलनि (रचनाक जेरेक्सक संग) ---

हुनक की योगदान छनि मैथिली गजलमे----

जँ संस्था छथि जँ की काज छनि हुनक ---

व्यक्ति वा संस्थाक वर्तमान ठेकाना, मोबाइल न.----

नामक सुझाव देब' बला व्यक्ति वा संस्थाक नाम---

ठेकाना--

सम्मानक लेल सुझाओल रचनाकारक संबंधमे टिप्पणी---

परिशिष्ट-3

मैथिली गजलकार द्वारा लिखल अंग्रेजी भाषाक गजल

एहि संबंधमे जहाँ धरि हमरा ज्ञान अछि ओइ हिसाबसँ कुंदन कुमार कर्ण मैथिलीक (भारत ओ नेपाल दुन्नू मिला कऽ) ओहन पहिल गजलकार छथि जे की अंग्रेजी भाषामे गजल सेहो लिखलाह। तकर बाद राजीव रंजन मिश्रजी सेहो अंग्रेजी गजल लिखलाह। एहि संबंधक पूरा विवरण देखबाक लेल अनचिन्हार आखरक एहि लिंकपर जाउ-- https://anchinharakharkolkata.blogspot.in/2017/03/blog-post_11.html

अंग्रेजी भाषाक इतिहासकार सभहँक मोताबिक भारतीय मूलक अमेरिकी कवि आगा शाहिद अलीजी अंग्रेजीमे गजल लिखलथि। ओना बहुत रास अनुवादक ओहिसँ पहिने अरबी-फारसी गजलक अंग्रेजी अनुवाद कऽ चुकल छलाह। जेना कि हरेक भाषाक शुरुआती दौरक गजलमे नियमक अभाव देखाइए तेनाहिते अंग्रेजी गजलमे सेहो अछि। बादमे अंग्रेजी गजल लेल सिलेबल बला नियम लागू भेल। मने हरेक पाँतिमे एक समान सिलेबल रहए।

आब ई सिलेबक की छै से जानू। सिलेबल कोनो शब्दक “स्वर उच्चारण खंड” भेल। निच्चा किछु शब्दक सिलेबल देखू--free (1 syllable), eat (1 syllable), bio (2 syllables) आब पूछि सकै छी जे बायो लेल दू टा उच्चारण खंड कोना? बा-यो जखन कि free वा eat मे एकैटा स्वर छै। doctor मे दूटा सिलेबल छै। एनाहिते हरेक अंग्रेजी शब्दक सिलेबल जानि सकै छी। ई व्यवस्था मैथिलीक “सरल वार्णिक बहर” क बेसी लगीच बुझाइए। गजलक किछु शब्दक अंग्रेजी रूप एना अछि--

Sher- A couplet

Malta--First couplet of the ghazal--both lines end in the rhyme and refrain

Radif/Radeef/ the refrain

Qafia/ Qâfiyah/ Qaafiya/ Kaafiya/ --the rhyme

Makta/ Makhta --The signature--the poet invokes herself (or an alter ego/pen name--Takhallus) in the last couplet, directly or through wordplay

Beher (or bahar)--Poetic metre.

Ghazalkar--One who writes Ghazals.

Misra--A line of a couplet.

किछु अंग्रजी गजल पढ़बाक लेल अइ लिंकपर जा सकै छी--

https://www.poets.org/poetsorg/poems?field_form_tid=413

आशीष अनचिन्हार



मूल नाम--आशीष कुमार मिश्र

माता--श्रीमती गम्भीरा मिश्र

पिता- श्री कृष्ण चंद्र मिश्र

गाम--भटरा घाट (बिस्फी)

जन्म--4/12/1985

मैथिली गजल एवं शेरो-शाइरीपर केंद्रित इंटरनेट पत्रिका (ब्लाग रूपमे) “अनचिन्हार आखर” http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ केर संस्थापक ओ संपादक।

प्रकाशित कृति---

1) अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ ओ कता संग्रह)

2) मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास (ई भर्सन प्रकाशित)

3) मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास (ई भर्सन प्रकाशित)

श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक संगे सह-संपादित पोथी

1) मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा), ई-भर्सन प्रकाशित

2) मैथिलीक प्रतिनिधि गजल (1905सँ 2016 धरि), ई-भर्सन प्रकाशित

सम्मान--

बर्ख 2014 लेल विदेह भाषा सम्मान (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)सँ पोथी “अनचिन्हार आखर” (गजल संग्रह) लेल सम्मानित।

संपर्क - ashish.anchinhar@gmail.com